भूमिका।

आजकल कोई भूगोल बिहार प्रांत के लोगों की लिखित नहीं है इसलिये जिसको जो पुस्तक मिल जाती है उसी को पढ़ता पढ़ाता है। कुछ लोग तो ऐसे ऐसे भूगोल को पढ़ाते हैं जिनमें आज से ४० वर्ष पहले का हाल लिखा है। कोई उर्दू कोई अंगरेज़ी कोई बंगला पुस्तक से पढ़ते और पढ़ाते हैं और प्रायः परीक्षक लोग ऐसे भूगोलों से प्रश्न चुनकर देते हैं जो हिन्दी के पढ़े हुए भूगोलों में कहीं है नहीं इसलिये लड़के लोग जिनको छात्रवृत्ति (स्कालरशिप) पाने की अभिलाषा है बहुत दुखित रहते हैं। मेरे एक मित्र विद्यार्थी ने अपनी परीक्षा देनेके लिये अनेक पुस्तकों और समाचारपत्रों से बड़े परिश्रम से संग्रह कर अनेक पुर्जे तैयार किये थे और वे सब उस के याद रखने को कागज़ पर थे। मैंने देखा वह मुझे बड़ा उपयोगी संग्रह जानपड़ा। मैं अब उन सब कागपत्रों को लेकर इस लिये छपवा देता हूं कि इम्तिहान देने वाले को सुभीता हो। मैंने पहले उस मित्र से कहा कि तुम इन कागज़ों को छपवा दो परन्तु उस ने स्वीकार न किया। यहां तक कि जब मैंने कहा कि इस को मैं छपवा दूंगा तब भी उस ने अपना नाम प्रकाश करने को अभी मना किया। उस ने इस प्रकार की भूगोल की कई कापियां तैयार की हैं और प्रत्येक में बहुत कुछ अंतर है अर्थात् प्रत्येक का ढांचा बदला है यदि इस से बालकों को कुछ लाभ हुआ तो मैं कई एक को छपवा दूंगा।

मेरी समझ में तो आजकल जो जो छोटीमोटी पुस्तकें बिहार प्रांत में पढ़ाई जाती हैं उन सब से यह अच्छी है। दूसरे यह बिहारप्रांत के विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ानेवाला है क्योंकि एक लड़केके परिश्रम से जब यह बात हुई तो अनेक पुरुष क्या नहीं कर सकते और देखा देखी कुछ लज्जा भी तो होगी। सज्जनसमाज को उचित है कि इस लेखक के उत्साह को स्थिर रक्खें तथा हो सके

इस का प्रचार करें और जो कुछ दोष हो बतावें तो आगे सुधार दियाजायगा। क्योंकि पहलेही पहले किसी काम का सुधार होना कठिन है उस में भी एक ऐसे विद्यार्थी का जो अभी परक्षोत्तीर्ण होने का यत्न कर रहा है।

इस पुस्तक में एक बात का वर्णन कईबार आगया है सो पूर्वा प्रमाण दोष नहीं क्योंकि एक नगर का नाम मानो ज़िला के वर्णन में आया फिर तीर्थ के वर्णन में फिर उस ख़ास नगर के वर्णन में परन्तु इस विद्यार्थी ने ऐसा अपने स्मरण रखने के लिये किया है कि ज़िला के वर्णन में भी उस नगर का कुछ वर्णन कर दिया है और फिर तीर्थ के वर्णन में भी लिख दिया है इस के सिवाय ख़ास शहर के वर्णन में जहां तक होसका विशेष वर्णन किया है परन्तु जहां एकही प्रसंग में कुछ होगया वहां दूसरे प्रसंग में नाम के सिवाय कुछ न लिखा।

इस भूगोल में पहले कमिश्नरी का चक्र लिख कर तदनंतर ज़िलों का पत्ता और उसका वर्गात्मक सोम और बड़े बड़े शहरों वा क़सबों का पत्ता दिया है फिर उसके नीचे जहांतक होसका उन शहरों का वर्णन किया गया है इस से यह लाभ सोचा गया है कि लड़के चाहें तो पहले चक्र को स्मरण कर फिर उस का वृत्तांत पढ़कर पूरा पूरा ज्ञान प्राप्त करलें वा उन चक्रों ही से नगर नाम को स्मरण रखलें। इसके सिवाय प्रसिद्ध वस्तुओं को इकट्ठा लिखा है जैसे पान, तम्बाकू, चाय, कपड़ा, चूनरी, तरवार आदि कहां कहां के प्रसिद्ध हैं ऐसेही बैल, घोड़ा, ऊंट आदि किन किस स्थान के प्रसिद्ध हैं। खानिज वस्तुओं में, कोयला, लोहा, तांबा, अबरक, शोशा, आदि किस किस स्थान के प्रसिद्ध हैं। ऐसेही ज़िला, छावनी, तीर्थस्थान, अधिवासी, बंदर, सुहागा, अंगरेज़ों की हवा खाने की जगह आदि उपयोगी वस्तुओं को इकट्ठा कर इसलिये लिखा है कि परीक्षा देनेवाले विद्यार्थियों

की सहज में हस्तामलक हो जाय और वे इम्तिहान में कभी न चूकें। इस ढंग की भूगोल की पुस्तक आज तक देखने में नहीं आई थी। और और भूगोलों में जितनी बातें हैं वे तो इस में कुल मिलेहीगी बल्कि यहां तक कि ऐसी२ बातें लिखी गई हैं जो और किसीमें नहीं है।

एक बात बड़े खेद की है कि प्रेस में बहुत कापी खो गई और वे सब बड़े काम की थी परंतु इतना है कि यदि सज्जन लोग इसका प्रचार करेंगे तो दूसरी बार वे सब फिर से संग्रह की जायगी और छाप दी जायगी। प्रेस में कापी छूटने का कारण यह हुआ कि यहां से जो कुछ चिट्टपुर्जा भेजा गया था उस में से कहीं इधर उधर हो गया।

मैं तो यहां तक समझता हूं (यद्यपि मेरा समझना उलटा होवे) यदि विद्यार्थियों को अवश्य इम्तिहान पास करना हो तो कुछ समय को इस भूगोलदर्पण में अर्पण करना चाहिये और यदि भूगोल के अनेक विषय इकट्ठे देखने हो तो भी इसी में मिलेंगी। इसलिये सब लोगों को (इम्तिहान देने वाले विद्यार्थियों को) चाहिये कि इसी भूगोल को पढ़ें। इन सब गुणों के सिवाय मूल्य इस का इतना कम रक्खा गया है कि जिस से कम कोई रख ही नहीं सकता। क्योंकि मैंने जितनी छपाई और कागज़ का दाम है उस से कुछ भी अधिक इसका मूल्य नहीं रक्खा क्योंकि मेरी इच्छा इससे विद्यार्थियों का लाभ होना है न कि व्यापार। और दूसरे दूसरे भूगोलों के हिसाब से इसका दाम एक मुद्रा होना चाहिये परंतु मैं इसका मूल्य ६ आना रक्खा है। मैं तो कह सकता हूं कि न ऐसी सस्ती कोई पोथी भूगोल की है और न होगी। यदि ऐसी सस्ती और काम की कोई पोथी ठहरे तो मैं इस पुस्तक को अवश्य वापस लेऊंगा।

इस विद्यार्थी ने जिन जिन ग्रन्थों का वा लेखों से संग्रह उन की तालिका भी नीचे लिखी गई है।

ग्रन्थ का नाम	ग्रन्थ कर्त्ता का नाम
१—भूगोलवर्णन	महामहोपाध्याय बापूदेव शास्त्री।
२—भूगोलवर्णन	एशियाटिक सोसाइटी।
३—बालबोध पुष्पमालिका	श्रीमति पादरी वालृश साहिब की मेम।
४—हिन्दुस्तान का भूगोल	मुंशी दर्शनलाल।
५—अपरप्राइमरी भूगोल	मुंशी सेवाराम व रामेश्वर प्रसाद।
६—भूगोल कौमुदी	चुन्नीलाल।
७—पश्चिमोत्तर और अवध का प्राकृतिक ऐतिहासिक और राजनैतिक संक्षेप वृत्तांत	भगवानदास वर्मा।
८—भूगोल पश्चिमोत्तर व अवध देश	मुं० श्रीनारायण।
९—भूगोलरत्नाकर	मुं० चिंतामणि।
१० भूगोलदीपिका	प० घासीराम।
११ भूगोलविद्या	मिसवर्ड साहिबा।
१२ भूगोलवर्णन	मुं० रामप्रसाद।
१३ भूतत्वप्रदीप	मुं० रामप्रकाश लाल।
१४ छोटाभूगोल वर्णन	गनपत सिंह।
१५ भूगोलविद्या का प्रश्नोत्तर	
१६ भूगोलविद्या	बालकृष्ण शास्त्री।
१७ जगद् भूगोल	पं० ईश्वरी प्रसाद।
१८ गयामहात्म सटीक	पंडित टिस्वस झा।
१९ गयामहात्म संग्रह	
२० पुनपुना महात्म	
... भूगोल दर्पण	

हैं।
...गरेज़ी
...कट्ठा कर

२२ भूगोल हस्तामलक २३ छोटाभूगोलहस्तामलक	} राजा शिवप्रसाद।
२४ भूगोलबोधिनी २५ अपरप्रादमरी भूगोल	} मुं० लच्छमण लाल।
२६ मिडल क्लास भूगोल	मुं० सेवाराम व रामेश्वर प्रसाद।
२७ परदेश वृत्तांत	
२८ सूबे बंगाल का इतिहास २९ गया का भूगोल	} शिवनारायण त्रिवेदी।
३० सूबे बंगाल का इतिहास	मुं० शिवनन्दनसहाय।
३१ "	दीनदयाल सिंह।
३२ हिन्दुस्तान का पूरा इतिहास	केशवराम भट्ट।
३३ हिन्दी की पुस्तक चारोभाग	
३४ बालदीपक चौथा भाग	पिंकाट साहिब।
३५ हिन्दी की पहली, २ री चौथी पुस्तक	}
३६ हरिश्चन्द्र की यात्रा	भारतेंदु हरिश्चन्द्र।
३७ दक्षिणदिग्यात्रा ३८ पूर्वदिग्यात्रा ३९ पश्चिमदिग्यात्रा ४० जन्मभूमियात्रा ४१ लखनौ का इतिहास	} पं० दामोदर शास्त्री।
४२ अवध महात्म	
४३ दिल्लीदरबार दर्पण	भारतेंदु हरिश्चन्द्र।
४४ वीरनारी	रामकृष्ण भारतजीवन सम्पादक
४५ स्काटलैंड की यात्रा	महाराज ईश्वरीप्रसाद सिंह काशीर
४६ भूगोलसार	पं० ओंकार नाथ।
४७ पुरुषपरीक्षा सटीक	चंदा झा।
४८ प्रथमभूगोल	गनपत सिंह।

४९ भूगोलचंद्रिका — पं० रामजतन मिश्र।
५० भूगोलभरतखंड — पं० बंशीधर।
५१ भूगोलतत्व — पं० काशीचरण।
५२ इतिहास भूगोल ज़िला एटा — पं० कुंदन लाल।
५३ भूगोल ज़िला जालौन — पं० मूलचंद।
५४ प्राकृत भूगोल — सजीवन लाल।
५५ भूगोलहिन्दुस्तान — दीनदयाल तिवारी
५६ जुगराफ़ियह अवध — पं० शिवनारायण।
५७ गोरखपुरदर्पण — पं० ठाकुरदत्त
५८ वाक्यप्रपंचदर्पण — पं० मथुरा प्रसाद मिश्र।
५९ हंटर का इतिहास।
६० खुलासा हिंदुस्थान के लोगों के संक्षिप इतिहास। — शिवाराम।
६१ नेपाल का इतिहास — बंगला।
६२ राजस्थान
६३ बिसेनवंश वाटिका — महाराजाधिराज कुमार लाल खड्ग बहादुर मल्ल।
६४ भिनगा राजवंश — महाराज उदयप्रताप आद्यादत्त सिंह बहादुर।
६५ पृथ्वीराजरासो की नवीनता — महामहोपाध्याय कविराज श्यामलदास
६६ कालिदास की यात्रा।
६७ बिहार पेजंट लाइफ़ — जी० ए० ग्रियर्सन साहिब बहादुर।
६८ वर्षदिवाकर।

६९ काशीपत्रिका।
७० क्षत्रियपत्रिका।
७१ हिन्दोस्थान।
७२ सज्जनकीर्तिसुधाकर।
७३ हरिश्चन्द्र मोहन चन्द्रिका।
७४ विद्यार्थी।
७५ काव्यमाला।
७६ ब्राह्मण।
७७ हिंदी प्रदीप।
७८ भारतमित्र।
७९ सारसुधानिधि।
८० आर्य्यावर्त्त।
८१ जयपुर गजट।
८२ रतलाम गजट।
८३ राजस्थानसमाचार।
८४ भारतजीवन।
८५ कविवचन सुधा।
८६ मित्रविलास।
८७ बिहारबंधु।
८८ मोतीचूर।
८९ विद्याविनोद।
९० प्रयाग समाचार।
९१ भारतवर्ष।
९२ अबला हितकारक।
९३ हरिश्चन्द्रकला।
९४ प्रजाबंधु।
९५ भारतेन्दु।

भूगोल

पृथ्वी के आकार, परिमाण और गति का विषय।

पृथिवी नारंगी के तुल्य बहुधा गोल है।

कई प्रमाण हैं कि पृथिवी चपटी नहीं है।

जब कोई जहाज समुद्र में तीर गति आता हुआ दीख पड़ता है तो पहिले उसका पाल दृष्टि में आता है, और जैसा २ जहाज समीप आता है तैसा २ क्रम से प्रकाशित होता है।

मनुष्य समुद्र की यात्रा में पूर्व वा पश्चिम दिग को जाते २ अंत को प्रारंभ के स्थानही में आ पहुंचते हैं।

पृथ्वी के परिक्रमा करनेवालों में जहां तक मालूम हुआ है सब से पहले १५१८ ईसवी में मागालायनस यात्रा की है तदनंतर ड्रेक, ऐनसन, कुक आदि जहाजी लोग जहाज पर चढ़कर बिना दिशा बदले कुछ दिनों के बाद सारी पृथ्वी घूमकर उसी स्थान पर आपहुंचे जहां से पहले चले थे। यदि पृथ्वी चौकोर अथवा आइने की सी होती तो जहाजी कभी इस प्रकार से घूमकर पहली जगह नहीं पहुंच सकते। कोई कोई पृथ्वी को चौकोर अथवा आईने की सी बताते हैं परन्तु हिन्दुओं के ज्योतिष शास्त्र में भी पृथ्वी को गोल ही बताया है पर अब अंगरेज़ी जहाज़ों को समुद्र में चारो ओर घूम आने से इस बात में कुछ भी संदेह बाक़ी न रहा, क्योंकि जब वह जहाज़ भी बराबर सीधा एक ही

दिशा को मुंह किए चला जाता है, चलते चलते कुछ दिनों पीछे बिना दहने बांए मुड़े फिर उसी स्थान पर आ जाता है जहां से चला था तो इस हालत में पृथ्वी का आकार सिवाय गोल के और किसी प्रकार का भी नहीं ठहर सकता।

जब चन्द्रग्रहण होता है तब पृथिवी की छाया जो चन्द्रमा पर पड़ती है सदा गोल रहती है, यदि धरती गोल न होती तो चन्द्रमा पर उसकी गोल छाया न देख पड़ती, क्योंकि गोल वस्तु बिना किसी वस्तु की छाया सर्वत्र गोल नहीं पड़ती है।

यदि पृथ्वी गोल न होती तो क्यों पुरनिया से देखनेवालों को हिमालय पर्वत की बर्फ से ढंपी हुई चोटी ही केवल दृष्टि तले पड़ती और पर्वत का बाकी भाग न दिखाई देता।

यह भी सब से बड़ा प्रमाण है कि यदि पृथ्वी चिपटी होती तो सारे भूमण्डल पर सूर्योदय का समय भी एक ही होता परन्तु यह बात नहीं पाई जाती हम ज्यों २ पूर्व या पश्चिम जाते हैं त्यों २ पहले या पीछे सूर्योदय पाते हैं।

धरतीका व्यास अर्थात् मध्यसूत्र प्रायः चार सहस्र कोश है, और घेरा उसका प्रायः साढ़े बारह सहस्र कोश है *।

पृथ्वी का गोल होना तो सब भांति सिद्ध हो चुका, अब यह बात जाननी रह गई है कि यह गोला चलता या ठहरा

---

* कोई २ कहते हैं कि पृथ्वी का उ० द० का व्यास ७९०० मी० और पू० प० का व्यास ७९२६ मी० और परिधि २५००० मी० है, और कोई कहते हैं कि २५०२० मी० परिधि है।

हुआ है। जहां तक हमलोग देख सकते हैं पृथ्वी स्थिर और सूर्य्य चन्द्रमा आदि भ्रमण करते हुए दिखलाई पड़ते हैं, परन्तु यह हम लोगों का भ्रम मात्र है, हकीकत में यह ऐसा नहीं है। सच पूछो तो सूर्य्य पृथ्वी की प्रदक्षिणा नहीं करता और वह स्थिर है, किन्तु हमारी पृथ्वी ही सूर्य्य की चारो ओर घूमा करती है। यद्यपि पूर्व समय में लोगों को यही मतिभ्रम था परन्तु सम्प्रति उस की भ्रांति दूर हो गई और यह बात पूर्णरूप से निश्चित हो चुकी है कि सूर्य्य स्थायी और पृथ्वी चलनेवाली है। इस पर भी यदि कोई कहे कि सूर्य्य जो प्रत्यक्ष में चलता हुआ दिखलाई पड़ता है उस को हम ठहरा हुआ कैसे कह सकते हैं तो उस के लिये यह प्रमाण पूरा होगा कि जब किसी रेल के स्टेशन पर दो ट्रेन (गाड़ियों की श्रेणी) खड़ी रहती हैं और उन में से एक खुल जाती है तो खड़ी हुई गाड़ियों के यात्रियों को यही ज्ञान पड़ता है कि उन की गाड़ी चल रही है। जब कि यथार्थ में उन की गाड़ी नहीं चलती और ज्यों की त्यों उसी स्थान पर खड़ा रहा करती है, और यह बात उन के जी से उस घड़ी लों नहीं दूर होती कि जब तक उन की दृष्टि स्टेशन की ओर नहीं पड़ती, जहां स्टे-शन की ओर आंखें फिरीं कि बस साथ ही उन का भ्रम दूर हुआ! नाव के चढ़नेवालों को भी इस बात का पूरा अनुभव हो सकता है क्योंकि जब नदी के बीच में एक नाव लंगड़ पर खड़ी रहती है और कोई दूसरी नाव उधर से जाती रहती है तो उस लंगड़वाली नाव के मनुष्य को यह

सन्देह हो जाता है कि हमारी ही नाव चल रही है, पर ज्यों हीं उस को आंख लंगड़ की डोर पर जा पड़ती है, उस को विश्वास हो जाता है कि उस की नाव जहां की तहां बंधी हुई है और दूसरी नाव जा रही है। इसी प्रकार से हमलोगों के देखने में सूर्य्य पूर्व से पश्चिम को जाता हुआ ज्ञान पड़ता है परन्तु यथार्थ में यह पृथ्वी है जो पश्चिम से पूर्व को ओर सूर्य्य की प्रदक्षिणा किया करती है, और इस के साक्षीभूत आकाश के तारे हैं, क्योंकि यदि सूर्य्य आकाश में चलता होता तो ये तारे भी अवश्य घूमते और अपनी जगह बदला करते ।

अस्तु ! पृथ्वी की गति भी सिद्ध हो चुकी, पर अब तक यह नहीं कहा गया कि यह किस पर, कैसे और किस काल में घूमती है। पृथ्वी गोल होने के कारण अपनी धुरी पर घूमा करती है (धुरी वह कल्पित रेखा है जो उत्तर ध्रुव से दक्षिण ध्रुव लों सीधी चली गई है) इस की गति दो प्रकार की होती है, एक दैनिक (Diurnal) और दूसरी साम्वत्सरिक (Annual) पृथ्वी का २४ घंटे में अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व को भ्रमण करना ही दैनिक और जो ३६५ † दिन ६ घंटे में वह सूर्य्य की परिक्रमा कर आती है उसी का नाम साम्वत्सरिक गति है।

ऊपर कह चुके कि पृथिवी की दो गति हैं १ यह

† मिस्टर डी० टी० ऑसटेड के अनुसार पृथ्वी को ३६५ दिन ५ घंटा ४८ मिनट ५,७ $\frac{3}{4}$ में से ५,६५,०००००० मी० की दौड़ दूलनी होती है।

अपनी धुरीपर और २ सूर्य्य के चारों ओर घूमा करती है, जैसा कि गेंद फेंकी जावे तो उसकी गति दो रीति की होती है। तीसरे चंद्रमा के साथ भी पृथ्वी चलती है।

जितने समय में पृथिवी अपनी धुरी पर एक बार घूम जाती है, उसी काल को दिन रात्रि कहते हैं।

मनुष्यों ने दिन रात्रि को चौबीस समान खण्डों में जिन्हे घण्टे कहते हैं विभाग किया है।

पृथिवी के अपनी धुरी पर घूमने के कारण से अंधेरा (रात्रि) और उंजेरा (दिन) होते हैं। जबलों कोई देश सूर्य्य के सन्मुख है वहां उंजेरा अर्थात् दिन होता है और जब वही देश धरती के अपनी धुरी पर घूमने के कारण से सूर्य्य के सन्मुख से फिर जाता है तब वहां रात्रि होती है।

पृथिवी सीधी रेखा पर गमन नहीं करती किन्तु चार करोड़ पचहत्तर लाख कोश के अन्तर से सूर्य्य के चारों ओर अंडाकार मार्ग में चलती है।

पृथिवी अपने मार्ग में प्रायः तीन सौ पैंसठ दिन छः घण्टे के अन्तर में उसी स्थान पर पहुंचती है जहां से चली थी, उस काल को वर्ष कहते हैं। यह पढ़ लेकह चुके हैं।

पृथिवी की अपनी धुरी पर की गति को प्रात्यहिक वा आन्हिक कहते हैं, और सूर्य्य के चारों ओर की गति को वार्षिक वा साम्वत्सरिक कहते हैं।

पृथिवी उस कल्पित रेखा पर घूमती है जो उसके बीच होकर उत्तर और दक्षिण केन्द्र में समाप्त होती है, उस रेखा को उसकी धुरी कहते हैं।

केन्द्र दो हैं पहिला धुरी का उत्तर सिरा जिसे उत्तर केन्द्र कहते हैं, और दूसरा दक्षिण सिरा जिसको दक्षिण केन्द्र कहते हैं कृत्रिम भूगोल में उत्तर केंद्र सदा ऊपर रहता है।

नक़्शा पृथिवी के ऊपर के भाग का चित्र है, और उत्तर सदा उस की चोटी पर है। अर्थात् नक़्शा पृथ्वी या पृथ्वी के भाग की ऐसी तसवीर को कहते हैं जो धरातल पर खिंची हो और पिण्डाकार तसवीर को गोला कहते हैं। नक़शे में उत्तर ऊपर की ओर और दक्षिण नीचे के ओर और पूर्व दाएं हाथ की तरफ़ और पश्चिम हाथ की तरफ़ होता है।

नीचे लिखे हुए चित्र के अनुसार से और दिशा जानी जाती हैं।
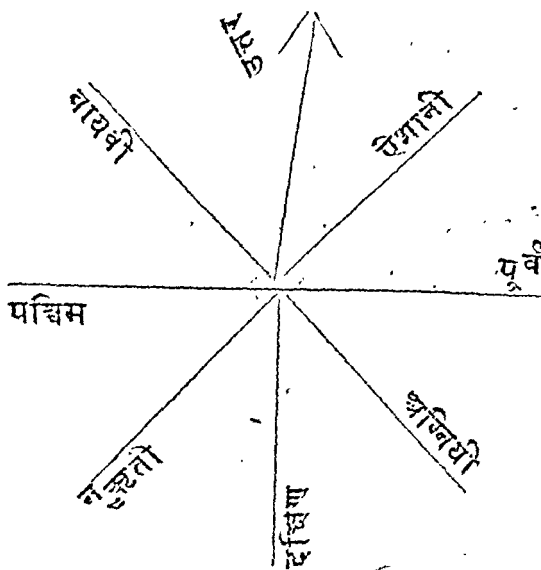
इन दिशाओं में से चार अर्थात् उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम मुख्य कहाती हैं।

भूगोल विद्या में पृथिवी के बहिर्भाग का वर्णन है ।

पृथिवी का बहिर्भाग जल और स्थल में विभक्त है, उसकी दो तिहाई से अधिक जल है, और शेष स्थल है ।

स्थल के जो भाग आकार और परिमाण में एक से हैं वे एकही नाम से प्रसिद्ध हैं ।

द्वीप स्थल के उस भाग को कहते हैं, जिस के चारों ओर जल है !

पृथिवी में दो अतिविस्तृतद्वीप हैं, उन्हें महाद्वीप कहते हैं ।

प्रायद्वीप पृथिवी के उस भाग को कहते हैं, जो बहुधा जल से घिरा हो अर्थात् जिस के तीन तरफ पानी हो ।

डमरूमध्य पृथिवी के उस सूक्ष्म भाग को कहते हैं, जो प्रायद्वीप को महाद्वीपसे अथवा एक महाद्वीप को दूसरे महाद्वीप से मिला देता है ।

अन्तरीप उस भूखण्ड के अन्त को कहते हैं, जो समुद्र में निकला हुआ रहता है अर्थात् जो पृथ्वी का भाग क्रम क्रम से पतला होकर पानी में दूर तक चला गया हो उस के आगे के भाग को अंतरीप कहते हैं ।

पहाड़ वा पर्वत दीर्घ पत्थरैली उच्च भूमि को कहते हैं, जो हिमालय के तुल्य हिम से ढंपा हुआ रहता है । कोई कोई कहते हैं कि पहाड़ स्थल के उस ऊंचे भाग को कहते हैं जो पृथ्वी तल से २००० फीट अधिक ऊंचा हो ।

पहाड़ी उसे कहते हैं जो पर्वत से ऊंचाई में कम हो कोई कोई कहते हैं स्थल के ऊंचे भाग को कहते हैं जिस की ऊंचाई दो हजार फीट से कम हो ।

पर्वतश्रेणी उन पहाड़ों को कहते हैं जो एक दूसरे से मिले हुए चले जाते हैं।

घाटी स्थल के उस भाग को कहते हैं जो दो पहाड़ अथवा पहाड़ियों के बीच में हो।

दर्रह अथवा पास उस तंग रास्ते को कहते हैं जो दो पहाड़ या पहाड़ियों के बीच में होता है।

नासिका पर्वत पहाड़ के उस कम चौड़े खण्ड को कहते हैं, जो दूर लों समुद्र में जाता है, उस के अन्त को भी अन्तरीप कहते हैं।

ज्वालामुखी उस पहाड़ को कहते हैं जिस से आग निकलती है।

देश महाद्वीप के उस बड़े भाग को कहते हैं जिस में एक तरह के आदमी और राज्य हों।

बादशाहत उतने देश को कहते हैं जितना एक बादशाह के आधीन हो।

प्रजाधिकारीराज्य उसे कहते हैं जहां बादशाह न हो परन्तु चुने हुये लोग राज करते हों।

सूबा उसे कहते हैं जिस में बहुत से ज़िले और क़िस्मत मिले हों।

क़िस्मत या कमिश्नरी उतने भाग को कहते हैं जो १ कमिश्नर के आधीन कई ज़िले हों।

ज़िला १ शहर और उस से सम्बन्ध रखनेवाले गांवों को जो १ कलक्टर या डिपटीकमिश्नर के आधीन हो कहते हैं।

राजधानी किसी सूबे या देश के उस प्रधान शहर को कहते हैं जहां मुख्य न्याय सभा (अदालत आलिया) हो।

व्योपार का नगर या मण्डी उस शहर को कहते हैं जहां सौदागर रहते हैं और व्योपार बहुत होता है।

मैदान स्थल के चौरस भाग को कहते हैं।

प्लेटो उस चौरस मैदान को कहते हैं जो कुछ ऊंचा हो।

करवाह अफ्रिका के दक्षिणी मैदानों को कहते हैं।

स्टेप रूस और साइबीरिया के मैदानों को जहां पेड़ नहीं होते कहते हैं।

प्रेरी या सेवाना उत्तरीय अमेरिका बन (चरागाह) जहां लम्बी घास उगी रहती है कहते हैं।

सलवा अमेज़ान नदी के किनारे पर के जंगल को कहते हैं।

लेनोज़ ओरेनिको नदी किनारे के बराबर खेतों को कहते हैं।

पम्पाज़ लप्लाटा नदी के पानी से तर जंगलों को जहां बड़ी घास उपजती है कहते हैं।

लैण्डीज़ दक्षिणी फ्रांस के मरुस्थलों को कहते हैं।

टंड्राज़ साइबीरिया के दलदल को जिस का ढलान उत्तर सागर की ओर है कहते हैं।

मरुस्थली ऐसे बड़े मैदानों को कहते हैं जहां रेत बहुत हो।

ओएसिस अथवा शाद्वलस्थल उस हरियाली जगह को जो मरुस्थलों में आ पड़े कहते हैं।

उपकूल समुद्र के पास की पृथ्वी को कहते हैं।

बहुत से द्वीपों को जो पास पास होते हैं द्वीप समुदाय कहते हैं जैसे हिंद का द्वीप समुदाय जो हिन्दुस्तान के दक्षिण देश में है ।

जल के जो भाग आकार परिमाण में एक से हैं वे एकही नाम से प्रसिद्ध हैं ।

जल के अति विस्तृत खण्डों को महासागर कहते हैं । कभी २ धरती के समस्त जल को भी महासागर कहते हैं ।

सागर (समुद्र) महासागर के उस बड़े भाग को कहते हैं जो बहुधा स्थल से घिरा है ।

खाड़ी समुद्र के उस छोटे भाग को कहते हैं जो धरती में दूर लों धसा गया है ।

यदि खाड़ी का मुंह चौड़ा हो तो वह खलीज कहाता है ।

मुहाना जल के उस सूक्ष्म खण्ड को कहते हैं, जो समुद्र को महासागर से अथवा एक समुद्र को दूसरे समुद्र से मिला देता है ।

झील जल के उस भाग को कहते हैं, जो स्थल से सम्पूर्ण घिरा है ।

जल की धारा जो पर्वत अथवा पहाड़ी अथवा झील से निकल के समुद्र में प्रवेश करती है, उस को नदी कहते हैं । समुद्र में नदी के प्रवेश स्थान को सङ्गम कहते हैं । और जहां एक नदी दूसरी से नदी मिलती है उस स्थान को संगम कहते हैं । जहां तीन नदियों का मिलाप होता है उसे त्रिवेणी अथवा त्रिमुहानी कहते हैं ।

जिस नदी का जल दूसरी नदी में जा गिरता है उस को सहायक नदी कहते हैं ।

नदी से काटकर किसी दूसरी जगह पानी ले जाते हैं उसे नहर कहते हैं।

जो जलधारा एक नदी से निकलकर भिन्न दिशाओं में बहती हुई समुद्र में जा गिरती है, उसे शाखानदी कहते हैं।

जब नदी बहुत सी शाखाओं में विभक्त होकर समुद्र में प्रवेश करती है, तब शाखाओं के मध्य में जो त्रिभुज भूखण्ड रहता है, वह त्रिभुज अथवा डेल्टा नाम से प्रसिद्ध होता है।

आखात बहुत चौड़ी खाड़ी को कहते हैं।

फ़िर्थ या दूरन्दूरी उस जगह को कहते हैं जहां कोई नदी बहुत चौड़ी होकर समुद्र में गिरती है।

किनारा या तट स्थल के उस भाग को कहते हैं जो पानी के किसी भाग से मिला हो।

बंदर वह जगह है जहां जहाज लंगर डालते हैं।

सोता पानी के उस भाग को कहते हैं जो पृथ्वी से निकला हो।

उद्गम उस जगह को कहते हैं जहां से नदी निकलती है और मुहाना जहां नदी गिरती है, और दुआबा दो नदियों के बीच के देश को कहते हैं।

जलप्रपातस्थान या झरना उस जगह का नाम है जहां किसी नदी का पानी कुछ ऊंचाई से गिरे।

वेसिन स्थल के उस भाग को कहते हैं जो किसी नदी और उस की शाखा और सहायक नदियों से सींचा जाता हो।

वाटर शेड या नदी जल विभागिक स्थल के उस ऊंचे भाग को कहते हैं जो दो बेसिन को अलग करे।

वायु मण्डल हवा के उस चक्र का नाम है जो पृथ्वी को घेरे हुए है।

ट्रेड विण्ड अथवा व्योपारी हवा उस हवा को कहते हैं जो मकर और कर्क रेखा के बीच के समुद्रों में सदा पूर्व से पश्चिम को चला करती है। इस का यह नाम पड़ने का कारण यह है कि इस से व्योपारी जहाजों के आने जाने में सुगमता होती है अथवा इस कारण से कि वह सदा एक ही ओर से चला करती है।

मानसून अथवा मौसमी हवा वह है जो हिन्दुस्तान के समुद्र में और तमाम हिन्दुस्तान में अप्रैल से अकतूबर तक दक्षिण पश्चिम से और अकतूबर से अप्रैल तक उत्तर पूर्व से चला करती है।

चक्रवात अथवा बगूला हवा के तेज़ चक्कर और ज़ोरदार झोंके को कहते हैं।

समूम उस गरम हवा को कहते हैं जो अरब और उत्तरी आफ्रिका के रेगिस्तान (मरुस्थलों) में चलती है।

ज्वारभाटा समुद्र के घटने और बढ़ने को कहते हैं जो नियत समय पर सूर्य और चांद के आकर्षण से होता है।

आबोहवा से किसी मुल्क की ऋतु पर्य्याय आदि सूचित होती है इस का असर उस मुल्क की वनस्पती, और जीवधारियों और निवासियों के कार बार और स्वभाव पर होता है।

भूगोल के कल्पितरेखाओं की परिभाषा ।

भूमध्यरेखा वह कल्पित रेखा है जो ध्रुवों से बराबर दूरी पर पृथ्वी के आस पास खींची हुई है और पृथ्वी के दो बराबर भाग करती है ।

मध्यान्ह रेखा वह वृत्त हैं जो पृथ्वी के आस पास ध्रुवों पर होते हुए जाते हैं ।

आन्हिक वृत्त वह छोटे वृत्त हैं जो भूमध्य रेखा के समानान्तर खींचे गये हैं ।

मकर और कर्क रेखा वह छोटे वृत्त हैं जो भूमध्य रेखा से साढ़े तेईस २ अंश के अन्तर पर दक्षिण और उत्तर की ओर हैं ।

देशान्तर किसी नियत मध्यान्ह रेखा से पूर्वी या पश्चिमी दूरी को कहते हैं ।

अक्षांश भूमध्यरेखा से उत्तर या दक्षिण दूरी का नाम है ।

ध्रुव वृत्त वह छोटे वृत्त हैं जो ध्रुवों से साढ़े तेईस २ अंश की दूरी पर पृथ्वी के आस पास खींचे गये हैं ।

क्षितिज वह वृत्त है जो शीर्ष बिन्दु और पदतल बिन्दु से नव्वे अंश दूरी है ।

गरमी और सरदी के कारण पृथ्वी पांच भागों में बांटी गई है जिनको कटिबन्ध कहते हैं ।

उष्णकटिबन्ध जो मकर और कर्करेखाओं के बीच में है ।

उत्तरीय मध्यम कटिबन्ध जो उत्तरीय ध्रुववृत्त और कर्करेखा के बीच में है ।

दक्षिणीय मध्यम कटिबन्ध जो दक्षिणीय ध्रुव वृत्त और मकर रेखा के बीच में है।

उत्तरीय शीत कटिबन्ध जो उत्तरीय ध्रुव वृत्तमें है।

दक्षिणीय शीत कटिबन्ध जो दक्षिणीय ध्रुव वृत्त में है।

शीर्षबिन्दु उस बिन्दु को कहते हैं जो ठीक सिर को सीधो में है और पदतल बिन्दु हमारे पैरों के नीचे और बिन्दु के सामने है।

वृत्त वह वृत्त जो किसी गोले के बराबर दो भाग करे बड़े वृत्त, और वह जो दो छोटे बड़े भाग करें छोटे वृत्त कहलाते हैं।

लंडन नगर के पूर्वीय अर्द्ध खण्ड में जो महाद्वीप, द्वीप, समुद्र इत्यादि हैं, अर्थात् एशिया, यूरप और आफ्रिका पुराने जगत के नाम से प्रसिद्ध हैं।

लंडन नगर के पश्चिमीय अर्द्ध खंड में जो महा द्वीप, द्वीप है अर्थात् अमेरिका को नया जगत कहते हैं।

पृथिवी के ये दो खण्ड पुराना और नया जगत इस कारण कहलाते हैं कि पुराना जगत पहिले बसा था, और नये जगत का समाचार वहां के लोगों से सम्पूर्ण गुप्त था, जब लों कि १४९२ ईसवी में यूरप के विख्यात नाविक कलम्बस साहिब ने उस को प्रकाशित न किया।

ये दोनों महाद्वीप अपने अपने द्वीप सहित चार भाग में विभक्त किये गये हैं, जिन को खण्ड कहते हैं।

पुराने जगत में तीन खण्ड हैं अर्थात् यूरप, एशिया

और आफ्रिका, और नये जगत में अवशिष्ट खण्ड अर्थात् आमेरिका है।

इन चार खण्डोंमें से यूरप छोटा है किन्तु उस में मनुष्य बहुत हैं, और उस के लोग बुद्धि, धन और पराक्रम में भी श्रेष्ठ हैं।

इस विभाग के किये जाने के उपरांत अनेक नये द्वीप प्रगट हुये हैं, जो और दो खंड अर्थात् आष्ट्रेलेशिया और पालिनिशिया में विभक्त किये गये हैं।

न्यूहालेण्ड जिस को आस्ट्रेलिया कहते हैं, (यह पृथिवी के सब द्वीपों से बड़ा है,) और न्यूगीलेण्ड और उन के निकट के अनेक टापुओं को आष्ट्रेलेशिया कहते हैं।

पासिफिक महासागर में जो छोटे २ द्वीप विस्तृत हैं, उन को पालिनिशिया कहते हैं।

देश पृथिवी के उस भाग को कहते हैं जो एक सम्पूर्ण जाति से बसा है, और जिस में अनेक नगर और ग्राम हैं।

सम्राज्य उस को कहते हैं, जिस में अनेक देश और राज्य मिले हैं।

संपूर्ण महासागर पांच बड़े भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम उत्तरहिमसागर, जो यूरप, एशिया और आमेरिका के उत्तर किनारे से लेके उत्तर केन्द्र लों स्थित है।

द्वितीय दक्षिणहिमसागर, जो दक्षिण केन्द्र के चारों ओर है. यह सागर सदा बर्फ से ढंपा रहता है, इस कारण से मनुष्य उसकी यात्रा कम करते हैं।

तृतीय अटलाण्टिक महासागर, जिस्के पूर्व में यूरप आफ्रिका हैं, और जिस्के पश्चिम में अमेरिका है।

चतुर्थ पासिफिक, अर्थात् स्थिर महासागर, जिस्के पश्चिम में एशिया और आष्ट्रेलिया हैं, और जिस्के पूर्व में अमेरिका है।

पञ्चम हिन्द का महासागर, जो आफ्रिका से आष्ट्रालियाओं और हिन्दुस्थान से दक्षिण महासागरओं फैला हुआ है।

शासन अर्थात् हुकूमत।

यथेच्छाचार प्रणाली उसे कहते जहां के राजा की हाथ में कुल प्रबंध हो और जब जो कुछ मन में आवे कर सक्ता हो।

नियमतंत्रप्रणाली उसे कहते हैं कि राजा का इख्तियार हो पर तो भी उसे बहुत से नियमों के अनुसार चलना पड़े।

साधारणतंत्रप्रणाली उसे कहते हैं कि कोई राजा न हो वहां की प्रजा अपने में से कईएक बरस के लिये एक योग्य मनुष्य को चुनकर राजा का कुल काम सौंप दे और उस की सहायता के लिये साधारण लोगों की एक, सभा कायम करे और उस शख्स का उस सभा के साथ एक मत होकर काम करना पड़े।

प्रजातंत्रप्रणाली उसे कहते हैं कि राजा प्रजा की बिना सम्मति कोई काम न कर सके पर बहुत से मुक़र्रर कायदा के मुताबिक राज का काम अन्जाम करे और उस के यहां प्रजाओं की एक सभा रहे जो उस राज में सहायता करे।

धर्म्म ।

इस संसार में अनेक प्रकार के धर्म्म हैं उन में हिंदू (आर्य्य) बौध, यहूदी, ईसाई, पारसी, और मुहम्मदी आदि प्रधान धर्म्म हैं, ये सब धर्म्म अपने २ धर्म्म शास्त्र के अनुसार चलते हैं, जिन महापुरुषों ने इन धर्म्म शास्त्रों को बनाया उन महापुरुषों को उन धर्म्मों के मानने वाले भर्म्म रहित और सच्चा ईश्वर का दया पात्र मानते हैं प्रत्येक मनुष अपने२ धर्म्म शास्त्र को संदेह रहित और परम पवित्र कहते हैं, और दूसरे धर्म्म शास्त्र को ठीक इस के विरुध मानते हैं इस लिये उन की निन्दा करते हैं, परन्तु मेरी राय मे किसी की निंदा नहीं करनी। एक पुरुष के साथ स्त्री दूसरे भाव से बहीन दूसरे भाव से माता दूसरे भाव से पिता दूसरे भाव से बर्तते हैं यदि एक कहे कि दूसरा मेरा हो भाव स्वीकार करे तो कैसा अनर्थ और पोच समझ है बस पृथक् पृथक भाव रखना ही उचित है।

आदमी।

आदमियों की पांच जाति है। ककेशीय, मंगोलीय, नीगरो वा हबशी, मलय जाति और अमेरिक हैं।

ककेशीय लोगों का रंग गोरा, सिर गोल, पेशानी चौड़ी, नाक बड़ी और ऊंची, बाल लंबे, दाढ़ी बड़ी और मुख कोन बड़ा होता है। एशिया के द० प० अफ्रिका के उ० और उ० पू० और यूरप के प्राय: सब देशों में (सिवाय लेपलेंड, फिनलेंड, और हंगरी और टर्की के किसी भागों के) पाये जाते हैं।

मंगोलीय लोगों का रंग पीला, आंखें तिर्छी और छोटी, सिर ठीक गोल नहीं, नाक छोटी, गला ऊंचा, बाल मोटे

और सीधे, दाढ़ी छोटी और मुख कोन कुछ छोटा होता है। चीन, ब्रह्मा, स्याम, जापान, तिब्बत, तातार, टर्की और साइबीरिया लेपलैंड हंगरी में पाये जाते हैं।

नीग्रो लोगों का रंग काला, नाक फैली हुई और सिर छोटा, पेशानी नीची और टेढ़ी बाल छोटे और घुंघर वाले और ओंठ मोटे होते हैं। ये लोग बड़े मूर्ख होते हैं। अफ्रिका के मध्य और द० भाग में और हिन्द महासागर के द्वीपों में रहते हैं।

मलय जाति के लोगों का रंग भूरा, नाक बड़ी, पेशानी ऊंची मुंह बड़ा और मुख कोन मंगोलीय से छोटा होता है। मलाका, पालिनेशिया, आस्ट्रेलिया और मलेशिया और एशिया के द० पू० के बहुतेरे टापुओं में रहते हैं।

अमेरिक लोगों का रंग लाल, सिर छोटा, नाक तोते की ठोर सी गाल की हड्डी ऊंची और दाग वाले होते हैं। ये अमेरिका के आदि निवासी हैं।

एशिया

सीमा उ० उत्तर समुद्र द० हिन्द का समुद्र, पू० पासिफिक समुद्र और प० रेडसी नामक समुद्र की खाड़ी खोज़का डमरु मध्य, मेडिटरेनियन और ब्लाक सी नामक समुद्र की खाड़ियां डन और वल्गा नदियां और यूरल पहाड़ और यूरल नदी। अक्षांश उ० २ से लेकर ७७ तक, देशांतर पू० २६ से लेकर प १९० तक लम्बाई पू० से प० अधिक से अधिक ७५००मी०, चौड़ाई उ० से द० की ५००० मी०। विस्तार १७५००००० मी० मु०। आबादी इस में १४३ से अधिक बोली जाती हैं। पृथ्वी

इस भाग में ऐसे सर्द मुल्कों से लेकर जहां समुद्र भी जम जाता है, इतने गर्मसेर तक बसे हैं, कि जिन में आदमी सूर्य के तेज से काले होजाते हैं । एशिया का मुल्क इतिहासों में बड़ा प्रसिद्ध है, क्योंकि पहला आदमी जिस से हम सब मनुष्य उत्पन्न हुए पृथ्वी के इसी भाग में पैदा हुआ था, और इसी भाग से सारी बातें बुद्धि विवेक और सुख की निकलनी शुरू हुईं । पहले ही पहल पृथ्वी के इसी भाग में प्रतापी और बलवान राजा हुए, और सब से पूर्व इसी भाग में लक्ष्मी और विद्या का पैर आया ; सिवाय इस के जैसे नदी पहाड़ जंगल और मैदान पृथ्वी के इस भाग में पड़े हैं, और जैसे फल फूल औषधी अन्न पशु पक्षी धातु रत्न इत्यादि इस में पैदा होते हैं ऐसे कदापि दूसरे खंडों में नहीं मिलेंगे । एशिया में नीचे लिखी हुई विलायतें बसी हैं । आदी हिन्दुस्तान उस के पू० बर्म्हा, उस के द० स्याम, उस के द० मलाक्का, स्याम के पू० कोचीन, बर्म्हा के पू० और उ० चीन, उस के उ० एशियाईरूस, चीन के पू० जपान के टापू, हिन्दुस्तान के प० अफ़ग़ानिस्तान उस के प० ईरान, चीन के प० तूरान, ईरान के प० अरब, उस के उ० एशियाई रूस ।

देश ।

हिन्दुस्तान, पूर्वीप्रायद्वीप, चीन, तातार, रूस, तिब्बत, अफ़ग़ानिस्तान, बलूचिस्तान, ईरान, अरब और टर्की (रूस)

नाम देश	नाम राजधानी
एशियाई रूस	इरकाटस्का
जापान	टोकायो या यड्डो

चीन	पीकिन
मञ्चूरिया	मोकडेन
कोरिया	सियोल
मंगोलिया	उरगा
तिब्बत	लासा
पूर्वी तुरकिस्तान	यारकन्द
ब्रह्मा	मांडले
स्याम	बङ्काक
अनाम	ह्यू
हिन्दुस्तान	कलकत्ता
अफ़ग़ानिस्तान	काबुल
बिलूचिस्तान	क़िलात
पश्चिमी तुरकिस्तान	बुख़ारा
फ़ारिस	तेहरान
एशियाई रूम	स्मरना
अरब	मक्का

द्वीप ।

हिन्द महासागर में लंका (सीलोन), मालद्वीप, लाचाद्वीप, सकोट्रा अण्डमनपुंज जिस में हिन्दुस्तान के संगीन अपराधी भेजे जाते हैं, और इसी का नाम काला पानी है, इस का ख़ास शहर पोर्टब्लेअर है, निकोबारपुंज, सिंगापुर, पिनांग । हिन्द और पैसिफ़िक महासागरों के बीच में जो जप द्वीप हैं उन को हिन्द का आर्कपेलेगो अर्थात् द्वीपों के समूह कहते हैं, उन में से बोर्नियो सुमात्रा, जावा, फिलिपा-

इन द्वीप समूह और मलक्कास प्रसिद्ध हैं। पैसिफ़िक महा-सागर में हैनान, हांगकांग (अंगरेजों के इलाके) फ़ारमोसा, चुसन, लूचू, जपान, कुराईल, अलेशियन। बेरिंग मुहाने में फ़ाक्स या अलूशियन द्वीप समूह। मेडिटरेनियनसी में सायप्रस और रोड्स।

प्रायद्वीप।

दक्खिन प्रायद्वीप हिन्दुस्तान के दक्खिन भाग को कहते हैं। पूर्वी प्रायद्वीप (फ़र्दर इण्डिया) बंगाले की खाड़ी और चीन के समुद्र के बीच। कोरिया चीनीतातार के पू०। कमस्कटका रूस के उ० पू०। एशियामाइनर ब्लैक और मेडिटरेनियनसी के बीच। अरब रेडसी और ईरान (अरब) की खाड़ी के बीच।

अन्तरीप।

पूर्वी अन्तरीप रूस के उ० पू०। लोपाट्का कमस्कटक के द०। निम्पो चीन के पू०। कम्बोडिया अनाम के द०। रोमानिया मलाका के द०। निग्रेस पेगू के द० प०। कुमारी हिन्दुस्तान के द०। डण्डहेड लंका के द० रासुलहद अरब के पू०। बाबा एशिया माइनर के प०।

उत्तर की ओर

उत्तरी पूर्वी अंतरीप या सेवेरो, सैबीरिया के उ० पू० में और पूर्वी अंतरीप, बहरिंग के मुहाने पर॥

दक्खिण की ओर

कुमारी अंतरीप हिंदुस्तान के द० में; रोमानिया, मलाका के द० में; कांबोडिया, अनाम के द० में रासुलहद अरब के द० और पू० में।

पूर्व की ओर	पश्चिम की ओर
लुपाका कमस्फटका के द० में	रासबाबा एशियाई रूम के द० में

योजक।

स्वेज इस के एक ओर एशिया और दूसरी ओर आफ्रिका है (इन दिनों एक नहर के द्वारा से रेडसी और मेडिटरेनियनसी मिलाये गये हैं)। क्रा इस के एक ओर स्याम और दूसरी ओर मलाया है ।

पहाड़।

हिमालय पर्वत पृथ्वी भर में सब से उच्चतम है यह भारतवर्ष अर्थात् हिंदुस्तानकी उत्तरीय सीमा में प्रायः १२०० मील की चौड़ाई में फैला हुआ है । वह हिंदुस्तान के इस बड़े क्षेत्र में अनुक्रमिक श्रेणीरूप उद्गत है। उस के उतार अर्थात् उपत्य का भूमि जिसे तराई कहते बड़ी दलदलघी है और नर्कट और बड़ी २ घास से आच्छादित है और वन्यपशुओं का निवासस्थान और बड़ी रोगोत्पादक है । उस की प्रथम श्रेणी की पार्श्व भूमि जिस की चढ़ाई प्रायः तीन सहस्र फुट के है मूल्यवान काष्ठ विशिष्ठ बनों से आवृत है। इस के पश्चात् फिर भूमि अनुक्रमिक रीति बड़ी शीघ्रता से ऊपर को उद्गत होने लगती और फिर प्रायः ७०० ० फुट की ऊंचाई को पहुंच जाती है। इस दिग वा द्वीप में बहुत सी तराई हैं जिन की भूमि उन्हीं पहाड़ी नदियों से हरित रहती और उन में से किसी २ में अच्छे से अच्छा धान होता और बहुत नील भी होते हुए हैं ।

इस पर्वत की मध्य की सब से बड़ी श्रेणी की ऊंचाई मध्य है वह १८००० फुट के लग भग ऊंचो हैं। इवरेष्ट पर्वत का शिखर जो इस वर्त्तमानकाल में सब से उच्चतम जाना गया है सोम मुद्र की जय से २९००० फिट या साढ़े पांच मील की ऊंचाई का नापा गया है ज्यों २ यह शिखर ऊंच होता चला गया है त्यों २ इस का शीतोष्णमान भी उस की ऊंचाई के संग मंद होता गया है। इस श्रेणी के द० एक चिरन्तन हिम की पांति है जिस की ऊंचाई प्राय: १५००० फिट की है। इस के ऊपरीय भाग में वृक्ष बहुत ही छोटे होते और अन्त की उच्चतम भाग में केवल हिम को छोड़ और कुछ नहीं है। इस में तिब्बत देश के जानेकेलिये बहुत की घाटियां भी हैं। और लोग अपने व्योपार के पदार्थ भेड़ों पर लाद के इस देश में लाते हैं। यहां की वायु ऐसी सूक्ष्म है कि स्वास का लेना भी बड़ा कठिन होता है हिमालय शब्द का अर्थ हिम का स्थान हैं। दूर से इस श्रेणी का आकार एक श्वेत मेघ के सदृश जिस के शृंग निकले हुए हों दिखाई देता है। हिंदू लोग यह कहते हैं कि हिमाय पर्वत शिव वा महादेव के रहने का निवासस्थान है और इसी कारण यात्री लोग बहुधा उस के कई एक टिब्बों के दर्शन को जाया करते हैं।

नीलगिरि, पूरब, और पच्छिम घाट, विन्ध्याचल, सतपुरा अर्वली और सुलेमान हिन्दुस्तान में।

हिन्दू कुश अफगानिस्तान और तातार के बीच। एलबर्ज

कैसपियनसी के द०। अलताई रूस के द०। काकेशस (कोह काफ़) कैसपियनसी और ब्लेकसी के बीच। टारस टर्की में, इस के एक ओर मर्मर समुद्र और दूसरी ओर ईरान का देश है। किउनलुन तिब्बत को तातार से पृथक करता है। तायेनशान चीनी-तातार में। बलूरताग़ तातार में, हिन्दूकुश से निकल कर उ० को चला गया है। सीना वा सिनाइ (कोहतूर) जिस पर मूसा को दस आज्ञा यहूदियों की शिक्षा के लिये दिये गये थे, अरब के उ० में है। होरेब यह भी अरब के द० में है। आरारात जिस पर नूह की नाव तूफ़ान के बाद ठहरी थी, और लेबनन ये दोनों टर्की में हैं। पेलिंग, इयनलिंग और नेनलिंग क्रम से चीन के उ०, प० और द० में हैं। एशिया के द० पू० के द्वीपों में से बहुतेरों में ज्वालामुखी पहाड़ हैं, सिवाय इन के कामस्काटका में क्लिउट्चेस्का ज्वालामुखी है और तायनशान पहाड़ में पेशन और हैटचू नाम ज्वालामुखी पहाड़ हैं।

समुद्र।

ओखटस्क समुद्र कामस्कटिया के पू०। जपान का समुद्र कोरिया और जपान के बीच। येलोसी (पीलासमुद्र) कोरिया और चीन के बीच। चीन का समुद्र पूर्वी प्रायद्वीप और फिलिपाइन द्वीप समूह के बीच। बंगाले का समुद्र (खाड़ी) हिन्दुस्तान और पूर्वी प्रायद्वीप के बीच। अरब का समुद्र हिन्दुस्तान और अरब के बीच। रेडसी (लाल समुद्र वा रक्त समुद्र वा लाल सागर) अरब और आफ्रिका के बीच। लिवांट मेडिटरेनियनसी का पूरब भाग इस नाम से पुकारा

जाता है । ओबी की खाड़ी रूस के उ०। मर्तबान की खाड़ी पूर्वी भारतद्वीप के निकट। टोंसकिन की खाड़ी चीन के द० । स्याम की खाड़ी स्याम के द०। मनार की खाड़ी हिन्दुस्तान के द० । कम्बे (खम्भात) और कच्छ की खाड़ी हिन्दुस्तान के प० । ईरान की खाड़ी अरब और ईरान के बीच ।

मुहाना ।

बेरिंग का मुहाना एशिया और अमेरिका के बीच । कोरिया का मुहाना कोरिया प्रायद्वीप और जापान के बीच. मकासर का मुहाना बोर्नियो और सेलेबीज़ द्वीपों के बीच । पाक का मुहाना हिन्दुस्तान और लंका के बीच। बाबुलमंडब का मुहाना अरब और आफ्रिका के बीच। ओर्मज़ का मुहाना ईरान की खाड़ी और अरब के समुद्र के बीच ।

झील ।

केस्पियन झील या समुद्र पृथ्वी की सब खारा पानी की झीलों से बड़ी, ईरान के उ० में है । अरल कास्पियन के पू०, तातार में । लोबनार चीनी तातार में । टौनटिङ्ग और पोयङ्ग चीन में । बालकाश और बैकाल साइबीरिया के द० बैकाल झील का पानी मीठा है और इस के बराबर मीठे पानी की झील एशिया में और कोई नहीं है । पालटी, तेंगी, मानसरोवर और रावण हृद तिब्बत में रहने वाले मानसरोवर और रावण हृद को तीर्थ मानते हैं। चिलका, पुलिकट कोलेर और सांभर हिन्दुस्तान में । पारह या सोस्तान

अफ़गानिस्तान में । मृत सागर (डेडसी) फ़िलिस्तीन के द० में, इस झील के पानी में गन्धक आदि वस्तुओं के मिलने से मछली या और कोई जल जन्तु उस में नहीं रह सकता है, और इस के चारों ओर ऐसी मरु भूमि है कि जिस में एक तृण भी नहीं उपजता । वान और उरमिया झीलें और कास्पियनसी के बीच ।
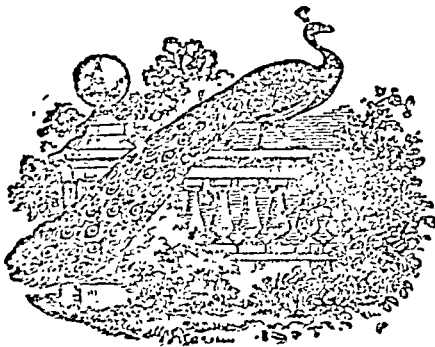
नाम नदी	लंबाई मील में	कहां से निकलती है	कहां हो कर बहती है	कहां गिरती है	किनारे या किनारे के पास के शहर
सिन्ध (इण्डस)	१८००	कैलाश पर्वत के उत्तर से	तिब्बत, पंजाब, सिन्ध	अरब के समुद्र में	ठट्टा, हैदराबाद, भक्कर, मिठनकोट, डेरइगाजी खां, डेरइस्माइलखां, कालाबाग, अटक, इसकर्दो, लेह।
सतलज (घर्रा)	९१०	मानसरोवर झील	पूर्व पंजाब	सिन्ध	बहावलपुर, फीरोजपुर मोवरांव, मच्छीवाल, लोदियाना, रूपर, बिलासपुर, रामपुर।
व्यास	२९०	हिमालय पहाड़	पंजाब	सतलज	नादौन, मंडी, सुलतानपुर।
रावी	४५०	हिमालय पहाड़	पंजाब	चनाब	लाहौर, चम्बा।
चनाब	७६६	हिमालय पहाड़	पंजाब	सतलज	मुलतान, वजीराबाद, अकनूर।
झेलम	४९०	हिमालय पहाड़	पंजाब	चनाब	पिंडदादनखां, झेलम, श्रीनगर, इसलामाबाद।
काबुल	३२६	काबुल के पहाड़	काबुल	सिन्ध	पेशावर, जलालाबाद, काबुल।
लूनी	३००	अजमेर (झील)	राजपूताना	रन (कच्छ)	जोधपुर।
माही	३५०	मालवा	मालवा	खम्बे की खाड़ी	खम्बे, बांसवाड़ा।
नर्मदा	८००	अमर कंटक	मालवा खानदेश	खम्बे की खाड़ी	भरौच, हंडिया होशंगाबाद, नरसिंहपुर, रामगढ़।
ताप्ती या तापी	५००	सतपुरा पहाड़	खानदेश	खम्बे की खाड़ी	सूरत, बुरहानपुर।

कावेरी	४१२	प० घाट [कुर्ग]	मैसूर, द० कर्नाटक	करोमंडल	तंजोर, त्रिचिनापल्ली, श्रीरंगपट्टन।
दक्षिण पिनार	२४६	नंदीदुर्गपहाड़ी	मैसूर, कर्नाटक	बङ्गाले की खाड़ी	फोर्ट सेंटडेविट।
उत्तर पिनार	२५६	मैसूर	मैसूर, कर्नाटक	बंगाले की खाड़ी	नेल्लूर, कड़पा।
कृष्णा	८८०	महाबलेश्वर	हैदराबाद, कर्नाटक	बंगाले की खाड़ी	गंटूर, सतारा।
तुंगभद्रा	४२०	पश्चिम घाट	मैसूर, हैदराबाद	कृष्णा	कर्नूल, हरिहर
भीमा	५८०	हैदराबाद	पूना, हैदराबाद	कृष्णा	पुनडरपुर।
गोदावरी	९००	प० घाट [नासिक]	हैदराबाद उ० सर्कार	बंगाले की खाड़ी	राजमहेंद्री, निनूर, नन्देर, नासिक।
महानदी	५२०	सेंट्रलप्राविंस	गोंडवाना, उड़िया	बङ्गाले की खाड़ी	कटक, सम्भलपुर।
गङ्गा	१५७०	हिमालय [गङ्गोत्री]	पश्चिमोत्तरदेश बिहार, बङ्गाल		फरीदपुर, पबना, रामपुर बोलिया, राजमहल, भागलपुर, मुंगेर, पटना, बकसर, गाजीपुर, बनारस, मिर्जापुर, इलाहबाद, कानपुर, कनौज, फतहगढ़, फर्रुखाबाद, अनूपशहर, बिजनौर, हरिद्वार।
रामगङ्गा	३७३	हिमालय	रुहेलखंड	गङ्गा	बरेली, मुरादाबाद।
गोमती	४८२	शाहजहांपुर	अवध, जौनपुर	गङ्गा	जौनपुर, लखनौ।
घाघरा (सरयू)	६०६	हिमालय, (कमाऊं)	नेपाल, अवधगोरखपुर	गङ्गा	रिविलगंज, छपरा, अयोध्या, फैजाबाद।
गंडक	४०८	हिमालय	नेपाल, बिहार	गङ्गा	हाजीपुर, सालिग्राम।
कुसी	३२६	नेपाल के पहाड़	नेपाल, पुरनिया	गङ्गा	पुरनिया, खटंगा।
[illegible] नदी		हिमालय	दूाब	गङ्गा	बलंद शहर।

छोटा सिन्ध	०	विंध्याचल से	०	कालीन: से ऊपर यमुना में

इन के सिवाय और छोटी २ नदियां बहुत हैं जिन में कई एक का नाम नीचे लिखे हैं—

मन्दाकिनी, विवई, सुहेली, कटना, जल, बूढ़ीरापती, बानगंगा, खारा, सोंगर, सिरसा, भरंड, सोन, काम्हर, सिमन, बासुकी, नंदा, चूका, कल्यानी, सरायन, टेढ़ी, कुआनय, राहिण, धमेला, रिंद, टौंस उत्तरीय, टौंस दक्षिणीय, पुनपुना, गटाने, अद्दीधारा, लोगहर, मदार, निलांजन, पेशार, ढाढ़र, तिलैया, धर्माजय, सोभ, खुरी, सकारी ।

हिन्दुस्तान ।

एशिया के द० भाग में ८ अंश से ३५ अंश उ० अ० तक और ६७ अंश से ९२ अंश पू० दे० तक बसा गया है। अंग्रेज़ लोग इंडिया और हम लोग हिन्दुस्तान कहते हैं सीमा उ० हिमालय पहाड़, पू० मनीपुर का पहाड़ और बंगाले की खाड़ी, द० भारतमहासागर (हिंद का समुद्र) और प० अरब की खाड़ी, और सिन्ध नदी है । यह देश उ० द० प्रायः ८०० कोस लम्बा और पू० प० प्रायः ६५० कोस चौड़ा है । इस देश का रकबा (क्षेत्रफल) तीन लाख पचहत्तर हज़ार वर्ग कोस, और आबादी आज कल बाइस करोड़ बाद्‌शियों की है । पुराणों में इस का नाम भारतवर्ष और भारतखंड लिखा है ।

हिन्दुस्तान के बीचोंबीच पू० प० लम्बा विन्ध्य नाग पहाड़ है। इस पहाड़ के उत्तर भाग को आर्यावर्त और द० भाग को दाक्षिणात्य या दखन कहते हैं। आर्यावर्त में कश्मीर सरहिंद, गढ़वाल, कमायूं, नैपाल भूटान, लाहौर, दिल्ली, अवध बिहार, बंगाल, मुल्तान, राजपूताना, आगरा, इलाहाबाद, सिन्ध, कच्छ, गुजरात, मालवा, आसाम २० सूबे, और द० में खान्देश, गोंडवाना, उड़ैसा, बरार, औरंगाबाद, बिदर, हैदराबाद, उत्तर सरकार, बिजयपुर, बालाघाट, करनाटक, तुलव, मैसूर, कानड़ा, मालाबार, कांची द्राविड़, और त्रावण-कोर १८ छोटे बड़े सूबे हैं। अगले समय में ब्रह्मावर्त, ब्रह्मर्षि, मध्यदेश, कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पांचाल, सिन्धु, मगध, अंग, बंग, मलाबा अवन्ति, केरल कलिंग, कनखल आदि नाम के देशों में हिन्दुस्तान बंटा हुआ था।

हिन्दुस्तान के उ० में हिमालय, प० में पारवती, बीच में विंध्य, और द० में त्रिकोण के आकार का घाट भाग पहाड़ है। समुद्र या पहाड़ टपे बिना विदेशियों के लिये यहां आने की कदाचित कोई राह नहीं है। सिन्ध और दिल्ली सूबों में कई एक रेगिस्तान भी है। आर्यावर्त और दखन दोनों भागों में जंगल वन भी बहुतेरे हैं। सिन्ध गंगा, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा गोदावरी, कृष्णा और कावेरी आदि कई एक नदियां हिन्दुस्तान में प्रधान हैं। इन के सिवा सिन्ध की पांच शाखा, चम्बल यमुना सरजू, घाघरा, सोन, महानदी, तापती आदि छोटी बड़ी और भी बहुतेरी नदियां हैं। लम्बी चौड़ी झीलें यहां नहीं हैं।

सारे हिंदुस्तान का हवा पानी एक सा नहीं है कहीं बहुत ही अच्छा है और कहीं बहुत ही बुरा। कश्मीर की हवा पानी की बड़ाई प्रसिद्ध है। पहाड़ पर की और पहाड़ के आस पास की जगहों के सिवा जाड़ा, गर्मी और बसीत प्रधान ऋतु गिनी जाती हैं। पहाड़ी देशों में जाड़े की ऋतु प्रधान है।

हिंदुस्तान की ज़मीन का उपजाऊ होना सदा से प्रसिद्ध है। चावल, गेहूं, जव, मकई, बाजरा आदि नाज यहां के लोगों का प्रधान आहार है। यहां सखुआ, सागुवान, आबनूस शीशम, चन्दन, आम, जामुन, कटहल, ताड़, इमली, नारियल आदि बहुत तरह के पेड़ पैदा होते हैं। रूई, नील, अफीम, रेशम, लाह, चीनी और शोरा, इस देश में बहुत पैदा होते है। गोलकुंडा, सम्बलपुर, बुंदेलखंड, और कृष्णा नदी के तीर ईएक जगहों में हीरे की खानें हैं। लोहा, अबरक

आदि और और खनिज चीज़ें भी जगह जगह पर बहुत पाई जाती हैं।

आबादी।

आज कल हिंदुस्तान में हिन्दू मुसल्मान दो ही जातो की गिनती अधिक है। इन में भी मुसल्मानों से हिंदुओं की गिनती छः सात गुना अधिक है। सौंताल, भिल्ल, रामुसी, गारों आदि जंगली कौमें पहाड़ों पर बस्ती हैं। इन के अलावह अंगरेज़, फ़रान्सीसी, पुर्तगीज़, अमेरिकन, चीनी आदि कई एक विदेसी कौमें भी बनिज व्यापार आदि वसीलों से यह आ आके बस गई हैं।

भाषा।

हिंदुस्तान में जितने देश हैं उतनी ही भाषायें हैं। आज कल आर्यावर्त में कश्मीरी, पंजाबी, सैंधवी, गुजराती, हिंदुस्तानी, बंगला और असामी आदि कई एक बोली और दखन में उड़िया तेलंगी द्रविड़ी (तामिल) कर्नाटी और मराठी प्रधान गिनी जाती हैं। इन सब भाषाओं की (विशेष करके आर्यावर्तीय भाषाओं की) जड़ संस्कृत है। पर अब इतने अपभ्रंश और फ़ार्सी अरबी और दूसरे दूसरे विदेसी शब्द मिल गये हैं कि इन सब भाषाओं के आपस में बहुत जाने में भी संदेह होता है।

हिन्दू।

बहुतेरे समझते हैं कि "हिन्दू" शब्द न संस्कृत है और न संस्कृत से निकला हुआ है, क्योंकि संस्कृत के पुराने २ ग्रन्थों

में इस शब्द का कहीं नाम नहीं है। किसी किसी की मत है कि इसे यूनानियों ने "सिन्धु" शब्द से बिगाड़ के बनाया है। और कोई समझते हैं कि यह शब्द अरबी है, और अर्थ इस के काले के हैं। अरबियों से हिन्दुओं का रंग कुछ काला होने के कारन से उन्हों ने हिन्दुओं का यह नाम रक्खा था। जो कुछ हो, पर जब यह शब्द अगौरव का नहीं समझा जाता है, तब इस शब्द के व्यवहार में हानि नहीं। बहुतेरों की मत है कि हिन्दू यहां के आदिम निवासी नहीं हैं। वह कहते हैं कि कोंताल, भिल्ल, आदि कौमें यहां की आदिम निवासी हैं। हिन्दू ईरान (फ़ारिस) से आये और इस देश के आदिम निवासियों को जीत कर और दूर निकाल कर अपनी सल्तनत जमा के बस गये। वह अपने को आर्य (बड़े) कहते थे, और इसी कारन से जिन जगहों में उन्हों ने पहले पहल अपनी सल्तनत जमाई वह जगहें आर्यावर्त के नाम से प्रसिद्ध हुई। दखन इस के बहुत दिनों के बाद आर्यों के हाथ आया।

आर्यों की जाति।

आर्यों के शास्त्रों में लिखा है कि सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा के मुख से गोरे रंग का ब्राह्मण, बाहु से लाल रंग का क्षत्रिय, जांघ से पीले रंग का वैश्य और पांव से काले रंग का शूद्र पैदा हुआ। इन चार वर्णों में ब्राह्मण सब से बड़े, और सब वर्णों के गुरू और देवता के बराबर समझे जाते थे। और धर्म कर्म का सब प्रबन्ध इन के हाथमें रहने के कारण से अंगरेज़ इसे ब्राह्मण धर्म कहते हैं। धर्म कर्म के सिवा शास्त्रों का लिखना पढ़ना आईन बनाना आदि सब काम ब्राह्मणों ही के हाथ में था।

सन्धि, विग्रह, राज्यशासन आदि काम क्षत्रियों के, और खेती और बनिज व्योपार वैश्यों के हाथ में था, और इन तीनों वर्णों की सेवा के सिवा शूद्रों के हाथ में कोई काम न था। पहले तीन वर्ण द्विज कहलाते हैं और जनेऊ पहनते हैं। शूद्रों के जनेऊ नहीं होती। बहुतेरों का यह भी मत है कि आर्य लोग जिन आदिम निवासियों को अपने वश में न ला सके वह तो पहाड़ और जंगलों में भाग भाग के जा बसे, और जिन को अपने वश में लाये वही शूद्र कहलाये। अब हिन्दुओं में जाति भेद बहुत हो गया है। और इन में छूआछूत का बड़ा विचार रहता है

धर्म्म।

आर्य या हिंदू धर्म का मुख्य उद्देश्य अचिन्त्य अद्वितीय परब्रह्म की उपासना है। पर उसी ब्रह्म के नाम से बहुतेरे देव देवियों की पूजा भी हुआ करती है। इन की प्रधान धर्म पुस्तक वेद हैं। इस के चार भाग हैं ऋक्, यजु, साम और अथर्व। अलग अलग संप्रदायों का अलग अलग वेदों के अनुसार धर्म का विधान हुआ करता है। सब ही वेदों के एक भाग में सूर्य, अग्नि, इन्द्र आदि देवता और परमेश्वर का स्तव, और एक भाग में याग यज्ञ आदि क्रिया कलाप का विधान और दूसरे भाग में तत्त्वज्ञान के विषय का उपदेश रहता है, इन्हीं अन्त के भागों को वेदान्त या उपनिषद कहते हैं। वेद या श्रुति ही के आशय पर मनु अत्रि, विष्णु हारीत आदि बड़े बड़े मुनियों ने एक शास्त्र और बनाया है, जिस को स्मृति या धर्म्म संहिता कहते हैं। इस का सब से अधिक मान होता है। श्रुति और स्मृति के सिवा पुराण और तंत्र नाम के दो शास्त्र और प्रचलित हैं। रामायण के सिवा सब ही पुराणों के

बतानेवाले भगवान के अवतार स्वरूप महर्षि वेदव्यास प्रसिद्ध हैं। पुराणों में धर्म कथा सम्बन्धी बहुतेरे इतिहास भी लिखे हैं। तन्त्र शास्त्र महादेव पार्वती की बात चीत में लिखा गया है। तन्त्र ही के मत से आज कल दीक्षा नाम संस्कार हुआ करता है। वेद, स्मृति, पुराण और तन्त्र के मतों में भेद होने के कारन से और टीकाकारों और संग्रहकारों के इस यत्न से कि अपना अपना मत प्रचार करें, आज कल हिंदुओं में धर्म विषय के अनगिनित सम्प्रदाय हो गये हैं।

विद्या।

विद्या के लिये हिंदू लोग बहुत पुराने समय से प्रसिद्ध हैं। इनका मूल भाषा संस्कृत "देववाणी" के नाम से मानी जाती है। वेद आदि पुस्तकों के सिवा इस मधुर भाषा में हजारों अच्छी अच्छी पुस्तकें हैं। उन में से गौतम का न्याय, कपिल का सांख्य, पतंजलि का पतंजल, वेदव्यास का इकट्ठा किया वेदान्त, जैमिनी की मिमांसा, और कणाद का वैशेषिक आदि ग्रन्थ दर्शन शास्त्र के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस भाषा में पाणिनि, कात्यायन, बोपदेव आदि व्याकरणों के बनानेवाले, अमर, हेमचन्द्र हलायुद्ध आदि कोषों के बनानेवाले, कालिदास, भवभूति, श्रीहर्ष, भारवी माघ, बाणभट्ट आदि काव्य और नाटकों के बनानेवाले कवि, भरत, दण्डी, मम्मठ आदि अलंकार वाले, और आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य आदि ज्योतिषी बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

काल।

अगले समय के हिंदुओं ने काल को सत्य, त्रेता, द्वापर

श्रौर कलि नाम चार युगों में अर्थात् चार भागों में बटा था। उन के मत से सत्ययुग में मनुष्यों का धर्म चार पांव रखता था, प्राण मज्जागत थे, देह २१ हाथ लम्बी, श्रौर उम्र लाख बरस की हुआ करती थी, श्रौर मत्स्य, कूर्म, वाराह, श्रौर नृसिंह चार अवतार नारायण के हुए थे। त्रेतायुग में धर्म के तीन पांव रहे, प्राण अस्थि, अर्थात् हड्डियों में थे, देह १४ हाथ लम्बी, उम्र १०००० बरस की होने लगी, श्रौर वामन, परशुराम, श्रौर रामचन्द्र तीन अवतार हुए। द्वापरयुग में धर्म के कुल दो ही पांव रहे, प्राण लहू में आलगे, देह सात हाथों की, श्रौर उम्र १००० बरस की होने लगी, कृष्ण श्रौर बुद्ध के दो अवतार हुए। श्रौर कलियुग में धर्म के केवल एक ही पांव बच रहा, प्राण अन्न में बसने लगे, देह ३॥ हाथों की श्रौ उम्र १०० बरस की होने लगी, श्रौर केवल कल्की एक श्रौतार इस युग में होने वाला है सत्य आदि तीनयुग तो बीत गये, कलियुग वर्तमान है, इस के भी प्रायः ५००० बरस बीत चुके। हिंदू शास्त्र का यह भी मत है कि कलियुग के बीत लेने पर सत्य आदि एक के बाद एक फिर सब युग होंगे।

जीव जन्तु।

जंगली जानवरों में सिंह बाघ बघेरा चीता हाथी गैंडा अरना रीछ सूअर भेड़िया हिरन बारहसिंहा रोझ पाढ़ा काकी गीदड़ लोमड़ी खरगोश सियाहगोश बनबिलाव उद- बिलाव तरह तरह के बंदर श्रौर लंगूर कस्तूरिया बरफ़

झाड़ सकीन घोड़या सुरागाय ईल गिलहरी नेवला गिर्गट, और घरेलुओं में घोड़े गधे ऊंट खच्चर गाय भैंस भेड़ी बकरी दुम्बे कुत्ते बिल्ली, और पक्षियों में मनाल जोजूराना खलीज पलास कस्तूरा धोंकार नूरी बांधनू चकोर तीतर बटेर मुर्ग़ मुर्ग़ी सारस बगला बतक चकवा लाल बुलबुल लवा तोता मैना काकातूआ मोर कोकिला भ्रंगिन श्यामा कोयल पपीहा बाज़ बहरी शिकरा शाहीन गिद्ध चील कव्वा हुदहुद खञ्जन बया गौरय्या पिंडकी कबूतर, इन के सिवाय चूहे छछूंदर चिमगादड़ सांप अजगर बिच्छू गोह कानखजूरा मच्छर पीसू मक्खी शहद की मक्खी भिड भौंरा जुगनू तितली दीमक, और रेशम किर्मिज़ और लाख के कीड़े भी इस देश में बहुत होते हैं। नदी और तालाबों में मछली मेंडक जोंक और काछुए रहते हैं। और बड़े दर्याओं में मगर और घड़ियालों का डर है। दक्षिण में समुद्र के कनारे कौड़ी और मोतीवाले सीप भी होते हैं। हम ने सिंह और बाघ भिन्न भिन्न लिखा है, यद्यपि बहुतेरे लोग बरन कितनेही कोशकर्त्ता भी इन दोनों के बीच भेद नहीं करते पर सिंह वह है जिसे संस्कृत में केसरी और फ़ारसी में शेरबब्र और अंगरेज़ी में लायन कहते हैं। उसकी गर्दन पर केसर अर्थात् घोड़े की यालों के से बहुत से झबड़े झबड़े बाल रहते हैं, और शेर से अत्यन्त अधिक बल पराक्रम और साहस रखता है, ये जानवर अब बहुत कम रह गए, कभी कभी हरियाने के जंगलों में मिल जाते हैं। और बाघ वह है जिसे फ़ारसी में शेर कहते हैं और जिस से तमाम तराई और सुंदरबन भरा पड़ा है। चीता यहां के राजा

लोग हिरन मारने के लिये पालते हैं । शिकार के समय इस जानवर को आंखों में पट्टी बांध बहली पर बिठा साथ ले जाते हैं, जब किसी तरफ़ हिरनों का झुण्ड निकलता है तो तुरन्त उस की आंख में पट्टी हटा देते हैं, और वह बिजली की तरह लपक कर उन में से एक को जा ही दबाता है । हाथी और गैंडे रंगपुर सिलहट आसाम त्रिपुरा और चटगांव के जंगलों में बहुत हैं, पर हाथी दक्षिण के जंगल में बहुत अच्छा होता है, और हिमालय की तराई में जो पकड़ा जाता है वह ऐसा बड़ा और लम्बा चिहरा इतना उभरा हुआ नहीं रहता । हाथी पकड़ने के लिये जंगलों में गढ़े खोदकर मिट्टी से बेमालूम ढक देते हैं, जब हाथियों का झुण्ड उधर आता है तो जो उन में गिर रहता है उसी को पकड़ लाते हैं । पर सुंदर बन के पास ज़मीन दलदल होने के कारन गढ़ा खोदना कठिन है, इस लिये हाथी के पकड़नेवाले चालीस पचास आदमी इकट्ठे होकर पलेहुए हाथियों पर सवार बड़े बड़े मज़बूत रस्सों के फांदे बनाकर जंगल में जाते हैं, जब जंगली हाथी इन के हाथियों के मारने के लिये झपट मारके आते हैं तो वे उन को फांदे से फंसा लेते हैं, कोई उस की गरदन में रस्सा डालता है और कोई उसकी सूंड फंसाता है और कोई पैर कस लेता है, निदान उन रस्सों का एक एक सिरा उन पलेहुए हाथियों की कमर से बंधे रहने के सबब फिर वे जंगली हाथी भाग नहीं सकते और चारों तरफ़ से जकड़ जाते हैं । पर इस काम में जानजोखों बड़ी है इस लिये अकसर हाथी पकड़नेवाले एक बड़ा बाड़ा बनाते हैं,

खूब मज़बूत मज़बूत लकड़े गाड़कर और उसके गिर्द खाई खोद देते हैं, अंदर जाने को केवल एक दर्वाज़ा रखते हैं, लेकिन वह भी इस ढब का कि जैसे जंगलों से जाने की राह रहती है, जो हाथी को मालूम पड़ जाय कि यह दर्वाज़ा आदमी का बनाया है तो कदापि उसके अंदर पैर न धरे, क्योंकि यह जानवर बड़ा होशियार होता है, और उस बाड़े से मिला हुआ उसी तरह का एक ऐसा छोटा बाड़ा रखते हैं कि जिसमें जाकर फिर हाथी घूम न सके, निदान जब वह बाड़े तयार हो जाते हैं तो बहुत से आदमी उन जंगलों को जा घेरते हैं कि जिन में हाथी रहते हैं, और दूर दूर से इस तरह पर ढोल इत्यादि की आवाज़ें करते हैं, और आग जलाते हैं कि उन हाथियों का झुण्ड हटते हटते उसी बाड़े के दर्वाज़े पर आ जाता है, और जब सारे हाथी उस बाड़े के अंदर चले जाते हैं तो ये लोग तुरन्त उस का दरवाज़ा बड़ी मज़बूती से बंद कर देते हैं, जब हाथी कोई राह निकलने को नहीं पाते उस वक्त जो उन को गुस्सा होता है वह तमाशा देखने लायक है, निदान कुछ दिन में भूख प्यास और दौड़ने से वे सुस्त और काहिल हो जाते हैं तब अंदर के उस छोटे बाड़े का दर्वाज़ा खोलते हैं, और ज्यों ही एक हाथी उसके भीतर आजाता है तुरंत उस को बंद कर देते हैं, इस छोटे बाड़े के गिर्द मचान बंधे रहते हैं, हाथी जगह की तंगी से घूम भी नहीं सकता बिलकुल बेकाबू हो जाता है, वे मचानों पर चढ़कर अच्छी तरह उसे रस्सों से जकड़ लेते हैं, और उन रस्सों को अपने सधे हुए हाथियों की कमर से कसकर तब

उसे बाहर निकालते हैं और किसी पेड़ से बांध देते हैं, इसी तरह एक एक करके जब सब हाथियों को निकाल चुकते हैं तब फिर धीरे धीरे उन को खिला पिला कर आदमियों से परचा लेते हैं। आगे यहां के राजा और बादशाह लड़ाई के वक्त दुश्मन की फ़ौज के साम्हने अपने सधाए हुए मस्त हाथियों की सूंड़ों में दुधारे खांडे देकर हुलवा देते थे, पर अब तोप के आगे बेचारे हाथी की क्या पेश जा सकती है केवल सवारी और बारबर्दारी के काम में आते हैं। पुरु राजा ने झेलम के कनारे पर दस हज़ार जंगी हाथियों के साथ सिकंदर का मुक़ाबला किया था। आसिफ़ुद्दौला के पास सब से बड़ा हाथी जो त्रिपुरा के जंगल से पकड़ा गया था साढ़े दस फुट ऊंचा था। पर स्काट साहिब के लिखने से मालूम हुआ कि उन्होंने उस जंगल में बारह फुट दो इंच तक ऊंचा हाथी सुना था, । रूस के बादशाह बड़े पीटर को ईरान के बादशाह ने जो हाथी तुहफ़ा भेजा था, और जिस की खाल अब तक वहां के अजाइबख़ाने में रखी है, सोलह फुट ऊंचा था मालूम नहीं कि इस जगह से गया था या किसी दूसरे मुल्क से आया। गैंडे से मज़बूत दुनियां में कोई दूसरा जानवर नहीं, इस का चमड़ा ऐसा कड़ा होता है कि उस पर सिवाय गोली के तीर तलवार और कोई भी हथियार कुछ काम नहीं करता, ढाल अच्छी उसी के चमड़े की बनती है, इस जानवर से न शेर लड़ना चाहता है और न इस को हाथी छेड़ता, इसे जंगल का चक्रवर्ती राजा कहना चाहिये, यदि डील डौल में हाथी से

छोटा है, पर जब उस के पेट में अपनी खांग मारता है तो फिर हाथी चित्त हो गिर पड़ता है और गेंडे का कुछ भी नहीं कर सकता, यह जानवर केवल घास पत्ते खाता है और जब तक कोई इसे न सतावे तो यह भी किसी जीव को कुछ दुख नहीं देता। अरना भैंसा भी बड़ा भयानक जानवर है, किसी किसी के सींग दस फुट तक लंबे होते हैं। कस्तूरिया हिरन हिमालय के पहाड़ों में होता है, लोगोंने यह बात बहुत ग़लत मशहूर कर रखी है कि उस्के पैर की नली में जोड़ नहीं होता और वह बैठ नहीं सकता, जैसे और सब जानवर चलते फिरते दौड़ते बैठते हैं इसी तरह वह भी सब काम कर्ता है, जाड़ों में जब ऊंचे पहाड़ों पर बर्फ़ बहुत पड़ जाती है तब यह नीचे उतरता है, उन्हीं दिनों में इस का शिकार होता है, इस जानवर की नाभी में एक छोटी सी थैली रहती है जिस्को नाफ़ा कहते हैं उसी के अंदर कस्तूरी है, जब उसे मारकर उस्के पेट से नाफ़ा निकालते हैं तो कस्तूरी उस्मे लहू मास की तरह गीली रहती है, धूप में रखकर सुखलाते हैं, जो कस्तूरी खाने मे बहुत कड़वी और तीखी हो उसे असल और जो कसैली या दूसरे मज़े पर हो उसे बनावट समझना चाहिये, और भी इस की बहुत परीक्षा हैं। बरड काकड़ सकीन घोड़ल सुरागाय और ईल ये सब जानवर बर्फ़ी-पहाड़ों के पास होते हैं। सकीन एक तरह का जंगली भेड़ा है, लेकिन सींग उस के ऐसे भारी होते हैं कि एक आदमी से नहीं उठ सकते। गाय को सुरा और बैल को याक कहते हैं, इन की बदन पर रीछ की तरह

बड़े लंबे लंबे बाल रहते हैं और इन की दुम का चवर बनता है, वहां के लोग इन याक बैलों पर सवारी भी करते हैं, जिन कठिन पहाड़ों में घोड़ा टट्टू नहीं जा सकता वहां वे याक पर चढ़ कर बखूबी चले जाते हैं । इन एक प्रकार की गिलहरी है, जो चिमगादड़ की तरह उड़ती है। घोड़े यहां दक्षिण में भीमा नदी के कनारे जो तेलिये कुमैत सियाह जानू होते हैं बहुत उमदः हैं, और काठियावाड़ और कच्छी जंगल भी घोड़े के वास्ते मशहूर है, काठियवाड़ का घोड़ा कूदने फांदने में खूब चालाक होता है, कहते हैं कि उस कनारे पर कभी किसी अरब का जहाज़ गारत हो गया था उसी के घोड़ों के फैलने से वहां नस्ल की नसल दुरुस्त हुई है और कच्छी जंगल का घोड़ा डील डौल में बहुत बड़ा रहता है, पांच पांच हज़ार तक भी उस का दाम उठता है। ऊंट जोधपुर का प्रसिद्ध है, सौ कोस तक एक दिन में जा सकता है। गाय भैंस गुजरात हरियाना सिन्ध मुलतान इत्यादि पश्चिम देशों की दूध बहुत देती हैं, और बैल भी वहां के प्रसिद्ध हैं। ये जानवर द० में बहुत खराब होते हैं, क़द के छोटे और दूध भी थोड़ा देते हैं। बर्फ़ी पहाड़ों में भेड़ी का ऊन बहुत अच्छा और बकरी के बाल के अंदर पश्मीना होता है। दुम्बे सिन्धु के तटस्थ देशों में होते हैं। पक्षियों के दर्मियान मनाल जीजुराना मनीज और पलास नर्फ़िस्तान के तटस्थ पहाड़ों में, और कस्तूरा और चकोर कश्मीर में होता है । मनाल देखने में मोर की तरह खूबसूरत, पर दुम उस की सी नहीं रखता । पीलूराना नूरी और चांदनू ये भी बहुत सुन्दर होते हैं।

ओंकार के सिर से सियाह परों की एक अच्छी लम्बी कलगी रहती है कि जो इस देश के अकसर बादशाह राजा और सर्दार अपनी टोपी और पगड़ियों से लगाते हैं। चकोर बटेर मुर्ग लाल बुलबुल लवा लड़ने से और तोता मैना काकातूआ आदमी की बोली-बोलने से प्रख्यात हैं, तूरी बांधनू और तोते इत्यादि सुन्दर-बन और तराई के जङ्गल से नियाद: मिलते हैं और कोकिला अगिन ख्वाना मस्तूरा कोयल और पपीहे का शब्द बहुत मधुर होता है। बाज़ बहरी शिकरा और शाहीं अमीर लोग चिड़ियों का शिकार करने के लिये पालते हैं। बया अपना घोंसला बड़ी कारीगरी से बनाता है, चटाई की तरह बुनता है और तीन उस में घर रखता है बाहर नर के लिये बीच का मादा के लिये और अन्दर वाला बच्चे के लिये, और पेड़ की ऐसी पतली टहनियों से बल्कि खजूर के पत्तों से उसे लटकाता है कि जिसमें चगड़ों तक सांप न पहुंच सके, बहुधा जुगनू कीड़े उठा लाता है कि जिस्से रात को घोंसले के अन्दर उजाला रहे, सच पूछो तो पक्षियों में ऐसी होशयारी किसी में नहीं, यह छोटी सी चिड़िया आदमी के सिखलाने से बड़े बड़े काम कर दिखलाती है, तोप पर चोंच से बत्ती लगा देती है, मद्दगार आदमी चुम्बन के लिये औरतों की टिक-लियें दिखलाकर इशारा कर देते हैं यह फ़ौरन् उतार लाती है, धन्य है सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर जिसने ऐसी२ चिड़ियों को यह समझ दी। सांप इस मुल्क के बाज़े ऐसे ज़हरीले हैं कि जिनका काटा आदमी फिर पानी न मांगे। और अजगर दक्षिण के जङ्गलों में चालीस फुट तक लम्बे होते हैं। मछ-

लियों से कलकत्ते के बीच तपस्या-मछली की बड़ी तारीफ़ है, कहते हैं कि उसके स्वाद को कोई नहीं पहुंचती मलबार में मछलियों की इतनी बहुतायत है कि बाज़े वक्त घोड़ों को दाने के बदले मछलियां खिला देते हैं। जोंक दक्षिण के घाटों में बहुत होती हैं, यहां तक कि बर्सात में मुसाफ़िर को राह चलना मुशकिल पड़ जाता है। घड़ियाल गङ्गा में बीस हाथ तक लम्बे होते हैं। कौड़ियां समुद्र के कनारे इस बहुतायत से मिलती हैं कि समुद्र के तटस्थ देशों से चूना भी कौड़ी जलाकर बनता है। मोतीवाले सीप दक्षिण देश के नीचे समुद्र में होते हैं, लोग ग़ोता मारकर बहुत से सीप जानवर सेकड़ों बरन हज़ारों समुद्र की थाह से निकाल लाते हैं और गढ़े खोद कर मिट्टी से दाब देते हैं जब थोड़ी देर बाद वे सब मर जाते हैं तब एक एक को उस गढ़े से निकाल कर चीरना शुरू करते हैं, बहुत तो खाली जाते हैं किसी में मोती निकल आता है। सांप और सिंह को सब कोई बुरा कहता है, पर सोचकर देखो तो इस मनुष्य का चित्त तुष्ट करने के वास्ते कितने जीव सताए जाते हैं।

अधिवास

कशमीरी, बड़े रूपवान विशेष कर वहां की स्त्रियों का मनोहररूप और लावण्यता प्रसिद्ध है। और बंगाली, बुद्धिमान, डर्पोक, दुबले पतले और साहस हीन होते हैं। गुजराती, रूपवान कहते हैं और यमुना और गंगा नदियों के आसपास के रहने वाले बहादुर, दयावान और बुद्धिमान होते हैं। अवध के रहने वाले आदमी, बुद्धिमान और बलवान होते हैं और

द० के रहनेवाले प्राय: काले और मोटे होते हैं परन्तु मरहटे बहादुर, चालाक और परिश्रमी होते हैं। द० में विशेष कर कावेरी पार मुसलमानों का राज्य पक्का न होने के कारन अब तक भी बहुत बातें असली हिन्दूमत की देखने में आती हैं आदमी वहां के नाटे होते हैं, धोती दुपट्टा और पगड़ी पहनते हैं, औरतें साड़ी पहनती हैं, पर मर्दों की तरह लांच कस लेती हैं, इस कारन से उनकी पिण्डलियां खुली रहजाती हैं, लाज बिलकुल नहीं करतीं, घोड़े पर सवार होकर फिरती हैं। लखनउवालों का पहनावा ज़नाना है, पाजामे की मुह-रियां इतनी चौड़ी रखते हैं कि उठावें तो सिर तक पहुंचे, और पगड़ियों का घेरा इतना बड़ा कि छतरी का काम न पड़े। पंजाब के निवासी को प्राय: सिख कहते हैं, ये हजामत नहीं बनाते, जवान अच्छे सजीले होते हैं पोशाक उनकी सिपाहियाना और सुंदर, दांत पान न खाने से सफेद मोतियों की लड़ी से रहते हैं उस देश में औरतें भी तंग मुहरी का पाजामा पहनती हैं। गुरुगोविंदसिंह की आज्ञानुसार खईनी तम्बाकू खाने की कहे छूते भी नहीं। ये लोग बलवान, साहसी, बुद्धिमान और लड़ाई में बड़े चालाक होते हैं। उड़ीसा के रहने वालों को उड़िया कहते हैं, ये लोग दुबले, पतले, साहस हीन, डपोंक बुद्धिहीन और धूर्त होते हैं परन्तु बड़े परिश्रमी होते हैं। नयपाली, नाटे होते हैं और उनकी छाती और कन्धा चौड़ा बदन गोल और गठीला, चिहरा चकला आंखें छोटी और नाक चिपटी होती है, मांस खाने की इतनी चाह रखते हैं कि बलिदान के समय लहू तक पी जाते हैं चावल और लहसन

बहुत ज्वान हैं ये बलवान, साहसी और लड़ाई में बड़े चतुर होते हैं। भोजपुर के रहने वाले क्षत्रियों को रूप रंग अवध के रहने वालों से मिलता है परंतु बुद्धि में उनसे कहीं बढ़े हैं। राजपूताना के रहनेवाले बहादुर और दयावान होते हैं। औरतों के घांघरों का घेर बहुत बड़ा रहता है। डाढ़ी रखने की चाल है।

अङ्गरेज़ों के हवा खाने की जगह ।

शिलांग, दार्जिलिंग, हज़ारीबाग, नयनीताल, शिमला, मंसूरी, मरी, आबू, महाबलेश्वर, उटकमण्ड, (नीलगिरि) लंदौर, और पंचम।

हिन्दुस्तान के बन्दर ।

करांची, मांडवी, पूरबन्दर,, गोगो, खंभात, भड़ौंच, सूरत बंबई, रत्नागिरि, विंगुरला, पंजिम या नयागोवा, कारवार, कुमटा, हनावर, मंगलोर, कनानूर, तलीचरी, कालीकट, बेपुर, कोचीन, अलीपी, कोलम, कोलाचल, तूतीकोरिन, नेगापट्टन, त्रिंकबार, कड्डालूर, पांडीचेरी, मछलीपट्टन, कोरिंगा, कोकैनेडा विजिगापट्टन, बिमलीपट्टन, गोपालपुर, बालासोर, कलकत्ता, चटगांव, अकयाब, रंगून, मोलमीन, टेवाय, मरग्वी, और मद्रास।

जो कलकत्ते से किरांची को जहाज जाय तो नीचे लिखे हुए बंदरों में होकर जायगा ।

कलकत्ता, बालासोर, पुरी, (जगन्नाथ), गोपालपुर, बमली

पट्टन, विज़िगापट्टन, कोकेनडा, कोरंगा, मछलीपट्टन, मदरास, पांडिचेरी, कडालूर, तंकोबार, नीगापट्टन, तूतीकोरन, कोलापल कोईलन, एलप्पी, कोचीन, बेपुर, कालीकट, तिलेचरी, कनानूर, मंगलोर, हुनावर, कुमटा, करावर, पंजम, वंगोरला, रत्नागिरि, बंबई, सूरत, भड़ौंच, खम्भात, गोगो, पूरबन्दर, माण्डवी, और किरांची।

खानों का वर्णन।

लोहा—सिलहट, कचार, बीरभूमि, आसाम, सम्भलपुर, नागपुर, कच्छ, मनीपुर, मैसूर, उदयपुर, ग्वालियर, ग्वालपुर, बिहार, मंडी, काश्मीर, वालेसर, नैपाल, करनाटक, कुमाऊं, गढ़वाल। मौज़े संवरई (ज़िला ललितपुर में) भी लोहे की खान है।

सीसा—अजमेर, जोधपुर, गंतूर, छोटा नागपुर, नैपाल।

कोयला—जब्बलपुर, बीरभूमि, रानीगंज, राजमहल, पलामू, राज गढ़, नर्बदा, बेरार, रीवां, चीरापुंजी, लैकडोना, और खसिया और जैनतिया पहाड़ियां के ज़िलों में, कच्छ, हरिद्वार, कटक, चनार, सिलहट, हुगली, बालेसर, बांकुड़ा, आसाम, छोटानागपुर, बाज़गुज़ार सुहाल। परगना सिंगरौली (ज़िला मिरजापुर)।

भोड़ल (अबरख)—बिहार, रानीगंज, बाज़गुज़ार सुहाल, छोटानागपुर।

सुर्मा—सम्बलपुर, काश्मीर।

शोरा—बंबई, मदरास प० उ० देश और बिहार में बहुत बनता है।

फिटकरी—शाहाबाद, कच्छ, जयपुर, कालाबाग़।

गेरू—बिहार, ग्वालियर, नागपुर,।

हीरा—गोलकुंडा, सम्भलपुर, पन्ना, गंतूर, दक्षिणीमथुरा, बेरागढ़।

सोना—मैसूर, विनाद (बैनाद) कुमाऊँ, मालाबार और तिनासिरास के नदियों पर मिलता है।

गंधक—छोटानागपुर, नैपाल।

हरताल और सेंदूर—नैपाल।

संगमरमर——जोधपुर।

सज्जी—सिगौली।

अक़ीक़—बड़ौदा, बिहार।

सेंधानोन—पिंडदादन खां, इस्माईल खां,

नमक—सांभर, कोन, सुंदरबन, और लंका के पास समुद्र के पानी से बनता है।

जस्ता—उदयपुर।

लाल पत्थर—तांतपुर (जिले आगरा)।

रांगा—नैपाल।

तांबा—नैपाल, कश्मीर, कुमाऊं, गढ़वाल और मौजे संवरई।

नहर का वर्णन।

नहरें इस देश में बहुत हैं परन्तु उन में से बड़ी तीन ही हैं। पहली नहर बारीदोआब जो रावी और व्यास के बीच में है। लम्बान में ६६५ मील। दूसरी जमुना की पश्चिमी नहर जिसको हिमालिक पहाड़ के पास से निकाल कर

हिसार, हरयाना होकर दिल्ली को जाती हैं। उसका लम्बान ४४० मील है। जमुना के पूरबी नहर भी सहारनपुर के उत्तर ओर से निकाल कर दिल्ली के नीचे फिर जमुना में मिला दी है। उसका लम्बान १४० मील है। तीसरी गंगा की नहर हरिद्वार से कानपुर तक। लम्बान में ६३५ मील। उसी नहर की एक शाखा ज़िले अलीगढ़ से निकाल कर कालपी के पास जमुना में मिला दी है। पश्चिमोत्तर देश में ३ प्रकार की नहरें हैं। १ उत्पादक (Productive), २ साधारण (Ordinary) और ३ अवरोधक (Protective)। पहिले प्रकार की नहरों में उत्तरीय नहर गंग, दक्षीणीय नहर गंग, पूर्बीय नहर यमुन और आगरा की नहरें हैं। दूसरे प्रकार में रुहेलखण्ड, दून, और बिजनौर की नहरें और तीसरे प्रकार में बेतवा की नहर।

उतरीय नहर गंग हरद्वार से २ मील पर निकली है। ५० वें मील पर अनूप शहर की शाखा निकली है और १०८ वें मील पर कानपुर और इटावा की शाखें निकलती हैं जो १७० मील लम्बी हैं परन्तु अब इन दोनों शाखों में दक्षणीय नहर गंग से जल दिया जाता है इसलिये उन्ही की शाखा समझी जाती हैं। उत्तरी नहर में हरद्वार से १०८ मील तक और कानपुर की शाखा में कानपुर तक नावें चल सकती हैं। इन नहरों से १० लाख एकड़ धरती सिंची जा सकती है।

दक्षणीय नहर गंग नरोरा से जो कि, अलीगढ़ के ज़िले में हैं निकली हैं। ये ५५ मील बह कर कानपुर की शाखा से मिली हैं और उस से कई मील पर इटावा की शाखा से भी मिली है। फतेहगढ़, बेवार और भोगनीपुर यह ३ इस शाखा की हैं। यह

नहर नरौरे से छूटाव। शाखा के नेव तक नाव जाने आने के लायक हैं और इस से ७ लाख एकड़ धरती सिंची जा सकती है।

पूर्वी नहर जमुना सहारन पुर से ३० मील पर जमुना से निकली है। इस में नावें नहीं चल सकती।

आगरे की नहर दिल्ली से ६ मील पर जमुना के दहिने किनारे से निकली है। १०० मील तक इस में नाव चल सकती हैं जहां आगरे में यमुना से मिली है। ७७ मील पर ७ मील की शाखा मथुरा मे मिली है। जब अच्छे प्रकार प्रगट हो जायगी तो इस से २॥ लाख एकर धरती सिंच सकेगी।

सूबे बिहार में कुछ दिन हुए कि बारूण के द० सोन नदी से एक नहर निकाली गई है इस से सींचने का काम निकलता है यह नहर कुल ७९ मील लंबी है इस में से ४३ मील गया ज़िले की धरती और ३६ मील पटने की है इस से अब सौदागरी का माल अधिक आता जाता है यह देखने में बड़ी सोहावन लगती है इस में भी देश के अनुसार मुसाफिर आया जाया करते हैं।

रेलवे का वर्णन।

ईस्टइण्डियन रेलवे कलकत्ते से दिल्ली तक है इस में ६३२ मील पश्चिमोत्तर देश में है। उस की एक शाखा इलाहाबाद से जबलपुर की है जिस में १५०३ मील। यह रेलवे हौड़ा सीरामपुर, चन्द्रनगर, हुगली, बर्दवान, कानू, रानीगंज, राजमहल, मुरशिदाबाद, भागलपुर, जमालपुर, सुलतान, मुंगेर, लक्खीसराय, पटना, बांकीपुर, दानापुर, बिटा,

कोयलवर, आरा, बिहियां, रघुनाथपुर, डुमरांव, बक्सर, मोगलसराय, बनारस, चनारगढ़, मिरज़ापुर, इलाहाबाद, फतहपुर, कानपुर, इटावा, आगरा, अलीगढ़, और दिल्ली में होकर जाती है।

ईस्टर्न बंगाल रेलवे। कुश्टिया से गूलंडो तक। लंबान में १५७ मील है ॥

अवध रुहेलखंड रेलवे। ६१२मील बनारस से मुरादाबाद तक। इस की शाखायें नव्वाबगंज से बहरामघाट को, लखनऊ से कानपुर को, और चन्दोसी से अलीगढ़ को गई हैं। संपूर्ण लम्बाई ५५१ मील है। यह रेलवे बनारस, जौनपुर, फ़ैज़ाबाद, दर्याबाद नव्वाबगंज, लखनऊ, उन्नाव, सन्दीला, हरदोई, शाहजहांपुर, बरेली, चंदोसी और मुरादाबाद में होकर जाती है।

बरेली पीलीभीत रेलवे ३६ मील है।

राजपुताना स्टेट रेलवे। आगरा और दिल्ली से नसीराबाद तक। उसकी एक शाखा रिवाड़ी को गई है। लम्बान में ६८१ मील है। यह रेल भरतपुर, अलवर, जैपुर, किशनगढ़, अजमेर, गुड़गांवां आदि में होकर जाती है॥

सिन्ध और पंजाब और दिल्ली रेलवे ११२ मील है। दिल्ली से मुलतान के आगे बन्दर तक। इस का एक भाग सिन्ध में करांची से कोटरी तक है। लंबाई ६७८ मील। यह रेल दिल्ली, मेरट, मुज़फ्फरनगर, सहारनपुर, अम्बाला, लुधियाना, जलन्धर, अमृतसर, लाहौर, मौंटगोमरी और मुलतान में होकर जाती है।

रुहिलखंड कुमाऊं रलवे ६७ मील है।

इन्डस वेली स्टेट रेलवे। मुज़फ्फराबाद से कोटरी तक। लम्बान में ५०८ मील। यह रैलवे भावलपुर, खैरपुर, रोड़ी और लरखाने में होकर जाती है॥

नार्दरन पंजाब स्टेट रैलवे। लाहौर से पेशावर तक (परन्तु अभी लाहौर से झेलम तक जारी हुई है। लंबान में १२० मील) यह रेलवे गुजरांवाला, वज़ीराबाद, गुजरात और झेलम में होकर जाती है॥

ग्रेटइण्डियन पेनिनसुला रैलवे। लंबाई १२७२ मील। इस के दो भाग हैं। एक उ० और पू० की ओर को थाना, कालि, यान, नासिक, मनमद, नन्दगांव, चालीस गांव, भुसावल, बुर-हानपुर, खण्डवा, सेवनी, सुहागपुर, छिन्दवाड़ा में होता हुआ जब्बलपुर में ईस्ट इण्डियन रैलवे से मिला है। दूसरा भाग द० और पू० को भी पूना, शोलापुर, गलबर्गा और अहमद-नगर होता हुआ तुंगभद्रा के किनारे रायचोर में मंदराज रेलवे से मिला है। इस रैलवे की एक शाखा भुसावल से नाग-पुर को है।

कानपुर फ़रुखाबाद रैलवे २४९ मील।

हुलकर और सेंधिया नीमच स्टेट रेलवे। खंडवा से मऊच, इन्दौर, उज्जैन, रतलाम होती हुई नीमच तक गई है। लम्बान में १५९ मील॥

बंबई, बड़ौदा, और सेंट्रल इण्डिया रैलवे। बंबई से सूरत भड़ौच, बड़ौदा में पहुंच कर गुजरात में बधवां तक। लंबान में ३८९ मील॥

लखनऊ सीता पुर रेलवे ५४ मील।

निज़ाम सटेट रेलवे। ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे की वाड़ी सटेशन से हैदराबाद होती हुई सिकंदराबाद को गई है। तवाम में १२१ मील॥

मंदराज रेलवे। संपूर्ण लंबाई ८५८ मील है। इस रेलवे के दो भाग हैं एक द० और प० को और दूसरी उ० और प० को पहिला मन्दराज से बेपोर, आरकोनम, जालरपट, सेलम, ईरोड, कोयमवटूर और पालघाट होता हुआ बेपुर तक है और दूसरा कड़ापा और गूटी होकर है। इस रेलवे की शाखायें नीलगिरी, नोलोर, कांजीपुर और बिलारी को हैं॥

सौथइण्डियन रेलवे। ईरोड नेगापट्टन और तूतीकोरिन तक उस की एक शाखा मायावरम से पोर्टोनोवो तक है। तमाम में ६०५ मील। नेगापट्टन, मायावरम, कोम्बकोणम, तंजोर, तिरचनापली, डिंडीगल, मदूरा, तिनेवली, तूतीकोरिन उस के किनारे हैं। इन के सिवाय और भी बहुत सी छोटी२रेलवे हैं।

सौथ ईस्ट बंगाल रेलवे। कलकत्ता से पोर्टकेनिंग तक। तमाम में २९ मील॥

बंगाल वेस्टनरेलवे सोनपुर पलीजाघाट से छपरा गोरखपुर बस्ती गोंडा होकर बहराइच तक गई है इस की एक शाखा गोरखपुर से उस्का जिला बस्ती तक दूसरी मनिकापुर जंकशन से नवाबगंज होकर लकड़मंडई सटेशन अर्थात् अयोध्या घाट तक गई है तीसरी बहराइच से नेपालगंज तक तैयार हो गई है। ७२ मील पश्चिमोत्तर में है।

तिरहुत सटेट रेलवे। ईस्ट इण्डियन रेलवे के सटेसन बाढ़

से मुज़फ्फरपुर तक। इसकी शाखा समस्तीपुर से दरभंगा को है। लंबान में ७६ मील ॥

गयास्टेट रेलवे। बांकीपुर से गया तक। लंबान में ५७ मील। इस के स्टेशन ये हैं बांकीपुर, पुनपुन, मसौढ़ी, जहानाबाद, मखदूमपुर, बेला, चाकन, गया।

सेंधिया स्टेट रेलवे। आगरा से ग्वालियर तक। (परन्तु अभी आगरा से धौलपुर तक खुला है। लंबान में ३७ मील)॥ २२ मील पश्चिमोत्तर देश में।

हाथरस और मथुरा लाइट रेलवे हाथरस से मथुरा तक लंबान में २९ मील॥

ढोंढ मन्मद स्टेटरेलवे। मन्मद से ढोंढ तक। लंबान में ४८मील।

वरदावैली स्टेटरेलवे। वरदा से हींगन घाट होती हुई सनाई गांव तक। लंबाई ४५ मील है।

दिलदार नगर तारी घाट रेलवे १२ मील।

राजपुताना मालवा रेलवे २६ मील पश्चिमोत्तर देश में है।

कानपुर झांसी रेलवे—कानपुर से झांसी तक।

मानिकपुर रेलवे—झांसी से मानिकपुर तक।

इस्टइंडियन रेलवे का विशेष वर्णन।

मील	नाम स्टेशन	मील	नामस्टेशन
	हवड़ा।	१२	श्रीरामपुर।
६	बालि।	१४	सेवड़ाफुली। (१)
८	कोननगर।	१५	वैद्यबाटि।

(१) यहां से तारकेश्वर रेलवे है गोविन्दपुर, सिंगुर, नालीकुल, हरिपाल, तारकेश्वर।

मील	नाम स्टेशन
१८	भद्रेसर।
२१	चन्दननगर।
२४	हुगली। (२)
२७	तीसबीघा।
२९	मगरा।
३५	खनियान।
३८	पाण्डुआ।
४४	बैंची।
५१	मेमारी।
५९	सक्तिगढ़।
६७	बरद्दमान
७५	खाना जंक्शन। (३)
८१	गलसी।
९०	मानकर।
९७	पानागढ़।
१०१	राजबांध।
१०६	दुर्गापुर।
११९	अण्डाल।
१२१	रानीगंज।
१२३	सिरसोल।
१२४	निगाचि।
१३२	आसानसोल।
१३८	सितारामपुर। (४)
१४८	मिहिजाम।
१५७	जामतारा।
१६८	करमातर।
१८२	मधुपुर। (५)
२०१	वैद्यनाथ जंक्शन। (६)
२१७	सिमुलतला।
२२८	नवादि।
२३५	गिद्धौर।
२४४	जमुई।
२५४	मानानपुर।
२६२	लखिसराय।

२ हुगली से एक रेलवे नैहाटी तक गई है।

३ यहां से लूप लाईन शुरू होता है।

४ बराकर ब्रांच सितारामपुर से बराकर तक ५ मील है।

५ गिरिडी ब्रांच मधुपुर से गिरिडी तक २३ मील है। मधुपुर, जगदीशपुर, महेशमुंडा, गिरिडी (करहरबारी)।

६ यहां से देवघर तक एक लाईन है।

मील	नाम स्टेशन
२७१	दरही।
२८२	मोकामा। (७)
२८२	पण्डारक।
२८८	बाढ़।
३१०	बख्तियारपुर।
३१८	खुसरूपुर।
३२४	फतुवा या फतुहा।
३३२	पटना। (शहर)
३३८	बांकीपुर। (८)
३४४	दानापुर।
३५५	बिटा।
३६०	कोइलवर।
३६८	आरा।
३८२	बिहिया।
३८१	रघुनाथपुर।
४०१	डुमरांव।

मील	नाम स्टेशन
४११	बक्सर।
४१८	चौसा।
४२४	गहमर।
४३३	दिलदारनगर। (८)
४४२	जामानिया।
४५०	धिना।
४५८	सकलडिहा।
४६८	मोगलसराय। १०
४७८	आहौरा रोड।
४८८	चुनार।
४८८	पाहाड़ा।
५०८	मिरजापुर।
५३१	गैपुरा।
५४०	नहवाई।
५४१	सिराथु रोड।
५४३	करछना।

७ यहां से मोकामाघाट तक एक लाइन है जिसका नाम मोकामाघाट घाट है। वहां से तिरहुतस्टेट रेलवे शुरू होता है।

८ यहां से पटना गया स्टेट रेलवे शुरू होता है और दिघा घाटलांच रेलवे भी यहां ही से शुरू होता है। दिघा बांकीपुर से ६ मील है।

८ दिलदारनगर तारीघाट रेलवे यहां से शुरू होता है, १२ मील है।

१० यहां से एक गाड़ी बनारस जाती है।

मील	नाम स्टेशन
५६०	नाइनी। (११)
५६४	इलाहाबाद।
५७५	मानौरी।
५८८	भारवारी।
६००	सीराथु।
६०८	कानवार।
६१६	खागा।
६२४	बहरामपुर।
६३०	हासवा।
६३७	फतीपुर।
६४७	मलवा।
६५६	औंगार।
६६४	कारबीगवान।
६७१	भारसौल।
६७८	चेबारी।
६८४	कानपुर।
६९१	पङ्कि।
६९८	भउपुर।
७११	रुरा।
७२३	झिनझिक।
७३५	फफुण्ड।
७४६	अचलदा।
७५८	भरतना।
७७०	एटावा।
७८०	जसवन्त नगर।
७९२	भादान।
७९८	करारा।
८०५	शिकोहाबाद।
८१२	मक्खनपुर।
८१७	फिरोजाबाद।
८२७	टुण्डला। (१२)
८३६	बरहान।
८४५	जलेशर रोड।
८५१	पोरा।

११ इलाहाबाद से जब्बलपुर तक एक लाइन गई है।

१२ यहां से सिन्धिया स्टेट लाइन और आगराब्रांच के लिये गाड़ी तबदिल होती है। ८४३ आगरा फोर्ट अर्थात् किला। ८४४ आगरा कांटनमेन्ट अर्थात् छावनी। ८५२ भण्डाइ। ८६१ सैयान। ८७० मानिया। ८७८ धौलपुर। ८८६ हितामपुर। ८९५ नोरिगा। ९०६ बानमोर। ९१७ मोरार रोड। ९१९ ग्वालियर।

मील	नाम स्टेषण
८५७	हाथरस जंगसन
८६७	पाली ।
८७६	भालिगढ़ । ‡
८८४	कालवा ।
८८८	सोमगा ।
८९६	डामार ।
९०३	खुरजा ।
९११	वीसा(बोलन्दशहर रोड)
९२०	सिकिन्दरावाद ।
९३१	दादरि ।
९४२	गाजियावाद ।
९५०	देहली साहडेरा ।
९५४	देहली । (१२)
	लूपलाइन ।
...	हावड़ा ।
६७	वरदमान
७५	खाना जंगसन ।
८७	गुस्करा ।
९४	भेदिया ।
९९	वोलपुर ।
१११	षाहमदपुर ।
११९	सांइथिया ।
१२९	मल्लारपुर ।
१३६	रामपुर हाट ।
१४५	नलहाटि
	(... ष्टेट रेलवे)
१५०	चातरा ।
१५५	मुरारइ ।
१६२	राजगांव ।
१६९	पाकुड़ ।
१७६	कोटाल पुकुर ।
१८५	वरहारवा ।
१९५	तिन पहाड़ । *
२१०	महाराज पुर ।
२१९	साहेवगंज ।
	(भसाम विहार ष्टेट रेलवे)
२३३	पिरपांइति ।
२४५	कहल गांव ।
२५२	घोघा ।
२६५	भागलपुर ।
२८०	सुलतान गंज ।
२९१	वरियारपुर ।

१२यहां जंगसन वंबई बडोदा भौर सेन्ट्रेल इंडिया रेलवे का है]

* तिन पहाड़से राज महल तक एक लाइन है ७ मील ।

‡ यहां से एक शाखा भवध भौर रोहिल खंड का है ।

मील	नामस्टेशन	मील	नामस्टेशन
२९८	जमालपुर । (१२)	३२३	लखीसराय ।
३०५	धारारा ।	३३७	बरहि ।
३१६	काजरा ।	३४७	मोकामा ।

प्रसिद्ध वस्तु ।

बनारस संस्कृत विद्या के लिये प्रसिद्ध है। नदिया का न्याय शास्त्र प्रसिद्ध है। ढाका की मलमल और चिकन प्रसिद्ध है। पटना में कपड़ा बुना जाता है शेखपुरे की मलमल प्रसिद्ध है। मुंगेर की बंदूक, छूरी कांटा और पिसतौल आदि लोहे की वस्तु प्रसिद्ध है। मालदा (मालदह) का रेशमी कपड़ा और आम प्रसिद्ध है। बालासोर का फूल का बरतन प्रसिद्ध है। देहरादून की चाय प्रसिद्ध है। सहारनपुर के सफेद लकड़ी के संदूक और कलमदान प्रसिद्ध है। मुज़फ्फर नगर के कम्बल प्रसिद्ध है। मरीत (मेरट) के लोहे के बर-तन प्रसिद्ध है। हाथरस (हातरस) के चाकू प्रसिद्ध है। बिजनौर के उत्तर नजीबाबाद के फूल के बरतन और नगीने में लकड़ी के कंघे अच्छे कलमदान और संदूक आदि आबनूसी चीजें प्रसिद्ध है। मुरादाबाद के पारे की कलई की बरतन और देसी कपड़े के थान प्रसिद्ध है! अमरोहे के मिट्टी के बरतन प्रसिद्ध है। ठाकुरद्वारा की छींट प्रसिद्ध है। बरेली की गाड़ीमेज और कुरसियां प्रसिद्ध हैं। पीली-भीत के चावल प्रसिद्ध है। शाहजहांपुर की चाकू, सरौते और रोज़ा फ़ैकटरी (रम शराब और कंद बनाने का कार-ख़ाना) प्रसिद्ध है। तिलहर का तीर कमान प्रसिद्ध है।

---

१२ जमालपुर से मुंगेर शाख ५ मील तक है।

आगरा के नेचे, दरी और पच्चीकारी का काम प्रसिद्ध है। कन्नौज का अतर और काग़ज़ प्रसिद्ध है। कानपुर के चमड़े का काम प्रसिद्ध है। कोड़ा जहानाबाद (ज़िले फतेहपुर) के बरतन प्रसिद्ध है। महोबा (ज़िले हमीरपुर) का पान प्रसिद्ध है। जौनपुर का बेला, चमेली मेवती का तेल और अतर प्रसिद्ध है। मिरज़ापुर (गिरिजापुर) के पीतल के बरतन प्रसिद्ध है। चुनारगढ़ के मिट्टी का बरतन प्रसिद्ध है। और घुसिया में सूती ऊनी कालीन अच्छे बनते हैं। गाज़ीपुर (गाधीपुर) का गुलाब और अतर प्रसिद्ध है। (कालपी) का कागज़ और मिश्री प्रसिद्ध है। लखनऊ के गोटा, किनारी, कामदानी बहुत उमदा बेश कीमती बनते हैं चिकन और सुई के काम के कपड़े प्रसिद्ध है। फर्रुखाबाद के पान प्रसिद्ध है। फ़ैज़ाबाद की लकड़ी की वस्तुएं प्रसिद्ध है। थानेश्वर की भैंस प्रसिद्ध है। लुधियाना की सूती और रेशमी कपड़े प्रसिद्ध है। कसूर की मेथी प्रसिद्ध है। गुजरात (पंजाब) की तलवार प्रसिद्ध है। मुलतान का रेशमी कपड़ा प्रसिद्ध है। धौलाड़ा रूई के लिये प्रसिद्ध है। नागपुर का रेशमी कपड़ा प्रसिद्ध है। विज़िगापटन के सींग के संदूक प्रसिद्ध है। एलौर के कालीन प्रसिद्ध है। मछलीपट्टन के छींट प्रसिद्ध है। नेलौर के बैल प्रसिद्ध है। तूतीकोरन मोती के लिये प्रसिद्ध है। रामटेक के पान प्रसिद्ध है। कुर्ग की इलायची (छोटी) और कहवा प्रसिद्ध है। श्रीनगर या कश्मीर शाल दुशालों के लिये प्रसिद्ध है। लद्दाख़ पश्म के व्यापार के लिये प्रसिद्ध है।

भिलसा का तंबाकू प्रसिद्ध है। भागलपुर का रेशमी कपड़ा और लोहे की चीज़ें प्रसिद्ध हैं। नागौर का बैल प्रसिद्ध है।

ज़िला बलिया में सिकंदरपुर की चमेली का तेल और तुर्ती पार में जो सर्यू के दाहिने किनारे बसा है। फूल का बरतन प्रसिद्ध है। ज़िला बस्ती में बखरा के फूल और पीतल का बरतन प्रसिद्ध है। और परगना बांसी के बारीक चावल सब जगह प्रसिद्ध है। आज़मगढ़ ऊख और नील की खेती के लिये प्रसिद्ध है। सजा में देशी और विलायती सूत की पगड़िया दुपट्टे साड़ी आदि सादे कपड़े और महमदाबाद, मुबारकपुर में गुलता संगी मशरू गुलबदन अनेक रेशमी टसरी कपड़े उमदा बनते हैं। निज़ामाबाद का मिट्टी का बरतन इंगलिस्तान तक प्रसिद्ध है। इलाहाबाद का घम-रूद, तरबूज़ अच्छा होता है। भारतगंज और शहज़ादपुर में छीटे छापी जाती।

फतेहपुर में कोड़ा अच्छा बनता है। जहानाबाद खजुये में फूल और पीतल के बरतन अच्छे होते हैं। जाफ़राबाद किशुनपुर में छीटें छपती हैं। झांसी का तीर कमान, लर-की भाले, और कालीन अच्छे बनते हैं। झांसी से ४० मील पू० मऊ और रानीपुर में खारुआ अच्छा बनता है। भांडिर में सफ़ेद कमल अच्छा बनता है।

ज़िला ललितपुर के मड़ा बड़ा और बानपुर का बरतन और तालबेट का चाकू सरौता तबर प्रसिद्ध है।

इटावे के इलाके में देशी कपड़े अधिक बनते और बिकते हैं

फ़र्रुख़ाबाद पीतल के बरतन डेरे, तंबू, दरी, और छींट, के लिये प्रसिद्ध है। मैनीपुरी के इलाके कुरावली में लकड़ीका काम अच्छा बनता है। एटा के इलाके सिकंदरे में कांच की सीसियां अच्छी बनती है। बुलंदशहर के इलाके सिकंदरे में ताफ़ा बतून दुपट्टे पगड़ियां खुरजा में सूती कालीन और दो सूती कपड़े अच्छे बनते हैं। हापड़ का पापड़ प्रसिद्ध है। मुज़फ़्फ़र नगर का कंबल प्रसिद्ध है। बदायूं के इलाके सहसवान का केवड़ा सराहने योग्य होता है। प्रतापगढ़ में गोरा अधिक होता है। सुलतानपुर के इलाके हसनपुर बधुवे में फूल के बरतन अच्छे बनते हैं। रायबरेली के इलाके में क़सबे जायस में (जहां मलिक महम्मद पद्मावत का बनानेवाला शेरशाह बादशाह के समय में हो गया है) डोरिया, महमूदी, अधोतर, नामी कपड़े जुलाहे बहुत उमदा बनाते हैं बल्कि बाज़े ऐसे कारिगर होते हैं कि बुनते समय कपड़े पर इबारत की इबारत बुन जाते हैं। फ़ैज़ाबाद में सन्दूकचे, कलमदान अच्छे बनते हैं और केले शरीफ़े बहुत मज़ेदार उपजते हैं। टांडा जो सरजू के दाहिने किनारे बसा है एक पुराना शहर है इस में जुलाहे अधिक बसते हैं यहां की जामदानी, सोज़नी, शाहदरी कपड़े प्रसिद्ध हैं। छींटें भी छपती हैं। गोंडा में बेत के पिटारे उतरौला में फूल के बरतन अच्छे बनते हैं। इस ज़िले में टेढ़ी नदी के आस पास के टट्टू बड़े चालाक होते हैं। ज़िला खेरी के धौरहरा और खेरी गढ़ के बैल बड़े मज़बूत होते हैं और कई ज़िलों में बिकने को जाते हैं। ज़िला सीतापुर में आम बेल बहुत हैं। चावल भी यहां का प्रसिद्ध

हैं। मिसवाँ का काला तंबाकू अच्छा होता है। जिला हर-दोई में शाहाबाद के आईना आम, और पेशतर महमूदी कपड़ा अच्छा होता था। पिहानी की तलवार गोपामऊ की आरसी उमदा मशहूर है। संडीला का घी प्रसिद्ध है। उन्नाव में पिहे नवलगंज में पीतल के बरतन अच्छे बनते हैं उन्नाव उनाई कायस्थों की जड़ है। बाराबंकी में राव, शक्कर, फतहपुर में सूती कालीन बहराम घाट में गल्ला और साखू की लकड़ी के व्योपार इस लिये प्रसिद्ध है।

श्रीरामपुर हुगली में सिरामपुरी कागज़ बनता है और इसी शहर के नाम से प्रसिद्ध है यह शहर १८४६ ई० तक डेनमार्क वालों के दखल में रहा।

सिलहट का कौला, ढाल और सीतलपाटी प्रसिद्ध है।

कचार के ज़िले की चाय प्रसिद्ध है।

आसाम की कमिश्नरी की तेलहन, तंबाकू, चाय, पान, लकड़ी, चीनी, पटुआ प्रसिद्ध है।

पूर्णिया में सिंदुर का काम बहुत अच्छा बनता है और यहां का मखाना देशावरों में प्रसिद्ध है।

संताल परगने का लोहा, शहतीर और कोयला प्रसिद्ध है।

छपरा (सारन) के इलाके अलीगंज सिवाने में शोरा बहुत अच्छा बनता और अलीगंज सिवान का लोटा, गिलास, गुड़गुड़ी आदि वस्तु बहुत प्रसिद्ध है और देश देशांतरों में चलान होता है।

मुज़फ्फर के इलाके हाजीपुर का लंगड़ा आम प्रसिद्ध है। हाजीपुर परगने में एक बस्ती लालापुर है वहां की छुरी,

चाकू, कतरनी आदि लोहे की वस्तु बहुत प्रसिद्ध है। नदिया के इलाके सांतीपुर में कपड़ा बहुत अच्छा बनता है।

मुर्शिदाबाद के समीप कासिम बाज़ार के रेशमी कपड़े पहले बहुत प्रसिद्ध था। बाढ़ का चमेली तेल मशहूर है। सिलाव का खाजा मशहूर है।

बेरीसाल बालम चावल के लिये प्रसिद्ध है।

बनारस की कमख्वाब, दुपट्टे, गुलबदन, रेशमी और ज़रबाफ़ी खूब बुना जाता है।

मथुरा और गया का पेड़ा प्रसिद्ध है।

लुधियाने में पशमीने का काम खूब होता है।

मुलतान का छींट, रेशमी कपड़ा, खेस, दरी, कालीन, शाल, और दुशाला मशहूर है।

डेरा गाज़ी खां का रेशमी, और सूती कपड़ा और हथियार प्रसिद्ध है।

हैदराबाद में कारचोबी का काम अच्छा बनता है।

बंबई का आम प्रसिद्ध है।

पश्चिम बेरार में अकोला, सूती कपड़े और गलीचे अच्छा बनता है।

मछलीबंदर छींट के कपड़े के लिये प्रसिद्ध है।

रामपुर (रूहेलखंड) का खेस मशहूर है।

कश्मीर में शाल बाफ़ तो होता ही है पर केशर के लिये मशहूर है।

विसहर से पसमीने की चादर वगैरह अच्छी बनती है। हैदराबाद से तीन मील पर बिदर है वहां हुक्का रेकाबी और आबख़ोरा जस्ते का अच्छा बनता है।

सिरोही की तलवार और कटारी मशहूर है।

नयपाल बड़ी इलायची, तेजपात, हाथी, चावल, लकड़ी चमड़ा, लोहा, तांबा, अदरक, शहत, और चमरी गौ की पूंछ के लिये मशहूर है।

सलेम इसपात के लिये मशहूर है।

गया के टसर कपड़े पत्थर और पीतल के बरतन कम्बल कालीन दरी घी अमरख बादला मिरचा नील गुड़ चावल खयर लाह पान तंबाकू, आदि पदार्थ बाहर जाते और उत्तम गिने जाते हैं।

साहबगंज के सामने पू० नदी पार बुनियादगंज भारी बस्ती है यहां पहले टसर कपड़े और रेशम के कोयों का बड़ा कारोबार था अब भी कुछ कुछ है, यहां कसेरे लोग ढालुआं बरतन बहुत बनाते हैं, पटवों के भी यहां अधिक घर हैं।

शहरघाटी से आठ कोस नैऋत कोण में मोरहर नदी के दहने किनारे रानीगंज भारी बाज़ार है यह आठवें दिन शुक्र को लगती है। यहां लाह, धूप, तिल, घी, लकड़ी, सहत आदि बहुत बस्तु बिकती हैं। यहां लाह की कोठियों में चपरा बनता है यह बाज़ार ज़िले की बाज़ारों से भारी और प्रसिद्ध है।

टटुआ पैंवार नदी के दहने किनारे पर बसा है यहां थाना और डाकखाना है, इस से डेढ़ कोस उत्तर पत्थरकट्टी का बड़ा प्रसिद्ध पहाड़ है इसका पत्थर पक्का सुन्दर और नीले रंग का है पच्छिम के संगतराश लोग जो बिष्णुपद

के मन्दिर बनाने के लिये आये थे, यहां बस गये हैं, ये लोग इस पत्थर की रिकाबी गिलास थाली हुक्का पथरी आदि वस्तु बनाते हैं यहां की चीजें गया में यात्रियों के हाथ बहुत बिकती हैं। अरई के नज़दीक पहाड़ में सेलखरी की खानि प्रसिद्ध है।

जहानाबाद की बस्ती दरधा नदी के बांये किनारे पर बसी है सुनते हैं कि पहले यह बस्ती जब देशी कपड़ों की बड़ी चलन थी, बड़ी चटकीली थी यहां का सहन और धोती बहुत प्रसिद्ध थी कपड़ों की खरीद बिक्री के कारण कई एक मकान आज भी सट्टी के नाम से प्रसिद्ध हैं यहां का माल दूर दूर तक जाता था। इसी व्यापार के कारण बहुत से खत्री लोग यहां बस गये थे। पहिले ये लोग बहुत सुचित्त थे, पीछे तो व्यापार के घट जाने से तंग होकर इधर उधर चले गये जो रह गये हैं वे और और व्यापारों से अपना निर्वाह करते हैं। धोबी और जुलाहे तो यहां से बिलकुल ही निकल गये, यहां तेलियों के आज भी पांच सौ घर होंगे।

पहले अरवल में कागज़ का बड़ा व्यापार था, यहां का (अरवली) कागज़ बहुत पुष्ट चिकना और देखने में सुन्दर भारतवर्ष भर में प्रसिद्ध था संस्कृत की पोथियां प्रायः इसी कागज़ में लिखी जाती थीं, यहां के कागज़ का कुछ कारोबार अब सोनपार बिहार में चला गया है अरवल का कागज़ी महल्ला तो उजाड़ सा पड़ा है यहां सारडोन साहब का नील का गुदाम बहुत चटकीला है यहां से बहुत सा नील तैयार होकर हरसाल बाहर जाता है चीनी के भी यहां कारखाने हैं।

नवादे से दो कोस पू० सकरी नदी के बांये तीर पर कादिरगंज भारी बाजार है यहां टसर के कपड़ों का बहुत कारोबार होता है।

कादिरगंज से ३ कोस ईशान कोन में सकरी नदी से थोरी दूर पू० वारसलीगंज भारी बाज़ार है यहां सोरे का बड़ा भारी गुदाम है साल में हज़ारों मन सोरा यहां से तैयार होकर कलकत्ता रवाने होता है।

इसुआ का सरपोस बहुत बढ़िया बनता है चिराग पर रखनेसे कई रंग बदलता है मिट्टीके बरतन सुराही रिकाबी चुकिया पियाले गिलास आदि भी बहुत हलके और सुडौल बनते हैं।

गोविन्दपुर बैजनाथ जी की कच्ची सड़क पर भारी बाज़ार है यहां लकड़ी और बहुत सी जंगली चीजें बिकती हैं। रफी गंज का कम्बल प्रसिद्ध है। नबीगंज नगर में कांसे और फूल के बरतन अच्छे बनते और दूर तक बिकने को लिये जाते हैं।

नबीनगर से दो कोस दक्खिन पुनपुना के दहने किनारे टंडवा बाज़ार है दक्खिन की बहुत सी चीज़ें वहां बिकती हैं यहां खरादियों के बहुत से घर हैं ये लोग काठ की डिबिया सिंधोरे और भांति २ के खिलौने खराद कर तैयार करते और बिकने के लिये देशावरों को भेजा करते हैं।

टंडवा से दो कोस दक्खिन महराजगंज भारी बाजार है यह पलामू और गया जिले का सिवाना है यहां से तिल और घी देशावरों को बहुत रवाने होता है इसी के नगीच किशुनपुर नदाने के किनारे पर है यहां मेला लगता है।

तीर्थ की जगह ।

ज़िला एटा में मेले का तीर्थस्थान ।

देवी—विन्ध्यासिनी परगनह एटा, मिति चैत शुदी ८ और कुआर शुदी ८ दो बार वर्ष भर में मेला होता है और लगभग १५००० हज़ार आदमी जमा होते हैं बाज़ार बिसातियों और हलवाइयों का लगता है।

रामलीला—एटा ख़ास में, कुआर शुदी १ से प्रारंभ होता है और १० दिन रहता है मेला ठहरता नहीं है दो पहर होता है हर रोज़ चला जाता है लग भग ४०००० आदमी जमा होते हैं।

भराही—निधौली छोटी परगनह एटा, मिति चैत शुदी १४ और कुआर शुदी १४ को मेला होता है एक साल में दो दफ़े लग भग ५००० आदमी जमा होते हैं मट्टी के बर्तन ज्यादह बिकते हैं।

महादेव—सेना परगनह एटा, एक वर्ष में दो बार होता है एक भादों शुदी ६ दूसरा फाल्गुण शुदी १२ को मेला होता है और तीन हज़ार मनुष्य जमा होते हैं।

महादेव—परसोन परगनह सोंहार, मिति भादों शुदी ६ और फाल्गुण शुदी १२ को वर्ष भर में दो बार होता है और दो रोज़ जमा रहता है यात्री दूर के आते हैं यह बहुत पुराना मकान भाड़ी में है परशराम के पधराये हुए महादेव हैं और नाम इनका परशरामनाथ है अब बोल चाल में परसोननाथ पुकारे जाते हैं।

महादेव—बिलसड परगनह आज़मनगर, भादों शुदी

६ को और फाल्गुण सुदी १२ को मेला होता है और रात भर रहता है और ५००० हज़ार आदमी जमा रहता है।

देवी—रामपुर परगनह आज़मनगर, चैत्र सुदी ८ और कुआर सुदी ८ को मेला होता है और एक दिन ठहरता है और ७००० हज़ार स्त्री पुरुष जमा होते हैं।

रामचंद्र—रामछितौनी परगनह सहावर, रामनवमी को मेला होता है और गंगा पार के आदमी मेले में आते हैं और राजाराम चन्द्र के बेटे कुश लव के दर्शन होते हैं और इसी जगह जन्म हुआ है।

चतुर्भुज—इतवारपुर परगनह सहावर, यह मेला नया जारी हुआ है और इंतज़ाम भी नया है याने चतुर्भुज नामी भूत है उसकी पूजा वैशाख सुदी १५ पूनों वा कातिक सुदी १५ को पूजा होती है दूर २ के आदमी आते हैं और विश्वास लाते हैं १५००० हज़ार वा बीस हज़ार आदमी जमा होते हैं।

सोरों—सोरों परगनह सोरों, हमेशा मेला होता है राजपूताने के यात्री आते हैं चंद्रग्रहण सूर्य्यग्रहण पर बड़ा मेला होता है १००००० लक्ष मनुष्य से विशेष देशांतर के जमा होते हैं और तिथि मार्गशिर सुदी ११ को मार्गशिरी का मेला १५ रोज़ तक मुक़ाम सोरों में रहता है और सब तरह के व्योपारी लोग व्योपार की वस्तु लाते हैं।

और यह मेला वाराहजी के कारण से होता है बूढ़ी गंगा के किनारे वाराहजी का मन्दिर अति रमणीय चित्र विचित्र बना है उस में वाराहजी की अति विशाल झांकी विराजमान है।

ज़िला जालौन का मेला वा तीर्थस्थान।

जगम्मनपुर राजा जगम्मनशाह का बसाया हुआ यमुना के द० और कोस भर के फ़ासिलेपर आबाद है इस में राजा के रहने की एक पक्की गढ़ी बनी है ५०००) हज़ार का इलाक़ा राजा साहिब को मुआफ़ है इस में क़रीब ६०००) सरकार को देते हैं यहां एक तहसीली मदरसा बीच बस्ती में चौराहे पर बना हुआ है इस गांव में ब्राह्मण ठाकुर बनियां आदि बसते हैं और यहां ठिकवां गाज़म और अमौवा अच्छा रंगा जाता है। इस में चौथे रोज़ बाज़ार भी लगता है और रानी गौरनी का बनाया हुआ यमुना का पक्का घाट उसके ऊपर बहुत अच्छा शिवाला बना हुआ है इस घाट के आस पास ऊंचे टीलों से पानी झरता है घाट से पूर्व ओर ऊंचा खेड़ा कनार जिस के नाम से परगहन कनार प्रसिद्ध हैं उस में कर्ण-देवी का मंदिर जिस के पास कुवां सम्वत् १७८२ का है कहते हैं कि यहां राजा कर्ण का क़िला था पहिले बस्ती इसी खेड़े के नीचे थी यमुना के किनारे सेंगर ठाकुर के बसने के कारण सिंगरवार कहाता है जगम्मनपुर से दो मील पर कंजौसा एक गांव है यहां मुकुन्दबन गुसाईं का मंदिर और उस में समाधि है उस के खर्च के लिये कंजौसा मआफ़ है इस के नीचे पांच नदियों का संगम अर्थात् पहूज सेंध कुआरी यमुना में मिली है और चंबलटावे ज़िलह से यमुना में मिल कर आई है इस कारण पंचनदा कहते हैं यहां कातिक सुदी १५ को पंचनदे का मेला लगता है और दूर २ से दूकानदार बरतन कपड़ा आदि बेचने को लाते हैं यह मेला ८ रोज़ तक रहता है।

रामपुर साखीगढ़ से तीन कोस पर बस्ता है यहां की गढ़ी में मकानात राजा साहिब के बहुत सुन्दर बने हैं २० हज़ार का इलाक़ा राजा साहिब का मआफ़ और अख़्तियार आनरेरी मेजिसट्रेटी का है यहां से थोड़ी दूर पर पहूज नदी के किनारे मौज़ा निनावली में एक मेला बारा-हियों का राजा ने लगवाया है उस में सब चीज़ें बिकने को आती हैं यह मेला छः सात रोज़ तक रहता है राजा साहिब मेले का इन्तज़ाम अच्छा करते हैं रामपुर के पास मौज़ा टोहर में राजा साहिब की गढ़ी एक और सुन्दर बनी है उस में मकानात और तहख़ाने उमदह बने हैं।

भरेह यह नाम इस कारण से हुआ है कि पहिले उद्दालक ऋषि का आश्रम था उन की स्त्री दरिद्रा की मूर्त्ति काले पत्थर की उसरार खेड़े के पास ओखादेवी के नाम से प्रसिद्ध है।

क़सबह सैदनगर किसी सय्यद का बसाया हुआ बेत्वा के तट पर आबाद है इस में देशी कपड़े का ब्योपार अधिक होता है। यहां का बाज़ार लम्बा परन्तु चौड़ा कम और बहुधा क़ौम ब्राह्मण बनियां रहते हैं और हर एक क़ौम काम छीपी का करते हैं इस कारण धनवान हैं इस बस्ती में दो देवालय विष्णु के और एक मंदिर भवरादेवी का बस्ती से पश्चिम तरफ़ छोटी सी पहाड़िया पर बना हुआ है मंदिर के सामने एक छोटासा कुण्ड अथाह भरा हुआ है उस के नीचे तालाब पक्का जिस में पानी निर्मल सुवान का भरा रहता है यहां साल भर में दो बेर मेला लगता है यह स्थान परम रम्य है यहां से थोड़ी दूर पर धुरट नाम एक ग्राम है वहां

पानी के सोते बारहों महीने भरते हैं इन सोतों पर दो छोटे छोटे कुण्ड अति रम्य जिनके किनारों पर केवड़े के वृक्ष सघन लगे हैं यहां कभी कभी नदी के चढ़ाव से वहीं तक पानी चला आता है।

यहां वामदेव ऋषि ने तपस्या कर अटल पदवी पाई इस कारण से नाम आटा हुआ इस परगनह के उत्तर में यमुना दक्षिण में नदी बेत्वा और पूर्व में इलाक़ह बावनी पश्चिम में परगहन उरई और कालीन है इस की लम्बाई खरका से राय-पुर तक २१ मील और चौड़ाई गुनौली से हज़रतपुर तक २४ मील है और क्षेत्रफल ४८३ सौ वर्गात्मक मील कुल मौज़अ २४३ और जमअ सरकारी १६०४१२॥, १० मर्दुमसुमारी ८८४४६ और इस परगहन में १८३६४ घर की आबादी और कोई एक क़सबह नामी है।

कालपी इस का नाम कालपी इस कारण से है कि यहां किसी समय कालप्रदेव ने तपस्या की थी और उन का स्थान भी बना हुआ है यह प्राचीन नगर यमुना के दाहिने तट पर व्योपार का स्थान रुई आदि की मंडी है यहां जीधर नदी के पास व्यासजी का जन्म हुआ था इस कारण से व्यास क्षेत्र भी कहते हैं। शास्त्र में इसे ऐसा लिखते हैं।

श्लोकः।

रेणुकः शूकरः काशी काली कामवटेश्वरौ।
कालिंजर महाकालः ऊखला नव मुक्तिदः॥ १॥

इस में एक गंज जनाब साहिब लेफ्टिनेंट करनेल ए० एच० टरनन डिपुटी कमिश्नर बहादुर ने बहुत सुन्दर बनवाया है

इसमें चौपड़ का बाज़ार दूकानें जिनके आगे सायबान दरख़्त गुंजान रम्यस्थान है और चार तरफ़ और फाटक लगे हुए हैं यहां व्योपारी लोगों को बड़ा आराम मिलता है इस गांव के पास पड़ाव और तालाब है और एक पुराना क़िला बादशाही समय का फूटा पड़ा है उस में एक कोठी और बहुधा मकानात सरकारी बने हैं और सड़क झांसी पर जो कानपुर को गई है मदरसह तहसीली और शफ़ाख़ाना बना हुआ है इस नगर में देशी काग़ज़ और मिसरी बहुत अच्छी बनती है कालपी के पश्चिम ओर बादशाही समय के टूटे फूटे स्थान पड़े हैं वे चौरासी गुम्बज़ कहाते हैं।

इटौरा इस में रोपन गुरु का मन्दिर जो संवत् १६७२ में जहांगीर बादशाह ने बनाया था बना है कहते हैं कि शाहजहांगीर से रोपन गुरु के चेला परसराम ने ईंट मांगी थी इस कारण इटौरा कहाता है मन्दिर के पास एक तालाब किसी साहूकार ने बनाया है यहां कातिक सुदि १५ को हर साल मेला लगता है।

चौथा बवीना इसका नाम बवीना इस कारण से है कि अगले समय में वालमीकजी ने तपस्या की थी यह क़सबह अच्छा गुलज़ार आदमी मालदार ब्राह्मण और ठाकुर बस्ते हैं इस में अकसर मकानात पक्के और ऊंचे बने हैं।

परासन इसका नाम परासन इस कारण से हुआ कि यहां व्यास जी के पिता पाराशर का आसन अर्थात् स्थान है यहां नदी में हाथ डुबाने से बड़ी २ मछलियां आप से आप ऊपर को उछलती हैं।

बायईं इस में गणेशजी का मंदिर और एक तालाब बना है यहां माघ कृष्ण ४ को मेला लगता है यह मेला छः सात रोज़ तक रहता है इस में दूकानदार कानपुर और ज़िला इटावे से बरतन कपड़ा बेचने को जाते हैं।

गयाज़िले के तीर्थों का वर्णन।

गया से दक्खिन तीन कोस पर बोधगया बड़ा प्रसिद्ध और प्राचीन स्थान है वहां एक बिशाल ईंट का पुराना मन्दिर पूर्व रुख का देखने लायक है बुद्धदेव की मूर्त्ति स्थापित है बरमावाले कहते हैं कि यह मन्दिर शाक्य सिंह राजा का बनवाया है इस को २३०० बरस का पुराना है देखने में भी बहुत पुराना जान पड़ता है इस के आसपास खोदने से बहुत सी गड़ी हुई मूर्त्तियां निकलती हैं थोड़े दिन हुए कि बरमा के महाराजा की ओर से नई कारदिवाली बनी है पर अब सुनते हैं कि इस की मरम्मत सरकार की ओर से अच्छी तरह की जायगी। इस मंदिर के पूरब एक छोटे से मंदिर में पांचों पांडवों की बिशाल मूर्त्तियां हैं, बड़े मंदिर के पीछे एक पीपल का पेड़ है उसे लोग सतयुगी पीपल कहते हैं यह सूख गया था पर अब नये सिरे से एक दूसरा पेड़ फिर पल्लवित हुआ है यहां एक महंत राजा के समान धनी रहते हैं यहां विदेशियों को महंथजी के यहां से सदाव्रत मिलता है।

टेकारी से उत्तर ३ कोस पर केसपा गांव में भगवती तारा देवी का मंदिर बहुत प्रसिद्ध है।

शेरघाटी के इलाक़े में नारायणपुर, इमामगंज, रोशनगंज अमारत, पामस ये सब बाज़ार हैं अमारत से चार कोस दक्खिन पहाड़ के ऊपर तालाब और कोलेश्वरी देवी का मंदिर है यह

स्थान पहाड़ और जंगल के कारण बड़ा दुर्गम है, यहां वाले कहते हैं कि पांडव लोग इसी स्थान में छिपकर एक बरस तक रहेथे यही विराटपुर है सो कुछ हो पर अब भी वह स्थान बहुत रमणीय देखने योग्य है।

ढाढ नदी के पच्छिम फतेहपुर एक बड़ा गांव है पहले यहां के खत्री लोग बहुत संपन्न थे उन्हीं लोगोंका बनवाया गढ़ है अब उन लोगों की वह अवस्था नहीं है यहां से थोड़ी दूर अग्निकोण में संडेश्वर महादेवका प्रसिद्ध स्थान है इस मूर्त्ति को लोग बहुत प्राचीन कहते हैं शिवरात्रि को यहां मेला लगता है।

अरई के पश्चिम कोस पर पहाड़ की आड़ से गर्म पानी के तीन झरने हैं उसे उसे तपोवन कहते हैं वह बड़ा रमणीय स्थान है मकर की संक्रांति में मेला लगता है।

जहानाबाद में जमुना दरधा नदी के मुहाने पर गुरदयाल साहु की बनवाई ठाकुरबारी सुन्दर स्थान है यहां कातिक की पुनियां को मेला लगता है।

जहानाबाद से पांच कोस दक्खिन धराउत बड़ी भारी पुरानी बस्ती है, यहां कोइरी अधिक रहते हैं कान्यकुब्ज ब्राह्मणों के भी थोड़े से घर हैं इन में पाठक लोग सम्पन्न हैं इस बस्ती में तीन पुराने गढ़ हैं, उनमें से गांव के नगीच वाले से लोग आज तक ईंटा खोद खोद कर निकाला करते हैं यह बस्ती पहले की राजधानी जान पड़ती है, यहां के राजा रतन सेन अपने भांजे पदुमचक्र को लड़ाई में भगाया था तब से इस जगह को पराजीत कहते हैं, यह धराउत के पास ही एक छोटी सी बस्ती है यहां दक्खिन से उत्तर पहाड़ तली तक

..म्बा जो बड़ा भारी तालाव है यह राजा रतनसेन ही का खुदवाया बतलाते हैं, बरसा में भरने पर यह बहुत मनोहर लगता है तालाव के पूरब किनारे पर भगवान नृसिंहजी का एक छोटा सा मंदिर है।

घरालत के दक्खिन बराबर पहाड़ है इसमें सिद्धेश्वर नाथ महादेव का मन्दिर बड़ा प्रसिद्ध स्थान है यहां एक बड़ा भारी झरना है उसे झिस्ती कहते हैं अब घाट बंध जाने से बहुत सुन्दर लगता है यहां अनन्त चतुर्दशी को बड़ा मेला लगता है सावन में लोग महादेव पर बेलपत्र चढ़वाते और ब्राह्मण भोजन करवाते हैं महादेव के मन्दिरसे दक्खिन नीचे एक छोटी सी चट्टान में पत्थर खोद कर बहुत सुन्दर कोठरी बनीहै इसे कोई चौपार कहते हैं पूरब पश्चिम लम्बी उत्तर रुख को है इस में से पत्थर को इस भांति काट कर निकाला और चिकना किया है कि हाथ फेरने से कांचके समान चिकना लगता है इस के ठीक पिछवाड़े इसी भांति की चार कोठरियां और है, उन्हें सत घरवा कहते हैं। पर्वत के बीच यह स्थान बहुत ही सुन्दर बने हैं इस पर्वत में पताल गंगा और छथिया बीर ये बड़े और प्रसिद्ध झरने हैं। एक बार सरकार की ओर से लोहा निकालने कारखाना प्रारम्भ हुआ था पर थोड़े ही दिनों के बाद उठा दिया गया, यहां लंडा गिर में मुस- ल्मानों की एक बड़ी प्रसिद्ध कबर है।

अरमद के इलाकों में दिकुण्ड एक भारी तीर्थ है यहां महादेवका मन्दिर और बड़ा भारी तालाव है शिवरात को यहां बड़ा मेला लगता है इस में घोड़े और बैल बहुत बिकते हैं।

था दरार पाई प्रगट होती हुई कुंड में आकर बिलकुल तमाम हो जाती है और कुंडिकी में पानी के खौलने का भी यही सबब है कि उस आग का रस्ता पानी के नीचे से गुज़रता है पानी बहता हुआ है इस कारन गर्म नहीं होता यदि पानी न होता तो वहां ज्वाला प्रगट होती मंदिर के अंदर भी कुंड के उ० और प० तरफ जो उस जलती हुई हवा के आने का रास्ता है उस में फ़र्श के पत्थर तपा करते हैं। और द० और पू० के सदा ठंढे रहते हैं अंगरेज़ी में इस तरह की हवा को जो सदा जलती रहती है हैड्रोजनगैस कहते हैं जिन्हों ने किमिस्ट्री अर्थात् रसायन विद्या पढ़ी है वे इस के भेद से खूब वाकिफ़ हैं यदि किसी शीशी के अंदर थोड़ा सा लोहचुन रखकर उसपर पानी में घुला हुआ सल्फ्युरिकएसिड अर्थात् गंधक का तेज़ाब डालो तो हैड्रोजन-गैस बन जावेगा और उस शीशी के अंदर से वही चीज़ निकलेगी कि जो ज्वालाजी में कुंड के कोने से निकलती है जैसे वहां पंडे लोग ज्वाला ठंढी होने पर बत्ती दिखला देते हैं उसी तरह यदि तुम भी उस शीशी के मुंहपर जलती हुई बत्ती लेजाओ तो जिस तौर पर ज्वालामुखी में सूराखों से आग की लाटें निकलती हैं उस शीशी के मुंह पर भी आग जलने लगेगी बाज़े आदमी ऐसी चीज़ें देखकर बड़ा अचरज मानते हैं वरन उनको सृष्टिकर्त्ता ईश्वर जानकर उनकी पूजा करते हैं और बाज़े जो उनके भेद से वाकिफ़ हैं उन्हें भी औरों की तरह स्वाभाविक वस्तु समझ कर सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की अद्भुत अपार रचना पर बलिहारी जाते हैं

और उस जगह उसी के ध्यान में मग्न होकर उसीको पूजा करते हैं।

बलिया जो गंगा के बायें किनारे पर बसा है छोटी सी बस्ती है यह सन् १८७९ ईसवी में ज़िला ग़ाज़ीपुर और आज़मगढ़ से अलग होकर एक नया ज़िला क़ायम हुआ है इस में गंगा और छोटी सरयू के संगम पर जहां भृगुमुनि का स्थान है छोटो ददरी नामे कार्तिक की पूर्णमासी को स्नान का बड़ा मेला होता है घोड़े आदि देश देश से बिकने आते हैं।

गोरखपुर—अगहन शुक्लपंचमी को बैकुंठपुर जो देवरिया से आठ मील पू० है धनुषयज्ञ का और बैशाख शुक्ल तितिया को सोहनाग में जो सलेमपुर मझौली से ४ मील नैऋत्य है परशुराम जी के दर्शन का बड़ा मेला होता है पंद्रह पंद्रह दिन तक रहता है देश २ की चीज़ें बिकने को आती हैं।

बस्ती—मगहर में कबीर की समाधि है बखरा की झील मशहूर है। मगहर ख़ास में कबीर की क़बर आमी के प० कनारे पर बनी है और उसका मत बहुत ज़िलों में चल रहा है। वह एक आत्मा को मानता था किसी जीव को सताना बड़ा पाप समझता था और मछली मांस खाना भी बुरा जानता था उसकी क़बर एक मुसल्मान ओझाहे के अधिकार में है। और वह ओझाहा मांस मछली नहीं खाता और वह बहुत पाक रहता है। और उसका चाल चलन भी हिन्दुओं की तरह है और क़बर के बांए तरफ़ एक हिन्दू महन्त ने एक दूसरा मंदिर बनाया है उसे

बनाये ११७ बरस हुआ होगा लोग कहते हैं कि कबीर को किसी जोलाहे की स्त्रीने कमल के पत्तों पर बहता हुआ पाया था और अपने घर में लाकर पाला कबीर अपने विद्या बल से बड़ा प्रसिद्ध हुआ और जगन्नाथ जी को गया। सन १२७४ ईसवी में मगहर खास में मरा अब उस के चेले कुछ मुसल्मान और कुछ हिन्दू हैं। और उस की कबर के द० तरफ कोपेश्वरनाथ की मढ़ी है उसके निकट एक पुराना खण्डहर पड़ा है उसके देखने से मालूम होता है कि यह बस्ती बहुत पुरानी है। एक मसजिद जिस को क़ाज़ी खलीलुर्रहमान ने बनवाया था मगहर में मौजूद है और उस के भीतर एक सुरंग है लोग कहते हैं कि यह सुरंग खलीलाबाद के क़िले तक चली गई है। और खलीलाबाद में एक ऊंचा क़िला है जिसमें तहसीलदारी है अनुमान से मालूम होता है कि उस को भी उसी क़ाज़ीने बनवाया होगा जिसने वह मसजिद तैयार कराई थी। एक पुल ब नाम रीड साहिब का बनवाया आमी नदी पर बहुत लम्बा बंधा है। गांव के प० तरफ़ एक टूटा सा कोट है उस को लोग कहते हैं कि थवैलों का कोट था और स्त्रीनेतों ने उन को निकाल कर अपने अधिकार में कर लिया।

बखरा से दो कोस द० मौज़ा बिहार के पास कपिलिया उर्फ़ कोपिया बुध का जन्मस्थान उजाड़ पड़ा है। भारत भारी इलाके डुमरिया गंज में कार्तिक पूर्णमासी को स्नान का व अगहन सुदी ५ को जिगना में धनुषयज्ञ का व फागुन सुदी १४ शिवरात्रि के दिन दुधेश्वरनाथ का बड़ा

मेला होता है दूकानें दूर २ से आती हैं और १५ दिनों तक रहती हैं इलाके बांसी में पशटा देवी का मेला चैत के नौरात्रि में भी बड़ी भीड़ का होता है।

गोरखपुर से उ० और पू० १४ मील इटइया नाम एक जगह जंगल में है उस जगह को अबदुल्ला दिरहमान दस्तगीर की मढ़ी बताते हैं उस्की क़बर बग़दाद में हैं और यह भी कहते हैं कि उसने चालीस दिन तक उस जंगल में चिल्ला खींचा था।

आज़मगढ़ के इलाके सराय मीर में अली आशिकां की दरगाह मशहूर है क़ब्र संगमरमर होती जाती है।

दगार के पं० शेख़ क़ासिम सुलेमानी की दरगाह है।

जौनपुर में अटाले की मसजिद मशहूर है।

फ़तेहपुर सिकरी में शेख़ सलीम चिश्ती की दरगाह है और अकबर और बीरबल के महल अच्छे देखने लायक़ बने हैं।

बारहबंकी के इलाके सतर्क में साहू सालार के मक़बरे की ज़ियारत का मेला बड़ी धूम धाम का होता है। रुदौली में सय्यद सालार मसऊद की बीबी ज़ोहरा की मज़ार है।

फ़ैज़ाबाद के इलाके में टांडे से ७ कोस पू० किछौछे में मखदूम जहांगियां जहांगश्त और अकबरपुर में शाह रसनाग की दरगाह है। हज़ारों आदमी अगहन में दर्शन के वास्ते जमा होते हैं।

जौनपुर शहर से ३ मील ईशानकोन पर चौकिया में शीतला देवी का मंदिर बना है। बहुत लोग पूजने जाते हैं॥

जौनपुर से एक मील पू० सूर्यघाट पर कार्तिक के पूर्ण-

मासी को गोमती स्नान का बड़ा मेला होता है और उसी रात को सिपाहनाथा के पास सप्तआइन के तालाब पर नागनाथने की शोभा और रोशनी होती जौनपुर से १२ मील अग्नेय बड़ा गांव में त्रिलोचन महादेवका फागुन बदी १४ को धूमधाम का मेला होता है।

ज़िला फतेहपुर का शिवराजपुर में कातिक की पूर्णमासी को गंगा स्नान का बड़ा मेला होता है। दूकानें १५ दिन तक जमी रहती हैं देशदेश बैल घोड़े बिकने आते हैं।

ललितपुर शहर से प० निकट ही सदनकसाई का समाधि स्थान है।

आजमगढ़—महाराजगंज के पास छोटी सरयू के किनारे भैरवनाथ का स्थान। मझुई और टौंस नदियों की संगम पर कार्तिक की पूर्णमासी को स्नान का दुर्वासा नामी बड़ा मेला होता है।

मिर्ज़ापुर रोग गंगा के दाहिने किनारे पर बसा है। शहर से ४ मील प० गंगा के दाहिने तट पर विन्ध्यवासिनी का मंदिर है। चैतक्वार के नवरात्रि में बड़ा मेला होता है। बिन्ध्याचल से २ मील प० पहाड़ पर खोदकर अष्टभुजा देवी का मन्दिर बना है यहां पर भी लोग पूजने जाते हैं। पासही एक छोटा सा ठंडे पानी का झरना भी है।

कमायूं ज़िले में रानीखेत में पाताल भुवनेश्वर जहां दो मील तक ज़मीन के नीचे अंधेरे रास्ते में होकर जाना होता है बड़ा विख्यात स्थान है और जागेश्वर का मंदिर भी प्रसिद्ध है।

गोंड़ा ज़िले में तुलसीपुर से एक मील प० देवीपाटन

का विख्यात मंदिर है। चैत्र शुक्ल नवरात्रि में बड़े धूमधाम का मेला होता है। देश देश से कईहज़ार घोड़े विशेष कर नैपाल से टांघन बिकने आते हैं। और भी तिब्बत के निवासी सुरागाय के पूंछ का चंवर, कस्तूरी, चिड़िया, कुत्ते गरम मसाले, व्यौपार के हेतु ले आते हैं।

बहरायच यह छोटी सी बस्ती सरयू से हटकर उ० तरफ़ आबाद है। यहां महमूद ग़ज़नवी के भानजे सिपह सालार मसऊद ग़ाज़ी का मक़बरा है। हर जेठ के पहले अतवार को बड़ी धूमधाम का मेला होता है, हज़ारों मर्द औरत व बाद्स झूठी समझ के प्रेत व भूत का कारण कागमार हवुआते हैं इस जगह पर पहले सूर्य का मंदिर और कुंड था जब सालार साहिब ने मंदिर गिराना चाहा बहुत पहाड़ी राजे एकत्रहुये और लड़ाई हुई जिस में गाज़ी साहिब शहीद हुये।

खेरी के इलाके गोला में गोकर्णनाथ महादेव के दर्शन का मेला फाल्गुण और चैत में अनुमानसे सवालाख आदमी की भीड़ का होता है।

सीतापुर के इलाके मिश्रीख में मार्गशीर्ष में हरगांव में सूर्यकुंड का कार्तिक की पूर्णमासी का स्नान का मेला बड़ी धूम का होता है।

गढ़वाल जिले से समुद्र से १०५०० फ़ुट ऊंचे अलख नन्दा नदी के दाहिने किनारे पर बद्रीनाथ का मन्दिर सिद्ध है। गज भर काले पत्थर की मूर्ति की पूजा होती हैं। बैसाख शुक्लतृतीया के दर्शन का बड़ा भारी मेला होता है

बहुधा सम्पूर्ण भारतवर्ष के भागों से यात्री दर्शनार्थ आते हैं। यह स्थान समस्त हिन्दुस्थान में अत्यन्त प्रसिद्ध है शरद शिशिर ऋतु में बर्फ़ के कारण पुजारी लोग मन्दिर बन्द कर के नीचे उतर कर जोशीमठ में आरहते हैं। बद्रीनाथ से वायव्यदिशा पर कुछ दूर मन्दाकिनी नदी के किनारे केदारनाथ का प्रसिद्ध स्थान है। वहां काले पत्थर की पूजा होती है। इससे थोड़ी दूर पर शीतलजल का गौरी कुंड और तप्त जल का सीता कुंड दो झरने हैं अलखनन्दा और मन्दाकिनी के सङ्गम को रुद्रप्रयाग और अलखनन्दा और गंगा के संगम को देवप्रयाग कहते हैं ये दोनों बड़े पहाड़ी तीर्थ हैं।

हरिद्वार में जो सहारन पुर से उ० है हरसाल चैत्र शुक्ल में बड़ा भारी मेला होता है। देशदेश के यात्री आते हैं और कई हज़ार घोड़ों का हाट होता है।

इलाहाबाद गंगा और जमना के संगम पर गुप्तभी सरस्वती नदी भी उन दो नदियों में मिल गई है इसलिये त्रिवेणी कहाता है मकर को संक्रांत का मेला भारी होता है। बनारस गंगा पर बिश्वनाथ का मंदिर है माधो दास का धरहरा बहुत ऊंचा है होली के बाद बुढ़वा मंगल मेला मशहूर है। बिठूर कानपुर के समीप गंगा पर। मथुरा जमना पार शास्त्र में इस का नाम सूरसेन लिखा है श्रीकृष्ण का जनमस्थान है ५ मील उ० वृन्दावन नंदगांव, बरसाना, गोकुल् और गोबर धन गिरि श्री कृष्ण जी के रस बिहार हिन्दुओं को पवित्र जगह। पुष्कर अजमेर से ८ मील पर। हरिद्वार मेरट के समीप।

सीताकुंड चटगांव से २० मील उ० जल इस का गर्म है जलती हुई बत्ती पास लेजाने से उस की भाफ बारुद सी जल उठती है सीताकुंड के पानी पर ज्वालामुखी के समान सदा आग जला करती है। जगन्नाथ कटक से उ० समुद्र के तट इसे पुरी भी कहते हैं। मंदरगिरी भागलपुर से २० कोस द० जंगल में आध कोस ऊंचे पहाड़ पर शिवरात्रि में मेला होता है मधुसूदन जी की मूर्त्ति इस पर है । बैजनाथ बीरभूम से ६० मील वा० झाड़खंड के अंदर देवगढ़ में। गैबीनाथ भागलपुर से १६ मी प० सुलतानगंज में गंगा के बीच २०० फुट ऊंचे पहाड़ पर है यहां जान्हवी मुनि तपस्या करते थे। गंगासागर कलकत्ता से नीचे सागर और शहबाज़ पुर के पास गंगा समुद्र से मिली है यही तीर्थ है। हरिहर छतर पटने के समीप हाजीपुर में (यथार्थ में सोनपुर में) गया बिहार के द० फल्गू पर पितरों को पिंड यहीं देते हैं फल्गू का पानी दूध सा उजला है। सुमेरु शिखर हजारी बाग से २० कोस पू० जैनियों का तीर्थ स्थान है। कुरुक्षेत्र पानीपत के उ० यहां कौरव और पांडव में भारी लड़ाई हुई थी। कांगड़ा हुशियारपुर के ई०। ज्वालामुखी उस के ५० मील पू० आग की पूजा करते हैं। अमृतसर जलंधर के प० सिक्खों का तीर्थ है । अयोध्या फैजाबाद के २ मील पू० श्री रामचन्द्र का जन्मस्थान है यहां हनुमान गढ़ी बहुत अच्छा मंदिर हैं और बहुत से पुराने घरों के चिन्ह पड़े तथा मालूम होते हैं लोग कहते हैं कि पहले अयोध्या सरयू में बहगया। इस को राजा विक्रमादित्य ने

पुरानेग्रन्थों से सोधकर नया बसाया । महाबलेश्वर पूना के द० कृष्णा के निकलने के कारण तीर्थ है । पण्ढरपुर सितारा से १० मी० पू० भीमा नदी पर। सुक्तीनाथ नयपाल में गंडक के बहुत निकट। रेवालसर मंडी से १० मी० पर व्यासा के बांये कनारे। द्वारिका गुजरात के ४०मी० उ० जूनागढ़ के पास इसे खेताचल और गिरनगर भी कहते हैं जैनियों का बड़ा तीर्थ है । श्रीनाथ उदयपुर से २२ मी० उ० बनास नदी पर इसे नाथ द्वारा भी कहते हैं । नांदेड़ हैदराबाद से १२५ मील उ० गोदावरी पर सिक्खों का तीर्थ है । चित्रकूट पश्चिमोत्तर देश में बांदे से १८ कोस द० पू० के कोन पर है इस स्थान में महाराज श्रीरामचन्द्र सीता लक्ष्मण बनवास के समय में बहुत दिन तक ठहरे थे।

अंगरेज़ी फ़ौज की छावनी की जगहें ।

१—कानपुर गंगा के कनारे।
२—फ़रुख़ाबाद गंगा के कनारे।
३—मेरठ बलंद शहर के उ० ।
४—लोहूघाट अलमोरे से २५ मी० पू० नयपाल के सीमा पर
५—नसीराबाद अजमेर से १४ मी० पर ।
६—दानापुर पटने से ६ मी० प० के गंगा के तीर पर ।
७—सुगोली मोतिहारी के पास ।
८—डोरंडा छोटेनागपुर से २ मील पर ।
९—सपाटू सिमला से ३० मील पू० ।
१०—कसौली सपाटू से १२ मी पू० ।

११—हसनाई ।

१२—पेशावर सिंध नदी के पार ४४ मी० पर।

१३—लखनऊ अवध में गोमती पर ।

१४—नीमच ग्वालियर से २६० मी० नै०।

१५—सिहोर भूपाल से २० मील प० नै० को झुकता है।

१६—मऊ इंदौर से १० मी०द०।

१७—सिकंदराबाद शहर हैदराबाद से ३ मील ई०।

१८—बंगलूर शहर मैसूर से ७० मील ई०। कनानूर में छावनी है।

१९—दमदमा कलकत्ता के समीप। कलकत्ते से आठ कोस पर बारकपुर की छावनी है।

२०—हिसार में फौज की बड़ी छावनी है।

---

१ किला—आगरे में यमुना के किनारे अकबर बादशाह का बनवाया हुआ लाल पत्थर का किला और भीतर उस के संगमरमर की मोती मसजिद है। २ इलिचपुर बादशाही ज़माने में सूबे बरार की राजधानी था, इसके प० में गावल गढ़ का प्रसिद्ध किला है। ३ गढ़वाल पहाड़ी ज़िला है इसमें श्रीनगर था। पुराना जो अलकनंदा नदी के किनारे बसा है बड़ी प्रसिद्ध जगह है यहां एक पुराना किला है जो पांडवों नाम से विख्यात है। ४ गोंडा ज़िला में बलरामपुर से ३ कोस प० राजा सुहिल्देव का जो सलार मसऊद गाज़ी से लड़ा था किला उजड़ा पड़ा है जिसे लोग सहेट महेट कहते हैं। ५ जौनपुर में किला पुराने समय के बने हुए देखने लायक है। ६ झांसी का पुराना शहर लछिमी ताल के प०

और बना है इस शहर के भीतर एक पहाड़ी पर अच्छा मज़बूत क़िला बना है क़िला के नीचे एक सर्द पानी का झरना है इस सबब से इस महल्ले का नाम झरना दरवाज़ा है।

७—इलाहाबाद यहां का क़िला लाल पत्थर का जमना के कनारे अकबर का बनवाया बहुत ख़ूबसूरत है।

८—कलकत्ते से तीन मील पर फोर्टविलियम नाम का एक छोटा सा क़िला है।

९—अलीगढ़ के कोल शहर पर अलीगंज का क़िला है। १० राय बरेली में एक क़िला है। ११ दिल्ली में लाल पत्थर का क़िला जमुना के कनारे बहुत मज़बूत बना है। १२ हिसार में दो क़िले हैं और फौज की बड़ी छावनी है। १३ नूरपुर यहां पहाड़ पर एक क़िला है। १४ अमृतसर में गोविन्द गढ़ का क़िला है। १५ रावलपिंडी में अकबर बादशाह ने सन १५८३ ई० एक क़िला बनाया था। १६ पिन्डदादनख़ां में शेरशाह, इसलाम शाह १५४० में रोहतास नाम एक क़िला बनवाया १७ पिशावर में बाला हिसार नाम एक क़िला है। १८ पूना से ११ मील पर सिंह गढ़ का एक पहाड़ी क़िला है। १९ शोलापुर में एक क़िला है। २० सितारा शहर के क़रीब एक बहुत मज़बूत क़िला है। २१ बम्बई के क़िले बहुत मज़बूत हैं। २२ ज़िला विज़ागापट्टन में विजया नगर में एक क़िला है। २३ अर्काट कर्नाटक के नव्वाब की राजधानी थी यहां एक क़िला है जिस को १७५१ में लाइव ने ५०० सिपाहियों को साथ लेकर चन्दा साहब के हमलों से बचाया था। २४ अर्काट ज़िला में काडालूर है वहां फोर्टसेंट डेविड नाम एक क़िला है। २५ ज़िला बेलारी में एक

क़िला है यहां से पूरब गूटी एक जगह है वहां एक क़िला है। २६ चुनारगढ़ का क़िला मशहूर है। २७ गूटी में एक क़िला है। २८ मद्रास में फोर्टसेन्ट जार्ज क़िला है। २९ कलकत्ते में सन १७४२ ई० में फोर्ट विलियम का एक क़िला बनवाया गया था। ३० अलमोरा में शहर से प० एक छोटा सा क़िला सरकार ने फोर्टमाईरा नाम का बनवाया है। देखने योग्य है। क़िले के नीचे सरकारी फ़ौज की छावनी है। ३१ जंबू में एक क़िला है। ३२ पटियाला से छः कोस पर बहादुर गढ़ का एक क़िला है। ३३ औरंगाबाद से ८ मील पर दौलताबाद में एक बहुत मज़बूत क़िला खड़े पहाड़ पर बना है। ३४ प्रतापगढ़ में एक क़िला है। ३५ जोधपुर में एक क़िला है। ३६ भरतपुर में एक मशहूर क़िला है। ३७ बयाने में एक क़िला है। ३८ रीवां में बांधुगढ़ एक पहाड़ी क़िला है। ग्वालियर में एक क़िला है। ३९ दिवास से १५ मील पर मांडू एक क़िला पहाड़ पर बना है। ४० बक्सर में एक क़िला है। ४१ सोन के कनारे पहाड़ पर १४८५ फ़ुट ऊंचा रुहतासगढ़ का मज़बूत क़िला १४ कोस के घेरे में बना है। ४२ रावलपिंडी से ६० मील पश्चिम वायु कोन को झुकता अटक का मशहूर क़िला ८०० गज़ लंबा ४०० गज़ चौड़ा सिंधु के बांए कनारे एक पहाड़ी पर मज़बूत बना है। इस को अकबर बादशाह ने सन् १५८३ ई० में बनवाया था वह आजतक वर्तमान है। कोई इसे अटक बनारस भी कहता है क़िला देखने में बहुत अच्छा बना है पर उसके पास एक पहाड़ उससे ऊंचा है इस कारण उसको मज़बूती में खलल पड़ गया। क्योंकि वह उस पहाड़ की मार में है।

४३ कालिंजर का क़िला बांदा से ४८ मील द० चढ़ाई कोस के घेरे का एक पहाड़ पर जो वहां के मैदान से अनु मान चार सौ गज़ ऊंचा होवेगा मज़बूत और बहुत मशहूर है पर अब बेमरम्मत और टूटा फूटा पड़ा है। ४४ चितौड़ अथवा चीतौड़ का क़िला ७० मील उदयपुर के पूर्व ईशान कोन को झुकता हुआ पुरानी तवारीखों में बहुत मशहूर है आगे यहीं राजधानी था यह क़िला एक पहाड़ पर जो दीवार की तरह खड़ा है और जहां खड़ा न था वहां संगत-राशों ने सौ सौ फुट तक ऊंचा छीलकर दीवार की तरह खड़ा कर दिया है बारह मील के घेरे में बना है उस पर जाने के लिये आध कोस की चढ़ाई का एक ही रास्ता है और उस रास्ते में छ दर्वाज़े पड़ते हैं दर्वाज़ा क़िले का बहुत ऊंचा और पुराने हिंदुस्तानी डौल का बना है मुसल्मानों की इमारतों से कुछ भी नहीं मिलता उसके अंदर कई शिवाले और छोटे छोटे महल बहुत उमदा बने हैं नक़्क़ाशी उनके पत्थरों पर देखने लाइक़ है औरंगज़ेब के पोते अज़ीमुश्शान ने उस में एक मकान मुसल्मानों की वज़ा का बना कर उसका नाम फ़तह महल रक्खा है पानी के कुंड उस क़िले में बहुत इफ़रात से हैं गिनती में चौरासी हैं पर बारह उन में से बारहों महीने भरे रहते हैं सब से अधिक देखने लाइक़ वस्तु वहां दो कीर्तिस्तम्भ अर्थात् मीनार हैं छोटा तो टूट गया पर बड़ा चौखूंटा नौमरातिब का १२२ फुट ऊंचा मीराबाई के पति राना कुंभ का बनाया संगमर्मर का अभी तक खड़ा है। उसके अंदर हर जगह महादेव पार्वती की मूर्ति बनाई है और बहुत उमदा

नक्काशी का काम किया है चढ़ने को उसमें सीढ़ियां हैं ऊपर चढ़ने से दूर दूर तक नज़र आती है किले का आदमियों से खाली और सुनसान होना हरतरफ़ टूटी हुई इमारतों का नज़र पड़ना किले के अंदर और पहाड़ के तले दस दस बारह बारह कोस तक जंगल उजाड़ का दिखलाई देना और किताबों के लिखे हुए इस किले के पुराने हाल का याद आना दिल को अजब एक इबरत लाता है इसी किले के अंदर राजा भीम की पद्मिनी रानी सारे रनवास के साथ सन् १३०३ ई० में अलाउद्दीन बादशाह के ज़ुल्म से अपना सत बचाने के लिये सती हुई थी और इसी किले के अंदर रानी किरणवती सन १५३३ में बहादुर शाह गुजरात वाले की दहशत से तेरह हज़ार स्त्रियों के साथ आग में जली थी और बत्तीस हज़ार राजपूत केसरिये बागे पहनकर लड़ाई में कटे थे और इसी किले के अंदर सन १५६७ में जब अकबर ने आकर घेरा था उसके किलेदार जयमल्लके मरने पर किलेवालों ने जौहर किया था कि जिस में तीस हज़ार आदमी मारे गए अब यह किला बिलकुल बेमरम्मत और वीरान पड़ा है इसकी आबादी के लिये लाखों ही आदमियों की फ़ौज चाहिये किले के नीचे चीतौड़ का शहर जो अब केवल एक कसबा रह गया है बस्ता है।

४५ -जयपुर के इलाके में एक किला आमेर का पहाड़ के ऊपर बहुत बड़ा और मज़बूत है उसके अंदर कूंए की तरह कई खत्ते हैं जिसे यहां वाले खाश कहते हैं जिस आदमी से राजा नाराज होता है उसमें डाला जाता है और जब को

रोटी और खारा पानी खाने पीने को पाता है खास के अंदर से सोता बिरलाही निकलता है ग़ैर आदमी उस क़िले के अंदर नहीं जाने पाता साहिब लोगोंने भी अबतक उसे नहीं देखा।

४६—रणथंभौर का क़िला जयपुर से ७५ मील अग्निकोन सब में मज़बूत है उसके अंदर भी ग़ैर आदमी अथवा साहिब लोग नहीं जाने पाते यह वही क़िला है जिसके अंदर सन १२९८ में हमीर चौहान अलाउद्दीन खिलजी से लड़कर बड़ी वीरता के साथ मारा गया और उसके रनवास की सारी रानियां मुसलमानों की ज़ियादती से बचने के लिये चिता में आग लगा कर जलीं।

स्वाभाविक भाग।

हिन्दुस्तान के तीन खंड गिने जाते हैं जो हिमालय के पहाड़ों में है वह उत्तराखंड या उत्तरीय हिन्दुस्तान जो नर्मदा और महानदी से द० है वह दक्षिणात्य अर्थात् दक्षिण देश अथवा दक्खन और इन दोनों के बीच आर्यावर्त्त है उसी को पुण्य भूमि कहते हैं। हिन्दुस्तान का द० भाग अन्तरीप है।

मुसलमान बादशाहों ने अपनी बादशाहत यहां २२ सूबों में बांटी थी, परन्तु उन में से क़ाबुल क़ंदहार और ग़ज़नी तो इस विलायत से बाहर हैं, और द० देश के कितने ही ज़िले उन के दख़ल में न रहने के कारण उन सूबों में गिने ही नहीं गये थे, सिवाय इस के उन सूबों की हद्दें अब ऐसी बदल गई हैं, कि कुछ तो एक के पास छ है

और कुछ दूसरे के हाथ चले गये, इसलिये उन सूबों का खयाल छोड़ कर और इस मुल्क को अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी अमलदारी में भाग देकर उन के ज़िलों को उस क्रम से बयान करते हैं जो अब बर्ते जाते हैं।

देशविभाग—देश विभाग के अनुसार हिंदुस्तान के चार भाग हैं। १ ब्रिटिश इण्डिया या सर्कार अंगरेज़ी का राज्य २ रक्षित देश जो सर्कार अंगरेज़ी को कर देते हैं, (३) स्वाधीन राज्य (४) अन्य देशीय राज्य।

ब्रिटिश इंडिया का वर्णन—ब्रिटिश इंडिया में प्रेसीडेंसी बंगाल, मदरास बंबई और देश जो सुप्रीमगवर्नमेंट के हुक्म में शामिल हैं—प्रेसीडेंसी मदरास और बंबई यह देश श्री युत महामान्य गवर्नर बहादुर के शासनाधीन हैं। प्रेसीडेंसी बंगाल तीन भागों में बंटा है।

१ बंगाल २ पश्चिमोत्तर और अवध देश और ३ पञ्जाब हैं और ये भाग लोकल गवर्नमेंट अर्थात् लेफ्टिनेन्टगवरनर बहादुर के आधीन हैं।

वह देश जो सुप्रीम गवर्नमेंट के आधीन हैं वहां कमिश्नर या सुपिन्टेंडेंट या एजंट रहते हैं उनका नियत होना श्री युत गवर्नर जनरल के इजलास से होता है जिन का अधिकार तमाम इंडिया और इंडिमान—नीकोबार—सिंगापुर—पीनांगद्वीप समूह पर हैं।

कुल सरकारी राज्य १२ भागों में बंटा है।

बारहों सूबों की आबादी और क्षेत्रफल।

नंबर	नाम सूबा	आबादी सन १८८१ ई० के बमूजिब	क्षेत्रफल
	लफ़टिनेंटगवर्नर के आधीन।		
१	बंगाल ...	६६६६८१४५६	१६३८०२
२	पश्चिमोत्तर और अवध देश	४४१०७८६८	१०६१०४
३	पञ्जाब ...	१८८५०४३७	१०७६८८
	गवर्नर के आधीन।		
४	बंबई ...	१६४५४४१४	१२४१२२
५	मद्रास ...	३११७०६३१	१३९६९८
	चीफ़ कमिश्नर के आधीन।		
६	ब्रिटिश ब्रह्मा ...	३७३६७७१	८७२२०
७	आसाम ...	४८८१४२६	४६३४१
८	मध्य हिन्द ...	९८३८७९१	८४४४५
९	अन्दमानवनीको बार द्वीप	२००००	३२८५
१०	अजमेर ...	४६०७२२	२७१०
११	बरार ...	२६७२६७३	१७७११
१२	कुर्ग ...	१७८३०२	१५८३

बंगाल खास बिहार और ओड़ेसा, ये तीनों सूबे मिलकर जो बंगाल के लफ़टिनेंट गवनर के आधीन हैं, सूबे बंगाल कहलाता है। इस की उ० सीमा हिमालय पहाड़ अर्थात् नैपाल, शिकम, भोटान प० में पश्चिमोतर * देश, मध्यहिन्द

---

* बंगाला देश से जो सर्कार इंगलिशिया को पहले मिलय

का प्रदेश, राजरींवा द० बंगाले की खाड़ी, और मद्रास अहाता पू० छोटी २ पर्वत श्रेणी और आसाम देश है। बंगाल खास को सुवर्णरेखा नदी ओड़ेसे से महानन्दा नदी और राजमहल की पर्वत श्रेणियां बिहार से अलग करती हैं।

सूबे बंगाल में बहुत सी नदियां है, उन में ब्रह्मपुत्र और गंगा ये दोनों प्रधान हैं। सुरमा नदी सिलहट धोती हुई ब्रह्म पुत्र में आकर मिल गई। गंगा पद्मा और भागीरथी इन दो धारों से अलग होकर अपने अनेक प्रवाहों से समुद्र मे गिरती है। ब्रह्मपुत्र पद्मा से मिली है। दामोदर रूपनारायण और कसाई ये तीनों नदियां छोटेनागपुर के पहाड़ों से निकल कर भागीरथी में मिली हैं। चटगांव के पास फेनी और कर्न-फूली नदी हैं। ओड़ेसा में महानदी सब से बड़ी है। बिहार में सोन गंडक सरजू पुनपुना और कर्मनासा आदि बहुत सी नदिया गंगा में मिली हैं।

खास बंगाल में छ प्रधान खंड हैं बर्दवान १ प्रेसीडेन्सी २ राजसाही ३ कूचबिहार ४ ढाका ५ और चटगांव ६। भागी-रथी के प० और गंगा के द० बर्दवान, बंगाले के मध्य और समुद्र के किनारे से हिमालय पहाड़ पर्यंत प्रेसीडेन्सी राज-साही, और कूचबिहार, ढाका और चटगांव पूरब बंगाले में

हुआ यह देश प० और उ० पड़ता है इस कारण पश्चिमोत्तर देश कहाने लगा परन्तु जब सन् १८५७ ई० में अवध का भी देश मिलाया गया तब से पश्चिमोत्तर और अवध कहलाने लगा पश्चिमोत्तर सूबे की गवर्नमेन्ट सन् १८३३ ई० में कायम हुई॥

हैं। ओड़ेसा का सब देश कटक कहलाता है। बिहार के दो भाग है पटना और भागलपुर। इनसबों का बर्णन आवेगा।

बर्दवान के खंड में हिन्दू और मुसलमान दोनों के समय का प्रधान स्थान (बन्दर) सतग्राम अब भी कुछ टूटा फूटा देख पड़ता है। प्रेसिडेन्सी में आज कल की राजधानी कलकत्ता हिन्दुओं की पुरानी राजधानी नदिया और बंगाले के नवाबों के रहने की जगह मुर्शिदाबाद है। राजसाही में पुराने गौड़ नगर के टूटे फूटे चिन्ह हैं। ढाका में पूरब बंगाले की पुरानी राजधानी सुवर्णग्राम का खंड़हर है। ढाका शहर होने के कारण इस खंड का नाम ढाका है। मुसलमानों के समय कुछ दिनों तक यह राजधानी थी। ओड़ेसे का प्रधान नगर कटक है इस में पुरुषोत्तमपुरी, जगन्नाथ देव बहुत प्रसिद्ध तीर्थ है। बिहार में अनेक नामी स्थान है, पटना यह बड़ा संपन्न नगर है। पहले का पाटलीपुत्र नगर भी कहीं इसी के आस पास में था गया तीर्थ श्राद्ध के लिये सारे हिन्दुस्तान भर में प्रसिद्ध है। भागलपुर बहुत रमनीय जगह है राजगृह हरिहरक्षेत्र जनकपुर वैजनाथ आदि तीर्थ रोहितासगढ़ आदि किले प्रसिद्ध है।

उ० बिहार और बंगाले की सब धरती प्रायः समसर और उपजाऊ हैं, उ० ओर हिमालय पहाड़ की तराई पू० में चटगांव, बिहार में गंगा के द० ओड़ेसा के प० और बीरभूम, बांकुड़ा आदि स्थान पहाड़ी हैं। सूबे बंगाल के लोगों का मुख्य भोजन चावल है पर बिहार के लोग गेहूं सत्तू और चिउड़ा भी खाते हैं। पू० बंगाले और उ० बिहार में इतना अधिक चावल उपजता है कि लाखों मन हर साल यहां से

बाहर जाता है। पाट रेशम नील चीनी लाह चाह अफ़ीम और कुसुम चावल चमड़ा शोरा, तीसी, सरसों आदि अनेक पदार्थ दूसरी जगह भेजा करते हैं।

सूबे बंगाल में बंगला हिन्दी और ओड़िया असामी सौंताली भोजपुरी तिहुती (मैथिली) मगही, आदि भाषा बोली जाती हैं।

गवर्नमेंट बंगाल का बर्णन ॥

कमिश्नरी का नाम।	ज़िले का नाम	ज़िले का पता।	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील।	बड़े शहर और कसबे आदि।
प्रेसिडेन्सी।	कलकत्ता।		८	कलकत्ता।
	चौबीसपरगना	हुगली के पू०	१७८८	अलीपुर, बारकपुर, बारासत।
	नदिया।	चौबीसपरगना के उ०	३४२१	किशन नगर, नदिया, शांतीपुर, पलासी।
	जसर।	नदिया के पू०	३६५८	जसर (जयसोर)
	मुर्शिदाबाद।	नदिया के उ०	२४६२	बहरामपुर, मुर्शिदाबाद, कासिम बाज़ार।

बर्द्धवान।	बांकुड़ा।	बीरभूम के द० वा बर्द्धवान के प०।	१४२२	बांकुड़ा (बांकाड़े), विष्णुपुर।
	बीरभूम।	बर्द्धवान के उ०।	१३४४	सिऊडी या बीरभूम, नागोर, एलं बाज़ार, महमूद बाज़ार
	बर्द्धवान।	हुगली हौड़ा के उ०	२४५५	बर्द्धवान, कालना, कुतवा, रानीगंज।
	मिदनीपुर।	बांकुड़ा के द०।	५०८३	मिदनापुर या मिदनीपुर, तमलक या ताम्रलिप्त।
	हुगली और हवड़ा।	हुगली नदी के पू०	१४६७	हुगली, हवड़ा चिनसुरा, चन्द्रनगर सीरामपुर।
राजशाही और कूचविहार	राजसाही।	पवना के वा०।	२२३४	रामपुर, बौलिया, नाटेर।
	पवना।	जसर के उ०।	१९१८	पवना, सुराजगंज।
	बगुड़ा।	राजशाही के ई०।	१५०१	बगुड़ा।
	रंगपुर।	बगुड़ा के उ०।	३४७६	रंगपुर।
	दीनाजपुर।	रंगपुर के प०।	४१२६	दीनाजपुर।
	दार्जिलिंग।	शिकम के द०।	१२३४	दार्जिलिंग।
	जल्पाईगोड़ी।	दार्जिलिंग के अ०।	२९०६	जल्पाईगोड़ी।

कमिश्नरी का नाम।	ज़िले का नाम।	ज़िले का पता।	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	बड़े शहर और कसबे आदि।
चटगांव।	चटगांव।	बंगालेकी खाड़ी के पू०	२२२२	चटगांव या इसलामाबाद।
	नावकोली।	बाकरगंज के पू०।	१८५२	नावकोली, भलुआ।
	चटगांवपहाड़ी	चटगांव के उ०।	५५६१	रंगामाटी।
	त्रिपुरा।	ढाका के पू०।	२४६०	त्रिपुरा या कोमिला।
ढाका।	ढाका।	फरीदपुर के पू०।	२७९६	ढाका या जहांगीर नगर, नारायणगंज।
	फ़रीदपुर।	बाकरगंज के उ०।	२२४९	फ़रीदपुर, गुलंडो।
	बाकरगंज।	जसर के प०।	३६४८	बैरीसाल, बाकरगंज।
	मैमनसिंह।	ढाका के उ०।	६२९९	मैमनसिंह।
भागलपुर।	पुरनिया।	दिनाजपुर के प०।	४९५७	पुरनियां।
	भागलपुर।	पुरनियां के द०।	४२६८	भागलपुर, मधेपुरा, सुपौल, बांका।
	मालदह।	दिनाजपुर के नै०।	१८१३	मालदह, गौड़।
	मुंगेर।	भागलपुर के प०।	३९२२	मुंगेर, जमालपुर, लखीसराय।
	संतालपरगना।	भागलपुर और वीरभूम के मध्य में।	५४८८	डुमका, राजमहल।

पटना।	पटना।	मुंगेर के वा०।	२१०१	पटना, बांकीपुर, बिहार, दानापुर बाढ़, मनेर।
	गया।	मुंगेर के प०।	४७१६	गया, शहरघाटी।
	शाहाबाद।	पटना के प०।	४३८५	शाहाबाद या आरा, बकसर, सहसराम।
	सारन।	शाहाबाद के उ०।	२६५४	छपरा या सारन, सिवान, सोनपुर।
	चम्पारन।	सारन के उ०।	३५३१	मोतीहारी, बितिया।
	मुज़फ़्फ़रपुर।	पटना के उ०।	३३३५	मुज़फ़्फ़रपुर, हाजीपुर, सीतामढ़ी, बखरा।
	दरभंगा।	मुज़फ़्फ़र नगर के पू०	३००४	दरभंगा।
उड़ीसा।	कटक।	बालासोर के द०।	४५१३	कटक।
	पुरी।	कटक के द०।	२४७२	पुरी या जगन्नाथ।
	बालासोर।	मेदनीपुर के द०।	३०६८	बालासोर या बलेश्वर।
छोटानागपुर।	लोहारदग्गा।	हजारीबाग़ के द०।	१२०४४	रांची, पालामऊ (पलामू)
	हज़ारीबाग़।	गया के द०।	७०२१	हज़ारीबाग़।
	मानभूम।	लोहारदग्गा के द०।	४९२१	पुरनियां।
	सिंहभूम।	मानभूम के द०।	३८९७	चायबसा।

गवर्नमेंट असाम का वर्णन।

सीमा उ० में भूटान, द० और पू० में ब्रह्मा और मनीपुर प० में गवर्नमेंट बंगाल और कूचबिहार है

ज़िलों का नाम	ज़िले का पता।	क्षेत्र फल वर्गात्मक मील।	बड़े शहर और क़सबे आदि।
सिलहट।	मैमनसिंह के पू०।	५५४०	सिलहट, बनियागंज।
कचार।	सिलहट के पू०।	३७५०	सिलचर, कचार।
ग्वालियार।	कूचबिहार के प०।	४४३२	ग्वालपाड़ा।
कामरूप।	ग्वालपाड़ा के पू०।	३६३१	गौहाटी, बरपेटा।
दरंग।	कामरूप के ई०।	३४१८	तेजपुर।
नौगांव।	दरंग के अ०।	३४१५	नौगांव।
शिवसागर।	नौगांव के ई०।	२८५५	शिवसागर, जोरहाट, गोलाघाट।
लखिमपुर।	शिवसागर के ई०।	३७२३	लखिमपुर, दीब्रूगढ़, सादिया।
नागा।	शिवसागर के द०।	५३००	कोहीमा।
खसिया।	कामरूप के द०।	६१५७	शिलांग, चेरापूंजी।
गारू।	ग्वालपाड़ा के द०।	३१८०	तूरा।

कलकत्ता हुगली नदी पर बसा है हिन्दुस्तान की अब यही राजधानी है यह बहुत बड़ी सौदागरी की जगह और बहुत आबाद शहर है इस में फ़ोर्टविलियम नामी क़िला है जिसके बनाने में दो करोड़ रुपये खर्च हुए हैं इसी क़िले के नाम से कलकत्ते को अंगरेज़ लोग कभी कभी फ़ोर्टविलियम भी कहते हैं, गवर्नमेंटहाउस, लार्ड विशप की कोठी, हाइकोर्ट, अजायबघर, युनीवर्सिटी, प्रेसिडेन्सीकोलेज, मेडिकल-कोलेज, मदरसा, टकसाल, डाकखाना, कालिका मंदिर और इडन गार्डन यहां देखने योग्य है। अलीपुर जो फ़ोर्टविलियम से चार मी० या कोस दो कोस द० है यहां २४ परगने की अदालत और बंगाले के लेफ़्टेनेंट गवर्नर की कोठी और रहने की जगह है। हौड़े में जो कलकत्ते के पास है ईस्टइंडिया रेलवे का बड़ा भारी कारखाना है। कलकत्ता से आठ कोस उ० बारकपुर में प्रेसिडेन्सी को बड़ी भारी छावनी है दम-दमे में जो कलकत्ते से तीन कोस पर है तोपखाना रहता है।

नदिया भागीरथी नदी पर है यहां का न्याय शास्त्र प्रसिद्ध है शान्तीपुर में सूती कपड़ा अच्छा होता है। किशन नगर झिलंगी नदी पर प्रसिद्ध जगह है। इसी ज़िले में या० की तरफ़ भागीरथी के कनारे मुर्शिदा० के द० २० मील पर पलासी में सिराजउद्दौला ने क्लाइव से सन् १७५७ ई० में शिकस्त खाई थी।

जयसोर का ज़िला बाकरगंज से प० की ओर सुन्दरवन से उ० को अलंग है ज़िला की कचहरियों का मक़ाम जयसोर है जिसे मूरली भी कहते हैं यह नगर कलकत्ते से ६२ मील

ईशान कोन को है और इस ज़िला में चावल, नील, ईख आदि बंगाले की वस्तु बहुत होती है और द० की ओर निमक बहुत बनता है इस ज़िला और ज़िला नदिया के बीच नदी कोड़क सीमा है और भैरव नदी, चित्रिया, नव गंगा नदियां इस ज़िला के मध्य में बहती हैं और इस के दक्षिणी भाग में निचान बहुत है इस कारण से कीचड़ रहती है और निमक बहुत बनता है उस में महम्मदपुर और कालना दो नगर और नामी हैं। आवहवा इस ज़िले की बहुत खराब है। मुर्शिदाबाद भागीरथी नदी पर नवाब नाज़िम बंगाला का सदर था कहते हैं कि मुर्शिदकुली खां बंगाले के नवाब ने सन् १७०४ ई० में इस शहर को बसाया था तब से मुसलमानों के राज्य के अंत तक यह बंगाले की राजधानी रहा। आवहवा यहां की खराब। कलकत्ते से उ० १२० मी० पर बसा है। मुर्शिदाबाद से छ मी० द० भागीरथी के बांए कनारे बहरामपुर की छावनी है।

बांकोड़े का ज़िला बर्दवान के प० और बहुत उपजाऊ है नदी दामोदर और दलकिशार से सजल रहता है इस में बड़ा नगर बांकोड़ा है जहां हाकिमों की कचहरी है और इस से द० और पू० की ओर विष्णुपुर है जो पहले एक हिन्दुस्तानी राज्य की राजधानी था इस के पश्चिमी भाग की धरती ऊंची है उस में लोहा और कोयले की खानि निकली है और दामोदर के उत्तरीय किनारे पर रानीगंज के स्थान में बड़ी कोयले की खानि है। ज़िला बीरभूमि इस से उ० और प० में भागलपुर है द० में बर्दवान पाचेती

पू० में राजशाही है जंगल बहुत घना है जिस में बैजनाथ महादेव का मंदिर हिंदुओं का बड़ा तीर्थ है यात्री हरिद्वार से गंगाजल लाकर महादेव की मूर्ति पर चढ़ाते हैं यात्रियों की इतनी भीड़ होती है कि केवल सूबहबिहार से ही छः हज़ार से अधिक आते हैं। सेवड़ी एक बड़ा कसबा, बैजनाथ से ३० कोस पू० मुख्य है। नागौर का पुराना नगर उजड़ पड़ा है और वहां से ७ मील पर एक सोता उष्णजल का निकलता है इस ज़िला में भी कोलये और लोहे की खानि है और चावल और चीनी अच्छी होती है।

ज़िला बर्द्दवान, मेदनीपुर के उ० में और बीरभूमि के द० और भागीरथी के प० अलंग बहुत उपजाऊ और बसता हुआ प्रदेश है और दामोदर आदि नदियों से सजल रहता है और वहां के राजा की राजधानी बर्द्दवान बड़ा नगर विस्तृत और सुहित है और एक बड़ा कसबह कलना नामी भागीरथी के कनारे है और नगर नदिया जो मुसल्मानों के राज्य के प्रारम्भ में बंगाले का राजधानी था और हिंदुओं का विद्यालय स्थान है दोनों इसी ज़िला में पहले थे इस ज़िला के ईशान में कुतुआ नाम एक स्थान विस्तृत और व्यापार का बड़ा स्थान है और विष्णुपुर एक और नामी नगर है यहां के उपजाऊ वस्तु ये हैं ईख, नील, तमाकू, कपास, पान है और हिन्दू मुसल्मानों की अपेक्षा पांच गुने हैं।

मेदनीपुर, हुगली और हवड़ा के नैर्ऋत्य कोन। आदमी इस ज़िले के बड़े दुष्ट आलसी और धनहीन हैं। स० मु०

मेदनीपुर कलकत्ते से६८मी०प०ज़रा नैरृत कोनको झुकता हुआ है। हुगली, बर्दवान के प० भागीरथीके द० कनारे है इस में लोहे की खान है यह कलकत्ते से २६ मी० उ० बसा है। और हवड़ा चौबीस परगने के प० कलकत्ते के ठीक साम-ने गंगापार बसा है। हुगली में मूर्शिदाबाद के नवाब के एक रिश्तेदार महम्मदमसीन ने यहां एक इमामबाड़ा बनवाकर उसके खर्च के लिये कुछ ज़मीन माफ़ करदी थी, लेकिन आमदनी ज़मीन की वहां के मुतवल्ली हज़म कर जाते थे अब सरकार ने अपनी तरफ़ से ऐसा बंदोबस्त कर दिया है कि उस ज़मीन के आमदनी से इमामबाड़ा भी खूब तैयार रहता है और एक अस्पताल और दो बड़े विद्यालय भी मुक़र्रर हो गये हैं।

राजशाही का स०मु० रामपुर बौलिया गंगा के कनारे है। राजशाही इसके उ० में दीनाजपुर और मैमनसिंह है द० में बिरभूमि और कृष्णनगर पू० ढाका जलालपुर और मैमनसिंह और प० भागलपुर और बीरभूमि है यहां की धरती गंगा की कई धारों और छोटी नदियों से खेती के योग्य है नाटौर, बलिया, हरियल आदि विशेष नगर हैं और हरियल व्यापार की बड़ी मंडी है इस ज़िला के चारों ओर बड़ा जंगल है।

पबना का ज़िला जयसोर और ढाका जलालपुर के उ० में बहुत उपजाऊ है और वहां के अधिकारियों का निवास नदी के कनारे रहता है। पबना कलकत्ता से १३७ मी० उ० ईशान कोन को झुकता है।

बगुड़ा राजशाही के ई० कोन को तरफ़। कलकत्ता से १७५ मी० उ० ज़रा ई० कोन को झुकता हुआ है।

रंगपुर के जंगलों में हाथी गैंड़े कालेऋच्छ, बंदर बहुत रहते हैं। दिनाजपुर रंगपुर के प०। नदियां इस ज़िले में बहुत हैं। गांव २ नाव घूमती हैं पर बरसात में जगह २ पर पानी बंद रह जाता है और बहुत से तालाव जो बेमरम्मत पड़े हैं। गर्मियों उनका सड़ना और सूखना बुरा होता है स० सु० दिनाजपुर कलकत्ते के ठीक उ० २२५ मी० पूर्णभावा नदी के कनारे बसा है। दारजिलिंग पहाड़ के ऊपर बसा है यहां की आबहवा बहुत ही अच्छी है इस लिये बंगाले के हाकिम अंगरेज़ अकसर हवा खाने जाते हैं।

ज़िला चटगांव के उ० में टिपरा द० में अराकान पू० में देश बर्म्मा और प० में समुद्र है इस भाग का लंबान ५५ कोस के अनुमान और चौड़ाव दस कोस है। इस के बीच की धरती टीलों की है और उस पर जंगल बहुत खड़ा हुआ है वहां हाथी बहुत अच्छे और भारी होते हैं विशेष नगर चटगांव जिसे इसलामाबाद कहते हैं चिंग्री नदी के पश्चिमी किनारे पर बसता है इस नदी को चितागंग और कर्णफूली भी कहते हैं और वहां से चार कोस के अन्तर पर नीचे समुद्र में जा मिली है चाटगांव जिस का मुख्य नाम चित्तग्राम है बड़ा व्यापार का स्थान और बहुत अच्छा बंदर है और यहां सखुए के पेड़ की लकड़ी से बड़ी २ नावें और अच्छे २ काम बनते हैं पहले इस नगर में पुर्तगीज आये थे वहां से उ० की ओर दस कोस के

अंतर पर उष्ण पानी का एक कूप सीता कुंड के नाम से प्रसिद्ध है जिस का पानी सदा उष्ण रहता है और उसी प्रदेश में एक कुंड के पानी पर ज्वालामुखी की तरह सदा आग जलती रहती है और मेघना नदी के मुहाने के पास गंगा और ब्रह्मपुत्र इन दो नदियों के आपस के मिलाप से हतिया, संदीप आदि कई टापू बन गये हैं इन में नमक बहुत अच्छे प्रकार का बनता है। चटगांव से लकड़ी और चावल बाहर को भेजा जाता है।

नायगोजी बाकरगंज के पू०। स० सु० बसुआ कलकत्ते से १८० मी० पू० को झुकता मेघना के बांए कनारे है।

टिपरा इसका नाम रोशनाबाद और संस्कृत में त्रिपुरा है इस ज़िला के उ० में सिलहट और ढाका जलालपुर है द० में चाटगांव और समुद्र है पू० इस के और ब्रह्मा के बीच पहाड़ और जंगल है और उन में हाथी बहुत होते हैं प० में मेघना नदी और उसके का० की धरती बहुत उपजाऊ है लम्बाई बंगाले की खाड़ी से रामपुर तक १०० मी० के अनुमान और चौड़ाई अधिक से अधिक ५० मी० है इस ज़िला में भी एक नदी गोमती बहती है उसी के किनारे टिपरा नगर है जिसे कोमला भी कहते हैं। ज़िला के दक्षिणीय भाग का नाम बलवा है और बलवा नगर समुद्र के किनारे पर है यहां कोमला लाकीपुर, चांदपुर आदि नामी नगर और एक क़स्बा नवाकोटी है जिसे सुदराम भी कहते हैं।

ढाका शहर बूढ़ी गंगा के बायें कनारे पर बसा है किसी समय में यह बहुत आबाद था। अब भी यह शहर मूती

कपड़े और दूसरी दूसरी कारीगरी की चीजों के लिये मशहूर है।

फ़रीदपुर अथवा ढाका जलालपुर, बाकरगंज के उ० स० मु० फ़रीदपुर। यहां से ५ मी० पर पद्मा बहती है। बाकरगंज स० मु० बेरीसाल गंगा के एक टापू में बसा है। मैमनसिंह यह ज़िला ब्रह्मपुत्र के दोनों कनारों पर बसा है और बहुत सी नदियां उसमें बहती हैं। बरसात के दिनों में प्रायः सारा ज़िला जलमग्न हो जाता है। स० मु० सोबारा कलकत्ते के उ० ई० कोन को झुकता हुआ २०० मी० है।

पुरनिया इसके उ० में पहाड़ और जंगल है द० में भागलपुर और राजशाही प० में भागलपुर और तिरहुत पू० में दीनाजपुर है इस ज़िले का सब से अधिक लंबाव ६८ कोस और चौड़ाव ४२ कोस है इस में सर्दी की अपेक्षा गर्मी बहुत होती है और कोशी, महानन्दा, करतोया आदि नदियां बहती हैं इन में से कोशी जिसे संस्कृत में कौशिकी कहते हैं नेपाल की पहाड़ों से निकल कर बंगाले के इसी भाग में बहकर आगे गंगा में जामिली है इस प्रदेश में धान आदि नाज बहुत उपजते हैं और भैंस का घी यहां से व्यापारी दूसरे जिलों में बेचने को लेजाते हैं, पुरनिया बड़ा नगर है और अलीगंज, नाथपुर आदि और भी नगर हैं।

भागलपुर इस के उ० में तिरहुत और पुरनिया द० रामगढ़ और मृत्तभूमि पू० पुरनिया मुर्शिदाबाद और प० में ज़िला मुंगेर और राम गढ़ हैं इस भाग में कई स्थानों

पर विन्ध्याचल पहाड़ की श्रेणी हैं विशेष चार के दो श्रेणी जिन में से पहली ईशान के भाग के पास है दूसरी वायव्य के भाग के पास इन में पहली श्रेणी के टीलों पर अच्छी तरह से खेती होती है परन्तु वायव्य के टीलों पर खेती नहीं होती और यहां कई स्थान ऐसे हैं कि जहां मनुष्य नहीं जा सकते हैं इस परदेश की सीमा पर गंगा बहती है और बीच में छोटी २ बहुत नदियां हैं इस में झीलें भी बहुत हैं जिन में से कई धरती की नीचान में हैं इस से उनका पानी कभी नहीं सूखता इस प्रदेश के समीप में गंगा के किनारे विंध्याचल पर्वत के दक्षिणी भाग के पास राजमहल यह नगर पुरानी राजधानी बंगाले के नवाबों का था उसे अकबर नगर कहते हैं उस के पास एक बहुत स्वच्छ और उत्तम झील है बरसा ऋतु में इस की लंबाई पौने चार कोस और चौड़ाई पौने दो कोस की हो जाती है और ग्रीष्म ऋतु में लंबाई दो कोस की और चौड़ाई पौन कोस की रहती है इस भाग में भागलपुर, मुंगेर, राजमहल आदि विशेष नगर हैं इन में नगर मुंगेर को संस्कृत में मुद्गगिरि कहते हैं और गंगा के द० किनारे पर बसता है उस से दो ढाई कोस पर एक बड़ा प्रसिद्ध गढ़ है और गंगा के पास एक झरना है और उसका नाम सीताकुंड है उसका पानी सदा उत्तम रहता है और दो एक और भी गर्म पानी के झरने झरते हैं।

मालदा—पहले समय में इस शहर के पास गौड़ नाम एक शहर था, वह सारे बंगाले की राजधानी था। मालदा रेशमी कपड़ा और आम के लिये प्रसिद्ध है।

ज़िलअ मुंगेर भागलपुर से प० की ओर गंगा के दोनों किनारों पर है और इस की धरती पू० और द० में पथरीली है और दूसरी अलंग में समसर और मुंगेर का नगर पू० भाग में है मुमालिक मग़रबी के जीत लेने के पहले इस का लेना कठिन था इसलिये कि इस में जंगल बहुत था प० की ओर इस ज़िलअ में गंगा के किनारे सुराज गढ़ और इस के परे शेखपुर है मुंगेर की छूरी और पिसतौल प्रसिद्ध हैं। जमालपुर इस्टइण्डिया रेलवे का सदर मुकाम है।

ज़िलअ पटना चौड़ाव में सकड़ा शोण नदी के दहने के पू० की ओर से लंबा गंगा नदी के किनारे २ चला गया है इस की उ० सीमा गंगा और द० गया है पहले पटने का नगर सूबहबिहार का राजधानी था अब भी बस्ती उसकी तीन लाख मनुष्यों से अधिक बताते हैं और भरत खंड के पुराने इतिहास में जहां चन्द्रगुप्त की राजधानी पाटलिपुत्र थी वहीं अब इस नगर के चिन्ह मिलते हैं परन्तु इस बात का निश्चय नहीं है कितने एक उस पुराने नगर को भागलपुर के पास बताते हैं और पटने से प० की ओर दानापुर में सर्कारी सेना की छावनी रहती है। पटना जिसे अज़ीमाबाद भी कहते हैं मेरे अनुमान से यही है गंगा के दहने कनारे पर बसा है और कनार ही कनारे करीब ६ कोस के चला गया है और चौड़ाई इस शहर की बनिस्बत लंबाई के बहुत ही कम है। बांकीपुर में सरकारी कचहरियां हैं।

इस शहर में गोलघर, पटना कालेज, नार्मलस्कूल, टेम्पुल कालेज, हरिमंदिर, शाहअर्ज़ानी की दरगाह, अमरू

की मसजिद, गोपीनाथ, मैनीसंगत, मंगलतालाव देखने योग्य है।

गया ज़िले का वर्णन।

इस की उ० सीमा ज़िला पटना, पू० मुंगेर द० की ज़िले लोहरदगा और हज़ारीबाग़ और प० की सीमा सोन नदी है इस ज़िले की कुल धरती नाप से ४७१२ वर्गात्मक मील है।

इस ज़िले की द० ओर की धरती ऊंची जंगली पहाड़ी और कहीं २ टंडिका है पर पू० उ० और बीच की बहुत उपजाऊ है, प० ओर की अधिक केवाल है, सोन की तरियानी बलुहर है, कहीं कहीं पोरू और कहीं कहीं दुरसा है।

पहाड़।

इस ज़िले में नैऋत्त कोन से लेकर बराबर द० पू० और कुछ ईशान कोने तक पहाड़ों की एक बड़ी श्रेणी चली गई है बीच में भी जहां तहां छिट फुट पवई, कसिसा, उगा, पहरा, घरकी, ब्रह्मयोनि, रामशिला, प्रेतशिला, महेर, पत्थरकट्टी, बराबर और कोगाडोल आदि पहाड़ है। गया से पू० ई० कोन को झुकती हुई एक पर्वत श्रेणी जिसे राजगिर का पहाड़ कहते हैं, चली गई है, इस के झरनों का पानी गरम रहता है, द० ओर के पहाड़ों में अभी बहुत जंगल लगा है, वहां जंगली जन्तु बाघ, चीता, भालू, सुअर, लंगूर, साम्हर, नीलगाय आदि रहते हैं, बीच के पहाड़ों में अधिक जंगल नहीं है जो कुछ रह भी गया है वह अब काट कर साफ़

होता और खेत बनता जाता है, इन में भी हरिण, सुअर, भालू और कहीं कहीं तेंदुआ बाघ रहते हैं।

सड़क।

पहले यहां सड़कें बहुत कम थीं इस लिये लोगों को आने जाने में बड़ा कष्ट होता था केवल कलकत्ते वाली पक्की सड़क द० ओर से निकली है और उसकी एक शाख छोभी से गया तक पक्की है, एक कच्ची सड़क दाउद नगर से नवादा तक बनी है, इनके सुधर जाने पर आसा है कि लोगों को आने जाने में बड़ा सुबिहिता होगा।

जिलअ शाहाबाद इस की पू० सीमा पर शोण नदी है और इस के उ० में गंगा और प० में चनारगढ़ और कर्मनाशा नदी है और इन के सिवाय इस ज़िलअ के बीच कई नदियां उ० की ओर बहती हैं बिस्तार इस ज़िलअ का बहुत अधिक है और धरती द० ओर की पहाड़ी है परन्तु गंगा के तीर की समसर है इस के बीच एक बड़ा नगर आरा है और उस के प० की ओर बकसर और द० और प० की ओर दिनगांव और इस से आगे उसी अलंग में सहसराम बनारस कलकत्ते के रस्ते पर हैं और रुहतासगढ़ का किलअ बहुत दृढ़ और प्रसिद्ध है इस ज़िलअ में नील, तमाकू, कपास, ईख, अफीम भंग उपजती हैं।

सारन को में पहले मीरोहारी था पर अब अलग एक ज़िला हो गया। सोनपुर गङ्गा और गंडक के संगम पर है वहां हरसाल कातिक की पूर्णमासी को हरिहर क्षेत्र का मेला लगता है उस में घोड़ा और हाथी और बहुत सी चीज़ें दूर दूर से बिकने आती हैं।

मुज़फ्फरपुर के ज़िले में नील बहुत पैदा होती है। दरभंगा पहले मुज़फ्फरपुर में था अब अलग एक ज़िला हो गया।

कटक यहां कहीं २ लोहा और पहाड़ी नदियों के बालू धोने से कुछ २ सोना भी मिलता है, समुद्र के कनारे नमक बहुत बनता है।

जगन्नाथ या पुरी हिन्दुओं के तीर्थ की जगह है। यहां श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर है, कहते हैं कि राजा अनंगभीमदेव ने इस को बनवाया था और वह सन ११८४ में उड़िसे की गद्दीपर बैठा था; यात्रियों की कसरत यहां रथ यात्रा में बड़ी होती है।

ज़िलअ् बालेश्वर या बालासूर मेदनीपुर से द० पलंग है वहां नीमक बहुत होता है और लोहे की खानि भी है स० सु० बालेश्वर कलकत्ते से ७० कोस बूढ़ी बलंग नदी के किनारे पर समुद्र से ८ मील है। जलेसर, यहां सन १५७५ ई० में मुनइम खां जो अकबर का खान खाना था उसने दाउदशाह बंगाले के नव्वाब को हराया था।

छोटा नागपुर में अबादी कम और जंगल झाड़ बहुत पहाड़ों में गोंड़, भुआड़, कोल, धांगड़, आदि कई जाति के जंगली मनुष्य रहते हैं। इस को बेबन्दोबस्ती महाल कहते हैं। हजारी बाग के पास हवा अच्छी है।

सिलहट जिसका शुद्ध नाम श्रीहट्ट है त्रिपुरा के उ० शास्त्र में जो मत्स्य देश लिखा है वह इसी के पास पास है स० सु० सिलहट से २० मी० ई० उ० को झुकता जयन्ता-पुर पहले एक राजा के दखल में था पर वह राजा अपने

देवता को आदमियों का बल चढ़ाता था इसी इल्लत में जब्त हो गया। सिलहट की नारंगी प्रसिद्ध है और सीतल-पाटी भी वहां की उत्तम होती है कचार अथवा हेरम्ब सिलहट के पू० तीन तरफ़ पहाड़ों से घिरा और दलदल झील और जंगल से भरा स० मु० सिलचार बारक नदी के बां० क० है। कचार का ज़िला चाय की उपज के लिये प्रसिद्ध है।

गौहाटी जिस को पहले प्रागज्योतिषपुर कहते थे ब्रह्म-पुत्र नदी के तट पर एक प्राचीन नगर है। गोलाघाट चा-वल की बड़ी मंडी है। शिलांग चीफ़कमिश्नरी का सदर है। चेरापूंजी के बराबर वृष्टी कहीं नहीं होती यहां छः सौ इंच तक पानी रजिसटर किया गया है।

कमिश्नरी का नाम	जिले का नाम ।	जिले का पता ।	क्षेत्रफल वर्गमील	बड़े शहर और कसबे आदि ।
बनारस ।	मिरजापुर ।	इलाहाबाद के अ०	५२२४	मिरजापुर, चुनार, राबर्टसगंज, चकिया, कुन्हरा, गोपीगंज ।
	बनारस ।	मिरजापुर के पू०	९९८	बनारस, चंदौली, गंगापुर, रामनगर राजा का ।
	ग़ाज़ीपुर ।	बनारस के पू०	१५६०	ग़ाज़ीपुर, ज़मनिया, सय्यदपुर, गहमर ।
	बलिया ।	ग़ाज़ीपुर के ई०	१०२९	बलिया, कोपाचित लखनेसर, सिकंदरपुर, भदाऊ ।
	आज़मगढ़ ।	जौनपुर के पू०	२१४५	आज़मगढ़, मुहम्मदाबाद, देवगांव, काथिन, शियानपुर, नगरा ।
	बस्ती ।	आज़मगढ़ के उ०	४५८६	बस्ती, कप्रिया, अमानगंज, खलीलाबाद, बांसी, मेंहदावल ।
	गोरखपुर ।	गोरखपुर के प०	२७८८	गोरखपुर, महदावल, बांसी, बांसगांव, देवरिया, पदरौना, महराजगंज, हाटा, बड़हलगंज ।
झांसी ।	जालौन ।	हमीरपुर के ई०	१५५५	काल्पी, जालौन, कोंच, माधोगढ़, उरई ।
	झांसी ।	जालौन के नै०	१५६८	मऊ, रानीपुर, गुरसराय, भांडेड़, मोठ, गरौथा, मऊ
	ललितपुर ।	झांसी के द०	१९४७	ललितपुर, तालबेहट, बानपुर, महरौनी, चंदेरी बांसी

कमाऊं।	तराई परगना	रुहेलखण्ड के उ०	८२०	काशीपुर, हल्द्वानी, रुद्रपुर, कलपुरी।
	कमाऊं,	परगनातराई के उ०	६०००	अलमोड़ा, नैनीताल, रानीखेत, समेसर, चौपखिया, रामनगर
	गढ़वाल	कमाऊं के प०	१५००	पावड़ी, (पिवरी) श्रीनगर, पुवैग्रन, अफ़ज़लगढ़, कोटद्वारा
लखनऊ	उन्नाव	कानपुर के पू०	१७३६	उन्नाव, बांगरमौ, पुरवा, मुरावां, सफ़ीपुर, अजगैन, मोहानबलगंज, अचलगंज।
	बारहबंकी	उन्नाव के पू०	१७२७	नवाबगंज, जैदपुर, दर्याबाद, रुदौली, रामसनेही-घाट, फतहपुर, हैदरगढ़, टिकैतनगर।
	लखनऊ	उन्नाव के उ०	९६६	लखनऊ, मलीहाबाद, अमेठी, काकोरी, मोहन-लालगंज, बनूथरा, इटौंजा, गुसाईंगंज।
आगरा।	मथुरा।	अलीगढ़ के प०	१२४६	मथुरा, वृन्दावन, नन्दगांव, गोकुल, कोसी, महावन, सादाबाद।
	आगरा।	मथुरा के अ०	१८५२	आगरा, फतहपुरसीकरी, फ़िरोज़ाबाद, बटेश्वर, पिनाहट।
	एटा।	आगरे के उ०	१७८८	एटा, कासगंज, अलीगंज, सोरों, जलेसर, सकीट।
	फ़र्रुखाबाद।	बदाऊं के अ०	१७७९	फ़र्रुखाबाद, कन्नौज, मीरांकी सराय, छपरामऊ, कायमगंज, फतेहगढ़।
	मैनपुरी।	फ़र्रुखाबाद के पू०	१६९७	मैनपुरी, शिकोहाबाद, भुगांव, काहल, कुरावली।
	इटावा।	मैनपुरी के द०	१६९८।	इटावा, औरैया, फफूंद, जसवंतनगर, भर्थना लखना

कमिश्नरी का नाम।	ज़िले का नाम	ज़िले का पता।	क्षेत्र फल वर्गात्मक	बड़े शहर और कसबे आदि।
इलाहाबाद।	कानपुर।	फ़रुख़ाबाद के प०	२३३७	कानपुर, बिलहौर, बिठूर, गजनेर, रसूलाबाद, श्योराजपुर।
	फ़तहपुर।	कानपुर के प०	१६३१	फ़तहपुर, कोड़ा, जहानाबाद, कोरा, कल्यानपुर, खागा, गाज़ीपुर।
	हमीरपुर।	कानपुर के द०	२२८७	हमीरपुर, राठ, महोबा, मौधा, पनवाड़ी, कुलपहाड़
	बांदा।	फ़तहपुर के द० वा इलाहाबाद के प०	२९६१	बांदा, किरवी, चित्रकूट, कालिंजर, सिहोड़ा, बहेरा बदौसा, कमासिन, मऊ।
	इलाहाबाद।	फ़तहपुर के प०	२८४०	इलाहाबाद, कड़ा, फूलपुर, मऊ, भारतगंज, करारी, सिरसा, सिराथू, मंझनपुर, झूंसी।
	जौनपुर।	इलाहाबाद के ई०	१५५४	जौनपुर, मछलीशहर, बादशाहपुर, मदयाहन, किराकट, शाहगंज।

सीतापुर।	सीतापुर।	लखनऊ के उ०	२२०५	सीतापुर, खैराबाद, लाहरपुर, मुहम्मदाबाद, मिसरख।
	हरदोई (हरदुई)	लखनऊ के वा०	२२८५	हरदोई, बिलग्राम, सांडी, संडीला, पिहानी, शाहाबाद, बेनीगंज, गोपामऊ, मल्लावां।
	खीरी (खेरी या खीरी)।	शाहजहांपुर के ई०	२९६३	खीरी, मुहम्मदी, लखीमपुर, धौरहरा, गुड़अन्दी, ईसानगर।
फ़ैज़ाबाद।	फ़ैज़ाबाद।	बाराबंकी के पू०	१६४२	फ़ैज़ाबाद, अयोध्या, टांडा, जलालपुर, अकबरपुर, मलिकीपुर।
	गोंडा।	फ़ैज़ाबाद के ई०	२८२४	गोंडा, बलरामपुर, करनैलगंज, बेगमगंज, वज़ीरगंज, बिसम्भरपुर।
	बहराइच।	गोंडा के वा०	२६४५	बहराइच, नानपरा, मोतीपुर, अकोना, भिनगा, सराई
रायबरेली।	रायबरेली।	फ़तहपुर के उ०	१७५२	रायबरेली, जायस, डालमऊ, लालगंज, गुरबक्सगंज, जगतपुर, मोहनगंज, सलोन।
	सुलतानपुर।	रायबरेली के प०	१०००	सुलतानपुर, कादीपुर, मुसाफिरखाना, जगदीशपुर, रायपुर, सरतीपुर।
	प्रतापगढ़।	रायबरेली के द०।	१४५८	प्रतापगढ़, मानिकपुर, बिहार, पट्टी, रानीगंज, नटवरा, कूकापुर।

कमिश्नरी का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता ।	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	बड़े शहर और कसबे आदि ।
मेरठ	देहरादून	शिवालिक पर्वत में	११९२	देहरादून, मंसूरी, लंधौरा, कालसी ।
	सहारनपुर	देहरादून के द०	२२२१	सहारनपुर, देवबन्द, रुड़की, हरिद्वार, कनखल ।
	मुज़फ़्फ़रनगर	सहारनपुर के द०	१६५४	मुज़फ़्फ़रनगर, शामली, खतौली, थानेभवन ।
	मेरठ	मुज़फ़्फ़रनगर के द०	२३५४,	मेरठ, गढ़मुक्तेश्वर, हापड़, सरधना, बरौत, ग़ाज़ियाबाद
	बुलन्दशहर	मेरठ के द०	१९०९	बुलंदशहर, खुर्जा, अनूपशहर, सिकन्दराबाद ।
	अलीगढ़	बुलंदशहर के द०	१९५४	कोइल, या अलीगढ़, हाथरस, अतरौली, सिकन्दराबाद टप्पल ।
रोहिलखण्ड	बिजनौर	मेरठ के प०	१८६१	बिजनौर, नजीबाबाद, नगीना, धामपुर, चांदपुर, शेरकोट
	मुरादाबाद	बिजनौर के द०	२३०१	अमरोहा, चन्दौसी ठाकुरद्वारा, सम्भलपुर संभल, बिलासी
	बदाऊं	मुरादाबाद के प०	१९९१	बदाऊं(बदायूं) बिसौली, सहसवान, दातागंज, गुन्नौर
	बरेली	बदाऊं के उ०	१६०३	बांसबरेली, बीसलपुर, आंवला, फ़रीदपुर, पीरगंज नवाबगंज, बहेरी ।
	पीलीभीत	बरेली के उ०	११९०	पीलीभीत, जहांनाबाद, पूरनपुर, रिच्छा बाज़ार, सिरनवा
	शाहजहांपुर	बरेली के प०	१७४४	शाहजहांपुर, तिलहर, पुवांयां, जलालाबाद ।

मिर्ज़ापुर, गंगा के कनारे पर है, बड़े बेपार की जगह है और विंध्यवासिनी देवी का यहां एक मंदिर विन्ध्य पहाड़ पर हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। गंगा के कनारे एक छोटे से पहाड़ पर चनार का क़िला है। चुनारगढ़ की मट्टी के बरतन अच्छे होते हैं यहां क़ासिम सुलेमानी की दरगाह है और यहां का क़िला मशहूर है यहां मकान बनाने के पत्थर बहुत निकलते हैं। मिरज़ापुर में पीतल के बरतन अच्छे बनते हैं यहां की दरी और क़ालीन दूसरे मुल्कों को बहुत भेजे जाते हैं। भदोहिया का क़ालीन अच्छा होता है गोपीगंज और भदोहिया बड़े क़सबे हैं।

बनारस, जिसे हिन्दू काशी और वराणसी भी कहते हैं, गंगा के कनारे बसा है। यहां विश्वेश्वर नाथ का मन्दिर और राणामहल और माधोराव का धौरहरा है इस धौरहरा पर चढ़ने से सारा शहर हथेली सा मालूम होता है। यहां सर्कारी कालेज और जयनारायण कालेज है। सिकरौल में अंगरेज लोग रहते हैं। यहां संस्कृत पढ़ने का बहुत चरचा है। यहां चैत के महीने में बुढ़वामंगल का मेला बहुत अच्छा होता है। कमख़ुवाब, गोटा, तमाकू की गोलियां, सुंघनी और पीतल के बरतन अच्छे बनाये जाते हैं और दूर दूर को भेजे जाते हैं रामनगर में महाराजा बनारस रहते हैं। बनारस हिन्दुओं का प्रधान तीर्थ स्थान है। इस जगह में मरना हिन्दू बहुत उत्तम समझते हैं। यहां वेद, वेदान्त, उपनिषद् आदि संस्कृत शास्त्रों की

चरचा खूब रहती है। यह शहर बहुत पुराना, मकान यहां के अक्सर पोख्ते, संगी और ऊंचे गंगा के किनारे २ घाटों से बरषा तक हैं। बनारस धन रूप और संस्कृत विद्या का मानो घर है। बेनीमाधव का मन्दिर जिसे औरंगज़ेब ने तोड़कर एक मसजिद बड़ी आलीशान बनाई है और मान मन्दिर राजा जयसिंह जयपुरवाले का बनवाया इसी शहर में है। मणकर्णिका, दशाश्वमेध आदि उत्तम २ घाटें बहुत सी यहां बनी हैं। कपड़ा यहां रेशमी और ज़रबाफ़ी खूब बुना जाता है।

ग़ाज़ीपुर भी गंगा के बायें किनारे पर बसा है यहां गुलाब का इतर और गुलाब का अर्क़ बहुमूल्य और सुगन्धित होता है। यहां अफीम का बड़ा भारी कारखाना है। लार्ड कार्नवालिस गवर्नर जेनरल १८०५ ई० में यहीं मरे थे उनके यादगार के वास्ते १ मीनार बनी है। सैदपुर बड़ा क़सबा है।

बलिया में कार्त्तिक की पूर्णिमा को भिगुरासन (भृगुआश्रम का मेला होता है जानवरों की बिक्री का बड़ा मेला यह है।

बस्ती सदर मुक़ाम ज़िला है। बांसी का चावल अच्छा होता है रतनपुर में कबीरदास मरे थे। कप्तानगंज और लहदावल बड़े क़सबे हैं।

आज़मगढ़ टोंस नदी के बांये किनारे पर बसा है इस ज़िले में ऊख और नील की खेती बहुत होती है। आज़मखां जो शाहजहां का अहिलकार था उसी ने इस को आबाद

लिया था, यह सन् १६४८ ई० में जौनपुर में मरा। आज़मगढ़ में कपड़ा बहुत बुना जाता है।

गोरखपुर—इस ज़िले के उ० नयपाल की तराई द० घाघरा प० और प० अवध और पू० सारण है। २६ से २७३ तक उत्तर अक्षांस और ८२ से ८४ तक पू० देशान्तर में फैला है इस ज़िले का क्षेत्रफल ८००० वर्गात्मक मील है। हिन्दू और मुसल्मान बसते हैं। इस ज़िले की लम्बान पू० से प० १५१ मील और चौड़ान उ० से द० ८५ मील है। छपरबन्द गांव १५७१४ बसे हैं॥

यह सारा ज़िला पहले कोशल के राज्य में शामिल था। जिसे राजा वैवस्वत मनु ने बसाया था। जब उस वंश का बलहीन हुआ और पराक्रम घट गया तब इस ज़िले को काशी के राजा ने अपने अधिकार में करलिया फिर थोड़े दिन के अनन्तर काशी के राजा को इस ज़िले से गोरखनाथ के चेलों ने निकाल दिया। कुछ काल तक गोरखे भी इस ज़िले में अधिकार रखते थे पर उ० के पर्वतों से थारुओं ने आकर उन्हें भी निकाल बाहर किया और अपना राज्य सरयू के उ० का० तक स्थापन किया। उनके मंदिरों के देखने से मालूम होता है कि बहुत पुराने समय अर्थात् सन ७०० ईस्वी में वे इस ज़िले में राज करते थे। ब्राह्मण, राजपूत, और भर जो नीच जाति हैं, इन्हीं ने थारुओं को निकाला मुसल्मानों का अधिकार होने से पहले यह सारा ज़िला सरनेत राजपूतों के अधिकार में था। कोशल का शेष भाग कन्नौज के राजाओं के अधिकार में रहा।

यद्यपि यहां के राजा मुसल्मानों को प्रजा कहलाते थे पर मुसल्मान बादशाहों के आधीन कभी नहीं हुए बरन अपने२ गढ़ों में जुदा जुदा स्वतंत्र राज्य करते रहे।

सन् १८०२ ई० में अवध के नव्वाब ने इस ज़िले को सरकार अंगरेज़ के हवाले किया। उसी समय से इस जिले की उन्नति हुई और आबदी बढ़ती चली अब इस ज़िले में बन पहले की अपेक्षा बहुत कम रह गया है। पहले आज़मगढ़ भी इसी ज़िले में शामिल था पर सन् १८३० ई० में अलग ज़िला बनाया गया। यहां की धरती समुद्र से ३५० फुट ऊंची है और सिवाय उस धूस के जो परगने तिलपुर में ५० फुट ऊंची है यहां की सारी पृथ्वी समधरातल है यह ज़िला दो भाग में बट सकता है एक तो रापती और घाघरा के बीच और दूसरा रापती के उ० पू०। यहां की धरती में बालू और मिट्टी मिली है और बहुत उपजाऊ है पर यह मिट्टी बहुत नीचे तक नहीं है और ज़िले में सींचना कम पड़ता है क्योंकि पानी बहुत निकट रहता है।

यहां की आब हवा ठंढी है पर कुछ बदलती भी जाती है। इस ज़िले में १९ परगने ८ तहसील ८ मुनसिफ़ी हैं। इस ज़िले में मुख्य नदी सरयू अर्थात् घाघरा है जो गोंडे से निकलकर बेलवा बाज़ार के पास फ़ैज़ाबाद के सामने से ज़िले की सीमा पर १६० मील बहती हुई बाज़ार से मरिया ज़िले छपरा के निकट गंगा में मिली है। बरसात में पानी बहुत बढ़ता है और तोड़ भी अधिक हो जाता है जाड़े में पानी २ फुट से कम कहीं नहीं रहता घुनावट

इस में बहुत है। रामगंगा, मनवर, काली नदी, कुघानय इस ज़िले में आकर घाघरा में मिलती हैं। दूसरी रापती जिसको संस्कृत में ऐरावती कहते हैं मरी और झिंगरू मिलकर यह नदी बनी है और इस ज़िले में वायु कोन में आकर उस के बीचो बीच बहती हुई मौज़े रामपुर परने सलेमपुर मंझौली के प० निकट ही सरयू में संगम पाती है।

घोंघी, तिनाव, डमरा, बाणगंगा, रोहिण, आमी ये नदियां रापती में मिलती हैं। और इन में घुमावट और रेती भी अधिक है। तीसरी बड़ी गण्डक हिमालय पर्व्वत के धवलगिर शिखर से निकल कर इस ज़िले और सारण में बहती हुई मांझी के निकट गंगा में मिलती है इस का नाम कौशिकी, शालग्रामी, नारायणी और बूढ़ी गंडक भी कहते हैं और शालग्राम इसी नदी को जल में रहते हैं इस की धारा बहुत कड़ी है। चौथी नदी कुघानय, गोंडा के राज्य में किसी कूंए से निकल कर सूबे अवध में बहती हुई डुमरियागंज से १२ मील प० इस ज़िले में आकर ८० मील बहने के बाद क़सबा गोपालपुर के नज़दीक घाघरा में मिली है। १५ जून से १५ सितम्बर तक इस में १००० मन बोझे की नाव चल सकती है और १५ सितम्बर से १५ जून तक १०० मन की नाव चलती है। जहेला नाम इस का एक छोटा सोता है और लालगंज के निकट इस में देवई मिली है और बिशवी भी इसी में शामिल है। पांचवीं छोटी गंडक तुरवव के पहाड़ों से निकल निचलुर हवेली सिधुवा योवना शाहजहांपुर और सलेमपुर मंझौली में

बहती हुई ज़िले सारण में गोठिनी घाट के निकट घाघरा में संगम पाती है। आठ महीने इस में नाव चल सकती है इस की धारा मंद्री है। छठी धमेला, बुटवल के पहाड़ों से निकल कर ह० सुई तराई में तिनाव नाम से बहती हुई दो सुहानों में तिलार से मिली है और उसी जगह से यह कुण्डा कहलाती है और जब बाणगंगा में मिलती है तब धमेला बोली जाती है। और यही धमेला अमईनी घाट के निकट राप्ती में मिलती है। ५०० मन की नावें बारहों महीने थानी तक जा सकती है और छोटी २ नावें लुसका बाज़ार तक पहुंच सकती है पुरानी धांधी धमेला के सुहाने से ३ मी०-ऊपर मिली है इस का कनारा बहुत ऊंचा और गहरा है। सातवीं मनोरामा गोंड़ा से १० मी० उ० टेढ़ी झील से निकल लालगंज बाज़ार के निकट कुआनय में मिली है बरसात में ४००मन की नावें हरैया और अमारी बाज़ार परगने असोंढ़ा तक जा सकती हैं। आठवीं बूढ़ी-राप्ती बुटवल के पहाड़ों से निकल बिसकोहर बाज़ार के निकट इस ज़िले में आती हुई परगने रतपुर बांसी में ककरही घाट के समीप राप्ती में मिली है। नवीं बाण-गंगा नयपाल के पहाड़ों से निकल कर भूलुआ और पया-सी से १॥ मी० ऊपर इस ज़िले में बूढ़ी राप्ती से संगम या कुरना में मिली है। दसवीं रोहिन बुटवल के पहाड़ों से निकल कर परगने बिनायकपुर और हवेली में बहती हुई लिगोहानी घाट के निकट पयास को साथ लेकर शहर गोरखपुर के म० डोमिनगढ़ के निकट राप्ती में मिली है।

यद्यपि ये सब नदियां गहरी नहीं हैं पर पहाड़ों से निकल ने के कारण इन में पानी सर्वदा रहता है। और इन नदियों में छोटे २ सोते भी बहुत मिले हैं।

बड़े बाज़ारों के नाम—मेहनावल, गायघाट, ढखवा, गुसका, बिथरिया, धानी, पिपराइच, कप्तानगंज, मिठवरा, साहेबगंज, अहिरौली, दूसरा साहिबगंज, बरहज, रुद्रपुर, लार, भिंगारी, बड़हलगंज, गोला, गजपुर, डुमरियागंज, गौरा, बिश्नकोहर, वेलवा, हरैया, धमारी, बांसी,।

जीव जन्तु कीड़े मकोड़ों के विषय में—इस ज़िले के जंगलों में सांप बिच्छू विषखोपड़े आदि विषैले जीव बहुत हैं कि जिन के काटने से मनुष्य तुरंत मरजाता है और अजगर भी इस ज़िले के जंगल में दस फुट तक लम्बे देखे गये हैं और एक कीड़ा जिस को लोग गेरूड़ कहते हैं वह बहुधा आम के गुठलियों में रहता है यदि मनुष्य भूल से उन गुठलियों के साथ उस को खाजावे तुरन्त मरजावे उस कीड़े को साक्षात विषरूप समझना चाहिये।

इस ज़िले के वनों में अनेक मृग गण रहते हैं उन में से प्रधान मृगजाति का नाम नीचे लिखा जाता है हरिन, चीता, बारहसिंहा, रीछ, बाघ, हाथी, अरना, मयसा, भेड़िया सूअर आदि।

चिड़ियों का नाम—इस देश में कई प्रकार की चिड़ियां होती हैं भंगराज, शामा, हरेवा, पिद्दा, चंडुर, कागिन, लाल, मवलका, दहिगल, पीलक, पवई, कालातीतर आदि।

बहुत प्रकार का सांप इस ज़िले में पाये जाते हैं पर

इन में प्रसिद्ध गोहुमन, करैत, सोनबरीरो, और थूथर है।

मार्ग और टिकने के स्थान—गोरखपुर से आज़मगढ़ द० ५८ मी०। १ मढ़ाव बेलीपार। २ कौड़ी राम। ३ गगहा। ४ बड़हल गंज। वहां से गोरखपुर २७ मी० है। गोरखपुर से फ़ैज़ाबाद ७४ मी०। १ सहजनवां। २ काटे। ३ बसी। ४ कमानगंज। ५ अमोढ़ा। ६ बेलवा।

गोरखपुर से तुलसीपुर वायु को० को ७७ मी० है। १ सरईपार। २ बखिरा। ३ गौठहा। ४ बांसी। ५ महादेवा। ६ बिसकोहर।

गोरखपुर से छपरा पू० ११० मी०। १ चौरी। २ देवरिया। ३ सुपैला। ४ सलेमपुर। ६ गोठिनी। गोरखपुर से सुगौली ई० कोन को ८४ मी०। १ पीपरायच। २ कप्तानगंज। ३ रामकोला। ४ पड़रौना। ५ तिलकपुर जो गण्डक के का० है।

गोरखपुर से बुटवल उ० ८० मी०। १ फरेन्दा। २ मिरछिरिया। ३ बेलहरैया। ४ लोटन। ५ रखियाल।

खास गोरखपुर राप्ती नदी के किनारे पर बसा है और यहां गोरखनाथ का मन्दिर है। १८०२ ई० में अंगरेज़ों ने ले लिया था।

जालौन का सदर स्थान उरई है जो एक छोटा सा बाज़ार है जालौन में रुई की बिक्री होती है। काल्पी जो यमुना के दाहिने किनारे बसा है वहां मिश्री और काग़ज़ उमदे होते हैं। झांसी जो पहले महाराजा ग्वालियर के राज्य में थी अब सरकार ने क़िले ग्वालियर के बदले में ले लिया है।

यहां ऊनी क़ालीन और पासमी अच्छे बनते हैं मऊ में खारवां अच्छा बनाया जाता है बरुआ सागर में एक झील के किनारे क़िला है मोठ और गुरसराय बड़े क़सबे हैं।

ललितपुर साजाट नदी जो बरसाती और पहाड़ी है उस के और सुमेरा ताल के कनारे बसा है। यह ज़िला तमाम पहाड़ी और जंगली है। इस ज़िले में भी जैनी बहुत रहते हैं। यह ज़िला बुन्देल खण्ड के दक्षिणी सीमा है।

तराई यह ज़िला कमाऊं गढ़वाल के नीचे है। बहुधा करके इस ज़िले में जंगली पशु हाथी शेर वग़ैरह होते हैं और अंगरेज़ लोग आखेट करते हैं काशीपुर की छींट और हलद्वानी की मंडी इस ज़िले में मशहूर है। कमाऊं का स० मु० अलमोरा है।

नयीनीताल अलमोरा से ११ कोस द० प० अंगरेज़ों के हवा खाने की जगह है अलमोरे से २५ मील पर लोहू घाट की छावनी है। वहां से तीन मील पर फोर्ट-हेस्टिंगज नाम एक छोटा सा क़िला है बद्रीनाथ हिंदुओं का तीर्थस्थान विष्णुगंगा के कनारे पर है यहां मूर्ति नारायण की है। बद्रीनाथ से २५ मील पर केदारनाथ हिंदुओं का तीर्थस्थान है गढ़वाल का स० मु० श्रीनगर है ज़िले गढ़वाल में बद्रीनाथ और केदारनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है।

लखनऊ गोमती के कनारे पर बादशाही ज़माने में सूबे अवध की राजधानी था। यहां शीशमहल, मोतीमहल, पंचमहल, फ़रह बख़्श, क़ैसरबाग़, परिस्तान, क़ुतुबखाना, छतरमंज़ल, मच्छीभवन, मार्टिन साहब की कोठी, कैनिङ्ग-

कौनेज, हुसैनाबाद और कांडेशिया भासिफुद्दौला का इमामबाड़ा देखने लायक़ हैं, यहां के लोग कपड़ों पर बेल बूटा गढ़ुतकी अच्छा बनाते हैं। लखनौ का असली नाम लक्ष्मणावती बतलाते हैं। साहिब चीफ़ कमिश्नर के रहने का मुक़ाम है। अमेठी और काकोरी मशहूर जगह हैं।

बाराबंकी इस ज़िले में फतेहपूर के क़ालीन और भदौसी के लड्डू अच्छे होते हैं नवाबगंज और कुरसी मशहूर जगह है। उन्नाव स०मु० है बांगरमऊ और सफीपूर बड़े क़सबे हैं।

मथुरा यमुना के दहने कं० पर बसा है। यह श्रीकृष्ण जी की जन्म भूमि वैदिक लोगों का बड़ा तीर्थ है। कार्तिक शुक्ल द्वतीया को बड़े भीड़ का मेला होता है। सब भारत खंड के भागों से लोग दर्शन को आते हैं। पारिख का मंदिर कंसटीला विश्रामघाट वग़ैरह स्थान दर्शनीय हैं मथुरा से ५ मील द० वृन्दाबन एक तीर्थस्थान है। उस में लक्ष्मीचन्द सेठ का बनवाया हुआ रंग जी का मंदिर और नबी जी की मसजिद और शाहजी का मंदिर प्रसिद्धस्थान हैं और उसी के निकट नन्दगांव गोवरधन आदि देखने के योग्य हैं।

आगरा इसका दूसरा नाम अकबराबाद है। यही यमुना के क० पर बहुत अच्छा बसा है। हिन्दू इस को परशुराम का जन्मस्थान कहते हैं

यहां शाहजहां बादशाह यानी अकबर के पोते ने अपनी बेगम मुमताज़ महल की खातिर एक निहायत उमदा आलीशान जिस का नाम ताजबीबी का रौज़ा है २५० फुट उचान और ७० फुट चौड़ान

का संगमरमर से बनवाया जो अब तक मौजूद है । उस के बराबर दुनियां में कोई इमारत नहीं है । शाहजहां और बेगम दोनों उसी में गड़े हैं । आगरे से ६ मील पर सिकन्दरे में अकबर की क़बर है और यमुना के बायें क० एतमादुद्दौला के मक़बरे और रामबाग़ देखनेलायक़ हैं। आगरे में पच्चीकारी का काम अच्छा होता है और लैचे अच्छे बनते हैं। बटेश्वर में कातिक की पूर्णमासी को यमुना स्नान का बड़ा भारी मेला होता है कई हज़ार ऊंट घोड़े बैल बिकने आते हैं । फ़तहपुर शिकरी में अकबर और उस के वज़ीर फ़ैजी और बीरबल के महल अब तक अच्छे देखने लायक़ बने हैं । फ़तेहपुर सिकरी में राणा सांगा (संग्रामसिंह) ने सन् १५२७ ई० में बाबर से बड़ी बहादुरी से लड़ाई कर आखिर में शिकस्त खाई थी । फ़ीरोजाबाद और फ़रह बड़े क़सबे हैं।

एटा बरसात में पानी के बहुतायत से टापू सा हो जाता है। सोरों में कातिक के पूर्णमासी को गंगास्नान का मेला बड़ी भीड़ का होता है।

फ़र्रुख़ाबाद यहां के पीतल के बरतन और रज़ाई के पल्ले अच्छे होते हैं और यहां डेरे भी बनाये जाते हैं फ़तह-गढ़ में सरकारी कचहरियां हैं कन्नौज का कागज़ अतर और तेल मशहूर है कन्नौज हिन्दू राजाओं के समय में कुछ दिनों तक उ० हिंदुस्तान की राजधानी था सन् १५४० में हुमायूं ने शेरशाह से लड़कर इसी जगह शिकस्त खाई थी। कन्नौज किसी समय में बहुत आबाद शहर था तीस

हज़ार तंबोलियों की दूकानें थीं। मकनपुर में शाहमदार की दरगाह है छपरामऊ का पेड़ा अच्छा होता है मीरां की सराय और शमशाबाद बड़े क़सबे हैं।

मैनपुरी ईसन नदी के किनारे बसा है उस में जैनियों के मन्दिर बहुत उमदे बने हैं।

इटावा यमुना के बायें किनारे पर बसा है। शहर से २४ मी० पू० चम्बल से यमुना का संगम होता है। इस ज़िले के क़सबे बाज़ारों में देशी कपड़े बहुतायत से बिकते हैं।

कानपुर गंगा के दहने कनारे है बड़ा तिजारती शहर है यहां कपड़ा बनाने के कई कल हैं चमड़े का काम भी बहुत होता है और मेमोरियलबेल यहीं है। बिठूर का मेला जो कातिक की पूर्णमासी को होता है मशहूर है। यहां बाजीराव पेशवा क़ैद था बिल्हौर और मंगलपुर बड़े क़सबे हैं। कानपुर में सर्कारी फ़ौज की बड़ी छावनी है। सन् १८५७ ई० में नानाराव ने बहुतेरी मेम और लड़कियों को बेरहमी से मारा था। बिठूर कानपुर से ४ कोस उ० प० गंगा के क० हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है।

फ़तहपुर इलाहाबाद से वा० को० की तरफ़ ३० मील पर रेल स्टेशन के उ० और छोटा सा शहर बसा है। कोड़ा जहानाबाद के बरतन अच्छे होते हैं। हंसवा और हटगांव बड़े क़सबे हैं। और खजुवे के पास दारा शिकोह और औरंगज़ेब से बड़ी लड़ाई हुई थी। बेंदुकी रूई और गल्ले का बड़ा बाज़ार है। खजुये में औरंगज़ेब की बनवाई हुई एक बड़ी सराय है।

हमीरपुर यमुना नदी के दाहिने और बेतवा के बायें किनारे पर बसा है अर्थात् यमुना और बेतवा के संगम पर है। महोबा अल्हाऊदल बनाफरचनों का जन्म स्थान है पान उमदा होने के सबब बहुत मशहूर है।

बांदा केन नदी के दाहिने किनारे बसा हुआ है इस ज़िले के द० भाग बहुधा पहाड़ी है। बांदे से ४८ मील द० कालिंजर का क़िला ५ मीलके घेरे का खड़े पहाड़ पर बहुत मज़बूत बना है। सन १८१२ से अंगरेज़ों के दखल में है। यहां से २६ मील (१८ कोस) आग्नेय पर चित्रकूट जहां रामचन्द्र जी को भरत मनाने गये थे हिन्दुओं का बड़ा विख्यात तीर्थ स्थान है और इसी ज़िले के राजापुर में तुलसी दास की जन्म भूमि है। यहां अब तक तुलसी दास की लिखी हुई रामायण अयोध्या काण्ड वर्त्तमान है जी० ए० गिरिअर्सन साहिब बहादुरने उसकी फोटोग्राफ लिया है और वह खड्गविलास प्रेस बांकीपुर में छापा गया है।

इलाहाबाद।

इलाहाबाद जिसे प्रयाग भी कहते हैं गंगा यमुना के संगम पर बसा है और रोज़ रोज़ आबाद होता जाता है। यह पश्चिमोत्तर और अवध देश के लेफ़्टनेन्ट गवर्नर बहादुर की राजधानी है। दोनों नदियों के संगम पर एक बड़ा मज़बूत क़िला अकबर के समय का बना हुआ है और उस में भारद्वाज का आश्रम है लोग दर्शन को जाते हैं और यमुना में लोहे का पुल रेल के लिये अंगरेज़ी समय का

निशायत उमदा बना हुआ है। गंगा यमुना के संगम पर जिसे त्रिवेणी कहते हैं माघ की आमावस को अर्थात् मकर की संक्रात स्नान का बड़ी धूम का मेला होता है। सब भारत वर्ष के भागों से यात्री आते हैं और सावन में शिव कुटी महादेव का मेला होता है। कड़ा में शीतला देवी का मेला होता है।

जौनपुर बनारस के उ० गोमती नदी के दोनों किनारों पर बसा है। सन् १३७० ई० में फिरोज़तुग़लक ने इस को बसाया था और सन् १५७३ ई० में गोमती का पुल अकबर के समय में मुनइमखां खानखाना ने बनवाया था। अब यह शहर पुराना है। इस में गोमती नदी का पुल अटाले की मसजिद और क़िला पुराने समय के बने हुए देखने लायक़ हैं। और यहां का चमेली, बेला, केवड़ी का इतर और तेल निहायत तारीफ़ के लायक बनता है और देश देशांतर में मशहूर है। मछली शहर का पेड़ा अच्छा होता है। बादशाहपुर में शकर और शाहगंज में रूई की बिक्री बहुत होती है।

सीतापुर, सुल्तापुर के प० और लखनऊ से ५३ मील उ० बसा है। यहां की आबहवा अच्छी है यहां सरकारी छावनी है। नीमसार मिसरिख और हरगांव हिन्दुओं के तीर्थ हैं बेसवां का तम्बाकू मशहूर है। लाहरपुर (लहरपुर) में अकबर बादसाह के वज़ीर (दीवान या ख़ज़ानची) टोड़रमलका जन्म स्थान है अर्थात् यहां ही पैदा हुआ था। हरदोई—सई नदी इसी ज़िले से निकली है। बिलग्राम के

सादात नामी हैं। खेरी का स० मु० लखीमपुर है इस ज़ि का उ० भाग जंगल और तराई है। घाघी नदी में ना नामी जानवर ऐसा मज़बूत होता है कि आदमी औ चारपायों को समूचा निगल जाता है। गोला में गोक नाथ महादेव जी का मेला मशहूर है। फ़ैज़ाबाद घाघर से थोड़ी दूर द० दिशा पर बसा है इस लिये फ़ैज़ाबाद व सरजू नदी के क० कहते हैं। इस शहर को बंगला भी कह हैं। यह किसी ज़माने में इलाके अवध का स० मु० था इ शहर को नवाब मंसूर अली सफ़दरजंग ने बसाया था शहर के भीतर गुलाबबाड़ी में नव्वाबशुजाउद्दौला औ शहर के द० उन की बीबी बहू बेगम का मक़बरा उमद देखने लायक़ हैं। यहां के संदूक़चे और क़लमदान अच्छे होते हैं। फ़ैज़ाबाद के पास ही अर्थात् ५ मी० ई० को अयोध्या बड़ा क़सबा सरयू के द० क० बसा है। पहल अजोध्या अर्थात् अयोध्या का पुराना शहर महाराज श्रीराम चन्द्र का जन्म स्थान हिन्दुओंका बड़ा तीर्थ है। यह राजा रामचन्द्र की जन्मभूमि है। चैत रामनवमी को जो राजा रामचन्द्र का जन्म दिवस है स्नान और दर्शन का बड़ा मेला होता है। यह तीर्थ संपूर्ण भारतवर्ष में विख्यात है। यहां रामलक्ष्मण सीता और हनुमान का मन्दिर है। टांडा में कपड़े बुने जाते हैं। गोंड़ा, फ़ैज़ाबाद के उ० प० को झुकता और लखनऊ से ६५ मील पू० ई० को झुकता बसा है। यहां पिटारियां अच्छी होती हैं।

टेढ़ी नदी पर नव्वाबगंज अन्न की बड़ी मंडी है। आगे घाघरा की राह अब रेल की राह हरसाल कई लाख मन अन्न देश देश को जाता है। कर्नैलगंज में सन का बड़ा व्यापार होता है। तुलसीपुर के पास देवी पाटन का मेला मशहूर है। बलरामपुर में धनवार छत्री राजा हैं। बहराइच, गोंडे के वा० को० और लखनऊ से ६४ मी० उ० सरजू नदी के बा० है। वहां सुलतानमसऊदगाज़ी की दरगाह और रजबसालार का मक़बरा है। रायबरेली, लखनऊ के द० यह पुराना शहर सई नदी के दाहिने किनारे बसा है। और यहां एक क़िला है। डालामऊ में गंगा स्नान का मेला होता है जायस बड़ा क़सबा है। सुलतांपुर गोमती के बांये किनारे पर बसा है, इस ज़िले में कांदू का नाला प्रसिद्ध है। यहां आगे लूट मार ठगी होती थी। प्रतापगढ़ का स० मु० बेल्हा सई नदी के दाहिने किनारे बसा है जो प्रतापगढ़ से ४ मी० पू० है। देहरादून इस ज़िले में साल का जंगल बहुत है और चाय की खेती बहुतायत से होती है। लंढौरा और मंसूरी में अंगरेज़ लोग बहुधा हवा खाने के लिये जाते हैं। देहरा में सिक्खों का गुरद्वारा है। सहारनपुर यमुना की नहर के किनारे बसा है। यहां का कंपनी बाग़ देखने लायक़ है। वहां से २३ मी० पर रुड़की में टॉम्सन इन्जिनियरिंग कालेज है जिस में इमारत बनाने की विद्या सिखाई जाती है और धुयें की कलों का कारखाना है और सोलानी नदी में पुल बांधकर ऊपर से नहर निकाली है और ज्वालापुर के निकट नहर

का पुल बांध कर ऊपर से नदी निकाली है। सहारनपुर के संदूकचे सफ़ेद लकड़ी के नक़्शदार अच्छे होते हैं। सूती कपड़े बुने जाते हैं और चमड़े का काम भी खूब बनाया जाता है यहां सरकारी घुड़साल भी है। हरिद्वार में जो गंगा के द० है कुंभ का बड़ा भारी मेला होता है यह हर बारहवें वर्ष होता है। मुज़फ़्फ़रनगर, मेरठ के उ० और इलाहाबाद से ४७५ मी० वा० को० जरा उ० को झुकता है। यहां के कम्बल अच्छे होते हैं। कराना, सोरों, शिकारपुर बड़े क़सबे हैं। मेरठ काली नदी पर है। ता० १० वीं मई १८५७ ई० में सरकारी फ़ौज की बगावत यहां हीं से शुरू हुई थी। चैत के महीने में यहां नौचंदी का बड़ा भारी मेला होता है और पंद्रह दिन तक रहता है। बरौत में लोहे के बरतन अच्छे बनते हैं। सरधना में शिमरू फरासीसी की बेगम का गिरजा दर्शनीय है। गढ़ मुक्तेश्वर में गंगा तट पर कातिक का मेला बड़ी भीड़ का होता है बाबूगढ़ में सर्कार की तरफ़ से घुड़साल है। हस्तिनापुर अगले वक़्त में राजधानी था। बुलन्द शहर अलीगढ़ के उ०। इलाहाबाद से ३१५ मी० वा० को० कालीनदी के द० प० बसा है। अलीगढ़ में अहम्मदन (मुसलमानों का) एक कालेज है। शहर से कोस भर पर अलीगढ़ का क़िला है। हातरस बड़े व्यापार की मंडी है यहां चाकू वग़ैरह अच्छे बनते हैं। बिजनौर गंगा के बायें किनारे पर बसा है। नगीने में आबनूसी चीज़ें और नजीबाबाद में फूल के बरतन अच्छे बनते हैं।

मुरादाबाद रामगंगा के किनारे पर बसा है। यहां पारे की कलई का काम अच्छा होता है। अमरोहे में मिट्टी के बर्तन सराहने योग्य बनते हैं और मीरा जी की समाधि है। ठाकुरद्वारा में छींटें अच्छी बनती हैं। सम्भल में कलंकी औतार होगा इस लिये प्रसिद्ध है। मुरादाबाद के ज़िले में ऊख की खेती अच्छी होती है। बदाऊं सोत नदी के किनारे बसा है। इस में सैयद अलाउद्दीन दिल्ली की बादशाहत छोड़ कर आ बसा था। सहसवान में केवड़ा बहुत होता है बिसौली व्योपार की जगह है। बरेली जूआ नदी पर है। मेज़, कुरसी, कोच और संदूक़ वग़ैरह यहां बहुत उमदा बनता है। औंला, फ़रीदपुर और फ़तेहगंज बड़े क़सबे हैं। पीली भीत देवा (गर्रा) नदी के किनारे बसा है यहां चावल बहुत बारीक उमदा होता है बल्कि देशावरों में बहुत मशहूर है। यह नया ज़िला एकुम नवम्बर सन् १८७९ ई० से बरेली से अलग किया गया है। यहां बड़ा जंगल शिकार के लायक़ है और लकड़ी का काम भी अच्छा होता है। जहांनाबाद और बेलपुर बड़े क़सबे हैं। शाहजहांपुर गर्रा नदी के बांयें किनारे बसा है। यहां चाकु सरौते अच्छे बनते हैं। शाहजहांपुर के पास रौसर में कलों के द्वारा कंद और रमना में शराब अच्छी बनती है।

पंजाब की गवर्नमेंट।

पंजाब के उ० में कशमीर का राज्य, पू० में जमना, द० में राजपूताना और प० में सुलेमान पर्वत है।

खास पंजाब वही है जो सतलज, सिंध और कश्मीर के मध्य में है। उसका नाम पंजाब इस कारण से हुआ कि उस में पांच नदी बहती हैं। इन से उसके पांच खंड होते हैं पहला सिंधसागर दोआब सिंध और झेलम के मध्य में, दूसरा जच दोआब झेलम और चनाब के मध्य में, तीसरा रचना दोआब रावी और चनाब के मध्य में, चौथा बारी दोआब व्यास और रावी के मध्य में, पांचवां जलंधर दोआब व्यास और सतलज के मध्य में। इन में से सिंधसागर दोआब सब से बड़ा है और बारी दोआब सब से अधिक बसा है और उस में प्रायः सिक्खों की बसती है। यह लोग बाल बिलकुल नहीं बनवाते और गुरू नानक के अनुगामी हैं। पंजाब में मुसलमान हिन्दुस्तान के सब खंडों से अधिक हैं अर्थात् सैकड़ा पीछे पचास से अधिक हैं।

यह लेफ्टिनेन्टी सन् १८५९ ई० में नियत हुई। उस से पहले वहां का हाकिम चीफ़ कमिश्नर कहलाता था। उस समय में देहली की क़िस्मत पश्चिमोत्तर देश के अधिकार में थी। इस गवर्नमेंट में १० क़िस्मतें और ३२ ज़िले नीचे लिखे क्रम से हैं। और रक़बा एक लाख मी० मु० दो करोड़ आदमी बस्ते हैं। आमदनी तीन करोड़ रुपया साल

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	क्षेत्र फल वर्गात्मक मील	बड़े शहर और क़सबे आदि
क़िस्मत दिल्ली	गुड़गांवां	मथुरा के उ०	१,९८०	गुड़गांवां, रिवाड़ी
	दिल्ली	गुड़गांवां के उ०	१,२७७	दिल्ली, सुनपत
	करनाल	दिल्ली के उ०	२,२५२	करनाल, पानीपत, कैथल
क़िस्मत हिसार	रूहतक	दिल्ली के प०	१,८११	रूहतक, झज्झर
	हिसार	रूहतक के पू०	३,५४०	हिसार, हांसी, भिवानी
	सिरसा	हिसार के वा०	३,१२१	सिरसा
क़िस्मत अम्बाला	अम्बाला	करनाल के उ०	२,६२१	अंबाला, जगाद्री, शाहबाद, शाहदरा, रूपड़
	लुधियाना	अम्बाला के वा०	१,३६८	लुधियाना, सरहिन्द
	शिमला	अम्बाला के उ०	१८	शिमला, कसौली
क़िस्मत जलंधर	जलंधर	लुधियाना के वा०	१,३२६	जलंधर, राहूं, करतारपुर
	होशयारपुर	जलंधर के उ०	२,०८२	होशयारपुर, अमरकंटांडा
	कांगड़ा	होशयारपुर के उ०	८,९८८	कांगड़ा, नूरपुर

क़िस्मत अमृतसर	अमृतसर	जलंधर के उ०	१,५६२	अमृतसर, भैरोंवाल ।
	गुरुदासपुर	अमृतसर के ई०	१,८१८	गुरुदासपुर, बटाला, कलानूर, दीनानगर ।
	स्यालकोट	गुरुदासपुर के ई०	१ ९५५	स्यालकोट ।
क़िस्मत लाहौर	फ़ीरोज़पुर	लुधियाना के प०	२,७२९	फ़ीरोज़पुर, मुदकी, मुबांग, बतंडा
	लाहौर	अमृतसर के नै०	३,६५९	लाहौर, मियांमीर, क़सूर
	गुजरांवाला	लाहौर के ई०	२,५२३	गुजरांवाला, वज़ीराबाद
क़िस्मत रावलपिंडी	गुजरात	गुजरांवाला के उ०	२,०६९	गुजरात, जलालपुर
	शाहपुर	गुजरात के नै०	४,७००	शाहपुर, भीरा
	झेलम	गुजरात के प०	३,९१०	झेलम, पिंडदादनखां
	रावलपिंडी	झेलम के वा०	६,२१८	रावलपिंडी, हसनअबदाल, अटक, मरी
क़िस्मत मुलतान	झंग	शाहपुर के द०	५,७०३	झंग, मंगियाना, चिनियट
	मुलतान	झंग के नै०	५,९२७	मुलतान
	मांटगोमरी	मुलतान के प०	५,५७३	गगेरा, पाकट्टन, कोटकमालिया, दिपाल पुर
	मुज़फ़्फ़रगढ़	मांटगोमरी के द०	२,९५४	मुज़फ़्फ़रगढ़

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	क्षेत्रफल वर्ग मील	बड़े शहर और क़सबे आदि
क़िस्मत देराजात	देरागाज़ीखां	मुज़फ्फरगढ़ के प०	४,७४०	देरागाज़ीखां
	देराइस्माईलखां	देरागाज़ीखां के उ०	७,०९६	देराइस्माईलखां
	बन्नू	देराइस्माईलखां के उ०	३,१७१	बन्नू, कालाबाग़
क़िस्मत पेशावर	कोहाट	बन्नू के उ०	२,८३६	कोहाट
	पेशावर	कोहाट के प०	२,४८७	पेशावर
	हज़ारा	पेशावर के पू०	२,८३५	अबटाबाद

गुड़गांवां में चैत के महीने में देवी का मेला होता है। दिल्ली, बुलंदशहर के वा०, बादशाही ज़माने में इस नाम का एक सूबा गिना जाता था, कि जिसकी हद सूबे लाहौर से मिलती थी। दिल्ली (दिहली) को शाहजहां बादशाह ने सन् १६३१ ई० में बसाया था इस लिये उस को तभी से शाहजहांनाबाद भी कहते हैं। यह जमुना के का० पर है। युधिष्टिर महाराज ने इस स्थान (जगह) इन्द्रप्रस्थ बसाया था और तब से यह स्थान बराबर हिन्दुस्तान का राजधानी रहा पर कई दफ़ा बसा और कई दफ़ा उजड़ा अब जो शहर मौजूद है अकबर के पोते शाहजहां का बसाया है, लहर जमना की गली गली घूमी है। शहरपनाह संगीन किला लाल पत्थर का बहुत खूबसूरत जमना के का० बना है। और भी बहुत सी इमारतें (मकान) देखने के लाइक़(योग्य) हैं जैसे जामे मस्जिद, मोती मस्जिद, हरसुखराय काग़ज़ी का बनवाया जैन मंदिर, हुमायूं का मक़बरा, जिस में भूल भुलैयां बनी हैं, इस से थोड़े दूर पर निज़ामउद्दीन औलिया की दरगाह (मज़ार) है और कुतुब मीनार (कुतुब साहिब की लाट) २६२ फ़ीट ऊंची मशहूर जगह है। ता० १ जनवरी १८७७ ई० में जनाब लार्ड लिटन साहिब गवर्नर जेनरल हिंद ने एक दर्बार किया था जिस में हिन्दुस्तान के सब राजे इकट्ठे हुए थे यहां तक कि उदयपुर राणा भी इस दर्बार में आये थे। हरयाना बहुत रौनक़ दार और आबाद जगह है। करनाल दिल्ली से ३७॥ कोस (७५ मी०) पर है करनाल में नादिर शाह ने मुहम्मद

शाह पर फ़तेह पाई थी। पानीपत के मैदान में बड़ी बड़ी लड़ाइयां हुई हैं अर्थात् एक सन् १५२५ ई० में बाबर और इब्राहीम लोदी से, दूसरी सन् १७६१ ई० में अहमद शाह दुर्रानी और सदाशिव राव से और तीसरी लड़ाई सन् १६५६ ई० में अकबर के सिपह सालार खां ज़मां और हेमू से हुई थीं। कैथल में रज़िया बेगम मारी गई थी। रुहतक (रोहतक) शहर पुराना है अब उजाड़ हो रहा है। हिसार अथवा हरियाना रोहतक से प० वा० को० झुकता। गाय भैंस उस ज़िले में अच्छी होती हैं, दूध बहुत देती हैं। एक साहिब ने वहां एक बैल समाचार हाथ ऊंचा नापा था, और वह दस मन पानी की पखाल उठाता था। नस्ल बहुधा जाट गूजरों की, पानी कम, सत्तर अस्सी हाथ गहरे कूप खोदने पड़ते हैं। हिसार लाहौर से २०० मी० द० प० को० को झुकता हुआ है, किसी वक्त में वह बहुत बड़ा शहर था, अब उस में दस हज़ार आदमी भी नहीं बसते। फ़िरोज़ शाह के महल के खंडहरे जिस जगह खड़े हैं, वह उस समय शहर का मध्य गिना जाता था। उसी के पास लोहे की एक कीली भी गड़ी है। हिसार में दो किले हैं और फ़ौज की बड़ी छावनी है। हांसी शहर को सन् १७९८ ई० में जार्ज टोमस्‌न साहिब ने जीता था। सिरसा, हिसार के वा० को० और लाहौर से १५०मी०द० है। थानेसर सरस्वति नदी के क० पर हिन्दुओं के तीर्थ की जगह है यहां की भैंस अच्छी होती है। कुरुक्षेत्र में कौरव और

पांडव से महाभारत की लड़ाई हुई थी । लुधियाना, सतलज के क० पर है और यहां सूती और रेशमी कपड़े अच्छे होते हैं और पश्मीने का काम भी बहुत अच्छा बनता है । लुधियाने के द० पू० में पुराना शहर सरहिन्द एक जगह है उस को सन् १७६२ में सिक्खों ने चढ़ाई करके बरबाद कर दिया था और उस में गुरु गोविंद सिंह के दो लड़के मारे गये थे। और प० की तरफ़ अलीवाल में सन् १८४६ ई० में अंगरेजों और सिक्खों में एक बड़ी कड़ी लड़ाई हुई थी। शिमले में गर्मी के दिनों में जनाब गवर्नर जनरल साहिब और दूसरे बड़े बड़े अंगरेज़ (हाकिम) हवाखाने के लिये जाया करते या रहते हैं। कसौली और सपाटू में सरकारी छावनी है और यहां की आब हवा अच्छी है । जालंधर लुधियाने के उ० प० को मुक़ाबिल सतलज पार । पानी इस ज़िले में ज़मीन से नज़दीक है । अकसर जगह गज़भर खोदने से निकल आता है। जालंधर लाहौर से ८० मी०पू० बसा है यहां फौज़ की बड़ी छावनी है । हुश्यारपुर, जालंधर के पू० और लाहौर से ९५ मी० पू० है। कांगड़े का स० मु० नूरपुर है यहां पर एक प्रसिद्ध क़िला है और इस ज़िले में चाय की खेती बहुत होती है । कांगड़ा में जिसे नगरकोट भी कहते हैं महामाया का मंदिर है । कांगड़ा से ३५ कोस उ० पू० मणिकर्णिका तप्त कुंड है जिस का पानी इतना गर्म रहता है कि जो उस में चावल डाल दिया जाय तो बात की बात में पक पकाकर भात तैयार हो जाता है। कांगड़ा से कुछ दूर पर व्यासा नदी के दूसरे

को० पर ज़्वालामुखी हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है वहाँ एक मंदिर है और उस के बीच में एक कुंड से और मंदिर के चारों तरफ़ से भी सदा आग की ज़्वाला निकलती रहती है। कांगड़ा का ज़िला बिल्कुल हिमालय के पहाड़ों में बसा है। घेघे की बीमारी यहां अकसर होती है। कांगड़े से दो मंजिल वा० को० की तरफ़ कोहिस्तान में समुद्र से दो हज़ार फुट ऊंचा नूर बसा है, शाल बाफ़ों की दूकान हैं पर थोड़ी और शाल भी अच्छी नहीं बनती। अमृतसर जालंधर से प० उ० को झुकता व्यासा नदी के पार। यह सिक्खों का बड़ा तीर्थस्थान लाहौर से ३५ मी० पू० ई० को० को झुकता बड़े व्यौपार की जगह है। शहर के बीच (अंदर) एक सुंदर स्वच्छ जल से भरा हुआ बहुत बड़ा तालाब अमृतसर नाम १३५ क़दम लंबा और इतना ही चौड़ा पक्का बना है और उस तालाब के बीच एक छोटे से संगमर्मर के मकान भी बहुत खूब सूरत बना हुआ है जिस के गुम्बज़ पर सुनहरी मुलम्मा हुआ है. उस में सिक्खों के मत का ग्रन्थ अर्थात् धर्मशास्त्र महाराजा गुरुगोविंद सिंह का बनाया हुआ रक्खा है और कोई कहते हैं कि गुरु-गोविंद सिंह के हाथ का लिखा रक्खा है। पहले इस शहर का नाम चक था, सन् १५८१ ई० में रामदास सिक्खों के चौथे गुरु ने यह तालाब बनवाया तब से नाम अमृतसर रहा। यह बड़े व्यापार की जगह है। शाल बाफ़ों की दूकानें बहुत हैं, और सरकारी अमल्दारी के समय महसूल न लगने से माल पशमीने का बहुधा इसी जगह से दिसावरों को जाता

है और इस के क़रीब ही (पास) गोविन्द गढ़ का मज़बूत क़िला बना है जिस को महाराज रंजीत सिंह ने बनवाया था। रंजीत सिंह का ख़ज़ाना उसी में रहता था। बटाला, अमृतसर के ई० को० म० उ० गुरदासपुर फ़ीरोज़पुर सतलज नदी के बा० पर है। इस को फ़ीरोज़शाह तुगलक़ ने बसाया था और अपने नाम के अनुसार इस शहर का नाम फ़ीरोजपुर रक्खा था। यहां से १० कोस द० पू० मुदकी में सिक्खों ने सन् १८४५ ई० में शिकस्त खाई थी और १२॥ कोस उ० पू० सतलज के बा० सुबरांव (सुबराजन) एक मक़ाम है वहां ता० १० वीं फर्वरी सन् १८४६ ई० में गफ़ साहिब ने सिक्खों के सरदार तेज सिंह और शाम सिंह को हराया था। लाहौर से ७५ मी० ई० को० पू० को झुकता है। स्यालकोट (सियालकोट) में सरकारी फ़ौज की बड़ी छावनी है। हिन्दू कहते हैं कि लाहौर जो रावी नदी के बा० है महाराज श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव का बसाया और उस का असली नाम लवकोट या लवपुर बतलाते हैं। पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर साहिब बहादुर यहीं रहते हैं। यहां पर जहांगीर बादशाह और नूरजहां बेगम की क़बर है। मैनमीर एक जगह है वहां फ़ौज की बड़ी छावनी है। लाहौर में हिन्दी भाषा का प्रसिद्ध पत्र मित्रविलास है। गुजरानवाला (गूजरांवाला) में महाराज रंजीतसिंह के पुरुषा पैदा हुए थे।

गुजरात चनाव के बा० पर बसा है इसी जगह पर सन् १८४९ ई० के फ़िबुअरी महीने में सिक्खों के सरदार

शेर सिंह को अंगरेज़ों के प्रधान वीर गफ़ साहिब ने हराया था (शिकस्त दी थी) गुजरात के पास चिलियानवाला में भी एक लड़ाई तीसरी जनवरी १८४९ ई० में हुई थी उसमें भी गफ़ साहिब ने सिक्खों को हराया था एक समय में गुजरात की तलवार प्रसिद्ध थी। शाहपुर झेलम नदी के बा० क० पर है। पिंडदादन खां, झेलम के उ० प० की तरफ़ है। वहां सन् १५४० ई० में शेरशाह और इस्लाम शाह ने रोहतास नामक एक क़िला बनवाया था। यहां सेंधे नमक की खान है। रावलपिंडी में सरकारी पलटन रहती है अर्थात् छावनी है रावलपिंडी के प० उ० सिन्धु के क० पर अटक है वहां सन् १५८१ ई० में अकबर बादशाह ने एक क़िला बनवाया था वह आजतक मौजूद और मशहूर है। रावलपिंडी के उ० मुरी (मरी) अंगरेज़ों के हवा खाने की जगह है। झंग मुलतान के उ० तरफ़ है। मुलतान, पाक पटन के प०, इस के द० और पू० भाग में रेगिस्तान है। बादशाही अमल्दारी में उसी नाम के सूबे की राजधानी था जिस की हद ठट्ठे और कच्छ तक गिनी जाति थी। मुलतान चनाव के बा० क० से ४ मी० पर बसा है। रेशमी कपड़े, खेस, दराई इत्यादि यहां अच्छे बनते हैं क़ालीन भी बुने जाते हैं। इन चीज़ों के लिये वह मशहूर है। और मुलतान को १८४९ ई० में अंगरेज़ों ने फ़तह किया था। लैया बड़ी व्योपारिक जगह है। मोन्टगुमरी, मोन्टगुमरी साहब पंजाब में एक लेफ़्टिनेंट गवर्नर थे इस लिये यह शहर उन के नाम से मशहूर है। मुज़फ़्फ़रगढ़ चनाव

नदी के क० पर है। देरागाज़ीखां, खानगढ़ के नै० को० को सिंधु पार। इस ज़िले में मुसल्मानों की बस्ती बहुत है। देरागाज़ीखां लाहौर से २३० मी० नै० को० को सिंधु नदी के द० क० पर बसा है। देराइसमाईलखां, देरेगाज़ीखां के उ०। इस ज़िले में बलूच और पठान बहुत और हिंदू अति अल्प। देराइसमाईलखां लाहौर से २१५ मी० प० सिंधु के द० क० खजूर के दरख़्तों में बसा है। इसी ज़िले में पिशौर से सैंतीस कोस या ७४ मी० इधर वेरे सिंधु के क० नमक का पहाड़ है, कि जो अफ़ग़ानिस्तान में सफ़ेद कोह से निकल कर झेलम के क० तक चला आया है। जगह देखने योग्य है, दोनों तरफ़ पहाड़ आजाने के कारन दरया बहुत तंग और गहरा हो गया है, धरती बिल्कुल लाल, पहाड़ नमक का जिस के नीचे दरया बहता है गुलाबी बिल्लौर सा चमकता, द० तट पर पहाड़ के ऊपर काला बाग़ बसा हुआ, नमक की ढले खान से खुदे हुए, मनों वज़न में एक एक, ढेर के ढेर लगे रहते हैं, और व्यौपारियों के ऊंट क़तार की क़तार लदे हुए दिखाई देते हैं। काला बाग़ में फिटकरी की खान है। बन्नो (बन्नू) का स० मु० ईसाखील सिंधु नदी के क० पर है।

पेशावर हिन्दुस्तान के पश्चिमी सीमा पर है और यहां बड़ी फ़ौज की बड़ी छावनी है अर्थात् सब जगह से बहुत पलटन रहती है। और बड़ी तिजारत की जगह है। हज़ारा का स० मु० हरिपुर है। एबटाबाद (अबटाबाद) प्रसिद्ध जगह है।

मध्य हिन्द (मध्यप्रदेश वा सेंट्रलप्राविंसेज़) का वर्णन।

नागपुर की चीफ़ कमिश्नरी सन् १८६१ ई० में नियत हुई थी। उ० में एजंटी मध्यहिंद, पू० में गवर्न्मेंट बंगाल द० में मद्रास अहाता और हैदराबाद का राज्य और प० में बरार है। सन् १८६१ ई० में, नागपुर, सागर और नर्बदा इन तीनों का एक नाम मध्य प्रदेश रक्खा गया और तब से यहां एक चीफ़ कमिश्नरी कायम हुई है इस में ४ कमिश्नरी हैं जिन में १८ आगे लिखे हुए ज़िले हैं। इस इलाके में पहाड़ और जंगल ज़ियादे, आबादी कम। यहां कोयला और लोहा बहुतसी जगहों में निकलता है। इस प्रांत के लोग बिलकुल जंगली हैं और जंगलों में फिरा करते हैं। औरत उनकी दो एक पत्ता कमर में बांधती हैं और मर्द नंगे मादर्ज़ात जंगलों में रहा करते हैं। घरबार कुछ नहीं रखते फूल फल या शिकार से अपना पेट पोसते हैं। आबहवा यहां की बहुत खराब है। चावल, गेहूं, तेलहन, रूई और अख मसाला, यहां खूब पैदा होता है।

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	क्षेत्रफल वर्ग मील	बड़े शहर और कसबे आदि
क़िस्मत जबलपुर	सागर	उत्तर सीमा पर	४,००५	सागर, गढ़कोटा
	दमोह [डूमो]	सागर के पू०	२,७९९	दमोह, हट्टा
	जबलपुर	दमोह के द०	३,९१८	जबलपुर
	मंडला	जबलपुर के आ०	४,७१९	मंडला
	सिउनी	मंडला के नै०	३,२५२	सिउनी
क़िस्मत नरबदा	नरसिंहपुर	जबलपुर के ई०	१,९१६	नरसिंहपुर, गड़रवाड़ा।
	हुशंगाबाद	नरसिंहपुर के नै०	४,३७६	हुशंगाबाद, हंडिया, सुहागपुर, हरदा, सिउनी।
	नीमार	पश्चिम सीमा पर	३,३४०	बुरहानपुर, खण्डवा।
	बेतूल	नीमार के द०	३,९०५	बेतूल।
	चिन्दवाडा	बेतूल के पू०	३ ८५५	चिन्दवाड़ा, लोधीखेड़ा, पन्धरना।

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	क्षेत्रफल वर्ग मील	बड़े शहर और कसबे आदि
नागपुर	नागपुर	छिन्दवाड़ा के द०	३,७८६	नागपुर, कामटी, उमरेड़, रामटेक
	भंडारा	नागपुर के पू०	३,९२२	भंडारा, तुमसर, पौनी
	वरदा	नागपुर के द०	२,४०१	हींगनघाट, आरवी
	चांदा	वरदा के आ०	८,७००	चांदा
	बालाघाट	चांदा के आ०	३,१४१	०
	अपर गोदावरी	दक्षिण सीमा पर	१,०८५	०
छत्तीसगढ़	रायपुर	भंडारा के पू०	११,८८५	रायपुर, धमतरी
	बिलासपुर	रायपुर के उ०	७,७९७	बिलासपुर, रतनपुर
	सम्बलपुर	पूरबी सीमा पर	४,४०७	सम्बलपुर

सागर सरकारी पलटन के रहने की जगह है। जब्बलपुर में तिजारत बहुत होती है और बड़ी तिजारत की जगह है और इसके पास पत्थर के कोयले की बहुत बड़ी खान है। होशंगाबाद (हुशंगाबाद) नर्मदा नदी के कि० पर है। इस को सन् १४०५ ई० में मालवे के होशंग बादशाह ने बसाया था। बुरहानपुर ताप्ती नदी के कि० पर बसा है और बादशाही ज़माने में सूबे खानदेश की राजधानी था। इस के पास अकबर बादशाह का बनवाया असीरगढ़ का क़िला है। इलिचपुर मुसल्मानों का पुराना शहर है।

नागपुर चीफ़कमिश्नर साहिब के रहने की जगह है। यह मरहटों के राज्य में भी राजधानी थी। कामठी में (कामटी) में सरकारी छावनी है। हींगन घाट रूई की मंडी है। भंडारा बान गंगा के कि० पर है। वरदा का स० मु० हींगन घाट है। यहां रूई बहुत पैदा होती है और हींगन घाट रूई के लिये ही मशहूर है। वैरागढ़ व सम्भलपुर में हीरे की खान है। अपर गोदावरी—सिरोंचा।

बंबई प्रेसिडेंसी का वर्णन।

बंबई अहाते के उ० में बिलूचिस्तान और पंजाब पू० राजपुताना एजंसी, मध्यहिंद का देश, बेरार (बरार) और रियासत हैदराबाद, द० में मैसोर (मैसूर) मदरास प्रेसिडेंसी (मदराज अहाता) और प० में अरब का समुद्र (अरब सागर) और बिलूचिस्तान (बिलोचिस्तान) है।

विस्तार एक लाख २५ हज़ार मी० मु० है। रूई यहां बहुत पैदा होती है और नाज रूई यहां की प्रसिद्ध उपज है। समुद्र के तटस्थ (कनारे के) ज़िलों में नारियल बहुत पैदा होता है। पश्चिमीघाट (पच्छिमघाट) पर वृष्टि अधिक होती है (पानी बहुत बरसता है) इस कारन से गर्मी कम होती है। सिंध में गर्मी बहुत कम पड़ती है और पानी भी कम बरसता है। निवासी प्राय: हिंदू हैं और मुसलमान सैकड़े पीछे सतह हैं। बंबई का अहाता गवर्नर के अधिकार में है। उसमें ४ क़िस्मतें और २२ ज़िले नीचे लिखे क्रम से हैं।

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	ज़िले का रक्बा मुरब्बा मील	बड़े शहर और क़सबे आदि
क़िस्मत उत्तरीय	अहमदाबाद	रंभातकी खाड़ीके उ०	३,८४४	अहमदाबाद, गोगो, धोलाड़ा ।
	खेड़ा	अहमदाबाद के पू०	१,५६१	खेड़ा, नरयद
	पंचमहाल	खेड़ा के द०	१,६४४	गोधड़ा
	भड़ौंच	पंचमहाल के द०	१,३६२	भड़ौंच
	सूरत	भड़ौंच के द०	१,६२०	सूरत
	थाना या उत्तरी कोकन।	सूरत के द०	४,०५२	थाना, कलियान, बसीन
	क़लाबा	थाना के द०	१,४८२	अलीबाग़, बंबई
क़िस्मत मध्य	ख़ानदेश	सतपुड़ा पर्वत के द०	१०,१६२	धूलिया, भुसावल, मालीगांव
	नासिक	ख़ानदेश के द०	७,१५५	नासिक
	अहमदनगर	नासिक के द०	६,६४७	अहमदनगर
	पूना	अहमदनगर के द०	५,०९९	पूना, पुरंधर, कोरेगांव, कर्को
	शोलापुर	पूना के पू०	४,५०९	शोलापुर, पंडरपुर, बारसी
	सितारा	पूना के द०	४,९९१	सितारा, महाबलेश्वर

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	क्षेत्रफल वर्ग मील	बड़े शहर और कसबे आदि
क़िस्मत दक्षिणी	बेलगांव	सितारा के द०	४,५९१	बेलगांव
	धारवाड़	बेलगांव के आ०	४,५३६	धारवाड़, बहूली, बंकापुर
	कलाडगी	बेलगांव के पू०	५,६८५	कलाडगी, बगलकोट, बीजापुर
	कनारा	दक्षिण सीमा पर	४,२३५	हनावर, करावर, कुमटा
	रत्नागिरि या दक्षिणी कोकन	कुलाबा के द०	३,७८९	रत्नागिरि, विंगुरला
क़िस्मत सिन्ध	करांची	सिन्ध के पश्चिम किनारे पर	१६,१०९	करांची
	हैदराबाद	करांची के पू०	९,०५२	हैदराबाद, मियानी, ठट्ठा
	थर और परखर	हैदराबाद के पू०	२,७२९	अमरकोट
	शिकारपुर	करांची के उ०	८,८०९	शिकारपुर, सक्कर, रोड़ी
	अपर सिन्ध फ्रंटियर	शिकारपुर के प०	२,१७७	जेकबाबाद

अहमदाबाद—साबरमती नदी पर पहले गुजरात की राजधानी थी। गोगो मशहूर लंगरगाह है। धोलाड़ा रूई के लिये मशहूर है, खेड़े में जैनियों का अच्छा मंदिर है। कैरा और पंचमहाल, कैरा और गोधरा। कैरा (खेड़ा) में फ़ौज की बड़ी छावनी है। भड़ौंच [भरौंच] यहां रूई बहुत पैदा होती है। भड़ौच सूरत के उ०। बंबई हाते में यह ज़िला बहुत आबाद और उपजाऊ गिना जाता है। भड़ौंच जिसका असली नाम भृगुक्षेत्र था बंबई से २१५ मी० उ० और समुद्र से २५ मी० नर्मदा के द० तट (कनारे) एक ऊंचे से स्थान में बसा है, पर अब कुछ वीरान और बेरौनक़ सा है। यहां भी जैनियों ने जानवरों के लिये अस्पताल बनाया है, और उसका नाम पिंजरापोल रक्खा है, जो जानवर मांदा और अशक्त होता है उसे वहां रखते और पालते हैं। कलकत्ते में भी एक पिंजरापोल है। यह तो ऊपर लिखा गया है कि भरौंच में रूई बहुत पैदा होती है। पर रूई का यहां व्यापार भी बहुत होता है। इस के पासही नर्मदा नदी के का० एक बट का वृक्ष इतना बड़ा है कि उसकी जटायें (सोर) जो जड़ पकड़ गई हैं तीन हज़ार से कम नहीं हैं, वहां के लोग उस को कबीर बट कहते हैं २००० बरस का बताते हैं। इस के नीचे सात हज़ार आदमी अच्छी तरह आराम से डेरा करसकें, उस का घेरा प्राय चौदह सौ हाथ का होवेगा। सूरत तापी नदी (ताप्ती नदी) के कू० पर एक बहुत बड़ा शहर है। यह रूई की तिजारत के लिये मशहूर है और समु

१६१२ ई० में अंगरेज़ों ने यहीं पहले कोठी खोली थी। कोकन का स० मु० थाना या ठाणा समुद्र के क० पर है बसीन एक बंदर है इसको सन् १७८० ई० में अंगरेज़ों ने पुर्तगीज़ और मरहटों से जीता था और १८०२ में बाजीराव पेशवा और अंगरेज़ों से यहां अहदनामा लिखा गया था। कलियान (कल्यान) बड़ा प्राचीन नगर (पुराना शहर) है यहां कई रेल की सड़कें मिलती हैं। अर्थात् बंबई मंदराज, बड़ोदा और जबलपुर की रेल मिलती हैं। कोलाबा (कुलाबा) बंबई शहर कलकत्ते से प्रायः ४७० कोस प० द० के कोन पर बसा है। बंबई गवर्नमेंट की राजधानी है। इस के चारों तरफ़ शहरपनाह है और शहर पनाह से तीन तरफ़ समुद्र है। किला मज़बूत ईस ढब का बना है कि समुद्र तीन तरफ़ से मानों उस की खाई है। बंबई के गवर्नर और बड़े बड़े अफ़सर इसी शहर में रहते हैं। यहां पारसी बहुत रहते हैं। और वे बड़े धनाढ्य हैं। बंबई राजधानी और व्यापार की जगह और बंदर है। बंबई के किले से ३॥० कोस (सात मी० और कोकण के क० से पांच मी०) दूर गोरा पुरी (ग्वारपूरी) का टापू, जिसे अंगरेज़ "एलिफेंटा आइल" कहते हैं ३ कोस या छ मी० के घेरे में है। एलीफेंट अंगरेज़ी में हाथी को कहते हैं और वहां उतरने की जगह पहाड़ पर एक पत्थर का हाथी इतना बड़ा कि सच्चे हाथी से तिगुना ऊंचा बना था, इसी कारन यह नाम रहा, अब वह हाथी टूट गया है। ऊपर जो लिखा गया कि यहां एक बहुत बड़ा पत्थर का हाथी है

जो टूट गया इस के सिवाय यहां पर और भी बहुत सी मूर्त्तियां देख पड़ती हैं इन मूर्तियों की कारीगरी काबिल देखनेही के हैं। इस टापू में किसी समय पहाड़ काट कर जो अद्भुत मंदिर बने हैं। बड़ा मंदिर उस में मिले हुए मकानों के साथ २२० फुट लंबा और १५० फुट चौड़ा है, और २६ उस में खंभे हैं, बीच में एक बहुत बड़ी त्रिमूर्ति १५ फुट ऊंची रक्खी है, अर्थात् एकही मूर्ति में ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों के चिहरे बनाये हैं, दहनी तरफ़ एक मकान में महादेव की अर्द्धंगी मूर्ति १६ फुट ऊंची बनी है, सिवाय इन के और भी बहुत मूर्तें इन त्रिदेव और इंद्रानी इत्यादि की बनी हैं। जगह देखने लाइक़ है, पर बहुत वेमरम्मत बल्कि २ टूट भी गई हैं। जहां किसी ज़माने में ब्राह्मणों के सिवाय कोई पांव भी रखने न पाता होगा, वहां अब सांप बिच्छुओं की दहशत से कोई जाना भी नहीं चाहता। बंबई का लंगरगाह (हारबर) निहायत ही उमदा है। बंबई का टापू साष्टी टापू के द०। थोड़े दिन हुए कि यह टापू पानी और जंगल झाड़ियों से ऐसा छा रहा था, कि अगले लोग उसकी आब हवा की ख़राबी यहां तक लिख गये हैं कि इस टापू में आकर कोई मनुष्य तीन बरस से अधिक न जीयेगा, अब वही बंबई सरकार के प्रताप से ऐसा आबाद और साफ़ हो गया कि आब हवा की सफ़ाई दौलत और पारसियों की चालाकी अक़ल और अच्छे स्वभाव के कारन बहुत लोग कलकत्ते से भी उसे श्रेष्ट समझते हैं। कोई तो कहता

है कि यहां जो अम्बा देवी है उसी के नाम पर इस टापू का नाम बंबई रक्खा गया, और कोई इस का असल नाम बम्बहिया बतलाता है। बम्बहिया का अर्थ पुर्टगाली भाषा में अच्छी खाड़ी है। पहले यह टापू पूर्टगीजों के दखल में था, सन् १६६१ ई० में जब उन के बादशाह ने अपनी लड़की इंगलिस्तान को बादशाह को व्याही तो यह टापू यौतक में दिया। पहले ये दोनों टापू जुदा जुदा थे, और इन के बीच में चार सौ हाथ समुद्र की खाड़ी थी, द० तरफ़ का टापू ८ मी० लंबा और अढ़ाई मी० चौड़ा था, और उ० तरफ़ वाष्टी का टापू १८ मी० लंबा और १२ मी० चौड़ा था, पर अब इन दोनों के बीच में बंध बंध जाने से एकही हो गए। धरती इन टापूओं की पथरीली है, इमारत में काठ बहुत लगाते हैं, अंगरेज़ों की कोठियों में भी बहुधा काठ के खंभे और तख़्तों का फ़र्श रहता है। सिपाही पलटनों के यद्दि नाप में पांच फुट तीन इंच से ऊंचे नहीं होते, पर लड़ाई में मिहनती हैं। बंबई हाते के गवर्नर कमांडरिंचीफ़ बोर्डआफ़ रेवन्यू सुप्रिमकोर्ट और सदर निज़ामत और दीवानी के जज इसी जगह में रहते हैं। ऊपर बयान किया गया है कि क़िला मज़बूत और इस ढब का बना है कि समुद्र तीन तरफ़ से मानो उस की खाई हो गया है। ज़ुबान यहां गुजराती बहुत बोलते हैं और उस से उतर कर मरहठी और कोकणी, और उन से उतर कर फिर और सब बोली बोली जाती है।

ख़ानदेश, नासिक के उ०। बादशाही वक़्त में अपने ख़ास

पास के ज़िलों को लेकर यह भी एक सूबा था, स० मु० धूलिया पाँजरा (पंजारा) नदी के क०पर है। १०० मी० पू० पहाड़ पर आसेरगढ़ का मज़बूत क़िला है। यह इलाक़ा बिलकुल जंगल झाड़ में बसा है। सन् १५९९ ई० में अकबर बादशाह ने इस को अपने राज में मिलालिया था। नासिक गोदावरी नदी पर हिन्दुओं के तीर्थ की जगह है। उस के क़रीब पंचवटी में रावण की बहिन सूपनखा की नाक काटी गई थी अर्थात् श्रीरामचन्द्र जी के आज्ञानुसार लक्ष्मणजी ने सूपनखा को कान नाक काटी थी। अहमद नगर सीना नदी पर है। निज़ामशाही बादशाहों की राजधानी थी। और इस शहर को सन् १८०३ ई० में वलसली साहिब ने फ़तह किया था। पूना, मूता और मूला नदियों के संगम पर है। और यह मरहटों के सरदार पेशवा की पुरानी राजधानी है। जैसे उ० में काशी और नवद्वीप (नदिया) संस्कृत विद्या के लिये प्रसिद्ध है उसी तरह द० में पूना को जानना चाहिये। सिंह (सिंघ) गढ़ का एक पहाड़ी क़िला ११ मी० [५॥ कोस] पूना के द० प० में ४१६० फुट ऊंचा है। किरकी एक मकाम है सन् १८१७ ई० में कुलवुर साहिब ने पेशवा को वहां हराया था। पूना से २५ कोस द० प० के कोन पर महाबलेश्वर साहिब लोगों के हवा खाने की जगह है। शोलापुर [सोला-पुर] सितारा के पू०। धरती उपजाऊ। शोलापुर बंबई से २३० मी० अ० को० शहर पनाह के अन्दर है। क़िला मज़बूत और छावनी बड़ी है। यहां रूई की बड़ी तिजारत होती

है शोलापुर व्यौपार की भारी जगह है। पंढरपुर [पिन्ट-रपूर] तीर्थ की जगह और बारसी रूई की मंडी अर्थात् रूई की तिजारत होती है। सितारा शहर के क़रीब एक बहुत मज़बूत क़िला है और सन् १६९८ ई० में यह मरहठे राजाओं की राजधानी बनाया गया था। सितारा के उ० प० महाबलेश्वर के पहाड़ पर अंगरेज़ लोग हवा खाने को जाते हैं। पूना के वर्णन में भी इस का वर्णन हो गया है। कृष्णा नदी इसी जगह से निकली है इस लिये हिंदू लोग इसे तीर्थ मानते हैं। बेलगांव में सरकारी छावनी है और यहां रूई की बड़ी तिजारत होती है। हुबली और बंकापुर में रूई का बड़ा व्यौपार होता है। कलाडगी [कालादगी] बीजापुर आदिलशाही बादशाहों की राजधानी थी। होनावर [हनावर वा हिनोर] कुम्टा और करावर द० में दोनों बड़े बंदरगाह हैं, कुम्टा से बंबई को रूई जाती है। कनारा का स० मु० होनावर रूई की तिजारत के लिये मशहूर है। दक्खिन कोकन का स० मु० रतनगिरि है। करांची समुद्र के क० [बंदरगाह] यह शहर है इसलिये बड़ी तिजारत की जगह है। हैदराबाद बादशाही समय में सूबे सिन्ध का सदर था और दस्तकारी के काम में अति प्रसिद्ध था। वहां से ६ मी० उ० मियानी [मिवानी] एक गांव है वहां सन् १८४३ ई० में सरचालेंस नेपियर साहिब ने सिंध के अमीरों को हराया था। हैदराबाद और करांची के मध्य में एक जगह ठट्ठा का पुराना शहर है। मुहम्मद तुग़लक़ का देहांत यहीं हुआ था। यहां जामेमस्जिद

और लाल शहबाज़ की दरगाह है। अमरकोट में सन् १५४२ ई० में अकबर पैदा हुआ था। शिकारपुर व्योपारिक जगह है।

मद्रास प्रेसीडेंसी (मद्राज की गवर्नमेंट का वर्णन)

द० प्रायद्वीप का ज़्यादा हिस्सा मद्रास की गवर्नरी में शामिल है। चिलका झील से कुमारी अंतरीप तक पू० क० का सारा प्रदेश और प० क० के मलाबार और कनाड़ा भी इसी इलाक़े में हैं। मंद्राज हाते के उ० में उड़ीसा, मध्य प्रदेश (चीफ़ कमिश्नरी मध्य हिंद) राज्य हैदराबाद राज्य मैसूर [मैसोर] और बंबई हाते [बंबई प्रेसिडेंसी] के ज़िले हैं और बाक़ी तीन ओर [तरफ़] समुद्र से घिरा है। विस्तार १८१००० मी० मु० और तीन करोड़ के ऊपर आदमियों की बस्ती कोई बताते हैं। मंद्राज हाते में गर्मी बहुत होती है। पूरबी ज़िलों में गर्मी की अपेक्षा जाड़े में वृष्टि अधिक होती है। कावेरी आदि नदियों के क० धान इफ़ारत से पैदा होता है। समुद्र के क० नमक खूब बनता है। गोदावरी और कृष्णा प्रदेशों में कभी कभी हीरा भी मिलता है। रूई, नील और तम्बाकू की भी यहां खेती होती है। निवासी यहां के प्रायः हिन्दू हैं। मुसल्मान सैकड़ा पीछे छः हैं। और खंडों की अपेक्षा ईसाई बहुत हैं। मंद्राज हाता गवर्नर के अधिकार में है और उस में २१ ज़िले नीचे लिखे चक्र में क्रम से हैं।

ज़िले का नाम	ज़िले का पता	क्षेत्र फल वर्गमील	बड़े शहर और क़सबे आदि
गंजाम	उत्तर सीमा पर	८,३४३	छतरपुर, गंजाम, ब्रह्मपुर, रसलखौंडा, कलिंगापट्टम, गोपालपुर, चिकाकोल ।
विज़िगापट्टम	गंजाम के द०	१८,३४४	विज़िगापट्टन, विमलीपट्टन, विज़ियानगर ।
गोदावरी	विज़िगापट्टम के द०	६,२२४	राजमहेंद्री, एलौर, कोरिंगा, कोकेनडा
कृष्णा	गोदावरी के द०	८,०३६	मछलीपट्टन, बेसवाड़ा, गंटूर ।
करनूल	कृष्णा के नै०	७,३५८	करनूल ।
बिलारी	करनूल के नै०	११,००७	बिलारी, गूटी ।
कडापा	करनूल के नै०	८,३६७	कड़ापा, मदनापल्ली
नीलौर	करनूल और कडापा के पू०	८,४६२	नीलौर, आंगोल ।
चिंगलपट	नीलौर के द०	२,७५३	सैदापट, चिंगलपट, कांजीवरं या कांचीपुर, महाबलीपुर ।
शहर मंदराज	०	२७	मंदराज ।

उत्तरी अर्काट	चिंगलपट के प०	७,१३९	चित्तौर, अर्काट, वेलौर, त्रिपती,
दक्षिणी अर्काट	उत्तरी अर्काट के द०	४,८७३	काडालूर या सेंटफोर्ट डेविड, जिंजी, पोर्टोनोवो।
तंजौर	दक्षिणी अर्काट के द०	३,६५४	तंजौर, कोम्बेकोनम, या कुम्भकोनम, नीगापट्टन, त्रिंकवार
तिरचनापल्ली	तंजौर के प०	३,५१५	तिरचनापल्ली, श्रीरंगम
मदूरा	तिरचनापल्ली के द०	८,५०२	मदूरा, डिंडीगल।
तिन्नेवली	मदूरा के द०	५,१७६	तिन्नेवली, पालमकोटा; तूतीकोरिन या तूतीकोडी
सेलम	दक्षिणी अर्काट के प०	७,४८२	सेलम।
कोयमबटूर	सेलम के प०	७,४३२	कोयमबटूर।
नीलगिरि	कोयमबटूर के प०	७४९	उटकमंड, कुनूर, मननटाडी।
मलेबार	नीलगिरि के प०	६,००२	कालीकट, बेपुर, कोचीन, तलीचरी, कनानूर।
दक्षिणी कनारा	मलेबार के उ०	२,९०२	मंगलूर।

बरहनपुर में फौज की छावनी है और बरहमपुर (ब्रह्मपुर) रेशमी कपड़े के लिये भी मशहूर है। कलिंगापट्टन और गोपालपुर बंदर है। छतरपुर को चत्वरपुर भी कहते हैं। रसलकुंड [रसलखोंडा] में सिपाहियों के रहने का बारिक है। द० को और चिकाकोल भी अच्छी बस्ती है। विजिगापट्टन जिस को विशाखापट्टन भी कहते हैं। विजिया नगर में एक क़िला है और सरकारी पल्टन रहती। है विज़िगापट्टन बंदर है। राजमहेन्द्री [महेन्द्री] गोदावरी नदी पर है। कोरिंगा, काकीनेडा दोनों बंदर है। एलोर को क़ालीन उमदे होती है। मछली बंदर कृष्णा नदी पर छींट के कपड़े के लिये मशहूर है। यथार्थ में मछली-पट्टन की छींट अच्छी होती है। कर्नूल १८३८ ई० से अंगरेज़ों के दखल में है। बेलारी में एक क़िला है और सरकारी पल्टन रहती है अर्थात् छावनी है इस के पू० गूटी [गूती] एक जगह है वहां एक क़िला बहुत अच्छा और मशहूर है और वहां से उ० प० में बिजेनगर का पुराना शहर तुंगभद्रा के का० पर उजाड़ पड़ा है। काल की क्या गति है जो जो पुराने शहर थे प्राय: उजाड़ हो गए। गन्तूर मुसल्मानों के राज्य में कैसा बड़ा शहर था। अब क्या दशा है। कड़प पनार नदी के का० पर है। कड़पनेलूरू के प० हीरे की खान है। कडप [कड़प] जिस का शुद्धोच्चारण कृपा है। कोई कहते हैं कि उसी नदी के का० मंदराज से १४० मी० वा० को० उ० को झुकता है। नेलूरू गंतूर के द०। ताम्बे की खान है। नेलूरू [नेलूर] मंदराज से

१०० मी० उ० पन्नार अथवा पेन्ना नदी के द० कि० बसा है। इस नदी का शुद्ध नाम पिनाकिनी है। नीलोर के ज़िले के बैल प्रसिद्ध हैं। उ० की ओर ओंगोल बहुत बड़ा क़सबा है। कांजिवरम (कांजीवरम) में महादेव का बहुत बड़ा मंदिर मशहूर है। सैदापट में ज़िला चिंगलपट का सदर है। इस्से आगे चिंगलपट में सदर था। महाबलीपुरं में राजानल की राजधानी थी। उस में पहाड़ काटकर बहुत से मंदिर बने हैं। मंदराज शहर मदरास गवर्नमेंट की राजधानी कलकत्ते से क़रीब ४०० कोस (८५० मी० और सड़क की राह १०६३ मी० नै० को० द० को झुकता) द० प० के को० पर समुद्र के क० बसा है। पहले पहल अंगरेज़ सन् १६३८ ई० में यहां आये थे। इस हाते के गवर्नर साहिब बहादुर इसी जगह रहते हैं अर्थात् मदरास-हाता की राजधानी है। इस शहर में फ़ोर्टसेंट जार्ज बहुत बड़ा मज़बूत क़िला है। और गिर्जाघर, अजायब-खाना, प्रेसीडेंसीकालेज और मेडिकलकालेज ये सब मकान देखने योग्य हैं। पूनामली, पल्लावरम में और सेंट थोमस के पहाड़ पर फ़ौज की बहुत बड़ी छावनी है। सिपाही पलटन के यहां बंगाले हाते की बनिसबत छोटे और कमज़ोर होते हैं, पर चुस्ती, चालाकी और क़वाइद में इन से भी अधिक हैं। समुद्र के क० सरकारी और साहिब लोगों के मकान बहुत उम्दा बने हैं चूना वहां कौड़ी जलाकर बनाते हैं, इस कारन बहुत साफ़ और सफ़ेद होता है। गवर्नमेंट हौस के नज़दीक करनाटक के नव्वाब का

बनवाया। विपाक बाग़ है। सड़क साहिब लोगों के हवा खाने को सुंदर बनी है। दोनों तरफ़ सायादार पेड़ों के लगे रहने और अंगरेज़ों के बाग़ और बंगलों के होने से फूलों की मीठी मीठी सुगंध हर तरफ़ से चली आती है। यद्यपि अच्छे बंदर या कोई बड़ी नदी के न होने के कारण यह शहर कलकत्ते और बंबई की तरह तिजारत की जगह नहीं है, पर तो भी चीज़ें सब तरह की मिल जाती हैं, सन् १८०३ में शहर से ईन्नौर नदी तक एक नहर १०५६० गज़ लंबी ऐसी खोदी गई कि उस में नाव भी चल सकती है। उ० अर्काट (आरकाट) पेनार के क० पर कर्नाटक के नव्वाबों की राजधानी था। यहां एक क़िला है, जिस को सन् १७५१ ई० में क्लाइव साहिब ने ५०० आदमियों [सिपाहियों] को साथ लेकर चंदा साहिब के हमलों से बचाया था। सन् १८०६ ई० में वेलोर [वेलूर] के लोग बाग़ी हो गये थे और ११३ अंगरेज़ों को मार डाला था। अर्थात् वेलूर में सन् १८०६ की सिपाहियों की बग़ावत के लिये मशहूर है। चित्तूर [चित्तौर] में एक क़िला है। तिरपती हिन्दुओं की पवित्र जगह है। वेलोर में सरकारी पल्टन रहती है। अम्बूर, आर्नी, वांडिवाश जो इतिहासिक बातों के लिये प्रसिद्ध हैं इसी ज़िले में हैं। वांडिवाश में सन १७५९ ई० में फ़्रासीसों पर क्लाइव का विजय होने से द० में फ़्रासीसों की अमल्दारी सर्वथा नष्ट हो गई। दक्षिणी अर्काट का सदर कडालूर [कडलूर] है। उस के निकट

फोर्टसेंटडेविड नाम का एक क़िला गिरा पड़ा है। बा० को०(उ० पू०) में जिनजी [जिंजी] का क़िला एक पहाड़ी पर बना है। फ़्रासीसियों की अमलदारी पडूचेरी [पांडचरी या पट्चेरी या पांडिचेरी] इसी ज़िले में है। तंजोर कावेरी नदी पर है। यहां की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है अर्थात् बर्दवान को छोड़ कर इस ज़िले के समान उपज और कहीं नहीं हो। ख़ास कर रुई बहुत पैदा होती है। तंजोर [तनजूर] बड़े व्योपार की जगह है बल्कि तनजूर, नगापाटन, त्रिनक़ुबर, ये सब बड़ी तिजारत की जगह है शहर में दो क़िले हैं और एक महादेव का बड़ा मंदिर क़ाबिल देखने के है। यह मंदिर दो सौ फुट ऊंचा पत्थर का ऐसा उत्तम बना है कि ऐसा दूसरा मंदिर नहीं है। ई० को० में कोम्बकोनम या कुम्भ कोनम एक बड़ा प्राचीन नगर है। वहां यात्री बहुत जाते हैं। समुद्र के तट पर नीगापट्टन का बंदर है। त्रिंकवार में कुछ दिन हुए कि डेन्मार्क वालों की अमलदारी थी। त्रिंकबार [त्रेनक़ुबर] के द० करिकाल फ्रासीसियों के क़बज़े में है। त्रिचनापल्ली [तिरुचनापल्ली] कावेरी नदी के बा० पर बड़ा शहर है और यह जगह बड़ी तिजारत की है। त्रिचनापल्ली भारतभर में दूसरे दर्जे का नगर है। इसी के पास ही सेरिंगम [श्रीरंग] के टापू में श्रीरंग जी का बहुत सुंदर मंदिर है। उस के बाहर की दीवार का घेरा ४ मी० का है और भीतर छः और दीवारें साढ़ेतीन सौ फुट की दूरी से हैं और उन में चारों ओर दरवाज़े लगे हैं। दीवारों के बीच में धर्मशाला और

दूकानें आदि नयी हैं। लोग कहते हैं कि महाराज दशरथ कुमार श्रीरामचंद्र जी और लक्ष्मण जी ने लंका जाने के समय कुछ दिनों तक यहां विश्राम किया था। मदूरा (मडुरा या मथुरा) एक पुराना नगर (शहर) व्यागारू नदी पर है। मदूरा (मैंदुरा या मदुरा) में बहुत से मंदिर हैं। और दक्षिणी हिन्दुस्तान में यहां के पंडित प्रसिद्ध नामी होते थे और अब भी हैं। बा० को० में डिंडीगल का क़सबा और पहाड़ी क़िला है। वहां की आब हवा प्रशंसनीय है। मदुरा के पू० द० ७५ मील पर सेतबंधरामेश्वर के टापू में महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर श्रीरामचन्द्र जी के समय एक अच्छा यादगार बना है। टैनवेली (टिनेवेली या तिन्नेवेली) और पालमकोटा के नगर पास ही पास बसे हैं। इन के बीच में ताम्रपर्णी नदी बहती है। पालमकोट (पालम-कोटा) में फ़ौज की छावनी है। पू० की ओर तूतीकोरिन (तुटिकोरिन) एक जगह है वह बन्दर है यहां से रूई बहुत लादी जाती है और उस के पास ही समुंद्र में गोते खोर लोग मोती और शंख निकालते हैं। सेलम का ज़िला इसपात के लिये प्रसिद्ध है। इस ज़िले में पहाड़ बहुत हैं और उन पर सेगून और चन्दन के दरख़्त बहुत मिलते हैं। कोयमबटूर कावेरी नदी के क० पर है इस को कयम्बूटूर भी कोई लिखते हैं। नीलगिरि के समीप अच्छा नगर है और यहां लोहे की खान है। नीलगिरि के पहाड़ पर उतकमंद एक मकान है वहां और कुनूर में अंगरेज़ लोग हवा खाने को जाते हैं। नीलगिरि पर्वत में (नीलगिरि पहाड़ पर)

उतकटमंद समुद्र से ७००० फुट ऊंचा साहिब लोगों (अंगरेज़ों) के हवा खाने की जगह है। वैनाद में सोना निकलता है। मलेवार [मालावार या मलाबार] का सदर कालीकट समुद्र के तट पर है। वहीं फ़रंगियों का पहला जहाज़ आकर लगा था अर्थात् कालीकोट में पहले पहल सन् १४९८ ई० में वासकोडिगामा का जहाज़ आया था और सन् १५१३ ई० में पुर्तगाल वालों ने वहां एक क़िला बनवाया था और सन् १६१६ ई० में अंगरेज़ों ने वहां एक कोठी बनवाई थी। मलावार को अंगरेज़ों ने १७९९ ई० में टीपू सुलतान से ले लिया था। उस के समीप कनानूर है। बेपूर मंदराज रेलवे की पश्चिमी हद है। द० की ओर कोचीन का नगर बसा है और उ० की ओर तिलीचरी का बन्दर है। कनानूर फ़ौज की छावनी है। मंगलूर दक्षिणी कनारा का स० मु० है। वहां सन् १७८४ ई० में टीपू सुलतान और अंगरेज़ों से सुलहनामा हुआ था अर्थात् लिखा गया था और सन् १७९८ ई० में यहां अंगरेज़ बहादुर का दख़ल हुआ था। मंगलूर समुद्र के का० पर है। कोंडापुर से चन्दन देशावर में भेजा जाता है।

अजमेर और मेहरवाड़ा (मिहरवाड़े वा मेरवाड़ा) का वर्णन।

यह खंड राजपुताना के प० जोधपुर, उदयपुर और किशनगढ़ के राज्यों से घिरा है। यह इलाक़ा ता० १ एप्रिल सन् १८७१ ई० से पश्चिमोत्तर देश के लेफ़्टिनेंट

गवर्नर साहिब बहादुर के इलाके से अलग होकर बेआर, मालका, आगगढ़, बेबवर, कुच, भूलन, तुदगढ़, देवार, सरोथ, चंग और कोट करना ये सब जगह मिल के एक जुदा चीफ कमिश्नरी कहलाती है। और अजमेर में यहां के गवर्नर जनरल के एजेंट रहते हैं और वह चीफ कमिश्नर अजमेर और मेरवाड़ के कहलाते हैं। देवरा में सन् १६५८ ई॰ में औरंगजेब बादशाह ने दारा शिकोह को लड़ाई में हराया था। अजमेर बहुत पुराना शहर है, यहां ख़ुजे (ख़्वाजा:) मुईनउद्दीन [मइनुद्दीन] चिश्ती की मशहूर दरगाह है और यहां से ७॥ कोस (१५ मी॰) पर नसीराबाद में सरकारी फ़ौज की छावनी रहती है पुष्कर हिन्दुओं की तीर्थ की जगह अजमेर ही के पास है।

कुर्ग (कूर्ग) का वर्णन।

कुर्गमलेबार (मलबार) और मैसूर राज्य के बीच में एक पहाड़ी इलाका है अर्थात् इस में जंगल और पहाड़ बहुत हैं। यहां का प्रबंध [इंतिज़ाम] एक साहिब सुपरिन्टेनडेंट मातहद चीफ़कमिश्नर मैसूर के सपुर्द है। मरकरा (मरकाड़ा) कुर्ग का ख़ास शहर स॰ सु॰ है। यहां कहवा बहुत होता है और इलायची छोटी अपने आप खूब पैदा होती है। पहले इस प्रांत का प्रबंध साहिब कमिश्नर बरार के सपुर्द था पर इन दिनों चीफ़ कमिश्नर मैसूर के आज्ञाधीन है।

सूबे बरार का वर्णन ।

बरार [बेरार] हैदराबाद के राज्य के उ० में है। उ० में ताप्ती [तापती] नदी, और पू० में वरदा उस को चीफ कमिश्नरी मध्यहिन्द से अलग करती है। द० में पैनगंगा [बैनगंगा] उसकी सीमा है और प० में बंबई हाते का जिला खानदेश है । यहां की ज़मीन [पृथ्वी] बहुत उपजाऊ है और यहां रूई खूब पैदा होता है बरार की आब हवा हैदराबाद की अपेक्षा अच्छी है हैदराबाद की हिफ़ाज़त के लिये सरकार की तरफ़ से वहां फ़ौज रहती है निज़ाम हैदराबाद ने इस भागको उस खरचके पलटे में जो कंटिंजंट फ़ौज की बाबत उसे देना पड़ता था। सन् १८५२ ई० में सरकार अंगरेज़ी को सौंप दिया अधिकारी उसका रज़ीडेंट हैदराबाद है। बरार पूरबी और पश्चिमी दो भागों में बंट हुआ है और प्रत्येक [हरएक] में तीन तीन ज़िले नीचे लिखे नाम से हैं ।

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	क्षेत्र फल वर्गमील	बड़े शहर और क़सबे आदि
पूर्वी बरार	एलिचपुर	नागपुर के प०	२,६२३	एलिचपुर, गावलगढ़ ।
	अमरावती	एलिचपुर के द०	२,७६७	अमरावती, बडनेरा ।
	वून	अमरावती के आ०	३,६१९	वून ।
पश्चिमी बरार	अकोला	अमरावती और एलिचपुर के प०	२,६५४	अकोला, खामगांव, आरगांव ।
	बुलडाना	अकोला के द०	२,८०७	बुलडाना, देवलगांव ।
	वासिम	बुलडाना के पू०	२,९५८	वासिम ।

अमरावती में रूई की बहुत बड़ी तिजारत होती है और वहां रूई बहुत पैदा होती है कुछ रूई का व्योपार ही होता है ऐसा नहीं बल्कि उपज भी अधिक है । अमरावती स० सु० है । मुरतज़ापुर रूई की मंडी है ।

चकालदा हवा खाने की जगह है अमरावती के प० में खाम गांवमें भी रूई की बड़ी मंडी है। आरगांव [अरगांव] में जेनरल वेलज़ली [विलज़ली या वेलस्ली] साहिब ने सन् १८०२ ई० में मरठों [मरहट्टे या लरहट्टों] को शिकस्त दी थी बल्कि मरट्ठों पर विजय पाई थी।

यहां तक तो अंगरेज़ो [अंगरेज़ों की] अमलदारी का वर्णन [बयान] हो चुका अब जितना हिन्दुस्तानी राजा और नवाबों के अधिकार में है उस का वर्णन बहुत संक्षेप के साथ लिखा जाता है। अंगरेज़ी अमलदारी के दो तिहाई से अधिक अब भी हिन्दुस्तानियों के पास है। परंतु उस की पैदावार अंगरेज़ी मुल्क से बहुत कम है। संपूर्ण क्षेत्रफल अनुमान से ६ लाख मो० मु० [वर्गमील] है और मनुष्य संख्या ५ करोड़ है और संपूर्ण आमदनी साल में १२ करोड़ रुपये के लगभग है अब स्वाधीन [खुदसर] रियासतों और मित्र राज्यों का हाल आगे लिखा जाता है इन के सिवाय यदि किसी जगह का कोई राजा महाराजा नव्वाब रईस इत्यादि सुनने में आवे, तो समझना चाहिये कि वह ज़मीदार या मुआफ़ीदार है अर्थात् या तो सरकार अथवा किसी राजा का तालुक़ा है या उन की दी हुई मुआफ़ी खाता है दीवानी फ़ौजदारी का इख़्तियार कुछ नहीं रखता और उन के इलाकों का ज़िकर [वर्णन] इन्हीं ऊपर लिखे ज़िलों में आ गया। या नीचे लिखे हुए रजवाड़ों में आजावेगा। प्रसिद्ध राज्यों का वर्णन नीचे लिखे हुए नक़शे से अच्छी तरह [भली भांति] प्रगट होगा।

नम्बर	नाम राज्य	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मालगुजारी	बड़े शहर और कसबे आदि	कैफ़ियत
१	रामपुर	८४५	१४,६००००	रामपुर	गवर्नमेंट पश्चिमोत्तर देश में हैं
२	गढ़वाल	४,१८०	८०,०००	टिहरी	
३	कूचबिहार	१,३०७	१०,००,०००	कूचबिहार	गवर्नमेंट बंगाल में हैं
४	शिकम	२,६००	०	तमलांग	
५	मनीपुर	७,५००	६०,०००	मनीपुर	गवर्नमेंटआसाममें हैं
६	कश्मीर	६०,०००	८०,००,०००	जंबू, इसलामाबाद, लदाख़, यामपुर	गवर्नमेंटपंजाबमें हैं
७	भावलपुर	२५,०००	१६,००,०००	भावलपुर, उच्छ	
८	पटियाला	५,४१२	४५,६६०००	पटियाला	
९	नाभा	८६२	६,५०,०००	नाभा	
१०	झींद	१,२३६	४,००,०००	झींद	
११	फ़रीदकोट	६४३	३,००,०००	फ़रीदकोट	
१२	कपूरथला	५९८	९,५०,०००	कपूरथला	
१३	चम्बा	३,२१६	२,१५,०००	चम्बा	
१४	मंडी	१०८०	३,५९०००	मंडी	

१५	बस्तर	०	८२०००	बस्तर या जलधलापुर	गवर्नमेंट मध्यहिंदमें हैं
१६	बड़ोदा	१६,५००	१,३०,००,०००	बड़ोदा, डीसा	
१७	कच्छ	६,५००	१४,७६,०००	भुज, मांडवी	
१८	जूनागढ़	३,८००	१८,००,०००	जूनागढ़,पट्टन सोमनाथ, द्वारका	
१९	भाऊनगर	२,७८४	३१,००,०००	भाऊनगर	
२०	नवानगर	३,३९३	१०,००,०००	नवानगर	गवर्नमेंट बंबई में हैं
२१	कोल्हापुर	३,१८४	१७,५५,०००	कोल्हापुर	
२२	खंभात	३५०	४०००००	खंभात	
२३	खैरपुर	६,०००	५,८९,०००	खैरपुर	
२४	सावन्तवाड़ी	९००	३,००,०००	सावंतवाड़ी	
२५	ट्रावनकोर	६,६५३	५९,७८,०००	त्रिवेन्द्रम, क्वीलन, अलीपी	
२६	कोचीन	११,६१	१३,००,०००	आरनोकोलम, त्रिचुर	
२७	पट्टूकोटा	१,०४६	५,००,०००	पट्टूकोटा	गवर्नमेंटमंदराजमें हैं
२८	भरतपुर	१,९७४	३६,००,०००	भरतपुर,डीग	
२९	अलवर	३,५७३	२०,००,०००	अलवर, अमाचेरी	
३०	जैपुरयढूंढार	१५,२५०	५०,००,०००	जैपुर. रणथंभौर, आमेर, सांभर	

नम्बर	नाम राज्य	क्षेत्रफल व मील मुरब्बा	मालगुज़ारी	बड़े शहर और क़सबे आदि	कैफ़ियत
३१	धौलपुर	१,६२६	१,००,०००	धौलपुर।	राजपुताने की एजंटी में है। भरतपुर और धौलपुर जाटों के राज्य हैं और टोंक मुसलमानों का राज्य है।
३२	करौली	१,८७८	३,५०,०००	करौली।	
३३	टोंक	१,८७३	१६,००,०००	टोंक।	
३४	किशनगढ़	७२४	२,२५,०००	किशनगढ़	
३५	बूंदी	२,२९०	५,००,०००	बूंदी।	
३६	कोटा	५,०००	२५,५०,०००	कोटा।	
३७	झालावार	२,५००	२,५०,०००	झालरापाटन।	
३८	प्रतापगढ़	१,४५७	२,५०,०००	प्रतापगढ़।	
३९	बांसवाड़ा	१,५००	१,२५,०००	बांसवाड़ा।	
४०	डूंगरपुर	१,०००	१,२५,०००	डूंगरपुर।	
४१	उदयपुर या मेवाड़	११,६१४	२७,००,०००	उदयपुर, चितौर, नाथद्वारा।	
४२	सिरोही	३,०२०	१,२५,०००	सिरोही, आबू।	
४३	जोधपुर या मारवाड़	३५,६७२	३०,००,०००	जोधपुर, नागौर, खटू।	
४४	बीकानेर	१७,६७२	७,५०,०००	बीकानेर, भटनेर।	
४५	जैसलमेर	१२,२५२	१,००,०००	जैसलमेर।	

४६	ग्वालियर या सेंधिया का राज्य	३३,०००	१,११,००,०००	उज्जैन, ग्वालियर, नरवर, भिलसा, नीमच, झांसी, चंदेरी।	
४७	इंदौर या हुल्कार का राज्य	८,३२०	३०,००,०००	इन्दौर, मऊ, मांडू, मंडलेश्वर।	मध्य हिंद की एजंटी में है। उनमें से पहले छः मालवा में और रीवां छोड़कर बाकी सब बुंदेलखंड में है। देवास और जौड़ा मुसलमानों के अधिकार में है
४८	भूपाल	६,७६४	२४,००,०००	भूपाल, सिहोर।	
४९	धाड़	२,०००	५,००,०००	धाड़।	
५०	जौड़ा	८७२	६,५०,०००	जौड़ा।	
५१	देवास	२५६	३,५०,०००	देवास।	
५२	रीवां	१२,७२३	२२,५०,०००	रीवां, बांधवगढ़, सतना।	
५३	दतिया	८५०	१०,००,०००	दतिया।	
५४	उरछा	२,१६०	१६,००,०००	उरछा या टिहरी।	
५५	चरखारी	८८०	५,००,०००	चरखारी।	
५६	छतरपुर	१,२४०	३,००,०००	छतरपुर।	
५७	अजयगढ़	३४९	१,७५,०००	अजयगढ़।	
५८	पन्ना	६८८	४,००,०००	पन्ना।	
५९	समथर	१७५	४,५०,०००	समथर।	
६०	बिजावर	९२०	३,५०,०००	बिजावर।	

नम्बर	नाम राज्य	क्षेत्र फल मुरब्बा मील	मालगुज़ारी	बड़े शहर और क़स्बे आदि	कैफ़ियत
६१	हैदराबाद	८५,०००	१,६५,००,०००	हैदराबाद, सिकंदराबाद, बलारम, वारंगल, बीदर, गुलबर्ग औरंगाबाद, दौलताबाद, नांदेर, इल्लोर, असाई।	रज़ीडेंट हैदराबाद के आधीन है।
६२	मैसोर	२७,०००	१,०८,००,०००	मैसोर, बंगलोर, श्रीरंगपट्टन, नगर, शिमोगा, हरीहर।	रज़ीडेंट मैसोर के आधीन है।

सतलज और जमना के बीच पहाड़ी राजा राना और ठाकुरों के इलाके। इन में कहलूर सिरमौर और बिसहर ये तीन तो अनुमान लाख लाख रुपये साल की आमदनी के रजवाड़े हैं, और बाकी बारह ठकुराइयों के राना तीस हजार से लेकर तीन सौ रुपये साल तक की आमदनी रखते हैं। सिरमौर [सुरमूर] की राजधानी नाहन ३० अंश ३० कला उ० अक्षांस और ७७ अंश ४५ कला पू० देशांतर में समुद्र से ३००० फुट ऊंचा जमना से बीस मी० वा० क० है। हिंदूर [नालागढ़] और बुशहिर [बिसहर] और रामपुर की छोटी रियासत रोहेल खंड में है। यहां बहुत से रुहेले अफ़गान आबाद हैं। रामपुर कोसिला नदी पर राजधानी नव्वाब साहिब रामपुर है। रियासत गढ़वाल कमाऊं और सरकारी बृटिश गढ़वाल के उ० और प० में है। गढ़वाल बिसहर की हद से मिला हुआ जमना और गंगा के बीच ४५०० मी० मु० के विस्तार में अनुमान लाख रुपये साल की आमदनी का मुल्क है। राजधानी टिहरी [टेहरी] अर्थात् राजा टीहरी में रहता है वह बड़ा शहर ३० अंश २३ कला उ० अक्षांस और ७८ अंश २८ कला पू० देशांतर में समुद्र से २३०० फुट ऊंचा गंगा से वा० क० बसा है।

गवर्नमेंट बंगाला की संबंधि रियासतें, इन का क्षेत्रफल ४० हज़ार मी० मु० और आबादी २५ लाख है। १ रियासत कूचबिहार भूटान के द० और ज़िले रंगपुर और भूटान के बीच में है। इसकी राजधानी खास शहर कुचबिहार [कूचबिहार] मशहूर है। कोई कोई इस की आमदनी साल

लाख बताते हैं। इन दिनों इस राज्य का बंदोबस्त एक कमिश्नर के हवाले है, जिस को अंगरेजी गवर्नमेंट मुकर्रर करती है। २ शिकम की पहाड़ी रियासत भूटान और नयपाल [नैपाल] के बीच और दार्जिलिंग और बंगाले के उ० में एक छोटासा राज्य है और इस राज्य का राजधानी शिकम और कोई महाराजा शिकम के रहने की जगह तमलुंग कहते हैं पर राजधानी शिकम है जिसे दमुजंग भी कहते हैं। २७ अंश १६ कला उ० अक्षांस ८८ अंश ३ कला पू० देशांतर में अमिकूमा नदी के क० पर बसा है। इस मुल्क में हो कर तिब्बत आने की राह है। आसाम गवर्नमेंट में हिन्दुस्तानी अमलदारी अर्थात् लोकल गवर्नमेंट आसाम के संबंधि रियासत मनीपुर है। जो आसाम कच्छ और स्वाधीन ब्रह्मा के बीच में एक छोटासा राज्य है इस की आमदनी साठ हज़ार रुपया सालाना है और इसका स० मु० [राजधानी] मनीपुर है। यहां के बाशिन्दे हिन्दू मत को मानते हैं।

भूगोल के पाठकोंको इतना तो अवश्यही मालूम होगा कि काशमीर रियासत महाराजा साहिब जम्बू या जम्मू है। इस के चारोंओर पहाड़ हैं, यहां एक तरह का बकरा होता है जिस के बाल को शाल बनाते हैं काश्मीर का काग़ज़, अतर और केसर मशहूर है श्रीनगर झेलम नदी के क० पर राजधानी है और लोज बड़ा शहर है। यहां ऊनका ब्योपार बहुत होता है। काश्मीर हिन्दुस्तान के उ० प० के कोन पर रावी और सिंध के बीच हिमालय की तराई में यह बेनज़ीर राज्य काश्मीर का है सीमा काश्मीर और जंबू के उ० प० कोन पर हज़ारा और प० तरफ़ हज़ारा, रावलपिंडी

और झेलम द० तरफ़ गुजरात, सियालकोट, गुरदासपुर और कांगड़ा, पू० तरफ़ चीन की अमलदारी उ० तरफ़ कराकोरम है। विस्तार ६०००० मी० मु० है और कोई ८०००००० रुपया साल आमदनी बताता है। पशमीना तरह बतरह का निहायत उमदा यहां बुना जाता है। और केसर वहां साल भर में सत्तर अस्सी मन पैदा होता है पर केसर [ज़ाफ़रान] पामपुर में जो श्रीनगर के द० पू० है वहां पैदा होता है। यह कश्मीर के इलाके में है। बरसात यहां कुछ नहीं होती अर्थात् बिलकुल नहीं होती है। जाड़े में दो तीन महीना बर्फ़ खूब पड़ती है इसके सिवाय सदा बहार बनी रहती हैं। सब से बढ़कर एक खूबी यह है कि न कांटा है न कीड़ा मकोड़ा, नहीं सांप बिच्छू का तो वहां कुछ भी डर है, न शेर हाथी के से मूज़ी जानवरों का डर। जहां बनफ़शा गाय भैंसों के चरने में आता है, भला वहां के सब्ज़ःज़ारों का क्या कहना है। कोई ऐसी जगह नहीं जो सब्ज़े और फूलों से खाली हो। भला वहां के सब्ज़ःज़ारों के क्या कहना है। मानों पथिक जनों के आराम के लिये किसीने सब्ज़ मखमल का बिछौना बिछा रक्खा है, और उन के बीच लाल पीले सफ़ेद सैकड़ों क़िस्म के फूल इस रंग रूप से खिले रहते हैं कि जी नहीं चाहता जो उन पर से निगाह उठाकर किसी दूसरी तरफ़ डालें। कहीं नर्गिस है और कहीं सोसन, कहीं लाला है और कहीं नस्तरन, गुलाब का जंगल, चंबेली का बन। मकान की छतें वहां तमाम मिट्टी की बनी हैं और अकसर उन पर लाला

होते हैं बहार के मौसिम [दिनों] में उन पर फूलों के बीज छिड़क देते हैं, जिस जंगल में हर तरफ़ फूल खिलते हैं और मेवों के दरख़्त कलियों से लद जाते हैं, शहर और गांव भी चमन के नमूने दिखलाते हैं। लोग दरख़्तों के नीचे सब्ज़ों पर जा बैठते हैं चाय और कबाब खाते हैं, नाचते गाते हैं। एक आदमी दरख़्त पर चढ़ कर धीरे धीरे उन्हें हिलाता है, तो फूलों की बरखा होती रहती है, इसी को वहां गुलरेज़ी का मेला कहते हैं। पानी भी वहां फूलों से खाली नहीं कमल और कमोदनी इतने खिले हैं कि उन के रंगों की आभा से हर नहर इन्द्र धनुष का समा दिखलाती है। दरख़्त मेवों के इफ़रात से देखने में आते हैं। भादों के महीने में जब मेवा पकता है तो सेब नाशपाती केलिये केवल तोड़ने की मेहनत दरकार है, दाम उनका कोई नहीं मांगता, जंगल का जंगल पड़ा है, और जो बाग़ों में हिफ़ाज़त के साथ पैदा होती हैं वह भी रुपये की तीन चार सौ से कम नहीं बिकतीं। नाशपाती कई क़िस्म की होती है बटंक सब से बिहतर है। इसी तरह से सेब भी बहुत प्रकार के होते हैं। ख़ासियत ज़मीन की ऐसी कि बूढ़ा भी वहां जाने से जवान हो जाता है। मानों सृष्टि करता ब्रह्मा ने इस रम्य और सोहावने स्थान को सारे जहान की ख़ूबियों का नमूना बना रक्खा है। अगले लोग जो काश्मीर की तारीफ़ में यहबातलिखगए हैं, कि बूढ़ा भी वहां जानेसे जवानहोजाता है, सो इतना तो वहां अवश्य देखने में आया कि मन उसका जवानों का सा होजाता है, जैसे रेगिस्तान में जेठ बैसाख

के झलसे हुए मनुष्य को यदि कहीं बसंत ऋतु की हवा लग जावे तो देखो उस का मन कैसा बदल जावेगा, और तिस में कश्मीर की हवा के आगे तो और जगह का बसंत ऋतु भी नर्क ऋतु है जो लोग निर्जन एकांत रम्य और सुहावने स्थान चाहते हैं, उन के लिये कश्मीर से बढ़ कर दूसरी जगह कोई भी नहीं है।

दोहा—स्वर्गलोक यदि भूमि पर, तो है याही ठौर।
जो नाहीं या भूमि पर, याते सरस न और॥ १॥

कश्मीर की राजधानी श्रीनगर भेलम के दोनों कनारों पर बसा है। यहां से ५० कोस (१०० मी०) द० पू० एक छोटी सी पहाड़ी पर जंबू बसा है, जहां से कोहिस्तान शुरू होता है। न वहां पीने को पानी अच्छा मिलता है और न कोई अच्छा सायादार दरख़्त है, थूहर और कांटों से हरतरफ़ घिरा है, वहां वाले इन झाड़ झंखाड़ों को मज़बूती का बाइस समझते हैं पर सन् १८४५ में सिक्खों की फ़ौज ने वह जगह सहज में जा घेरी थी। जंबू से तेइसकोस के फ़ासिले पर पुरमंडल में गुलाब सिंह ने महादेव का एक मन्दिर अच्छा बनाया है, शिखर पर उस के माग सुनहरी मुलम्मा है। श्रीनगर से कुछ दूर उ० की पहाड़ों में अमरनाथ महादेव के दर्शन होते हैं। श्रीनगर के पू० सिंध के पार बरन हिमालय पार लेह या लद्दाख़ का मुल्क भी जो हिन्दुस्तान की हद से बाहर और तिब्बत का एक भाग है, अब इस इलाके के साथ महाराज गुलाब सिंह के बेटे रनबीर सिंह के वंशज के पास है, और इस हिसाब

से यह राज बा० को० से अग्निकोन की तरफ़ अनुमान साढ़े तीन सौ मी० लंबा और ईशान से नै० को० अढ़ाई सौ मी० चौड़ा होवेगा। इस का विस्तार पच्चीस हज़ार मी० मु० है। लद्दाख में बकरी की ऊन को जिस से शाल बनती है तिजारत होती है, छोटे तिब्बत की राजधानी इस करदो सिंध नदी पर है। कश्मीर को मुसल्मानों ने सन् १३२४ ई० में, अकबर ने १५८६ में, अफ़गानों ने सन् १७५२ ई० में जीता था और सिक्खोंने सन् १८१९ ई० में लेके अंगरेज़ों को दिया और फिर अंगरेज़ों ने सन् १८४५ में महाराज गुलाब सिंह को देदिया। अब महाराज प्रताप सिंह के समय में रेजीडेंटी बैठी है। कश्मीर का इतिहास राजतरंगिनी बहुत उत्तम है। काश्मीरकुसुम बाबू हरिश्चंद्र जी का बनाया हुआ ग्रंथ देखने योग्य है।

बहावलपुर, जैसलमेर और बीकानेर के उ० प० और सतलज नदी के पू० कं० पर नव्वाब के रहने की जगह बहावल पुर है। पटियाला यह इलाक़ा महाराज पटियाले का जो सिक्खों की क़ौम में से हैं, बहावल पुर के उ० पू० में है। राजधानी इसकी पटियाला है। नाभा, पटियाले के उ० प० है। झिंद [जिंद] हिसार के उ० प० में है। फ़रीद कोट फ़ीरोज़पुर के द० पू० में है। कपूरथला जालंधर के उ० प० है। पटियाले के उ० और सतलज और जमना के बीच में कईएक छोटे छोटे राज्य हैं इन सब राज्यों के प० सुकेत और मंडी के दो और छोटे राज्य हैं। कुछ दूर प० हिमालय में रावी के कं० चम्बा का एक और छोटासा राज्य

है। बुसाहिर राज्य के पू० गढ़वाल का राज्य है। मंडी कांगड़े के द० पू० है। महाराज मंडी के रहने की जगह (राजधानी) मंडी ब्यासानदी पर है। और सुकेत मंडी के द० है। बंबई हाते में छोटी छोटी रियासतें बहुत हैं जिन का क्षेत्रफल बहत्तर हज़ार वर्गात्मक मी० और आबादी सव्वे लाख है। मुख्य मुख्य रियासतें यह है। बड़ोदा या बड़ौदा अथवा गायकवाड़ की राजधानी बड़ोदा विश्वामित्र नदी के क० पर है। गाइकवाड़ा का राज्य हुलकर और सेंधिया के राज्य के [अमल्दारी के] प० समुन्द्र [कच्छकी खाड़ी] पर्यन्त [तक] और उदय पुर। और सिरोही के द० नर्मदा वा अरब समुद्र के तीर तक चलागया है। पर इस के बीच में बहुत जगह सरकारी ज़िले भी आगए हैं। यह इलाक़ा सूबे गुजरात में हैं, जिसे संस्कृत में गुर्ज्जर देश कहते हैं। विस्तार उसका चौबीस हजार मी० मु० से कम नहीं है। यद्यपि जंगल पहाड़ झीलों से भरे हैं, पर तौभी मुल्क आबाद और धन की बहुतायत है, विशेष करके राजधानी के आस पास। यह राज्य बंबई हाते में है। पहले इस राज्य की आमदनी अनुमान सत्तर लाख रुपया साल की होगी ऐसा कईएक किताबों में लिखी थी पर अब बढ़ गई। अक़ीक़ की उस में खान है। इस राज्य की राजधानी बड़ोदा २२ अंश २१ कला उ० अक्षांस और ७३ अंश २३ कला पू० देशांतर में शहर पनाह के अंदर विश्वामित्र नदी के वा० क० बसा है यह ऊपर लिखा गया है। उस नदी पर पक्का पत्थर का पुल बना हुआ है। बस्ती उस

की लाख आदमियों से अधिक है बल्कि अब इस की आबादी डेढ़ लाख है। बाज़ार चौड़ा और चौपड़के डौलका इमारतों में आम पत्थर काठ का। साहिब रज़ीडेंट के रहने की जगह है। इस गुजरात में और भी बहुत से नव्वाब और राजा हैं, पर उनके इलाके निहायत छोटे, यहां तक कि बहुतेरे उन में से एकही गांव के मालिक हैं, और सिवाने उनके आपस में मिले जुले, इसलिये हमने उन सब को इसी अमलदारी के साथ रखना मुनासिब समझा, बहुतेरे तो उन में से अब तक भी महाराज गाइकवाड़ को कर देते हैं, पर कोई सरकार की हिमायत में भी आगया है। यहां गुजरात की प० सीमा पर द्वारका नाम (द्वारिका) का टापू है, हिन्दुओं का बड़ा प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। काठियावाड़ के दक्षिणी तट पर पटनसोमनाथ में महादेव का प्रसिद्ध मंदिर था जिस को महमूद ग़ज़नवी ने सन् १२०४ ई० में नाश किया था, यह मंदिर ऐसा उत्तम बना था कि उस में छप्पन खंभे जड़ाऊ लगे हुए थे, दो सौ मन सोने की ज़ंजीर में घंटा लटकता था, दो हज़ार ग्राम उस के खर्च के लिये नियत थे दो हज़ार पंडे और तीन हज़ार गवैये भी नौकर थे। अब उसी जगह पर अहिल्याबाई ने एक नया मंदिर बनाकर महादेव स्थापित किया है। काठियावाड़ कच्छ की खाड़ी और खंभात के बीच में है। इस इलाके में १८ छोटे २ राज्य हैं। लेकिन मशहूर ये हैं। ओकामंडल, नवी नगर, जूनागढ़ भावनगर जाफराबाद, बढ़वार और राजकोट।

कच्छ यह देश गुजरात के वायव्य कोण में है इस के प०

में समुद्र ७०में सिंधु देश है लंबाई अटखालसे ६२कोस चौड़ाई मध्यम संख्यासे४२कोस है। इस के उत्तरीय और दक्षिणीय दो भाग हैं उत्तरीय भाग की धरती नीची और समुद्र की पानी से सजल रहती है इस भाग को रन कहते हैं और दक्षिणीय भाग टीले और जंगल से भरा है इस में जो ऊंचे प्रदेश हैं वहां की धरती उपजाऊ नहीं है क्योंकि वहां पानी बहुत कम बरसता है बरसात का समय भी नियत नहीं नीची धरती के इलाकों में छोटे २ नाले बहुत बहते रहते हैं परन्तु बड़ी नदी एक भी इस देश में नहीं है इसी लिये ग्रीष्म ऋतु में जब ये नाले सूख जाते हैं तब वहां पानी का अकाल रहता है और इलाके रन के पास नालों और कुंवों का पानी कडुवा है और वहां सिंध नदी के दो सोते हैं और इन में कई छोटी नदियां आकर मिली हैं जब वर्षा ऋतु में वे नदियां चढ़ती हैं तो सारे नगर में पानी फैल जाता है और कच्छ और गुजरात ये दोनों देश टापू के सदृश हो जाते हैं इस प्रकार कच्छ देश सदा चारों ओर से सजल रहता है परन्तु उस के भीतर की धरती रेतली है इस देश में भुज, अंजार, मांडवी, मंद्रा, आदि बड़े नगर हैं और ६९° समुद्र के ६०० पर मांडवी (मन्दवी) बंदर है और मंद्रा भी एक बंदर गाह है। इस देश से कपास को व्यापार के लिये बम्बई में ले जाते हैं और यहां लोहा, गंधक, कोयला, चीनी, कागज, रेशम, आदि वस्तु उपजती हैं इन को भी यहां से व्यापारी लोग अन्य देशों में बेचने के लिये ले जाते हैं और पहाड़ की एक श्रेणी भी इस देश में है

कच्छ का घोड़ा बहुत उत्तम होता है और जंगली गधा भी यहां होते हैं। इस देश के स्वामी की पदवी राव की है और उस की राजधानी भुज नगर में है सन् १७१८ ई० में भूचाल होने के समय यह इलाका ज़मीन के अंदर धस गया। कच्छ के निवासी बुद्धिमान और मनचले हैं और पास के किनारों वरन सूप समुद्र के किनारों तक सौदागरी करते हैं।

जूनागढ़ के निकट गिरनार का पहाड़ जैनियों का तीर्थ है। वहां महाराजा अशोक के समय के लेख हाल में निकले हैं। कोलापुर (कोल्हापुर) रतनागिरि और बेलगांव के जिलों के बीच में और हैदराबाद के प० और सितारा के द० में है। खंभात मही नदी पर खंभात के नव्वाब के रहने की जगह है, यह खंभात नव्वाब की जागीर बड़ोदे से ३५ मी० प० समुद्र की खाड़ी क० महीनदी के मुहाने बसा है। आगे समुद्र उस की दीवार से टकराता था अब डेढ़ मी० पीछे हट गया है। जब अहमदाबाद गुजरात की राजधानी था, तो खंभात उसका बंदर था, माल के जहाज़ उसी जगह लगते थे। अहमदाबाद की रौनक घटने से अब वह भी बिगड़ गया, नव्वाब को इसी जागीर से साल में तीन लाख रुपया वसूल होता है।

खैरपुर सिंध के इलाके में हैं। और सांवतवाड़ी गोवा के उ० और द० कोकन और गोवा के बीच में यह राज मरहट्टे राजा के हाथ में है बल्कि कोलापुर और सावंतवाड़ी ये दोनों राज्य मरहट्टे राजाओं के हाथ में है। त्रिवां-कोड़ (ट्रावनकोर) रासकुमारी के उ० से कोचीन तक

करीब ६० कोस के चला गया है। इस राज्य की राजधानी त्रिवन्द्रम समुद्र के क० पर बसा है। यहां लगभग एक लाख आदमी आबाद है। अञ्जङ्ग में सन् १६८४ से सन् १८१३ ई० तक ईस्टइंडिया कंपनी की आढ़त बनी रही कोचीन त्रिबांकोड़ के उ०। इसकी राजधानी त्रिचूर है।

बिकानेर। इस रजवाड़े के मण्डल की उ० में भट्टी लोगों का देश द० में जोधपूर और जयपूर पू० में हरियाना और सिखावाटी और प० में जैसलमेर है इस मण्डल की भूमि ऊंची और बालुकामय है उपजाऊ नहीं है यहां वृष्टि बहुत थोड़ी होती है सो भी अनिश्चित इसलिये यहां पानी का टोटा रहता है इस में कूवे प्रायः ५० हाथ से ले १५० हाथ तक गहरे होते हैं बल्कि इस इलाके में बिलकुल रेगिस्तान है पानी कहीं नहीं मिलता कहीं कहीं जंगली की तर्बुज मिलता है उसी। से मुसाफ़िर प्यास बुझाते हैं। यहां के खेती करनेहारे लोग जाट बहुत हैं इस मण्डल में बिकानेर नामक बड़ा नगर चारों ओर से एक सुन्दर और दृढ़ भित्ती से घेरा हुआ है इस के एक कोने में यहां के राजा का ऊंचा और दर्शनीय एक कोट है इस नगर में कितने एक बहुत अच्छे घर और मन्दिर हैं और बहुत बस्ती झोंपड़ों की है इस में पानी का बहुत टोटा है परन्तु यहां के कोट के ठीक मध्यभाग में एक बहुत अच्छा रमणीय कूप २०० हाथ गहरा है और उस कूप का व्यास १० से ले १२ हाथ तक है इस में पानी बहुत अच्छा और बहुत है।

इस मण्डल में दूसरा एक पुरु नामक नगर है यह बाहर से बहुत रमणीय दिखाता है इस के भीतर घर भी बहुत अच्छे चूना और पत्थर के बने हुए बहुत शुभ्र और दर्शनीय हैं।

जैसलमेर। बीकानेर के द० प० और मारवाड़ के प० है। इस रजवाड़े के मण्डल की चारोंओर भूमि बहुत करके ऊषर है और इस में पानी का बहुत ही टोटा है इस कारण यहां बहुत थोड़ा धान्य उपजता है यह मण्डल प० की ओर सिन्धुदेश से और पू० की ओर जोधपूर के मण्डल से घेरा हुआ है इस में मुख्य नगर जेसलमेर अर्थात् इस का खास शहर जेसलमीर (जैसलमेर) नामक है और यहां सब छोटे गांव हैं।

जोधपूर अर्थात् युद्धपूर अरवली पहाड़ के प०। यह राजपुताने का मण्डल खास प्रसिद्ध जो मरुदेश जिस को लोगों में मारवाड़ा या मारवाड़ कहते हैं उस का एक खण्ड है इस का प० और उ० भाग जैसलमेर और बिकानेर से घेरा हुआ है और पू० द० भाग जयपूर अजमेर और मेवाड़ से वेष्टित हैं इस मण्डल की भूमि भी बहुत कर के ऊषर ही है परन्तु इस के आग्नेय और पू० भाग में बहुत छोटे २ टीले हैं उन से नाले बहते हैं इसलिये उन भागों में कुछ धान्य उपजता है और इस के प० भाग की भूमि केवल ऊषर है। इस मण्डल में जो भूमि जोती जाती है उस में गेहूं बाजरा इत्यादि धान्य उपजता है इस में खेती करनेहारे बहुत करके जाट हैं इस मण्डल में सीसे की खान हैं और इस में भूमि बालुका-

मय होने से वहां के मार्ग पर गाड़ी नहीं चल सकती इस लिये यहां व्यापारी लोक सब अपना माल ऊंट और बैल पर ले जाते हैं यहां वस्त्र दुशाला अफीम धान्य चीनी पुलाद और लोहा इतने पदार्थ बाहर से बेचने के लिये ले आते हैं और लोन ऊंट बैल और घोड़े ये सब और देश में यहां से ले जाते हैं यहां ऊंट बैल घोड़े और सब पशु बहुत अच्छे बलिष्ठ और प्रशंस्य होते हैं जोधपूर मण्डल के मुख्य रहने हारे लोग राठोड नाम के राजपूत हैं ये बहुत अच्छे कुल के और शूर होते हैं इस में मुख्य नगर जोधपूर नामक भीत से घेरा हुआ है इस का परिधि अनुमान तीन कोस का है इस को सात फाटक हैं इस नगर के मार्ग बहुत सरल और इस में कितने एक अच्छे पत्थर के बने हुए रमणीय घर हैं इस में एक राज प्रासाद अर्थात् कोट एक ऊंचे टीले पर बना हुआ है इस में कितने एक स्थान ८० हाथ ठीक ऊंचे हैं कोट की भीत बहुत दृढ़ है उस के भीतर दो छोटे झील हैं उन में एक रानी तलाव और दूसरा गुलाब सागर कहलाता है ॥

सिखावाटी। यह राजपुताने का मण्डल दक्षिणोत्तर दिशा में अनुमान २५ कोस लम्बा है और पू० प० में कुछ चौड़ा थोड़ा है इस को उ० और पू० में हरियाना और द० और प० में जयपूर जोधपूर और बिकानेर है इस की भूमि बालुकामय है इस में कितने एक पत्थर के टीले हैं इस देश में पानी अच्छा नहीं और खेती भी अच्छी नहीं होती तथापि इस में सीकार फतहपुर इत्यादि अच्छा नगर हैं ॥

जयपुर वा जयनगर। इस रजवाड़े के मण्डल की उ० की ओर माछेडी और सिखावाटी द० में करौली टौंक बून्दी और और छोटे मण्डल पू० में माछेडी और भरतपुर प० में अजमेर और जोधपुर हैं इस मण्डल की लम्बाई अनुमान ६६ कोस और पू० प० चौड़ाई ३० कोस है इस देश में कूप जल बहुत हैं परन्तु इस में नदियां बहुत थोड़ी हैं इस के उ० और वायव्य प्रदेश में भूमि बालू की है और इस मण्डल के मध्यदेश की भूमि जैसी आर्द्र है वैसी इस वायव्य प्रदेश की नहीं हैं परन्तु इस में जो भूमि पहाड़ी है उस में कुछ नाले बहते हैं। जयपुर के बहुत प्रदेशों में गोरू बहुत अच्छे होते हैं तथापि जैसे जोधपुर के मण्डल में होते हैं वैसे अच्छे यहां नहीं होते इस मण्डल के कितने एक नगरों में वस्त्र तलवार और बन्दूक के बनाने के यन्त्र हैं यहां उत्तम पतीला वस्त्र कलावत्तू काश्मीर के दुशाले इत्यादि पदार्थ बाहर से बेचने के लिये ले आते हैं इस में जयपुर साम्भर आम्बेर इत्यादि बड़े नगर हैं। जयपुर यह नगर जब महम्मद शाह राज्य करता था तब सवाई जयसिंह राजा ने बसाया इस के पहिले उस राजा की राजधानी आम्बेर नगर थी जयसिंह राजा के काल में जयपुर नगर सम्पत्ति और विद्याओं का स्थान था क्योंकि वह राजा बड़ा विद्यावर्द्धक था उस ने कितनी एक ज्योतिष सम्बन्धि वेधशाला स्थापित किईं॥ जयपुर नगर बहुत सुशोभित और एक क्रम से सीधा बना हुआ है इस में घर पत्थर के हैं और मार्ग बड़े विस्तृत और परस्पर लम्बरूप बने हुए हैं इस नगर के रक्षार्थ एक

कोट पत्थर के ऊंचे टीले पर बना हुआ है उस का घेरा दो कोस है। जयपुर का विस्तार १५२५० मी० मु० और बीस लाख अदमियों की बस्ती और आमदनी ५० लाख रुपया साल कोई २ बताते हैं। राजधानी जयपुर को कोई कहते हैं कि इस को १७२८ ई० में दूसरे जयसिंह ने आबाद किया था। शहर से दो कोस पर अम्बर पुरानी राजधानी है यहां किला और महाराज का शीश महल देखनेलायक है। जयपुर से द० पू० ७५ मी० पर रणथंभीर नाम का एक मशहूर क़िला क़ाबिल देखने को है।

सांभर। यह नगर जयपुर से पू० और अजमेर से साढ़े बाईस कोस पर है इस के ई० दिशा में नव कोस लम्बा और पौन कोस चौड़ा एक खारे पानी का झील है इस से सांभर नोन उत्पन्न होता है फिर वह यहां से और देशों में बेचने के लिये लेजाते हैं।

बून्दी। जयपुर के द० । इसी मण्डल के उ० की ओर उडियारा पू० में चम्बल नदी जिस को शास्त्र में चर्मण्वती कहते हैं और द० औ प० दिशाओं में कोटा मण्डल के प्रदेश है।

इस मण्डल में एक टीलों की पंक्ति अनुमान पू० प० दीर्घ है इस को द० की ओर उतार भूमि पर बून्दी नामक नगर है यही इस मण्डल में मुख्य नगर है इस में राजा का प्रसाद बहुत मोटे और भारी पत्थरों का बना हुआ है। बूंदी में महाराज का मकान बाग़ और सुखमहल देखने लायक़ है॥

कोटा। बूंदी के द० पू०। यह रजवाड़े का कोटा मुल्क चम्बल नदी के पू० भाग में है इस में मुख्य नगर कोटा नामक चम्बल नदी के पू० तीर पर बसा है यह चारों ओर में पत्थर की भीत से घिरा हुआ है इस का आकार आयत क्षेत्र के नाईं लम्बा है इस में बहुत अच्छे पत्थरों के घर और रमणीय काम बने हुए हैं इस नगर के प० में चम्बल नदी और आ० को० में एक स्वच्छ नीर का सरोवर है इस सरोवर की दोनों अलंग में पत्थर के घाट बने हुए हैं इस के मध्य भाग में एक जगमन्दिर नामक प्रासाद बना हुआ है।

धौलपुर प० करौली द० ग्वालियर, उ० भरथपुर, अर्थात् धौलपुर ग्वालियर के उ० और भरतपुर के द० है और इस के पू० सरकारी ज़िला आगरे का। विस्तार सवा सोलह सौ मी० मु०। आमदनी सात लाख रुपया साल। राजधानी धौलपुर २६ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश ४४ कला पू० देशांतर में चंबल के आ० को० कोस आध एक के तफ़ावत पर बसा है। भरथपुर द० धौलपुर, उ० अलवर, प० जयपुर, पू० आगरा और मथुरा के सरकारी ज़िले। विस्तार दो हज़ार मी० मु०। आमदनी बीस लाख रुपया साल। राजधानी भरथपुर २७ अंश १७ कला उत्तर अक्षांश और ७७ अंश २३ कला पू० देशांतर में कच्ची शहरपनाह के अन्दर प्राय आठ मी० के घेरे में बसा है। शहरपनाह बहुत चौड़ी और ऊंची है, यदि मरम्मत अच्छी तरह रहे तो तोप के गोलों से हर्गिज़ उसको सदमा नहीं पहुंच सकता, जो गोला आवेगा उसी में रह जावेगा, पत्थर की दीवार से कच्ची दीवार ढाहना

बहुत मुश्किल है, बहुतेरी ऐसी जगह हैं जहां सख्ती से गर्मी शियादः काम आती हैं। शहरपनाह के गिर्द खाई भी खुदी है, और झीलें इस तरह की हैं कि यदि उनके बंध काट देवें तो शहर से बाहर कोसों तक पानी ही पानी हो जावे, दुश्मन की फ़ौज को कभी खड़े रहने को भी जगह न मिले। शहर के बीच में पक्का क़िला है, । उस में राजा रहता है। क़िले के गिर्द ऐसी चौड़ी खाई है, कि अच्छी खासी एक छोटी सी नदी मालूम होती है भरतपुर के क़िले को १८२५ ई० में अंगरेज़ों ने फ़तह किया था। भरथपुर से कोस आठ एक पर डीग में महाराज का बाग़ बहुत उमदा और लाइक़ देखने के है, मकान भी उस में अच्छे अच्छे बने हैं और नहर फ़व्वारे और चादरें इफ़रात से हैं एक बारहदरी में जिसे अच्छी भवन कहते हैं, इतने फ़व्वारे लगे हैं, कि दर दीवार खंभे हर जगह से पानी निकलता है, और उन की फुहर ऐसी उड़ती है कि जब सूर्य उसके साम्हने रहता है तो उस की किरणों से उस मकान के अंदर उन फुहारों में दो इन्द्र धनुष बहुत रंगीन और चटकीले बनजाते हैं। राजा यहां का जब बालक था तब मुल्क का इन्तिज़ाम साहिब अजंट करते थे। क़िला बयाने का भरथपुर से द० नै० को० को अनुमान डुआ एक दिन के रस्ते पर प्रसिद्ध है, किसी समय में बहुत बड़ा शहर था, और आगरा आबाद होने के पहिले यही शहर उस सूबे की राजधानी था, वरन सिकंदरलोदी ने उसे अपना पायतख़्त किया। क़िला पहाड़ पर मज़बूत बना है, कुंड पानी के ऐसे गहरे हैं कि

उन में घड़ियाल तैरते हैं, बीच में एक लाट पत्थर की खड़ी
है उस पर कुछ पुराने हर्फ़ भी खुदे हुए हैं, और महलों के
खंभे पर दो थापे पंजों के लगे हैं, वहां वाले बतलाते हैं कि
जब बादशाही फ़ौज की चढ़ाव हुआ तो रानियों ने जौहर
किया, और यह एक रानी ने उस समय आप अपने लहू से
थापे लगाए थे। अलवर अथवा माचेड़ी द० भरथपुर, और
जयपुर और प० केवल जयपुर, बाक़ी दोनों तरफ़ मथुरा और
गुड़गावें के सरकारी ज़िलों से घिरा है। विस्तार इस का
२५०० मी० मु०। जंगल पहाड़ बहुत हैं। यह इलाका जिसे
तवारीखों में मेवात के नाम से लिखा है इसी अमलदारी में
आ गया, केवल थोड़ासा भरथपुर के राज में है। आमदनी
अठारह लाख रुपया साल। कुछ बरस का अर्सा गुज़रता है
कि वहां के राजा को यह जुनून सूझा कि जैसे मुसलमानों
ने किसी ज़माने में हिन्दुओं को सताया था उसी तरह वह
उनको सताने लगा, बहुत से मुसल्मान मुल्लाओं के नाक
कान काटकर फ़ीरोज़पुर के नव्वाब के पास भेज दिये,
क़बरें सारी खुदवा डालीं और हड्डियां गधों पर लदवाकर
अपने इलाके से बाहर फिकवा दीं, और मसजिदें ढहाकर
उनके पत्थरों भैरव पर तेल सेंदुर चढ़ावना दिया। राज-
धानी अलवर २० अंश ४४ कला उ० अक्षांस और ७६ अंश
३२ कला पू० देशांतर में एक पहाड़ के तले बसा है, और
उस पहाड़ पर जो वहां से प्राय १२०० फुट ऊंचा होवेगा
पक्का क़िला बना है अलवर के पू० लसवारी एक मकाम है
वहां सन १८०३ ई० में जेनरल लेक साहिब ने मरहटों को
शिकस्त दी थी।

रीवां या बघेलखंड का राज्य इलाहाबाद के द० और बुंदेलखंड के पू० में है विन्ध्याचल इस राज्य को दो हिस्सों में बांटता है। और इस प्रदेश से शोण, तूनस, नदियां निकलती हैं इन दोनों के बीच में रीवां का नगर वहां के राजा की राजधानी टौंस नदी के का० पर है और केवल उस की आमदनी २५ लाख रुपया साल है। दूसरा नगर शोण नदी के तीर पर रामनगर है और दक्षिणीय भाग में बंदोगढ़ बड़ा दृढ़ गढ़ किसी समय में नामी स्थान था।

भूपाल का राज्य मालवे के पू० में है वहां का नव्वाब सर्कार अंगरेज़ी से मैत्री रखता है इस राज्य में भूपाल के सिवाय इसलामनगर एक और नगर है भोपाल का तालाव मशहूर है। सीहोर में भूपाल के एजेंट साहिब रहते हैं।

टोंक का छोटासा राज्य जयपुर के द० में नव्वाब मीरखां की सन्तान के अधिकार में है राजपुताने में सिर्फ यही एक राज्य मुसल्मान के दख़्ल में है। उस की आमदनी क़रीब दस बारह लाख रुपये के अनुमान है। नव्वाब मीरखां भूपाल की नौकरी में बड़े अधिकार को पहुंचा और हुल्कर जसवन्तराव ने टोंक और छोटासा इलाक़ा सिरोंज का जो महाराजा सेंधिया की अमलदारी के बीच में है और नीम भेड़ा जो उदयपुर के राज्य से लगा हुआ पू० की ओर है ये तीनों स्थान उस को दिये और सर्कार अंगरेज़ी से रामपुर मिला और सन् १८१७ ईसवी के दसौके में ये सब जागीरें उस की और उस के वारिसों के नाम सदा के लिये बहाल रक्खी गई हैं टोंक का नगर बनास नदी के द० का० (तीर) पर है।

द० हैदराबाद नव्वाब निज़ामुलमुल्क की अमलदारी कृष्णा और गोदावरी के बीच में उत्तर लकीर के प० ओर है बिस्तार पंचानवे हज़ार मी० मु० एक करोड़ आदमियों की बस्ती और आमदनी एक करोड़ पैंसठ लाख रुपया साल है। माली और मुल्की कामों में अपने इलाके का स्वतंत्र अधिकारी नव्वाब है लकीर अंगरेज़ी की सेना कंटंजंट उस की रक्षा को रहती है और कुछ उस की विशेष सेना के अफ़सर भी साहिबान् अंगरेज़ हैं धरती समुद्र समुद्र के तल की अपेक्षा बहुत ऊंची है पर बहुत उपजाऊ और देश भी शीतोष्णता में मध्यम है और सभी प्रकार के देशों की वस्तु उपजती हैं जो प्रबंध अच्छा होता तो खेती भी अच्छी हो सकती परन्तु नव्वाब के राज्य में चोर चोरठगों का इतना डर है कि किसान हथियार बांध कर खेत जोतते हैं और हैदराबाद का नगर पौने दो कोस लंबा और सवा कोस चौड़ा मूसा नदी के किनारे पर बसता है इस के रस्ते और बाज़ार बहुत सकड़े और मुसलमानी चालचलन बहुत पाया जाता है अंगरेज़ी सेना वहां से तीन कोस पर और एक छावनी उस से भी ढाई कोस परे बूलारम के स्थान पर है और कोठी रज़ीडंटी नगर के पास है गोलकुंडा हैदराबाद के पास एक मुसलमानी राज्य की राजधानी था उस में हीरा बहुत निकलता था बरन अब भी कहीं २ मिल जाता है।

मैसूर का बड़ा राज्य हैदराबाद के द०। इस राज्य के चारों तरफ़ अंगरेज़ी का अधिकार है। लंबाई में ११० कोस और चौड़ाई में ६२ कोस कुलनाम टीपू उसे दबा बैठा था

साहिबान अंगरेज़ ने छुड़ा कर असले राजा की सन्तान को दे दिया परन्तु अन्याय के कारण साहिबान् अंगरेज़ का प्रबंध हुआ और यहां का राजा नाम मात्र का अधिकारी रहा इस प्रदेश की धरती सम धरातल और शीतोष्णता में मध्यम है उस की एक ओर पूर्वी घाट और दूसरी ओर पश्चिमी घाट है और कहीं २ सीधे ऊंचे पहाड़ हैं जिन के ऊपर पहले गढ़ बने हुए थे यहां गालीचे और ऊनी कपड़े बहुत बनते हैं और बड़े नगर ये हैं मैसूर जहां राजा रहता है। श्रीरंगपट्टन जो राजधानी मैसूर से ५ कोस उ० हैदरअली और टीपू की अमलदारी में मैसूर की राजधानी था सन् १७९९ ईसवी में टीपूसुलतान के मारे जाने के पीछे अंगरेज़ों के अधिकार में आया कलकत्ते से ५१५ कोस है बंगलूर (बंगलोर) बड़े ऊंचे पर और बहुत शीतोष्णता से मध्यम स्थान में है और यहां सेना बहुत रहती है बंगलोर में फ़ौज की छावनी के सिवाय एक बाज़ार है और चीफ़ कमिश्नर के रहने की जगह है। मैसूर का विस्तार २७,०० मी० मु० है। ※

※ मैसोर का राज्य पचास साल तक अंगरेज़ों के अधिकार में रहा और बाद को सन् १८८१ ई० में महाराजा चामराज ओडेर को दी गई इस राज्य का क्षेत्रफल पचीस हजार वर्गात्मक मी० और आमदनी पचास लाख है। इस में ३ क़िस्मतें और आठ ज़िले नीचे लिखे बमूजिब हैं

क़िस्मत नंदीदुर्ग में बंगलोर, कोलार, तमकूर है। और क़िस्मत अष्टग्राम में मैसोर, हासन, है और क़िस्मत

उदयपुर। यह मण्डल राजपूताने के द० भाग में है चितौड़ और मेवाड़ ये दो देश इस के अन्तर्गत हैं इस के उ० में जोधपुर पू० में कोटा और बून्दी और द० में मालवा और गुजरात के कुछ देश और प० में सिरोही और जोधपुर हैं इस मण्डल की भूमि यद्यपि बहुत टीलों की है तथापि इस में बहुत छोटी नदियां बहती हैं इस कारण इस में अन्न तमाखू अफीम गोहूं धान और बाजरा ये सब ठीक काल पर बोए जावें तो उपजते हैं इस मण्डल में लोहे की खान हैं और यहां ईन्धन बहुत। इस में उदयपुर चितौड़ और कुमलमेर ये मुख्य नगर हैं। उदयपुर नगर की उ० की ओर अनुमान १२ कोस पर गन्धक की खान है इस मण्डल की भूमि खाड़ी और इस में मार्ग जङ्गली और अस्पष्ट हैं।

उदयपुर नगर। इस नगर के चारों ओर में एक टीलों का घेरा दीर्घ वृत्ताकार है उस को एक ही मार्ग गाड़ी जाने के योग्य है और दो मार्ग इतने छोटे हैं कि जिन से केवल एक घोड़ा जा सके इस नगर के राजा उदयपुर के

नगर में सेमोगा, चतलड्रिग, बंगलोर हैं। बंगलोर बड़ा शहर और छावनी है। यहां की आबहवा बहुत अच्छी है। और तमकूर स० मु० ज़िला तमकूर का है। मैसोर महाराजा साहिब के रहने की जगह है। श्रीरंगपट्टन का किला मशहूर है। गंजाम में हैदरअली खां और टीपूसुलतान के कब्र हैं। सेमोगा स० मु० सेमोगा है। चतलड्रिग में मशहूर किला है।

राणा कहलाते हैं इन का कुल राजपूतों में अत्यन्त शुद्ध और अत्युत्तम पदवी का गिना जाता है। यद्यपि इलाका कुछ बहुत बड़ा नहीं है, पर कुल और दर्जे में उदयपुर का राना हिन्दुस्तान के सब राजाओं से बड़ा गिना जाता है, मुसल्मानों की सलतनत के पहले जिन दिनों में उन का इखतियार था, सारे राजा उन्हीं से गद्दी नशीनी का तिलक लेते थे और वे उन के माथे पर अपने पैर के अंगूठे से तिलक करते थे। उदयपुर के उ० प० गोलकुंडा है वहां मानसिंह ने सन् १५७६ ई० में राणा कीका को शिकस्त दी थी। चितौर का पुराना किला पहाड़ पर उजाड़ सा पड़ा है। महाराणा उदयपुर के रहने की जगह उदयपुर है।

सिरोही। यह राजपुताने का बड़ा मण्डल उस के नै० दिशा में है उस को उ० में ऊपर भूमि है द० की ओर गुजरात पू० की ओर मेवाड़ और चितोड़ और प० में बाना नदी है इस मण्डल के पू० भाग की भूमि नीची ऊंची और टीलों की है तथापि इस के प० भाग की भूमि से अधिक उपजाऊ है प० भाग में तो पानी का बहुत ही टोटा है इस मण्डल में इसी नाम का मुख्य नगर है॥

किशन गढ़ (कृष्णगढ़) पू० और द० जयपुर और उ० और प० जोधपुर और अजमेर के सरकारी जिले से घिरा हुआ है। विस्तार ७०० मी० मु०। आमदनी तीन लाख रुपया। राजधानी किशन गढ़ २६ अंश ३७ कला उ० अक्षांस और ७४ अंश ४२ कला पू० देशांतर में शहरपनाह के अंदर बसा है। करौली द० और प० जयपुर की

अमलदारी से मिला हुआ, और द० को ग्वालियर, और पू० को धौलपुर से मिला हुआ। विस्तार उसका बत्तीस सौ मी० मु० आमदनी पांच लाख रुपया साल। राजधानी करौली २६ अंश ३२ कला उ० अक्षांश और ७६ अंश ५५ कला पू० देशांतर में पुश पेरी नदी के तट पर बसा है। क़िला राजा के रहने का शहर के बीच में है। झालावार कोटा के द०। इसको ज़ालिम सिंह ने आबाद किया था। डुंगर पुर उदयपुर के द०। बांसवाड़ा डुंगर पुर के द०। प्रतापगढ़ बांसवाड़े उ० पू०। डूंगरपुर बांसवाड़ा और परतापगढ़ यह तीनों छोटे छोटे राज दो दो लाख रुपये साल की आमदनी के उदयपुर के द० सेंधिया और गाइकवाड़ की अमलदारी के बीच में पड़े हैं। डूंगरपुर का विस्तार एक हज़ार मी० मु०, उस के पू० परतापगढ़ का विस्तार १५०० मी० मु० इन दोनों के द० बांसवाड़े का विस्तार भी १५०० मी० मु० अनुमान करते हैं। डुंगरपुर के इलाके की राजधानी डुंगरपुर २३ अंश ५४ कला उ० अक्षांश और ७३ अंश ५० कला पूर्व देशांतर में बसा है, उसकी झील का बंध संगमर्मर के ढोकों से बांधा है। परतापगढ़ के इलाके की राजधानी परतापगढ़ २४ अंश २ कला उ० अक्षांश और ७४ अंश ५१ कला पूर्व देशांतर में समुद्र से १७०० फुट ऊंचा शहरपनाह के अंदर बसा है, उसके चौगिर्द नाले खाले और जंगल उजाड़ बहुत हैं, चार कोस के फ़ासिले पर देवला नाम एक क़िला है। बांसवाड़े के इलाके की राजधानी बांसवाड़ा २३ अंश ३१ कला उ० अक्षांश और ७४ अंश १२

बसा। पूर्व रेगिस्तान में शेरपनाह के अंदर बसा है, शहर के बाहर एक पक्का तालाब है गिर्द उसके पीपल और इमली को घनी २ छांव, उस से आगे एक पहाड़ पर क़िले के बुर्ज हैं जो किसी समय वहां के राजा के रहने की जगह थी।

सिरोही, मारवाड़ से द० और अर्बली के द० प०। इसकी राजधानी (ख़ास शहर) सिरोही है। सिरोही की तलवार और कटार प्रसिद्ध हैं। यहां से १८ को० पर आबू एक पहाड़ है वहां अग्निवंशी क्षत्रियों की उत्पत्ति हुई थी और वहां साहब लोग हवाखाने को जाते हैं और अचलेश्वर महादेव का मंदिर है।—ग्वालियर या सेंधिया का राज्य, उ० में इस के आगरा और धौलपुर पू० में बुन्देलखंड, भूपाल सागर और नर्बदा प्रदेश, द० में हुलकर का राज्य और तापती नदी, और प० में जयपुर, कोटा और उदयपुर हैं। कोई इस राज्य की आमदनी ९३०९१०२ रुपया साल बताते हैं। ग्वालियर में महाराजा साहिब का बाग़ जो अभी तैयार हुआ है देखने लायक़ है। ग्वालियर महाराजा सेंधिया की राजधानी एक पहाड़ के नीचे बसा है। उस के समीप मुरार में सरकारी (अंगरेज़ी) फ़ौज (छावनी) रहती है। महाराजपुर में सन् १८४३ ई० में गफ़साहब ने मरहट्टों को हराया था। काली सिंधु के कि० पर नरवर एक शहर है वहां बीर सिंह ने अब्बुल फ़ज़ल को मारा था कोई कोई लिखते हैं कि नरवर (नरोर) के पास अबुलफ़ज़ल मारा गया था कुछ ख़ास नरवर में न मारा गया था। बहुत लोग नरवर को राजा

नल की राजधानी बताते हैं और कुछ लोग नरवर से आकर पू० में बसने से नरवरिया कहलाते हैं। ग्वालियर के द० प० उज्जैन महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी बड़ा शहर था। यह बहुत पुराना शहर सिप्रा (छिपरा) नदी के क० पर है। पंवार लोग यहां से आकर भोजपुर में बसने पर उज्जैन क्षत्री कहलाने लगे। यह उज्जैन शहर जब विक्रमादित्य के समय में राजधानी थी उसका हाल क्या लिखा जाय अब जो खोदने से प्राचीन स्थानों के चिन्ह टूट टूट तक मिलते हैं उसके देखने से बुद्धि चकित हो जाती है। जवाद और नीमच में सरकारी फ़ौज की छावनी है। भूपाल की सरहद पर भिलसा (भेलसा) की तमाकू अच्छी होती है। झांसी भी थोड़े समय से महाराज संधिया के राज्य में है। हुलकर राज्य (मालवाप्रदेश) ग्वालियर के द० और प० नर्वदा नदी के दोनों कनारों पर बसा है। विन्ध्याचल इस राज्य के बीच में है। हुलकार की राजधानी इंदौर सिप्रा नदी के क० पर बसा है। इसके द० नज एक जगह है वहां सरकारी फौज की छावनी है। महीदपुर में सन् १८१७ ई० में हिसलोप साहब ने मलहार राव को बड़ी शिकस्त दी थी। मंदलेश्वर (मंडलेश्वर) के समीप (पास) ओंकार नाथ महादेव जी का मशहूर मंदिर है। मांडू का शहर जो अकबर के समय में प्रसिद्ध था अब उजाड़ पड़ा है। धार (धाड़) इंदौर के प० है। इस को धारा नगर भी कहते हैं। राजा भोज के समय में मालवा की राजधानी था। धार और देवास। यह दोनों छोटे छोटे

रजवाड़े हुलकर और सेंधिया की अमलदारी के बीच में पड़े हैं। धार का विस्तार १००० मी० मु० और आमदनी ४७५०००रुपया साल। देवास की आमदनी कुछ न्यूनाधिक ४०००००। बुंदेलखंड। इलाहाबाद के द० और रीवां के प० में है। बुंदेलखंड के इलाके में कई एक छोटे छोटे राजा राज्य करते हैं। इस में ३५ छोटे छोटे बुंदेले राजपूत राजा हैं अब उन्हीं के भाई बंद जागीरदार वगैरह सरदार अनेक हैं। उन में मशहूर जगह ये हैं। टिहरी, (टेहरी) दतिया, चित्रपुर (छत्रपुर) पन्ना, अजयगढ़, समथर, चारखाड़ी और बीजावर यहां के नामी शहरों में हैं। पन्ना में हीरा निकलता है और संसार भर में हीरे के लिये पन्ना मशहूर है। और उहां का राजा बुंदेलों का सर्दार समझा जाता है। कई एक भूगोलों में लिखा है कि रीवां और बुंदेलखंड इन दोनों का विस्तार २२४०० मी० मु० और ३२ लाख आदमियों की बस्ती और आमदनी ६५ लाख रुपया साल है।

स्वाधीन राज्य (इनडिपेन्डेन्स्टेट्स)

नयपाल (नैपाल वा नेपाल) इस के उ० में हिमालय पहाड़, पू० में शिकम व भूटान, द० में अवध और बंगाले के ज़िले और प० में काली नदी। यह राज्य बिहार और अवध के उ० में है। लंबाई इस की पू० प० तक २५० कोस (पांच सौ मी०) और चौड़ाई करीब अस्सी कोस के हैं। विस्तार ५४००० मी० मु० और आबादी बीस लाख आद-

सियों की है। इस मुल्क के चारों तरफ़ पहाड़ही पहाड़ हैं। गूरखा, नेवार, भोटिया और दूसरी पहाड़ी जात यहां रहते हैं। जंगलों में साल, सीसों और आबनूस मिलते हैं। यह बहुत उपजाऊ जगह है। पहाड़ों में बाज़ २ जगहों में यहां चावल और गेहूं खूब पैदा होता है। बड़ी इलायची, और तेजपात यहां से दूसरे २ प्रदेशोंमें भेजे जातेहैं। बल्कि हाथी, चावल, लकड़ी, चमड़ा, लोहा, तांबा, अदरक और शहत ये सब चीज़ें भी नयपाल से दूसरे जगह भेजी जाती है। नेपाल की राजधानी काठमांडू (काष्टमंदिर) पटने से ठीक उ० और कलकत्ते से १८५ कोस उ० प० के कोन पर विशनमती (विष्णुमति वा विश्नुमती) के का० पर जहां वह बाघमती (बाग्मति) से मिली है बसा है इसी जगह रजिडेन्ट साहिब रहते हैं। पहाड़ पर गोरखा नाम एक बस्ती है वहां गुरू गोरखनाथ का मंदिर है गोरखा, जिस में गुरु गोरखनाथ का मंदिर है काठ मांडू से २० कोस प० उ० के कोन पर नैपाल के वर्त्तमान राजाओं की जन्म भूमि है। हिमालय के पहाड़ो में गंडक नदी के पास हो मुक्तिनाथ हिन्दुओं का प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। हिमा-लय के पहाड़ पर नीलकंठ महादेव का मंदिरहै यद्यपि जनकपुर, भवानीपुर ये प्रसिद्ध शहर हैं पर यथार्थ में ललिता पट्टन (ललितपाटन) और गोरखा भी यहां के मशहूर और अच्छे शहरों में से हैं। यहां के प्रसिद्ध वज़ीर सर जंगबहा-दुर जो यथार्थ में जंगबहादुर थे ता० २५ फ़ेब्रुअरी सन् १८७७ ई० में पत्थर वट्टानामक एक मकाम में परलोक को

सिधारे। यह तो मालूम हो गयाहोगा कि हिमालय के द० फैलता हुआ सर्कारी ज़िला कमाऊं, और सिक्कम के बीच में नयपाल का इलाक़ा है। कुछ दिन बीते कि इन लोगोंने (नयपालियों ने) कांगड़े तक पहाड़ों में अमल कर लिया था, और उस किले को जा घेरा था, परन्तु सन् १८१५ ई० में जेनरल अक्टरलोनी साहिब ने उनें को फ़ौज को सतलज इसपार मलौन के क़िले में ऐसी शिकस्त दी कि वे लोग लोग फिर अपनी असली हद में आगये, तब से पैर बाहर नहीं निकाला। वहां के राजा के निशान पर हनूमान का चिन्ह है। लौंड़ी गुलाम वहां अब तक बिकते हैं। कोई २ इस का आमदनी बत्तीस लाख रुपया साल बताते हैं। द० तरफ़ पहाड़ों के नीचे दस बारह कोस जो मैदान का मुल्क है, उसे तराई कहते हैं। तराई के ऊपर अर्थात् उ० को, दस दस बारह बारह कोस तक पहाड़ हैं, उन पहाड़ों को चढ़कर बड़ी बड़ी लंबी चौड़ी दूने मिलती हैं ऐसी कि जिन में कोसों तक सिवाय मिट्टी के पत्थर देखने को भी नहीं। फिर उन के उ० हिमालय के बर्फ़ी पहाड़ हैं।

भूटान उ० में हिमालय पहाड़, पू० में चीन, और पहाड़ी जंगली मुल्क। द० आसाम, ग्वालपाड़ा कुचबिहार प० में शिक्कम, दार्जिलिंग अर्थात् यह राज्य बंगाले के उ० में है। लंबाई इसकी १०० मी० और चौड़ाई ५० मी० क्षेत्रकी विस्तार १८००० मी० मु० और आबादी १५०००० आदमियों की है। होआईस भूटान का द० हिस्सा है वहां गन्ना बहुत पैदा होता है। टांगन भूटान के मशहूर हैं जिन

पहाड़ों में वे होते हैं, उन का नाम टांगस्थान है। आदमी यहां के बड़े मज़बूत होते हैं। मज़हब बुद्ध का मानते हैं। राजा यहां का धर्मराज साक्षात् भगवान बुद्ध का अवतार कहलाता है। राजधानी तसी सूदन (तासीसूदन) पहाड़ों के बीच में बसा है। तसीसूदन से चालीस मी० द० चूका के क़िले के पास तेहिंच्यू नदी पर लोहे की ज़ंजीर का पुल बना है वहां वाले उसे देवताओं का बनाया समझते हैं।

दूसरे मुल्कवालों का राज।

सिवाय सरकारी और हिंदुस्तानी अमल्दारियों के जिन का ऊपर वर्णन हुआ कुछ थोड़ी थोड़ी सी ज़मीन इस हिन्दुस्तान की बाज़ २ जगहों में अब तक फ़रासीसियों और पुर्तगालवालों के अधिकार में है। फ़रासीसियों का राज २०० मी० मु० रबा है। मद्रास से ३८ कोस द० पांडिचेरी राजधानी द० अर्काट में जहां फ़रासीसियों का गवर्नर रहता है। इस को विजयपुर के राजा ने सन् १६७२ ई० में फ़रासीसियों से मोल लिया था। कारीकाल कावेरी के मुहाने पर मद्रास से ६७ कोस द० तंजोर में और चंदर नगर (फरासडांगा) कलकत्ते से १० कोस उ० को गंगा के दायें क० पर (हुगली में) बसा है। यानाम ज़िले गोदावरी में मद्रास से उ०। माही मलिबार के उ० क० पर (मालवार में) है।

पुर्तगालवालों का राज्य बंबई हाते में है। राजधानी गोवा (पांजिम) सांवतवाड़ी के द० और कनाड़े के उ०

इस को एलबूकर्क साहब ने सन् १५१० ई० में लिया था गवर्नर ५ मी० पू० समुद्र के तट पर पंजिम में रहता है। दमने सूरत के द० में है। डायु गुजरात के द० में है।

लंका का वर्णन।

सीलान नामे टापू जिस को हिन्दूलोग लंका कहते हैं हिन्दुस्थान के तीर पर से थोड़ी दूर समुद्र में मिलता है वरन यह टापू हिन्दुस्थान का एक भाग समझा जाता है और हिन्दुस्थान की सर्कार उस में राज्य करती है। यह टापू हिंदुस्तान के द० में है आकार इस का आवेजे (लटकन) के ऐसा है। लंबाई इस टापू की दो सौ सत्तर मी० (१२५ कोस) और चौड़ाई १४० मी० (७०कोस) है इस टापू के निवासी कुछ सतह लाख होंगे और इस के दो बड़े और मुख्य नगर कोलंबो और कण्डी कहलाते हैं। टापू के निवासी चार सन्तान के देख पड़ते हैं अर्थात् सिंगलीज़ जो बहुत करके टापू के तीरों पर समुद्र की ओर पाये जाते हैं और मालबार लोग जो हर कहीं रहते हैं और कंडीवाले जो विशेष करके टापू के बीचोंबीच के निवासी हैं और वेद्दा जो एक अद्भुत् प्रकार का सन्तान है जिन को ज्ञानी लोग टापू के प्राचीन और पहिले निवासी समझते हैं और जो दोनों ओर पहाड़ों के छिपे स्थानों में रहा करते हैं। वेद्दा तो बड़े जंगली और बिन शिक्षा किये हुए लोग हैं और वे घर नहीं बनाते वरन भूमि पर या पेड़ की डालियों पर रात को सोते हैं और जब कुछ भी चौंकाये जाते तो बन्दरों की नाईं बन के पेड़ों में भागकर छिपते हैं।

सिंगलीज़ की छब्बीस जाती बताते हैं। उन में से सब से ऊंची जातिवाले वे हैं जो किसनई के करनेवाले हैं और सब से तुच्छ वे हैं कुंजड़ों की नाईं भोजन में किसी प्रकार की वस्तु को छोड़ नहीं देते। यह बहुत प्राचीन प्रकार की जाति बताई जाती है। यदि टापू के लोगों को साधारण रीति से वर्णन करें तो उन का हिन्दू लोगों के साथ बहुत मेल होता है। वे बहुत करके बलवन्त और चालाक और सर्दी गर्मी को सहज मे सहनेहारे हैं परन्तु स्वभाव में नम्र और लड़ाई में कायर होते हैं। वहां के दरिद्री लोग तो वस्त्र बहुत कम पहिनते हैं परन्तु बड़े २ लोगों को उत्तम वस्त्रों की अभिलाषा होती है। महात्मा लोगों में पढ़ना लिखना अच्छी रीति से फैल गया है परन्तु जैसा हिन्दुस्थान में है वैसाही वहां स्त्रियां को बहुत कम शिक्षा दिई जाती है। लंका के वर्णन के विषय मे कई एक पुस्तकों में बहुत सी कल्पित कहानियां पाई जाती हैं जैसा कि उस की भूमि सोने की बनी हुई है और सकल टापू बड़ी भीत से घिरा हुआ है। यदि सच पूछो तो वह ऐसी भूमि हैं जैसा कि हिन्दुस्थान। वहां नाना प्रकार के कामकाज होते हैं। जैसा कि हिन्दुओं में वैसा वहां गवईं में लोग बहुत करके भूमि को जोतने बोने में लगे रहते हैं और उन में लुहार बढ़ई बनियां महाजन और मज़दूर इत्यादि होते हैं॥

यह तो लिखा गया है कि लंका टापू लंबाई में २७० मी० और चौड़ाई में १४० मी० है और वह कई भागों में बांटा गया है जैसा कि हिन्दुस्थान में ज़िला कहते हैं और

हिन्दुस्थान कि रीतिअनुसार वहां भी जज्ज कलक्टर आदि महारानी की ओर से राज्य का काम चलाया करते हैं जैसे कि यहां करते हैं और पादरी लोग उपदेश देते और शिक्षक पाठशालों में पढ़ाते हैं वैद्य लोग औषधि देते स्त्रियां घर का भोजन पकाती और धान कि भूसी दूर करती और नाना प्रकार का परिश्रम करती हैं वरिक्त जैसा कि हमारे बीच में वैसा वहां भी प्रतिदिन हर प्रकार का काम होता है ।

प्राचीन दिनों से अब उस देशकी बुरी दशा होगई है क्योंकि बहुत ऐसे स्थान जो अब वीरान और सूनसान पड़े हैं सो अगले दिनों में निवासियोंसे भरे हुए थे और आजकल कहीं २ बनों में सूखे ताल सरोवर और उन के घाट आदि पाये जाते हैं कि जिन से बहुत धान के खेत सींचे जातेथे जहां कि अभी जल का नाम वा निशान नहीं मिलता। कहीं २ दो पहाड़ों के बीच में जल को रोकने के लिये बड़े २ बांध बांधे गये थे और टेनंट साहिब जो वहां का अंगरेजी गवर्नर था एक ऐसे बांध का बर्णन किया है जिस की लंबाई छः मील से अधिक थी और जो भूमि पर तीन सौ फुट चौड़ा और साठ फुट ऊंचा और नीचे से ऊपर को पतला होता चला गया है। अनुरादपुर नामे मंदिर जो कि बहुत प्राचीन और भारी है देखने योग्य है ।

सिंहलीज् जो समुद्र के तीर के रहने हारे हैं उनका विशेष काम यह है कि मोतियों का खोज करते हैं परन्तु यह काम अति जोखिम का है। वे लोग बड़े प्रातःकाल को

अपनी नौकाओं पर सवार होके निकलते हैं जिसतें मोतियों का खोज करें। नौका की एक ओर कई डांड़ बांध के एक मचान बनाते हैं और इस मे कई रस्सियां लटकाते हैं जिन के द्वारा वे चढ़ते उतरते हैं। किसी ने उन को इस रीति को यों बर्णन किई है कि मैं ने देखा कि बारह सेर का कोई पत्थर रस्सी में बांधा हुआ नौका की एक ओर ऐसा लटक रहा था कि समुद्र के जल के पांच फुट नीचे लटका हुआ दिखाता था जिस में पहिले डूबनेवाला अपना पांव डालता था। तब एक जालदार टोकरी जिस के ऊपर लकड़ी का गेड़रा होता है सो दूसरी रस्सी में बांधी जाती और उस के पास फेंकी जाती थी। टोकरी में पांव रखकर वह एक हाथ मे दोनों रस्सियों को पकड़ लेता और दूसरे हाथ से अपनी नाक को जिसमें ऐसा न हो कि जल नाक के भीतर चला जाय और यों पत्थर के बोझ से डूबता था। जब नीचे लों पहुंच जाता तो मुंह के बल गिरके कस्तूरी की सीपियों को बड़ी शीघ्रता से टोकरी में बटोरने लगता था। डेढ़ मिनिट में डेढ़ सौ सीपियां बटोरता होगा तब रस्सी को छोड़कर ऊपर उछलता और मचान को पकड़के सुस्ताता था जब तक नौकावाले टोकरी को खींचकर खाली न कर दें और जब टोकरी तैयार हुई तो फिर नीचे जाता था और यों छः घण्टे तक काम करता रहता था।

जब नौका समुद्र के तीर पर आ जाती तो बड़ी भीड़ एकट्ठी होती है क्योंकि वे देखा चाहते हैं कि आज गोतामारनेवालों ने कितना पाया है और इन को कैसे अच्छे

मोतियां मिले हैं। मोती जो इस रीति से प्राप्त किये जाते हैं वे सब देशों में बहुत बहुमूल्य समझे जाते हैं वरन अगिले दिनों में बड़े मोतियों का मोल बहुत अधिक होता था। कहते हैं कि जूलियस कैसर जो रूम का महाराजा था उस ने अपनी माता को ऐसा मोती दिया था जिस के लिये पांच लाख रुपये के निकट दिये थे और कहते हैं कि क्लियोपाट्रा मिसर की महारानी के पास मोती के दो बाले थे जिन का मोल सोलह लाख रुपया था। यहां महावली गंगा यहां की सब नदियों में से बड़ी प्रायः २०० मो० (१०० कोस) लंबी है । नदियों के बालू में माणक लहसनिया नीलम आदि बेश कीमत पत्थर मिलते हैं। लोहे और फिटकिरी की यहां खान है। दारचीनी, कहवा, नारियल, इलाइची, चावल, ऊख, तंबाकू और कालीमिर्च यहां इफ़रात से पैदा होती है जमीन यहां की उपजाऊ पहाड़ इस में ८००० फुट से भी ऊंचे दिखाई देते हैं । यहां के जंगलों में हाथी बहुत रहते हैं । हमाल पहाड़ पर जिसे अंगरेज़ आदम का शिखर कहते हैं। दो फुट लंबा आदमी के पैर का एक निशान है । उस को सिंहली बुध के पैर का चिन्ह और मुसलमान आदम के पांव का निशान बतलाते हैं । मत यहांवालों का बौद्ध है यह ऊपर वर्णन हो चुका है। पुर्तगाल वालों का दखल सन १५१७ ई० से १६५८ ई० तक रहा डच वालों ने इन को यहां से निकाल दिया और इनको भी अंगरेज़ोंने सन् १७९६ ई०में यहां से अलग किया। लंका का आखिरी राजा बिक्रमराज सिंह

कांड़ी में रहता था। कहते हैं कि जब वहां वालों ने अपने राजा के जुल्म से तंग होकर विशेष इस बात से कि उसने अपने मंत्री के लड़के उन्हीं की मा के हाथ से उखली में कुटवाए अंगरेज़ों की हिमायत में आना चाहा तो सरकार ने भी मज़लूम समझकर उनकी अभीलाषा पूरी की, और १८१५ ई० में राजाविक्रमराजसिंह ने बाग़वा भी किया था इसलिये अंगरेजों ने राजा को निकाल (उस को कैद किया) कर सारा टापू अपने कृबज़े में कर लिया, तब से वह बराबर इंगलिस्तान के बादशाह के दख़ल में चला आता है। कोलम्ब से ६० मी० ईशान कोन कांड़ी के दर्मियान, जहां उस टापू के पुराने राजा रहते थे, एक मंदिर के अंदर पिंजरे की तरह लोहे के कटहरे में सोने के ढकनों से ढका हुआ एक दांत रखा है, और उन छवों ढकनों के ऊपर एक सातवां ढकना पीतल का घंटे की सूरत ढका है, और फिर उस के ऊपर अनुमान डेढ़ लाख रुपये का ज़ेवर और जवाहिरात रखा है। उस लोहे के कटहरे, में जिस के अंदर ये सब चीज़ हैं, ताला बंद रहता है और कुंजी उस की हाकिम के पास रहती है क्योंकि सिंहलियों का यह निश्चय है कि वह दांत बुध का है, और जिस के पास रहे वही उस टापू का राजा होवे, सरकार ने इस दूरंदेशी से कि कोई बदमाश उसे लेकर बखेड़ा न उठावे अपने कृबज़े में रखा है, जब साल में एक बार मेला होता है तो साहिब कलक्टर ताला खोल कर लोगों को दर्शन करा देते हैं।

ऊपर लंका रहनेवालों की संख्या १७ लाख लिखा गया है पर कईएक भूगोलवालों ने २४००००० आदमियों की बस्ती बतलाते हैं और रकबा (क्षेत्रफल) २४४५४ मी० सु०। और आमदनी १२५०००० रुपया साल कहते हैं।

एशिया के नक्शे में बंगाले की खाड़ी के पू० जो प्रायः द्वीप हैं उसेपूर्वी प्रायद्वीप कहते हैं। बर्मा, स्याम, मलाका, आनाम और लेआस ये पांच प्रदेश पूर्वीप्रायद्वीप में हैं।

बर्मा देश का वर्णन—एशिया के द० पू० में हिन्दुस्थान के तौर पर बर्मा नामे एक देश पाया जाता है। वह बड़ा देश है लंबाव में ५४० मी० और चौड़ाई में ४२० मी० है और विस्तार २८००० वर्ग कोस है। परन्तु यदि उसको हिन्दुस्थानके संग तौलें तो उसकी बहुत कम आबादी होती है क्योंकि इतने बड़े देश में केवल ८० लाख मनुष्य मिलते हैं। इसकी सीमा उ० में आसाम और चीन पू० में लेआस और स्याम, द० में बंगाले की खाड़ी और प० मे बंगाले की खाड़ी और बंगाल देश है उस देश का मुख्य नगर जहां कि राजा रहता था आवा नामे था। बर्मा के निवासी वर्ण में और रूप में कुछ २ हिन्दुओं के समान हैं। वह बहुत करके छोटे हैं परन्तु सामर्थी और चालाक हैं। पुरुषलोग अपने बाल ऐसे छोटे २ कतरवाते हैं कि जो सिर पर रह जायें सब खड़े रहते हैं। वे लोग बहुत करके फूस के छप्परों में रहते हैं और नदियों के तट पर घर बनाने को अधिक चाहते हैं। उस देश की नदियों में हर वर्ष ऐसी बाढ़ आती है कि जल तटों के बाहर चढ़ आता है और इसी कारण वे

अर्थात् जल की बहुतायत से उस देश में धान बहुत उपजता है और चावल उनलोगों का विशेष भोजन होता है। उन में से बहुत लोग अपने घरों को ऊंची लकड़ी के खम्भों पर खड़ा करते हैं जिस में पानी की बाढ़ और जंगली पशुओं की चढ़ाई से बच जायें परन्तु इस से इतना कष्ट होता है कि सीढ़ी के द्वारा घर में चढ़ना उतरना पड़ता है।

बर्मा देश में छः प्रकार के लोग पाये जाते हैं और एक २ की पदवी और व्यवहार और रीति अलग २ है। यद्यपि उन में जाति का वर्णन जैसा हिन्दुओं में है पाया नहीं जाता तथापि उन राजपुत्र और पुलियां और पण्डे और अधिकारी लोग जो सर्कार का काम चलाते हैं और महाजन और किसान और संन्यासी ये लोग पाये जाते हैं। सन्यासियों में कोढ़ी लोग भी गिने जाते हैं क्योंकि वे भी अपने घर में रहने नहीं पाते। ऋणी लोग जो अपने ऋण को भर नहीं सकते हैं सो किसी स्वामी के हाथ में बिक जाते हैं और यह दासों की गिन्ती में आते और जब तक कि इस बुरी दशा से न छूटें तब लों अति नीच और निकम्मे गिने जाते हैं।

बर्मा के लोग प्राचीन दिनों में हिन्दुओं से अपने धर्म्म को प्राप्त करते थे क्योंकि बौद्ध अर्थात् गौतम जो हिन्दुस्थान का निवासी था उन का बड़ा देवता समझा जाता है और बौद्ध की बहुत सी मूर्त्तें उन के बीच में पाई जाती हैं। कई स्थानों में उस की ऐसी मूर्त्तें देखने में आई हैं जो तीस फुट ऊंची पलथी मारे हुए बैठी हैं और जिन की बड़ी

बड़ी आंखें और लंबे २ दांत हैं। देश के लोग बहुधा उस धर्म को मानते हैं और उस की आराधना के लिये बहुत से मन्दिर जो पगोडा नाम से प्रसिद्ध हैं उनमें हर कहीं पाये जाते हैं। कहीं २ यह मन्दिर बहुतही बड़े और लकड़ी के बने हुए और नाना प्रकार की खरादी हुई लकड़ियों से शोभित किये हुए हैं और कहीं सोने के पत्रों से मढ़े हुए हैं यहां लों कि धूप में बड़ी सुन्दरता से चमकते हैं। बड़े २ पगोड़ा मन्दिरों के आगे सागौन का ऊंचा कूपक खड़ा होता है जिन को हिंजा का खम्भा कहते हैं जिस के ऊपर एक चिड़िया की प्रतिमा रहती है जिस को वे लोग बहुत प्यारी समझते हैं।

इस धर्म के पण्डे लोग एक प्रकार के योगी होते और गेरुये कपड़े पहिनते हैं। वे कुछ कामकाज नहीं करते बरन जो हो सके तो अपनी रोटी तक नहीं पकाते किन्तु भीख मांगके खाते हैं। बौद्धवालों का एक प्रकार का माला फेरना पानी के बहने से होता है क्योंकि वे कोई प्रार्थना लंबे पत्रे पर लिखते और उसे एक पहिये के बीच में रखते जो पानी के बल से चलता हो और जब पहिया चलता तो प्रार्थना को किई हुई समझते हैं बल्कि जितने बार घूमे उतनी प्रार्थना हुई। बर्मा देश का एक नाम सफेद हाथी का देश है क्योंकि वे लोग एक श्वेत हाथी को बड़े आदर सन्मान से पाला करते हैं और देवता की नाईं उसे मानते और पूजते हैं और जब जंगलों में ऐसा कोई हाथी देखने में आवे जो कुछ श्वेत सा होवे तो इस बात के सन्देशा

को सब लोग बड़ा मंगल समाचार समझते हैं उस हाथी का नाम महाराज रखते और उस के प्रतिपालन के लिये बहुत से खेत और गांव चुन करके स्थापित किये जाते हैं और बहुत से अधिकारी लोग रात दिन उस की सेवा टहल किया करते हैं और सहस्रों सिपाही उस के ऊपर पहरा देते हैं और वह जो उसे चढ़ाता है इस पद को बहुत उत्तम और श्रेष्ठ समझता है।

उस देश में एक और प्रकार के लोग पहाड़ों में पाये जाते हैं जो बर्मा के निवासियों से बहुत भेद रखते हैं। उन के नाम केरन प्रसिद्ध हैं और उन की रीति सर्वंश और प्रकार की है। इन लोगों के बीच में बहुत ऐसी कहानियां प्रसिद्ध हैं जिन से प्रगट होता है कि किसी न किसी समय उन के दादे परदादे ईसा के वचन को कुछ जानते रहे होंगे क्योंकि वे यह मानते हैं कि एकही ईश्वर है जो सब कुछ का बनाने और संभालने हारा है और वह सनातन से है और सनातन लों रहेगा कि वह हर कहीं रहता और सब कुछ देखता भालता है और वह सर्वसामर्थी है और उस की आज्ञा के विरुद्ध करना बड़ा पाप है उस ने आरंभ में एकही पुरुष स्त्री को उत्पन्न किया और जब कि उस ने पुरुष को बनाया तो उस ने उस को एक वाटिका के बीच में रखा और एक पेड़ के फल खाने से उसे वर्जित किया और यह भी मानते हैं कि मनुष्य परीक्षा में पड़कर अपने स्वामी से भटक गये और इस कारण ईश्वर के श्रापित हुए। वे लोग महाजल प्रलय से पृथिवी का डूब जाना और जलप्रलय के पीछे मनुष्य

का तितर बितर हो जाना और मृत्यु के पीछे मनुष्य का जी उठना भी मानते हैं। इतनी धर्म्मशिक्षा से उन का ज्ञान होना यह प्रगट होकर है कि किसी न किसी समय में उन के बाप दादों में ईसाई धर्म्मोपदेश किया गया होगा परन्तु अब उसे भूलकर अज्ञान हो गये हैं।

कई वर्ष हुए कि डाक्टर जडसन साहिब और और और पादरी कैरन लोगों को मंगल समाचार सुनाने लगे और उन के बीच में इस उपदेश की अद्भुत प्रकार की तैयारी पाई गई क्योंकि सहस्रों लोग बड़ी अभिलाषा से मुक्ति के संदेशा को ग्रहण करने लगे वरन परस्पर इंजील फैलाने और ईश्वर की सेवा टहल करने में वे और देशों के ईसाइयों से बढ़कर और उन के लिये अच्छा निदर्शन ठहरते हैं और अपने कामों से वे प्रगट करते हैं कि ईसू पर उन का विश्वास सत्य और दृढ़ है॥

ब्रह्मा (बर्म्मा) की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है। चावल गेहूं और और किसम के अनाज भी खूब पैदा होते हैं। चाय इस देश में पैदा तो होती है, पर इसकी पत्ती चीन की चाय की पत्ती सी अच्छी नहीं होती केवल तर्कारी और अचार बनाने के काम में वहां के आदमी लाते हैं खान से इस मुल्क में सोना, चांदी, लोहा, ओरा, रांगा, सीसा, सुर्मा, गंधक पत्थर का कोयला, मानिक, और बहुत तरह के कीमती पत्थर और संगमर्मर निकलता है। यहां के लोग बहुत गहरे कूंए खोदकर एक तरह का तेल निकालते और उसे जलाते हैं खास कर पि टागी शहर में मिट्टी के तेल की खान

है। यह भी जान लेना चाहिये कि हिंदुस्तान के जंगली दरख्तों में से प्रायः सब दरख्त यहां के जंगलों में पाये जाते हैं। हिन्दुस्तान के करीब करीब सबही जानवर इस मुल्क मे मिलते हैं पर ऊंट नहीं मिलता इस मुल्क में हाथी तो बहुत होता है पर उन में से बहुतेरे सुपेद होते हैं इसलिये ब्रह्मा को सपेद हाथी का देश कहते हैं। ब्रह्मा के पेगू के टट्टू से बेहतर कहीं टांगन नहीं होता। ब्रह्मा के लोग नाटे सांवले और ज़ोरावर होते हैं पर कुटिल मग़रूर और शक्की। अथः लोग वहां के खुशदिल तेज़ मिज़ाज और बेसबरे होते हैं, हिंदुस्तानियों की तरह सुस्त और आलसी नहीं होते। औरतें वहां की शर्म और परदा नहीं करतीं, और घर का सारा काम और मिहनत उन्हीं के ज़िम्मे है, मर्द मजे से बैठे पान चबाया और हुक्का पिया करते हैं, हक़ीक़त में उन औरतों की ज़िन्दगी लौंडी और बांदियों से भी बत्तर है, मिहनत मज़दूरी के सिवाय वहां के आदमी अपनी बहू बेटियों से कसब भी करवाते हैं, और इस बात से शर्म नहीं खाते, बरन जो औरत जितना ज़ियादः रुपया कमा लाती है उतना ही अपने घरवालों में नाम पाती है। सूरत शकल में वहां के आदमी चीनियों से मिलते हैं. औरतें गोरी होती हैं लेकिन भद्दी, मर्द नाटे गठीले, हजामत नहीं बनाते, दाढ़ी मूछों के बाल मुचने से उखाड़ डालते हैं, सुरमा और मिस्सी मर्द औरत दोनों लगाते हैं। शादी कम उमर में नहीं करते, और एक औरत से अधिक नहीं ब्याहते। जाति भेद उन लोगों में नहीं

है, और नत बुध का मानते हैं, जीव की हिंसा करनी उस मज़हब के विरुद्ध है, परंतु वे लोग बेखटके मास मछली खाते हैं, और शराब भी पीते हैं। पुनर्जन्म का निश्चय रखते हैं, और अपने मुर्दों को आग में जलाते हैं। ज़ुबान उन लोगों की मुश्किल है, और किसी दूसरी से नहीं मिलती। हर्फ़ भी उन के गोल गोल ख़ास एक तरह के हैं, और हिंदी की तरह बांएं से दहनी तरफ़ लिखे जाते हैं। पोथियां उन की ताड़पत्र पर लिखी रहती हैं, और कभी कभी सोने के पत्रों पर लिखते हैं। कविताई और शास्त्र उस भाषा में भी बहुत हैं, और कई उन की मज़हबी पोथियां प्राकृत बोली में लिखी हैं। मुलम्मे का काम वे लोग खूब करते हैं, और धात और मिट्टी के बर्तन और रेशम के कपड़े और संगमर्मर की मूर्ति और जहाज़ भी अच्छा बनाते हैं। रुपये पैसे का जगह वहां चांदी और सोने का ढुर्रा चलता है। बाहर की आमदनी में अङ्गरेज़ी बनात और कपड़े और हथियार और धातु के बरतन और रेशमी कमाश बहुत ख़र्च होते हैं, और निकासी के माल में सागौन इत्यादि क़ीमती लकड़ियों की वहां बड़ी पैदा है, सिवाय इस के वे लोग रुई कहरबा हाथीदांत जवाहिर पान और एक क़िस्म की चिड़ियों के घोसले भी उस देश के आदमी बहुत मज़े के साथ खाते हैं, चीनियों को देते हैं, और उस के बदले रेशम धात के बरतन मखमल मुरब्बे और सोने के तबक़ उन से लेते हैं।

स्याम।

यह मुल्क जिसको बर्मा के आदमी स्यान और

भाग पुकारते हैं १० अंश से १९ अंश उ० अचांश और ९९ से १०५ अंश पू० देशांतर तक फला गया है। इहें उस की उ० और प० तरफ़ बर्हा, द० तरफ़ स्याम की खाड़ी और पू० तरफ़ काम्बोज से निखो है। प्राय ६५० मी० लंबा और प्राय २६० मी० चौड़ा। विस्तार १५५००० मी० मु०। आबादी फ़ी मी० मु० १९ आदमी के हिसाब से २९४५००० आदमी की। यह मुल्क दो पहाड़ों के दर्मियान एक बड़ा मैदान है, और उसके बीच में मीनम नदी बहती है। बरसात में अकसर जगह दलदल हो जाने के बाइस आब हवा वहां की ख़राब रहती है, परंतु ज़मीन उपजाऊ जो जो चीज़ें बंगाले में पैदा होती हैं वे सब वहां भी हो सकती हैं, वरन चावल तो इस इफ़रात से शायद सारी दुनिया में कहीं पैदा न होता होवेगा, सिवाय इस के इलायची दारचीनी तेजपात कालीमिर्च और अगर भी बहुत होता है। मेवों में मंगोस्तीन आम से भी अधिक सुस्वाद है, इस से बढ़कर दुनियां में कोई मेवा अच्छा नहीं होता। गीदड़ और ख़रगोश का उस मुल्क में अभाव है। खान से वहां हीरा नीलम माणक यशम लोहा रांगा सीसा तांबा और सुरमा निकलता है, और नदियों का रेत धोने से सोना भी मिलता है, "सुम्बुका का वहां एक पहाड़ है। राजधानी इस मुल्क की बंकाक है, वह शहर १३ अंश ४० कला उ० अचांश और १०१ अंश १० कला पू० देशांतर में मीनम नदी के दोनों कनारों पर बसा है। बाज़ार वहां का बिलकुल पानी के ऊपर है, बांस

के बेड़े मग कर उन्हीं पर दूकानदार रहते हैं, और अपना माल बेचते हैं, वरन मकान भी जो लोग नदी के तीर बनाते हैं, तो ज़मीन से बांस और शहतीरें गाड़कर इतना ऊंचा रखते हैं कि बरसात में दर्या चढ़ने से डूब न जावें, मकान सब काठ के होते हैं, और उन में जाने के वास्ते सीढ़ी ज़रूर चाहिये। उस शहर में सड़क बिलकुल नहीं है, लोग घोड़े गाड़ियों की बदल एक एक छोटी सी नाव अपने घरों में बंधी रखते हैं, उसी से सब काम निकल जाते हैं। बस्ती इस शहर की प्राय ४०००० आदमी के है। नामी मंदिर इस शहर का दो सौ फुट ऊंचा होवेगा। चाल चलन और मज़हब इस मुल्कवालों का वहां के आदमियों से बिलकुल मिलता है। नाखून ये लोग बढ़ने देते हैं तराशते नहीं, और वैद्य उनके यदि बीमार को आराम न हो तो उस से कुछ भी नहीं लेते। ज़ुबान इन की जुदी है, और गाने बजाने का बड़ा शौक़ रखते हैं। ये लोग तिजारत के वास्ते अपने देश से बाहर नहीं जाते, ग़ैर मुल्क के आदमी बाहर से भी माल लाते हैं और वहां का भी माल बाहर ले जाते हैं। राजा खुद तिजारत करता है, बिना उसकी आज्ञा के रांगा हाथी-दांत सीसा इत्यादि का कोई भी सौदा नहीं कर सकता। वहां के आदमी सोने के तबक़ खूब बनाते हैं, और बुरी भली बारूत भी अपने काम लायक़ तयार कर लेते हैं, वहां का राजा लड़ाई के वास्ते अपनी रईयत को उसी तरह जमा कर सकता है कि जैसे वहां में दस्तूर है॥

——*——

मलाक्का का प्रायद्वीप।

जिसे वहां के आदमी मलयदेश कहते हैं १ अंश २२ कला उ० अक्षांश से लेकर ८ अंश तक चला गया है। वह तीन तरफ़ समुद्र से घिरा है और चौथी तरफ़ अर्थात् उ० को उस का नाम उमदनाथ बर्म्मा के मुल्क से मिलाता है। लंबान उसकी प्राय ८०० मी० और चौड़ान प्राय १२० मी० होवेगी। इस मुल्क में छोटे छोटे कई राज हैं। लौंग जायफल कालीमिर्च चंदन सुपारी और चावल वहां इफ़रात से होता है, मंगोस्तीन मेवों का राजा है। भेड़ी बैल और घोड़े कम होते हैं, पर भैंस बहुत। रांगा खान से निकलता है, और नदियों का बालू धोने से सोना भी मिलता है। आब हवा मोताद्लि, और खास मलाका के ज़िले की तो बहुत ही अच्छी और निरोगी है, अकसर साहिब लोग बीमारी में वहां हवाखाने को चले जाते हैं, पर धरती उपजाऊ नहीं है। आदमी वहां के मलाई कहलाते हैं, और लूट मार में बड़े चालाक और दिलेर हैं, समुद्र में जाकर जहाजों को लूट लेते हैं, सिवाय इसके कीना भी दिल में बड़ा रखते हैं, और जब कभी घात पाते हैं दुश्मन से बिना बदला लिये नहीं छोड़ते, परदेसियों के साथ अकसर दग़ा-बाज़ी कर जाते हैं, पर सभी एक से नहीं हैं, कितने ही उन में सच्चे और नित्तनचार भी होते हैं। पहाड़ों के दर्मि-यान एक क़ौम जंगली इस तरह की बस्ती है, कि उसकी सूरत हबशियों से मिलती है, रंग काला होंठ मोटे नाक चिपटी बाल घूंघरवाले मगर कद में बहुत ही नाटे डेढ़ गज़

से अधिक ऊंचे नहीं होते नंगधिड़ंग जंगलों में फिरा करते हैं, और फल फूल कंद मूल अथवा भिक्षा से अपना पेट भरते हैं। इस मुल्क के आदमी जूआ बहुत खेलते हैं, विशेष करके मुर्ग़ की लड़ाई में, यहां तक कि अपने जोरू लड़के और बदन के कपड़े तक हार देते हैं। अफ़यून बहुत खाते हैं, और बाज़े वक़्त उसके नशे में दीवाने बनकर बड़ी ख़राबियां करते हैं। हाकिम वहां का सुल्तान कहलाता है, क़ौम का सुन्नी मुसल्मान है। सन् १२७६ तक वहां के राजा हिंदू थे। ज़ुबान में उनकी बहुत से शब्द अरबी और संस्कृत के मिले हुए हैं, और हर्फ़ उनके अरबों के मुवाफ़िक़ हैं। जहाज़ और किश्तियां वे लोग बहुत अच्छी बनाते हैं। लौंग जायफल कालीमिर्च मोम बेंत साबू रांगा हाथीदांत वहां से दिसावरों को जाता है, और अफ़यून रेशम इत्यादि वहां बाहर से आता है। राजधानी वहां की मलाका २ अंश १४ कला उ० अक्षांस और १०२ अंश १२ कला पू० देशांतर में समुद्र के तट पर बसा है, यह शहर ख़ास मलाका के ज़िले के साथ सरकार के क़बज़े में है। बिस्तार उस ज़िले का प्राय ८०० को० मु० होवेगा। सन् १५१० में उसे पुर्तगाल वालों ने मुसल्मानों से लिया था, सन् १६४० में उसे डच लोगों ने फ़तह किया, अब सन् १७९५ से अंगरेज़ों के क़बज़े में है। मलाका के अ० कोन १२० मी० के तफ़ावत से सिंहपुर और वा० कोन २४० मी० के तफ़ावत से पूलोपिनांग ये दोनों टापू भी सरकार के दख़ल में और मलाका को गवर्नरी में लगे हैं। सिंहपुर २६ मी० और

पिनांग १५ मी० लंबा है। सिंहपुर की आब हवा बहुत अच्छी है। अंगरेज़ पिनांग को वेल्स के शाहज़ादे के नाम से पुकारते हैं, और हिन्दुस्तानी इन टापुओं को काला पानी कहते हैं, भारी गुनहगार बंधुए क़ैद रखने के वास्ते इन टापुओं में भेजे जाते हैं। आबहवा अच्छी होने के कारण कितने ही साहिब लोग वहां जा रहे हैं, और बहुतेरी कोठियां और बाग़ और बंगले बन गये हैं॥

कोचीन

यहां के बादशाह के क़बज़े तीन मुल्क हैं कोचीन, टांकिंग अथवा ऐनम, और कम्बोज जिसे अंगरेज़ कम्बोडिया कहते हैं। कम्बोज ८ अंश से १५ अंश उ० अक्षांश तक, और कोचीन ८ अंश से १८ उ० अक्षांश तक, और टांकिंग १८ अंश से २३ अंश उ० अक्षांश तक, १०५ और १०९ अंश पू० देशांतर के बीच चला गया है। उ० तरफ़ उसके चीन है, द० और पू० समुद्र और, प० को उनकी सरहद स्याम ब्रह्मा और चीन से मिली है। विस्तार इन मुल्कों का प्राय डेढ़ लाख मी० मु० है, और आबादी फ़ी मील मु० ९३ आदमी के हिसाब से १३९५०००० आदमी की- इस विलायत में मैदान और पहाड़ दोनों हैं। नदी सब में बड़ी कम्बोज की है, चीन के मुल्क से निकलकर सात सौ कोस बहने के बाद समुद्र में गिरती है। पैदाइश यहां भी उन्हीं मुल्कों की सी होती है कि जिनका बयान ऊपर लिखा गया। बैल यहां बहुत कम, हल भैसों से चलते हैं,

भेड़ी और गधा बिलकुल नहीं होता, हाथी बहुत बड़े होते हैं। खान से लोहा चांदी और सोना निकलता है। धरती उपजाऊ है, साल में दो फ़सलें धान की पैदा होती हैं। ॥ वहां के बादशाह की दारुस्सलतनत एक नदी के कनारे पर बसा है, और क़िले के अंदर बहुत ख़ासा बादशाही महल और एक मंदिर बना है। कहते हैं कि वह क़िला बहुत मज़बूत है, और दो हज़ार तोपें उस पर चढ़ी हुई हैं। आदमी वहां के नाटे और गठीले और चालाक और मज़बूत होते हैं, पायजामा पगड़ी और आधी जांघ तक के लंबी आसतीन वाले कुरते पहिनते हैं, बाल लंबे और जूड़े के तौर पर बंधे रहते हैं, औरतें सिर पर टोपी रखती हैं, जूता कोई नहीं पहिनता, मिहनत का काम अकसर औरतों के हिस्से में आता है, यहां तक कि बेचारियां हल जोतती हैं और नाव खेती हैं, मिस्सी से दांत काले और पान से होंठ लाल मर्द और औरत दोनों रखते हैं, हाथी का गोश्त ये लोग बहुत मज़े से खाते हैं। ज़ुबान वहां की चीन से मिलती है, और मज़हब बुध का मानते हैं। जब किसी का कोई मरता है तो उसे दो बरस तक संदूक़ में बंद कर के घर में रख छोड़ते हैं, और नित्य उस के साम्हने गाना बजाना हुआ करता है भोग भी चढ़ाते हैं, और लोग भी उस के दर्शनों को आते हैं, फिर दो बरस बाद उस को बड़ी धूम धाम से ज़मीन में गाड़ते हैं। कारीगर वहां के चीनियों की तरह बहुत चालाक और होशियार हैं, विशेष करके रेशम तयार करने में। आमदनी वहां

बनात और छींट शोरा गंधक सीसा चाय रेशम अफ़यून और गर्म मसालों की है, और निकास वहां से रेशम खास के कपड़े सीप की चीज़ें चटाई हाथीदांत कपकडा फानूस दारचीनी इत्यादि का होता है। फ़ौज वहां के बादशाह की साथ पचास हज़ार होवेगी, सिवाय इस के अब काम पड़े तो वह अपने मुल्क के सारे आदमी अठारह बरस से साठ बरस तक की उमर के बेगार में पकड़ के जिस खिदमत पर भेज सकता है, और आदमी वहां के बादशाह की आज्ञा बिना अपने मुल्क के कभी बाहर नहीं जासकते। किसी ज़माने में यह मुल्क चीन के बादशाह के तावे था।

चीन।

२१ से ५५ उ० अ० तक और ७० से १४२ पू० देशांतर तक। प० तूरान, पू० पासिफ़िक् समुद्र उ० एशियाई रूस, द० हिमालय पहाड़ ब्रह्मा और कोचीन। लंबान ४७०० मी० चौड़ान २००० मी०। विस्तार ५०००००० मी० मु०। आमदनी ६०००००००, यद्यपि वस्तुतः इस विस्तार में चार मुल्क बस्ते हैं, अर्थात असली चीन तिब्बत तातार, जिसे माचीन और महाचीन भी कहते हैं, और कोरिया का माय द्वीप, लेकिन एक बादशाह के आधीन रहने के कारन अब ये सब एक ही नाम से अर्थात् चीन पुकारे जाते हैं। असली चीन उ० में तातार से मिला है, और उस के पू० और द० पासिफ़िक् समुद्र की खाड़ियां हैं, नाम उन का पीली नीली और चीन की, और द० कोचीन और ब्रह्मा से और प० ब्रह्मा और तिब्बत से घिरा है।

तिब्बत हिमालय के उ० और फिर तिब्बत के उ० तातार है, अताई का पहाड़ उसे उ० में रूस से जुदा करता है, प० तूरान है, और पू० असली चीन और समुद्र। कोरिया का प्रायद्वीप असली चीन के ई० पड़ा है। सिवाय इन मुल्कों के बहुत से टापू भी फ़ार्मोसा और लीयू कीयू इत्यादि वहां के बादशाह के ताबे हैं। तातार में शामू अथवा गोबी का चटपर रेगिस्तान प्राय १४०० मी० लंबा होवेगा। तिब्बत में कैलास पर्वत हिमालय का टुकड़ा २०००० फ़ुट समुद्र के जल से ऊंचा है। चीन और ब्रह्मा के बीच में हिमालय की शाखा समुद्र पर्यन्त चली गई, पर ज्यों ज्यों पू० को बढ़ी नीची होती गई। नदियां बहुत हैं, हुअंगहो तिब्बत और तातार के बीच रथिको पहाड़ से निकलकर २६०० मी० बहने के बाद समुद्र में गिरती है, और याङ्सी कायङ् तिब्बत से निकलकर २२०० मी० बहने के बाद नानकिङ शहर से कुछ दूर आगे हुअंगहो से मिल जाती है, बादशाही नहर कान्टन से पेकिन तक ८०० मी० लंबी है। आमुर नदी २००० मी० तातर में बहकर सघालियन के टापू के साम्हने समुद्र से मिल गई है। झीलें चीन में पयंग तातार में नोर जैसां और पलकी, और तिब्बत में कैलास और हिमालय के बीच मानसरोवर और रावणहृद, जिन्हें साधा मानतलाई और राक्सताल भी कहते हैं, मशहूर हैं। मानसरोवर १५ मी० लंबी और ११ मी० चौड़ी है, चीनकी दारुस्सलतनत पेकिन जिसे कोई पेचिन भी कहता है ४० उ० अ० और ११७ पू० दे० में बसा है। तातार में यार्कन्द

पेकिन से २४०० मी० प० और काशग़र यार्क़न्द से १५० मी० वा० मशहूर शहर हैं। तिब्बत का बड़ा शहर लासा पेकिन से १८०० मी० नै० है। पहले ग़ैर मुल्क वालों को केवल कान्टन के बंदर में तिजारत करने की इजाज़त थी लेकिन लड़ाई के बाद १८४२ से अंगरेज़ों को एमाय फूचूफू निङ्गपो और शांघे इत्यादि और भी कई बंदरों में तिजारत करने की इजाज़त दी गई। बादशाह वहां का बौद्धमती है।

जपान।

चीन के पू० २६ अंश ३५ कला और ४८ उ० अ० के दर्मियान जपान के टापू हैं। नीफ़न सिटकाफ़ और क्यूस्यू ये तीन तो बड़े हैं, और बाक़ी छोटे। सब से बड़ा नीफ़न कुछ ऊपर ८०० मी० लंबा और ८० से १७०मी० तक चौड़ा है। विस्तार तीनों टापुओं का ६०००० मी०मु०। आमदनी २८००००००० रुपया साल, राजधानी जेडो ३६ उ० अ० ४० पू० दे० में है, नदी और नहरें शहर के बीच से बहती हैं। मत वहां वालों का भी बौध है।

रूस देश का वर्णन।

यदि किसी देश की बड़ाई केवल लंबाई चौड़ाई की बात होती तो रूस जगत के सब देशों में बड़ा ठहरता। क्योंकि और कोई देश ऐसा नहीं है जिस में रूस के तुल्य भूमि हो वरन ज्ञानवान् लोग कहते हैं कि यदि सकल जगत का स्थल नापा जावे तो उस का सातवां भाग इस देश

में पाया जायेगा। रूस की लंबाई यहां लों है कि यदि यात्री पांच हज़ार मी० एक ओर सीधा चले तौभी उस के सिवानों से बाहर न होगा। रूस देश की बड़ी २ बस्तियां यूरुप के महाद्वीप में हैं और एशिया के महाद्वीप में भी उस का एक बड़ा भाग है जहां ठण्ढ के मारे लोग बड़े क्लेश में रहते हैं। यद्यपि रूस ऐसा बड़ा देश है तथापि उस में हिन्दुस्तान से बहुत कम निवासी रहते हैं। उस के कुल रहनेवाले सात करोड़ चौरासी लाख के निकट हैं। देश के प्राचीन निवासी मसकोवी नाम से विख्यात हैं परन्तु इन को छोड़ और भी बहुत से लोग अर्थात् फ़िन लाप तातारी कास्साक कालमक इत्यादि हैं जिन में बहुत सन्तान अति जंगली और गंवार हैं। उस देश के महाराजा ज़ार नाम से प्रसिद्ध हैं और वह कभी औटोक्राट भी कहलाते हैं अर्थात् ऐसा राजा जो अपनी इच्छा के अनुसार स्वतंत्र होके और बिना मंत्रियों से संमति किये राज्य करता है। और देशों के महाराजा बहुत करके अपनी व्यवस्था के विरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु रूस का महाराजा स्वाधीन है।

रूस देश में प्रतिवर्ष नौ महीने तक बड़ा जाड़ा रहता है और इस लिये घर बनाने और वस्त्र पहिनने में वे लोग विशेष करके यह विचार करते हैं कि हम कौन सा उपाय करें जिस से हम गर्म रहें। कभी २ वहां जाड़े के दिनों में नदियों के ऊपर तीन फ़ुट मोटा बर्फ़ जम जाता है और बड़े भार से लदी हुई गाड़ियां जैसी पुल पर से वैसे ही उस पर सहज से पार जा सकती हैं।

जब कि हम कुमयाऊँ के किसी गांव में जाते हैं तो पुरुष बहुधा बड़े और बड़े डील के और बलवन्त देखने में आते हैं। वहां की स्त्रियां ठण्ड के कारण कम बाहर फिरती हैं। वे कंठमालों और अच्छी टोपियों और नाना प्रकार के सुन्दर वस्त्रों और गहनों को बहुत चाहती हैं। गांव के बहुत घर बड़ी २ लकड़ियों से बने हैं और बनाने में जो लकड़ियों के बीच में बड़े २ दरार हैं सो चिथड़ों और सिवार और सन से भर दिये जाते हैं और जब यह निकलने और गिरने लगते हैं तो बुरा देख पड़ता है। घर के बीच में एक बड़ी अंगेठी रखी जाती जिस से सकल घर को गरमी पहुंचती है। अंगेठियों की चारों ओर लकड़ी के तख्ते रखे हुए हैं जिन पर लोग दिन को बैठते और रात को सोया करते हैं। भीत के खड़गड़ा वा ताक में एक बत्ती रखी जाती है जिसे तेवहारों में जलाते हैं पर बड़े लोगों के घरों में यह रात दिन जला करती है। हम उन के घरों की निर्मलता वा स्वच्छता और चैन की कुछ स्तुति तो नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे कुत्तों और बिल्लियों और मुरग़ियों और कपोतों को भीतर आने देते और लड़कों के बीच में खेलने देते हैं।

इस देश में निवासियों की कमी के कारण पेड़ों के बहुत महावन हो गये हैं जिन में भालू हुंड़ार आदि अति क्रूर वनपशु फिरते और मनुष्य को बड़ा क्लेश पहुंचाते हैं। कभी२ बहुत से हुंड़ार मिलकर यात्रियों की गाड़ियों का पीछा करते और यात्री को घोड़ों सहित फाड़ डालते हैं।

रूस लोगों के स्वभाव में कई अच्छी और क. बुरी बातें भी पाई जाती हैं। उन को बचपन से यह सिखाया जाता है कि अपने बड़ों का आदर और सन्मान करें। वे महाराजा को मुख्य पिता कहते और समझते हैं कि उस की दया से सब कुछ हो सकता है। पर उस देश के बहुत सन्तान बहुत ही अशिष्ट और गंवारू हैं और उन में थोड़े लोग पढ़ना लिखना जानते हैं उन में साधारण लोग ऐसे खेल तमाशों और रावरंग से अधिक प्रसन्न होते हैं जिन से देह चंगा और बलवन्त और उद्योगी और फुरतीला होवे। उस देश में जाड़े के दिनों में भूमि बर्फ से छिपी रहती है सो वे हिम के ऊपर वे पहिये को गाड़ियों को बहुत दौड़ाया करते हैं। कंगाल लोग अपनी गाड़ियों को इस रीति से बनाते हैं कि दो काठ की तख़्तियों को धार के बल से भूमि पर रखते हैं और उन के ऊपर एक सन्दूक़ कीलों से जोड़ देते हैं। जब तख़्तियों के एक सिरे को गोल कर देते और सन्दूक़ को सूखी घास से भर देते जिस्से सवार की हड्डियां किसी धक्के से टूट न जायें तब गाड़ी में दो एक शीघ्रगामी घोड़े जोतकर बस दौड़ाने को तैयार हो जाते हैं। परन्तु कुलीन लोगों की वे पहिये की गाड़ियां बड़ी सुन्दरता और धूमधाम से बनी रहती हैं अर्थात् कभी २ गाड़ी किसी चिड़िया के रूप में बनाई जाती और बहुमूल्य पशुरोमों से भरी जाती है। उस में सुन्दर काले घोड़े जोतते हैं और उनका साज़ चांदी के बहुत फूलों से चमकता है ऐसी गाड़ी का शीघ्रता से दौड़ाया जाना देखने के योग्य है बरन कभी २ रूस का

महाराणा आप भी इन में हुलास किया करता है। कहते हैं कि गाड़ियों के कोचवान लोग अपने अच्छे घोड़ों को अति प्यार किया करते हैं और उन से इस प्रकार बातें किया करते हैं कि मानो वे सब कुछ समझ सकते हैं। हांकते समय वे ऐसी लाड़ प्यार की बातें कहेंगे कि हे मेरे प्यारे उस चटान से सचेत हो। हे मेरे सुन्दर कपोत अपनी फुरती दिखा। वाह मेरे छोटे पिता तुम क्यों उस ओर फिरते हो। आओ यार यह शीघ्र चलना भला है इत्यादि।

रूस देश में एक और विख्यात खेल जाड़े के दिनों के लिये यह है कि बर्फ़ को बटोर बटोरकर वे एक छोटी पहाड़ी बनाते हैं और उस पर चढ़कर नीचे तक फिसल-कर खिसकते चले जाते हैं। वे इस लिये इस खेल से और भी प्रसन्न होते हैं कि यदि कोई टुक भी भूल करे वा बलहीन निकले तो गिरके चोट खायेगा।

पथिक लोग रूस देश के भोजन से प्रसन्न नहीं होते हैं। बड़े २ नगरों में तो वेही वस्तु मिल जायेंगी जो और देशों में पाई जाती हैं परन्तु देहात में किसान और कंगाल लोगों का खाना रूखा फीका होता है। वे काली रोटी को जो जौ की बनती है और पियाज़ और खीरा और कोभी और खट्टे फल और मछली का मांस तेल में पका हुआ अधिक खाते हैं वरन इतनी वस्तु भी सहज से नहीं मिलती क्योंकि वहां की भूमि बहुत उपजाऊ नहीं है।

जब हम उस देश में सैर करते हैं तो इस रीति को बहुत देखते हैं कि एक २ प्रकार के शिल्पकार एक संग गांव

में रहने चाहते हैं जैसा कि एक गांव में बहुत से लोहार और दूसरे में बहुत से टोपी बनानेहारे तीसरे में दरजी और चौथे में बढ़ई इत्यादि पाये जाते हैं। एक गांव में सूत काता जाता और दूसरे में बिना जाता और तीसरे में बिना हुआ कपड़ा बेचा जाता है और ऐसे गांव भी हैं जहां केवल ज़मीन्दार और उन के किसान लोग रहते हैं।

रूस देश के निवासी बहुत करके यूनानी धर्ममंडली में साझी रहते परन्तु वे सब धर्म्म की बातों में अज्ञान हैं। मासकाव नामे नगर में वे मसीह के जी उठने के दिन को बहुत मानते हैं। एक दिन पहिले से वे उस तेवहार के लिये बड़ी तैयारी करते हैं और जब आधी रात के समय घंटा बजता है तब एकाएक सैकड़ों तोप छुटने लगतीं और नगर के अढ़ाई सौ गिर्जेघरों के सब घंटे बजने लगते हैं और चारों दिशा में हज़ारों बत्तियां घरों के आगे जलाई जातीं और सब गली कूचों में लोग यह पुकारकर एक दूसरे को मिलने दौड़ते हैं कि भाई यीशु मसीह जी उठा है।

पर शोक की बात यह है कि जैसा और देशों में वैसा ही रूस देश में भी हज़ारों लोग हैं जो मसीह के पीछे हो नहीं लेते हैं। वे नाम के मसीही हैं पर काम के नहीं। आज कल उन में एक गुप्त सभा बहुत फैलती जाती है जिन के लोग यह मानते हैं कि जो कुछ संसार में है सो तुच्छ है कि राज्य बिगड़ा और धर्म्म बिगड़ा और लोकाचार बिगड़ा और कि जो कुछ है उस सब को नाश करना चाहिये। वे कहते हैं कि महाराजा उपद्रवी और उस के मंत्री लोभी

है बड़े लोग दुष्ट हैं और छोटे लोग अधम समस्त व्यवस्था बुरी और सब लोकाचार बिगड़ा हुआ है धर्मी लोग चोर और प्रधान अन्यायी हैं। सो वे कहते हैं कि पहिले हम को चाहिये कि सब राजाओं और अधिकारियों और कुलीन जनों को और सब व्यवस्थों और धर्ममंडलियों को नाश कर दें और जब संसार भली भांति इन से शुद्ध किया जावे तब हम अच्छे धर्म और राज्य को स्थापन करेंगे। परन्तु वे यह तो बता न सकेंगे कि इन से अच्छी बातें कहां से आवेंगी वा कैसे होवेंगी।

यह अद्भुत बात देख पड़ती है कि कोई मनुष्य ऐसी बातों को चित्त में लावे परन्तु यह मत जो निहिलिस्ट नाम से विख्यात है वहां बहुत बढ़ती जाती है। अब जो रूस का महाराजा है उन को अति वैरी और दुष्ट समझ के बहुत दिन लों उन से यहां तक डरता था कि अपने पितरों के सिंहासन पर अभिषिक्त न किया गया। वह सोचता था कि जैसा इन नास्तिक लोगों ने मेरे पिता को मार डाला वैसा मुझ को भी मार डालेंगे। और जब बहुत दिन के पीछे उस को राज्यतिलक दिया गया तब उन्हों ने उस के घात करने के बहुत उपाय किये और इन यत्नों से बहुतों को बड़े २ दण्ड दिये गये। बहुत दिन से महाराजा इन लोगों के डर से बंधुआ की नाईं अपने राज्यभवनों में रहा जिससे किसी दुष्ट को उसे मारने का अवसर न मिले। सत्य है कि दुष्टों को दया निर्दयता है।

एशियाई रूस ।

एशियाई इस वास्ते कहते हैं, कि रूस का मुल्क कुछ तो एशिया में पड़ा है और कुछ यूरप अर्थात् फ़रंगिस्तान में गिना जाता है, इस लिये एशियाई का बयान जो एशिया में पड़ा है एशिया के साथ, और यूरपी अर्थात् फ़रंगिस्तान के रूस का वर्णन जो यूरप में गिना जाता है, फ़रंगिस्तान के साथ किया जावेगा, बरन इस बादशाहत का ज़ियादः बयान फ़रंगिस्तान ही के साथ होवेगा, क्योंकि राजधानी इस की पिटर्सबर्ग फ़रंगिस्तान में बसी है। जानना चाहिये कि एशियाई रूस, जो सिवाये ककेशस के कोहिस्तानी ज़िलों के ४८ से ७८ उ० अ० तक और ५९ पू० दे० से १७० प० दे० तक चला गया है, उ०, उ० समुद्र से और द० चीन तूरान ईरान और एशियाई रूम से, पू० पासिफ़िक् समुद्र से, और प० फ़रंगिस्तानी रूस से घिरा हुआ है। विस्तार ३०००००० मी० मु०, साइबीरिया इस्तराख़ान और ककेशस के कोहिस्तानी ज़िले, ये तीन उस के बड़े हिस्से हैं। साइबीरिया यूरल पहाड़ से पासिफ़िक् समुद्र तक चला गया है, उस के नै० उन और वनगा नदी और कास्पियन झील के बीच इस्तराख़ान और उस के नै० कास्पियन झील, और ब्लाकसी के बीच ककेशस के कोहिस्तानी ज़िले हैं। पहाड़ों के दर्मियान इस मुल्क में अलताई और यूरल और ककेशस की श्रेणियां प्रसिद्ध हैं। इसी ककेशस को फ़ार्सी में कोह क़ाफ़ कहते हैं। उस का एलबुर्ज़ नामी एक शिखर प्राय १८००० फ़ुट समुद्र से ऊंचा है, अलताई इस मुल्क को

तातार से और यूरल उसे फरंगिस्तान से जुदा करता है। सब में बड़ी नदी इस मुल्क में औवो २५५० मी० लम्बी है। लेना दो हजार मी०लम्बी है। दोनों अलताई से निकलकर उ० समुद्र में गिरती हैं, और वलगा इस मुल्क को फरंगिस्तानो रूम से जुदा करती हुई कास्पियन सी में गिरती है। झील बैकाल को २५० मी० लम्बी और ५० मी० तक चौड़ी है। साइबीरिया के अ० की तरफ़ कमस्कटका का प्राय द्वीप प्राये ६०० मी० लम्बा है, और उस में कईएक ज्वालामुखी पहाड़ भी हैं, जार्जिया के इलाके में कास्पियन सी के प० कनारे दरख़्त और पानी से ख़ाली एक पटपड़ में बाकू की महा ज्वालामुखी है।

अफ़गानिस्तान।

यह देश हिन्दुस्तान और ईरान के मध्य में २५ से ३७ उ० अक्षांश और ५८ से ७२ अंश पू० देशान्तर तक विस्तरित है। द० दिशा में समुद्र उ० में तूरान पू० में हिन्दुस्तान और प० में ईरान इसकी सीमा है यह ९०० मी० अर्थात् ४५० कोस पू० से प० को लम्बा और प्रायः ८०० मी० वा ४०० कोस उ० से द० को चौड़ा है। इसका समग्र विस्तार ४९४०० मी० मु० है। अफगानिस्तान दो खण्डों में विभक्त है प्रथम उ० खण्ड अर्थात् मुख्य अफ़गानिस्तान और द्वितीय द० खण्ड अर्थात् बिलोचिस्तान। यद्यपि संपूर्ण देश अफ़गानिस्तान अथवा काबुल की राज्यधानी कहलाता है परन्तु वर्तमानावस्था में इस के प्रत्येक प्रदेश

के स्वामी पृथक २ बन बैठे हैं अब यह केवल कथन मात्र अमीर काबुल के आधीन रह गया है तिस में भी हीरात नगर का स्वामी तो स्वयं राजेश्वर (बादशाह) प्रसिद्ध है इस देश में बड़े २ पर्वत और निर्जन बन भी हैं और ये पर्वत प्रायः पू० और प० की ओर अधिक लंबे हैं। अफगानिस्तान में छोटी २ नदियां बहुत हैं पर मुख्य और भारी नदियां हीमंद, फरह और काबुल हैं इस देश की तटस्थ भूमि बड़ी उपजाऊ है। एतद्देश स्वादिष्ट और उत्तम मेवों के कारण सारे भूमण्डल पर प्रसिद्ध है और इस देश की प्रजा एक करोड़ चालीस लाख के आसन्न है। इस में कई एकविख्यात और मुख्य नगर हैं जिन का वर्णन क्रमशः नीचे के पंक्तियों में लिखा जाता है।

काबुल—३४ अंश १० कला उ०अ० और ६८ अंश १५ । पू० देशान्तर में समुद्र के तट से ६५०० फीट आसन्न उंचाई पर इसी नाम के नदी पर बस रहा है। यह नगर अति रमणीक और सुन्दर १॥ (१½) कोस के घेरे में बसा हुआ है प्रायः अफगानिस्तान के नगरों में से यही नगर अपने सुस्वादित और उत्तम २ मेवों के कारण मख्यात है हमारे भारतवर्ष में यहीं से हींग और मेवे आते हैं। इस में एक से एक मनोहर उपवन हैं और यही नगर पूर्वोक्त देश की राज्यधानी है इसके नै० कोण में एक छोटा दुर्ग बालाहिसार नामक बना है इसकी बस्ती ६०००० मनुष्यों की अनुमान की जाती है और इसी नगर के कारण युद्ध होताथा क्या आश्चर्य जो हमारी सेना की सेवा के लिये ये मेवा लगी थे।

ग़ज़नी—यह नगर काबुल से ५ कोस द० में समुद्र के तट पर ७७३० फुट ऊंचा बसा हुआ है। इस नगर में केवल १००००प्रजा है और इस की शहर पनाह पक्की (१¼)सवामील के घेरे में बनी है। यद्यपि इस नगर की अवस्था क्षीणता पर है तथापि प्राचीन समय के प्रधान यवनाधिपतियों की राज्यधानी थी और महमूद ग़ज़नवी के समय में इस नगर की तुलना कोई दूसरा नहीं कर सकता रहा उसने इस नगर को ऐसा शोभित किया था कि इस का प्रतिमा और न था।

कन्दहार—जिस को संस्कृत में गान्धार कहते हैं काबुल से २०० मी० या १०० कोस नै० कोण में ३५००० फीट ऊंचा तीन मी० के घेरे में बसाया है। इस में ५०००० प्रजा की बस्ती अनुमान की जाती है और इस के चारों ओर कच्ची शहर पनाहें बनी हुई हैं।

जलालाबाद—अफ़ग़ानिस्तान में पर्वतों की श्रेणी के मध्य काबुल नदी से एक मील की दूरी पर इस नाम का नगर प्रसिद्ध है। यहां पर नित्यश: हिम गिरा करता है परन्तु व्यापार की अत्यन्त सुगमता है। इस नगर के हाट की बनावट उत्तम नहीं है उस में केवल ५० दूकानें होंगी लेफ्टिनेन्ट वरनर साहेब बहादुर ने अपने निर्मित किये हुये ग्रन्थ में लिखा है कि उन्होंने इस नगर से अधिक मैला और भ्रष्ट नगर इस एशिया खण्ड के किसी भाग में नहीं पाया।
सन् १८४१ ख्रिष्टाब्दीय में सर रावर्ट सिविल बहादुर ने बड़े साहस और वीरता के साथ इस नगर को अपने आधीन कर लिया था परन्तु १८४२ ई० में जब इङ्गलण्ड निवासियों

ने अफगानिस्तान को छोड़ा तो चलते चलाते इसके दुर्ग को ध्वंस कर दिया जिसे शत्रुओं को अधिक चति भई। इस की प्रजा केवल २००० के असान्न सदा रहा करती है पर हिम ऋतु में जब अधिक पाला पड़ना प्रारम्भ होता है तब इस के समीपवर्ती पार्वतिक मनुष्य भी आकर इसे अपना वास स्थान मान कर शीतकाल को यहीं व्यतीत करते हैं और उस समय में २०००० के आसन्न प्रजा हो जाती है।

हिरात—अफगानिस्तान के एक रमणीक और सुन्दर स्थल में अति सुन्दर नगर जो हिरात नाम से प्रसिद्ध है काबुल से ५०० मील प० बसा हुआ है। यह नगर १६०० गज़ लम्बा और १४०० गज चौड़ा है। इसके परिमिति के चारों ओर समीचीन और दुस्तर खाई खन्दक बन रही हैं जिस में ४ विशाल द्वार नगर में प्रवेश करने के हेतु बन रहा है इस नगर के मन्दिर प्रायः दो खण्ड के हैं किन्तु राज्यमार्ग और वीथि संकेती, अन्धियारी और गन्धी हैं उचित स्थानों पर उत्तम से उत्तम आरामदायक आराम बन रहे हैं जगह २ पर स्वच्छ जल से पूरित तड़ाग जिनके आस पास नाना प्रकार के बाग लग रहे हैं शोभायमान पथिकों के सन्मान के लिये बने हैं वास्तविक अफगानिस्तान की भूमि में इस के समान मेरे जान कोई अन्य नगर नहीं है वास्तविक जो मनुष्य इस में जाता है उसका मन वहीं हिरा जाता है अतः इसका नाम हिरात पड़ा। इस के हाट बाट की रचना प्रशंसनीय है जगह २ मसजिदों के कंगूरे और प्रधान निवासियों के मन्दिर फरहरे दिखलाई पड़ते हैं। इस में १२००

दुकानें बनी हैं जैसी तलवार यहां की विख्यात है वैसी पृथ्वी पर दूसरी जगह नहीं बनती फारस देश वाले तो प्रायः यहीं से मंगा लेते हैं। वणिज व्यापार की भी यहां पर अति सुगमता है। लेफ्टिनेन्ट काटली ने इस नगर का वर्णन जहां तक उनकी बुद्धि विस्तरित हुई किया है। उक्त ग्रन्थकर्ता ने लिखा है कि इस देश में जल की नहरें जिससे मनुष्य को अत्यंत सुख होता है अगणित हैं और वे जलाशय बहुधा खेत सिञ्चन के लिए बड़ो उपयोगी होती हैं यहां का वायु और जल स्वच्छ-नशील है और किसी ऋतु का अभाव नहीं है अर्थात् हिम ऋतु में यहां पर शीत खूब चमकती है और सब ओर से हिम गिरता है। वर्षा ऋतु में पर्वतों पर जिधर से देखो उधर से निर्झरों में से जल झरा करता है ग्रीष्म ऋतु में श्री मार्तण्ड की प्रचण्ड किरणें अपने पराक्रम को दिखाती हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि यहां पर देखने की बहार है हम तो उसी को विहार भूमि समझते हैं। यद्यपि इस नगर की अब उतनी शोभा नहीं रह गई कि जितनी प्राचीन समय में थी क्योंकि इतिहास के लेख से ऐसा ज्ञात होता है कि किसी समय में इस देश के श्री का प्रकाश आकाश पर्य्यन्त पहुंचता रहा। और कभी न्यूनता पर न आई। शाह तयमूर की मुख्य राजधानी यही थी। सन् १७१५ में फारस देश के बादशाह ने इसे अफगानियों से छीन कर स्वतः स्वामी हो गये और सन १७३१ में यह नगर नादिरशाह के हाथ में पड़ गया। और अब पूर्ण आशा है कि यदि जगदीश्वर की इच्छा हुई तो सन् १८७८ में हमारी गवरमेंट के आधीन हो जावेगा इसके

प्रदेशों की प्रजा मिल कर ४५००० मनुष्यों के लगभग होती है। इस नगर में फ़ारसी अफ़गानिस्तानी, सञ्जिक, किज़्ज़ीबी, मोगल, हिन्दू, यहूदी, और भी अन्य अन्य देश के मनुष्य वास करते हैं।

अलीमसजिद—यह प्रसिद्ध स्थान भी जो खैबर की घाटी पर एक विख्यात और दृढ़ गढ़ है। इसी दुर्ग के समीप एक छोटी मसजिद (यवनों का देवालय) है, जिस के कारण यह इसी नाम से प्रसिद्ध हो गया। इस जगह पर एक किला है और जिस स्थल पर यह बना है वहां पर घाटी की चौड़ाई १५० गज और उंचाई २४३२ फीट पृथ्वी पर से है यह दुर्ग ६०० फीट की उंचाई पर खड़ा है। १८३९ खृष्टाब्दीय-मास जूलाई में सर्कारी फौज ने इस पर अपना अधिकार जमा लिया था और अफ़गानियोंने सन १८४१ में इसपर फिर धावा किया पर उन लोगों का परिश्रम व्यर्थ हुआ तत्पश्चात् यह खाली पड़ा रहा। तदनन्तर एक बार जेनेरल पालक महादुर ने इसपर चढ़ाई की और विजय का डङ्का फेरा। फिर जेनेरल नाट ने संपूर्ण प्रकार से अपने आधीन कर लिया। और अब सन १८७८ मास नवम्बर में हमारे विजयी और पराक्रमी जेनेरल विडल्फ और रावर्टस ने शत्रु को पीछे हटा स्थान को स्वाधीन कर लिया। वास्तविक हमारे सुजान जेनेरल रिपु दल को काई सदृश काटते चले जाते थे।

खैबर की घाटी—यह घाटी अफ़गानिस्तान की ईशान कोण में है। और यह खैबर का पहाड़ हिन्दुकुश (हिमालय की श्रेणी) जो सिंधुनदी के द० तट पर चली गई है उसी

यहां वाले हिन्दू कुश कहते हैं) और सुलेमान की श्रेणी से सम्बन्ध रखता है। इन पर्वतों के उच्चतम शृङ्ग समुद्र के तट से ५१०० फीट से अधिक नहीं है और पेशावर के मैदान से इन की उंचाई केवल २५०० फीट की है यह २० मी० चौड़ा है। यहां पर कई एक उत्तम घाटियां और दुर्रः बने हैं परन्तु तोपखाना: केवल खैबर की राहसे जा सकता है जो कि समुद्र के तट से ३३७३ फीट ऊंचा है। यही एक उत्तम मार्ग अफगानिस्तान जाने का है और यह ऐसा उपयोगी स्थान है कि इसे अफगानिस्तान का द्वार कहना चाहिये उचित है। इस घाटी पर कभी कभी झरनों की बाढ़ ऐसी आ जाती है कि जिस से उस देश निवासियों की बड़ी हानि होती है क्योंकि इस में जो वस्तु सन्मुख आ जाती है वह बह कर रसातल में मिल जाती है। और इस के दोनों पार्श्व में ६०० से १२०० फीट तक के ऊंचे पहाड़ हैं। जब अफगानिस्तान और अङ्गरेज़ों में प्रथम संग्राम हुआ था तब यहां पर घोर युद्ध हुई थी पर हमारी सर्कार के प्रताप के आगे कौन ठहर सकता है अङ्गरेजों ने बलात् और हठात् इस को क्षण भर में छीन लिया और पुन: १८४३ ई० अप्रेल मास में इस पर अपना अधिकार कर लिया हां यह निश्चय है कि शत्रुओं ने अशेष शत्रुता की होगी पर उन की विशेष हानि हुई और अन्तत: हाथ मींज कर रह गये।

हीरमन्द—एक बड़ा लम्बा चौड़ा नद है यह नद काबी फीरस्तान के पर्वतों से प्रारम्भ होता है और दो खण्ड में विभक्त होकर अब हामून में गिरता है। यह ५५० मील चौड़ा

समुद्र के तट से ११५०० फीट पर है। इसका वेग ऐसा है कि प्रायः इसके प्रवाह में नौकाओं का निर्वाह नहीं होता। जो भूमि इसके दोनों कूलों पर हैं वे हरितवर्ण मन हरनी और उपजाऊ हैं और जो भूमि कि तटस्थ नहीं हैं वे ऊसर व जल रहित पड़ी हैं। इससे बड़ा नद वहां और कोई नहीं है।

आमदनी—अफगानिस्तान की आमदनी कुछ न्यूनाधिक ५७०००००० रुपया वार्षिक है जिस में से ३४०००००० तो काबुल कन्दहार की और २००००० हिरात की व ३००००० बिलोचिस्तान की।

बिलोचिस्तान—मैं इसके पूर्व ही लिख चुका हूं कि बिलोचिस्तान अफगानिस्तान के उस भूमि का नाम है जो उसके द० भाग में है। अतः यहां पर उसके वर्णन करने की आवश्यकता नहीं हैं। इसमें ४ प्रधान नगर हैं और उनका भी यहां पर क्रमशः वर्णन किया जाता है।

किलात्—यह नगर काबुल से ४२५ मील नै० द० को झुकता हुआ आ बसा है। यही बिलोचिस्तान के स्वामी की राजधानी है और उस देश के स्वामी को खां कहते हैं॥

इसके चारों ओर १८ फीट ऊंची भीत है जिसमें उचित स्थानों पर तोप लाने के लिये मार्ग बने हैं परन्तु बहुत तोपों का ठिकाना वहां पर नहीं है इसका कारण यही है कि भीत मजबूत नहीं हैं जो उसका भार वहन कर सके इसमें ३ बिशाल द्वार हैं। इस के पूर्व भाग में खां के वास करने का राज्य मन्दिर बना है यह सुन्दर मन्दिर प्राचीन समय के

योग्याधिपतियों का रथ हुआ है। इस देश की हवेलियां उत्तम नहीं हैं मार्ग भी सकेता और मैला है पर यहां के बाजार में सर्व प्रकार की वस्तु प्राप्त हो सकती हैं और यहां का उत्तम प्रबन्ध यह है कि सब चीज सस्ती मिल सकती हैं। प० में छोटी २ पहाड़ियां हैं जिन पर खेत परबन्ध नहीं हो सकता और बिलकुल निरुपजाऊ हैं पर यहां पू० दिशा में ऐसी भूमि हैं जहां पर अन्न उपजता है और इन भूमियों में बहुत से उपवन भी हैं जिस में अंगूर, बादाम, अनार, अंजीर, शफ़तालू और भिन्न २ प्रकार के फल भी अत्यन्त उपजते हैं यहां के व्यापारिक लोग सिन्ध, बम्बई और कन्दहार में व्यापार भी करते हैं। यहकी तलवार और बंदूक भी अच्छी बनती है।

सन् १८३९ में इंगलैण्ड देशियों ने इन के साथ युद्ध किया था जिस संग्राम में खिलज्जा कर खां स्वयं पाणि में कृपाण ग्रहण कर रणभूमि में आ सनमुख खड़ा हो गया और वीर धर्म्मानुकूल रण में प्राणत्याग स्वर्ग की राह ली। कुछ काल के अनन्तर जब वहां पर अङ्गरेज़ों की थोड़ी सेना रह गई तो कुछ उपद्रवी और अधर्मी मनुष्यों ने सेनापति को मार डाला और स्वयं अधिकारी बन बैठे लेकिन फिर अङ्गरेजों ने छीन लिया। इस में १२००० के लगभग प्रजा वस्ती है जाड़ा में यहां पर अत्यन्त शीत पड़ती है। गरमी में वाम मनुष्यों का काम तमाम कर देता है और वर्षा काल में हिम की वर्षा होती है।

किला—इस नाम का नगर बोलन घाटी से २० मी वा०

कोण में समुद्र की तट से ५५६५ फीट पर बसा हुआ है इस में ३०० बर्ज हैं और इसके चारो तरफ भी एक भीत बनी हुई सब प्रकार की चीजें हाट में बिकने के लिए आती है व्यापार की व्यापार शिकारपुर, कन्दहार और खिरासात में होता है। काबुल के लड़ाई में अङ्गरेजों ने द्वितीय बार आधीन करलिया था यहां २००० मनुष्यों को । पहाड़ों पर बनेले बकरे। शूकर और भेड़ियों की बहुतायत है। कम्बल और दरी के बनाने में एतद्देशीय बड़े गुणी हैं। अब इस स्थान पर अङ्गरेजों की छावनी है ।

बोलन का रास्ता घाटी ॥ यह एक अत्यन्त कठिन और भयानक घाटी सारवान हाता के ई० कोण पर बहे ऊंचे अड़बड़ पहाड़ों के शृङ्गों के मध्य में है । इसका शिखर समुद्र के तट से ५७३८ फीट ऊंचा है और ९४ मील के आसन्न चौड़ा है । लेफ्टेनेन्ट काटली ने लिखा है कि हमारे लेखनी को इतनी सामर्थ नहीं है जो इस स्थान के दुर्घट होने का वर्णन कर सकें।

ऐसे दुस्तर मार्ग में प्राण पर बन आती है। कोई२ स्थान ऐसे हैं कि जहां पर एक गली से अधिक राह नहीं तिसपर भी दोनों पार्श्व में पर्व्वत भीत के नांई खड़े हैं । ग्रीष्म ऋतु में तो जी व्याकुल होजाता है। वहां का वायु और जल ऐसा उत्तम है कि यदि कोई भला चङ्गा आवे तो रोगी बनजावे ज्येष्ठ आषाढ़ में पथिक नहीं चलते ऐसेही जब कभी राज्य दूतों को अत्यावश्यक कार्य रहता है तो आते जाते हैं। इसमें एक नदी भी है और जब वर्षा होती है तब इस

नदी की ऐसी बाढ़ आती है कि अनर्थ हो जाता है जो कुछ साम्हने पाया बहा ले गई० । सन १८३९ के लड़ाई में हमारे सैनिकों ने इस मार्ग को ६ दिन में पार किया था। और इसी कारण से १८७९ ई० के युद्ध में विशेष सेना खैबर से गई है। इन्ही मार्ग के भ्रष्टता से तो लड़ाई चली जाती थी नहीं तो कभी हमारे जेनेरल अमीर के राज्य म न्दरों में अपनी छावनी कर लेते ।

ईरान ।

२५ से ४० उ० अ० तक, और ४४ से ६५ पू० दे० तक। उ० रूस और तूरान और कास्पियन सी, द० ईरान की खाड़ी (दर्याइ उम्मा), पू० अफ़गानिस्तान प० ऐशियाई रूस। विस्तार ५६०००० मी० मु० आमदनी ३०००००० रुपया साल। नीचे इस मुल्क के सूबों के साम्हने उन के बड़े शहरों का नाम लिखते हैं॥

नम्बर	नाम सूबों का	नाम शहरों का
१	आज़रबाय जान उ० रूम और रूस की हद पर	तबरेज़
२	गुर्दिस्तान आज़रबाय जान के द०	करमंशाह
३	लूरिस्तान गुर्दिस्तान के द०	खुर्रमाबाद
४	खुज़िस्तान लूरिस्तान के द० समुद्रतक	दिज़ फुल
५	फ़ार्स खुजिस्तान के पू०	शीराज़
६	लारिस्तान फ़ार्स के द० समुद्र तक	लार
७	कर्मा फ़ार्स के पू०	कर्मां
११	खुरासान कर्मां के उ०	मशहद
१२	इराक़ फ़ार्स के उ०	इसफ़हान ।
		तिहरान
८	माज़ंदरान् इराक़ के उ०	सारी
९	गीलां माज़ंदरान् के प०	रश्त
१०	अस्तराबाद गीलां के उ०	अस्तराबाद

हुर्मुज़ और कारक इत्यादि कई टापू, जो ईरान की खाड़ी में हैं इसी बादशाहत में गिने जाते हैं। राजधानी तिहरान ३६ ४० उ० अ०, ५० ५२ पू० दे० में है। इस्फ़हान पुरानी राजधानी वहां से २५० मी० द० ज़िंदरूद के कनारे है। और ५०० मी० द० शीराज़ है। शीराज़ से ३० मी० प० अति प्राचीन राजधानी इस्तख़र के, जिसे अङ्गरेज़ पर्सि पोलिस कहते हैं, अब तक निशान मौजूद हैं।

अर्बस्थान का वर्णन।

अर्बस्थान का वर्णन प्राचीन काल से बहुत चला आता है। यह देश बहुत बड़ा है परन्तु मरुभूमि और वीरानों और

पहाड़ों के मारे उस के निवासी बहुत कम हैं। बाइबिल में उस का नाम पूर्वीभूमि कहलाता है और उस के लोग पू० के निवासी नाम से प्रसिद्ध हुए। वह मिसर देश से लेके फुरात की नदी और फारस के समुद्र लों फैला हुआ है और उ० द० उस की लंबाई १८०० मी० और उस की चौड़ाई १००० मी० है। देश तीन भागों में बंटा है अर्थात् बन और पहाड़स्थान और सुभाग्य अर्बस्थान। प्राचीन दिनों में उस देश में बहुत से भिन्न २ बंश रहते और फिरा करते थे अर्थात् अदूमी और मोआबी और मिद्यानी और अम-लोकी और इस्माएली जो अबिरहाम के पुत्र इस्माईल के बंश के कहलाते हैं। इस के पीछे इन सब बंशों के लोग मिलकर एक नाम अर्थात् सारसीन नाम से प्रसिद्ध हुये। पहिले अर्बी लोग अपने आरम्भ को अब के पुत्र युक्तान से जो नूह के बंश में से था वर्णन करते थे और उन में से बहुत हैं ऐसी से निकले हुए होंगे और बहुतों का परदादा इस्माईल था।

आजकल के अर्बी लोग विशेष करके दोही सन्तान में वा दोही प्रकार के लोगों में बंटे हैं अर्थात् नगरवासियों और बन के रहनेहारों में जिन को बेदावी भी कहते हैं। इन दोनों में नाना प्रकार का भेद पाया जाता है। उन के ब्यो-हार अलग २ हैं और उन के स्वभाव भी बहुत अन्तर पाया जाता है। एक प्रकार के लोग बस्ती में बसे रहते और अपने लिये अच्छे २ घर बनवाते हैं। दूसरे झुण्डों को लेकर इधर उधर मारे फिरते हैं और अपने रहने के लिये डेरों को अधिक चाहते हैं। बस्तीवाले अच्छे मकानों और घरों से प्रसन्न होते

हैं। वे शिल्पविद्या और व्योपार बहुत करते हैं और लेन-देन करके बहुत रुपये अपने लिये प्राप्त किया चाहते हैं। परन्तु इस्माईल के वंश बाहर जंगल और पहाड़ों में फिरने को अधिक चाहते हैं। उन की धन संपत्ति केवल पशु हैं वे ऐसे डेरों में रहा करते हैं जो ऊंट के बालों से बनते हैं और आज तक वहां वह बात बहुत देखने में आती है जिस की भविष्यवाणी इस्माईल के विषय में सैकड़ों वर्ष आगे से कही गई थी कि वह जंगली मनुष्य होगा और उस का हाथ सब के विरुद्ध और सब के हाथ उस के विरुद्ध होंगे और वह अपने सब भाइयों के संमुख रहा करेगा। उत्पत्ति की पुस्तक का १६ पर्ब्ब १२ पद। इन लोगों को बन में नाना प्रकार के कष्ट होते हैं वे बहुधा भूख प्यास से बहुत मारे जाते हैं और कभी कभी ऐसी भारी आंधियां चलती हैं कि जिस से कोई भागकर बच नहीं सकता है और बहुत से मनुष्य और पशु पक्षी बालू में दबके मर जाते हैं।

अर्बी के लोग बलवान और चुस्त चालाक हैं और गर्मी सर्दी के अच्छे सहनेहारे हैं और वे बाहर वायु में बहुत चलते फिरते हैं इस कारण उन की समझ और चिन्ता भी ठीक रहती है। बड़े २ बनों में जहां कि और लोग बड़ी कठिनता से कोई बात देख सकें वरन जहां और लोगों की दृष्टि भी नहीं पहुंचती वे लोग देखकर वर्णन कर सकते हैं कि देखो अमुक यात्री आता है वा जाता है। और शब्दों को भी वे बड़े सहज से पहचान कर लेते हैं कि शब्द कहां से आता वा क्या बात है। अर्बियों की एक अद्भुत सामार्थ्य यह है

कि किसी के पांव के चिन्ह को जंगल की बालू में देखकर बता सकते हैं कि यह जो चला गया हमारे सन्तान का है वा और किसी बंश का। फिर बहुत करके वे यह कहसकते हैं कि जिस के पांव के चिन्ह यह दिखाते हैं सो आज यहां होके गया है वा कई दिन हुए और यह भी कि वह बोझ लिये जाता था वा कि खाली हाथ चला जाता था। यदि जंगल में अर्बी लोग किसी अनदेखे बैरी का पीछा करते हैं तो उस के पांव के चिन्ह से समझ लेंगे कि बैरी थका मांदा है वा कि बड़े बल और विश्राम से चलता है और यह भी कि उस का पीछा करना चाहिये अथवा नहीं। विशेष करके वे ऊंट के पांव के चिन्हों को बालू में बहुत देखा करते हैं और जब उन का कोई ऊंट भटक जाय तो मरुभूमि के बीच में भी वे उस का पीछा करके उस को पकड़ लाते हैं।

प्राचीन दिनों से उन में राजाओं की नाईं अधिकारी होते आये हैं जो एक २ अपने २ घराने के लोगों पर अधिकार किया करता है। इन प्रधानों को वे शेख कहते हैं और उन्हीं की आज्ञाओं को बहुत मानते हैं फिर कई घरानों के मिलने से उन सब के ऊपर एक महाशेख हो जाता है जिस का बड़ा अधिकार होता है।

वे अर्बी लोग जो डेरों में रहते हैं अधिक हैं क्योंकि वे इस प्रकार के निवास से बहुत प्रसन्न होते हैं। उन के एक २ डेरे के दो भाग होते हैं एक पुरुषों के लिये और दूसरा स्त्रियों के लिये और उन के पास सामग्री बहुत कम पाई जाती है जैसे कि जीन अर्थात् काठी और पलान जो ऊंटों

के चमड़े के होते हैं दूध और मक्खन रखने के लिये मशक के समान बकरी के चमड़े के भी होते हैं और पानी भरने को चमड़े के डोल इत्यादि को छोड़ अन्न पीसने के लिये चक्की के दो पाट और ओखली और काठ के कठरे बस।

अर्बियों के अलग २ सन्तानों के बीच में कई प्रकार के वस्त्र देखने में आते हैं जो लोग सुभाग्य अर्बस्थान में अर्थात् उस भूमि में जहां कि बहीं में अधिक रहा करते हैं वे तुर्क लोगों की नाई वस्त्र पहिना करते हैं। परन्तु वनों के अर्बी गाढ़े का कुरता पहिनते और उस के ऊपर ऊन का बना हुआ मोटा चोगा पहिनते हैं और उन में जो अधिक धनी हैं वे चोगा की सन्ती से अबा पहिनते हैं और उस में कभी २ सोने के बूटे भी बने रहते हैं। कभी २ कई टोपियां तले ऊपर पहिनते हैं और ऊपरवाली टोपी में कुरान की कई बातें सोने के तारों से बनी हुई रहती हैं और जब कोई अधिक माहात्म्य दिखाया चाहता है तो इन सब टोपियों के ऊपर एक बहुत सुन्दर और बहुमूल्य रूमाल डालता है जिस में सोने के तार के गुच्छे लटकते हैं।

स्त्रियों का पहिनावा अर्ब में अधिक सादा होता है विशेष करके उन की साड़ियां निरी काली वा पीली होती हैं और कुरता भी वैसा ही और सिर पर सादा रूमाल बांधती हैं और सर्दी गर्मी में बिन जूतियां नंगे पांव फिरा करती हैं। वे नाना प्रकार के गहनों से बहुत आनन्दित रहती और नाक और कान में चांदी की बालियां बहुत पहिनती हैं। और उन की यह भी रीति है कि होठों पर गुदना

गुदवाती हैं और उस में ज़र्द रंग भरवातीं वे आंखों में सुन्दरता के लिये सुरमा अधिक लगाती हैं। बहुधा उनकी स्त्रियां परायों से बहुत परदा रखती हैं। जब कोई अर्बी किसी यात्री को अपने डेरे के पास लाता है तो दूर से यह पुकारा करता है कि तरक तरक और इस शब्द को सुन के स्त्रियां छिप जाती हैं।

अर्बी लोग अपनी स्त्रियों से बड़ी निर्दयता से परिश्रम करवाते हैं जो कहीं जाना हो तो स्त्रियां बोझ उठा के चलती हैं और पुरुष उनके संग खाली हाथ वा केवल हुक्का लिये चलता है यह देखने में आया है कि बनके अर्बी लोग अमीर२ अपनी स्त्रियों के सिर पर ऐसा बोझ रखते हैं जिस को आप बड़ी कठिनता से उठा सकें और खाली हाथ उस के आगे २ चले जाते हैं। बरन लड़कों की रखवाली और शिक्षा जो स्त्रियों का सब से भारी काम है उस को अर्बी माता कुछ भी चित्त में नहीं लाती हैं और उन के लड़के-बाले मारे फिरते और निश्चिन्तता और मूर्खता और मलीनता में पड़े रहते हैं। कारण इस का यह नहीं कि वे अपने बच्चों से प्रीति नहीं रखतीं बरन यह कि वे नहीं जानतीं कि इस के लिये कोई भला व्यवहार इस से हो सकता है।

यद्यपि अर्बियों में निर्दयता अधिक होती है तथापि बन के रहनेहारों में नाना प्रकार की सुशीलता भी देख पड़ती है। यह नहीं कि गांव के रहनेवालों की नाईं वे बहुत चमोपत्तो करते हों वे नगरवासियों के समान किसी परोसी से मिलकर यह न कहेंगे कि आप को सहस्रों

सलाम आप सकल नगर के पाहुन हैं जो कुछ इस अधम घर में है वह सब आप का है। किन्तु बनवाले अपने परंपरों की रीति पर प्रेम से यह कहेंगे कि तुम्हारा भला हो और जो पाहुन उनके साथ नमक खाता है उस को कष्ट से बचावेंगे।

परन्तु अर्बी लोगों की अति बुरी बात यह है कि बड़े चोर प्रसिद्ध हैं वे मानो लूट के माल को अपना समझते हैं। वे यह नहीं कहते कि मैं ने लूटा वरन यह कि मैं ने पाया मानो निज धन कहीं पड़ा देखा। बेचारे यात्रियों की घात में वे लगे रहते और उन का सारा माल लूटते हैं परन्तु यदि वह उन से लड़ाई न करे तो बहुधा उसे बध नहीं करते। परन्तु हाय उस यात्री पर जो अपनी सामग्री के बचाने में किसी प्रकार का लहू बहावे क्योंकि वह अवश्य मारा जायगा। सवार भी उन से नहीं बच सकता वरन उस के घोड़े पर पीछे से फांदकर बटमार एक हाथ से सवार को दबा लेता है। और दूसरे हाथ से उस की सारी बस्तु छीन लेता है जब कि फ्रांसीसियों की सेना मिसर को गई तो अर्बी लोग जब उन लोगों को सोते पाते थे तब सिपाहियों और सवारों के खड्गों को कोश से छीन लेते थे और उन के बस्त्र इत्यादि को देह के नीचे से चुरा लेते थे।

फिर अर्बी लोग उन लोगों को छोड़ जो सुभाग्य अर्ब के निवासी हैं कुछ अन्न उत्पन्न नहीं कर सकते इस का कारण एक यह भी है कि उन मरु भूमियों में जहां कि वे फिरा

करते हैं ऐसी ज़मीन कम मिलती जिस में अन्न उपजे। बरन आपस में ऐसी विरुद्धता रहती है कि यदि किसी के खेत में कुछ उत्पन्न भी होवे तो उस के परोसी उसे काटते चुराते हैं। रोटी की सन्ती में वे बहुत करके अंजीर खाते हैं बरन खजूर के पेड़ से बेदावी लोगों की बहुत जीविका होती है अंजीर को नाना प्रकार से भोजन के लिये पकाते और तैयार करते हैं और उन में यह कहावत प्रसिद्ध है कि चतुर घरवाली महीने भर लों प्रतिदिन अपने घरवालों को नये २ प्रकार से अंजीर खिला सकती है।

अर्बी लोग अच्छे घोड़ों को बहुत चाहते हैं और उन की ओर अपनी प्रीति बहुत दिखाते हैं। जब वे अपने घोड़ों से कुछ कहते वा उन के विषय में कुछ कहते हैं तो बड़े प्यार और दुलार के नाम काम में लाते हैं और बहुधा जब लों कि कठिनाई उन को निपट न सतावे तब लों वे उन के बेचने को प्रसन्न नहीं होते।

अर्बी लोग बहुत करके मुहम्मदी होते हैं परन्तु उन में थोड़े ऐसे हैं जो कुरान की शिक्षाओं को जानते हैं वा बता सकते हैं कि मुहम्मदी होना क्या है। उस देश में पाठशाला बहुत कम हैं और जो हैं भी सो अच्छी नहीं हैं। किसी यात्री ने अर्बियों की एक पाठशाला को देखा और उस ने उस का यों हृत्तान्त कहा है कि जब हम पाठशाला के द्वार के समीप पहुंचे तो द्वार के बाहर बहुत फटी पुरानी जूतियों का ढेर पड़ा देखा और भीतर से लड़कों की बड़ी चिल्लाहट सुनने में आई। हम दोनों को भीतर आते देखकर निस्सन्देह

लड़के थोड़ा सा चुप रहे क्योंकि हम लोगों को रूप और वस्त्र लड़कों को नवीन देख पड़े परन्तु शिक्षक यह न चाहता था कि हमारे जाने से कुछ भी मौन होवे। उस ने चाहा कि मैं साहिब लोगों के आगे अपना उत्साह प्रगट करूं सो एक बेंत लेकर लड़कों को इधर उधर मारने लगा यह लों कि पहिले से अधिक गड़बड़ और कोलाहल होने लगा। जो बड़ते थे वे ऊंचे शब्द से पढ़ने लगे और जिन के पास पुस्तकें भी न थीं वे पुस्तकवालों को नाईं बड़े शब्द से चिल्लाने लगे। ऐसा प्रगट होता था कि जो लड़का सब से महाध्वनी ठहरे वही सब से अच्छा गिना जायगा और शिक्षक अपराधियों और निरपराधियों को एक ही रीति से मारकर बड़े घमंड से बैठ गया मानो समझा कि साहिब लोगों के साम्ने मैं ने बहुत उत्तम काम किया और निश्चय वे मेरी और मेरी पाठशाला की बड़ी प्रशंसा करेंगे। उस पाठशाला में श्रेणियों का नाम तक भी पाया नहीं जाता था वरन संपूर्ण पाठशाला का काम गड़बड़ था। बहुतों के पास पुस्तक का केवल थोड़ा सा टुकड़ा था और बहुतों के पास कुछ भी नहीं था। एक लड़का अकेला अपना पाठ सुनाता था और शिक्षक सुनने में चित कुछ उस की ओर और कुछ लड़कों की ओर जो उस समय दुष्टता करते थे। लगाये था। उन को बहुत सी बातें बिन स्मरण किये और बिन अर्थ बूझे सिखाई जाती। थीं प्रतिदिन के सुनने से कोई बात बता तो सकते थे परन्तु समझने और समझाने को किसी प्रकार का उपाय वा परिश्रम कुछ भी नहीं होता था।

कुछ आश्चर्य नहीं कि अर्ब के लड़के ऐसी पाठशालों में बहुत थोड़ा ज्ञान प्राप्त करते हों वरन आश्चर्य यह है कि ऐसे उपायों से उन को इतना भी क्योंकर प्राप्त होता है मैं ने देखा कि एक लड़के ने अपनी पुस्तक में से एक पद पढ़ा परन्तु मैं ने उस को दूसरी पुस्तक दिई जिस में वही पद आगे के पृष्ठ में लिखा था सो वह उस के स्थान को भी न पा सका तो ऐसा पढ़ना किस काम आवेगा। दूसरे को जो पढ़ता था मैं ने वर्णमाला लिखाई और वह एक अक्षर भी न लिख सका। दूसरे स्थान में मैं ने एक बूढ़े शिक्षक को देखा जो अपने स्थान से उठ कर बेंत से बिन देखे इधर उधर अपने लड़कों को मार रहा था जिस का फल यह हुआ कि निश्चिन्त लड़के जो इधर उधर देखते थे वे बेंत की चोट से बच गये परन्तु जो लड़का अपनी पुस्तक पर चित्त लगाये हुए बेंत की ओर न देखता था वही मार खाता था और इस उत्तम उपाय से अच्छे लड़कों को दण्ड और बुरे लड़कों का बचाव हुआ।

अर्बी लोगों के बाइबिल के उपदेश के लिये अब लों बहुत कम यत्न किया गया है इस कारण कि उन के भटके फिरने से अच्छे उपदेशक उन के संग कम रह सकते हैं वरन उनके लिये कुछ करना कठिन भी देख पड़ता है क्योंकि उन की जंगली रीति को जो दो सहस्र वर्ष से चली आती है परमेश्वर की सामर्थ्य को छोड़ और कौन बदल सकता है। यह बात आश्चर्य की देख पड़ती है कि अबिरहाम के दोनों पुत्रों के वंश इस बात में मिलते हैं कि यद्यपि सहस्रों वर्ष

और सन्तानों के बीच में रहते हैं तथापि उन में मेल नहीं पाते हैं ।

तूरान ।

अथवा तुर्किस्तान, जिसे अङ्गरेज़ इंडिपेंडंट टार्टारी अर्थात् स्वाधीन तातार कहते हैं, ३५ से ५१ उ० अ० तक, और ५२ से ७४ पू० दे० तक चला गया है । प० कास्पियन सी (बहरे खिज़र) एक बड़ी झील है, २५० मी० चौड़ी और ६५० मी० लम्बी, बड़ी और खारी होने से कारन सी और बहर अर्थात् समुद्र कही जाती है । अल-ताई के पहाड़ तूरान को उ० रूस से, बिलूरताग़ के पहाड़ पू० चीनी तातार से और हिन्दूकुश के पहाड़ द० अफ़ग़ा-निस्तान से जुदा करते हैं । ये सब पहाड़ एक दूसरे से जुड़े और हिमालय से मिले हुए हैं । द० तरफ़ तूरान की सहद्द जेहूं पार बराबर कास्पियन तक ईरान से मिली है । बिस्तार १०००००० मी० मु० । आमदनी ४८००००० रुपया साल । जेहूं और सैहूं प्रख्यात नदियां हैं । जेहूं जिसे अङ्गरेज़ी में आक्सस और संस्कृत में चक्षुस कहते हैं १३०० मी०, और सैहूं ८०० मी० बहती है । झील अराल को, जिसे बहरे खारज़म भी कहते हैं, २५० मी० लम्बी और ७० मी० चौड़ी है । जैहूं और सैहूं दोनों बिलूरताग़ पहाड़ से निकल कर इसी झील में गिरती हैं । बदख़शां का इलाक़ा अ० में हिन्दू-कुश के उ० है । राजधानी बुख़ारा सुग़द नदी के दोनों कनारों पर बसा है । समरक़न्द वहां से १५० मी० पू० है । यद्यपि यह सारा मुल्क बुख़ारा की सल्तनत में गिना जाता

हैं, लेकिन उस के दर्मियान खीवा अथवा ख़ारज़म् बा० को खोक़न्द अथवा कोकन इं० को कुंदुज़ अ० को, इन तीनों इलाक़ों के ख़ान अर्थात् हाकिम केवल नाम मात्र को बुखारा के आधीन हैं।

एशियाईरूम।

इस को एशियाई रूम वास्ते कहते हैं कि रूम की सल्तनत एशिया और फ़रंगिस्तान दोनों खंडों में पड़ी है, यहां केवल उसी भाग का बर्णन होता है जो एशिया में है, विस्तार पूर्वक इस बादशाहत का बयान फ़रंगिस्तान के साथ होवेगा, क्योंकि उस की दारुस्सल्तनत क़ुस्तुन्तुनीया उसी खंड में बसी है। फ़रंगिस्तानवाले इस मुल्क को एशियाटिक टर्की अर्थात् एशियाई तुर्किस्तान पुकारते हैं, परंतु इस में शाम की सारी विलायत और अरब और ईरान के भी हिस्से हैं। गये तीन हज़ार बरस के अर्से में जैसा उलट फेर बादशाहतों का ज़मीन के इस टुकड़े पर रहा है, कदापि दूसरी जगह सुनने में नहीं आया, कभी यूनानियों ने लिया, कभी रूमियों ने दबाया, कभी ईरानियों के अमल में आया, कभी अरबों के दख़ल में गया, कभी तातारियों ने उसे लूटा, कभी फ़रंगियों ने उस पर चढ़ाव किया, और तमाशा यह कि जब जिसने इस मुल्क को फ़तह किया नये नये नामों से नये नये सूबे और नये नये ज़िलों में बांटा। ईसाइयों की प्राचीन पुस्तकों में लिखा है कि ५८५८ बरस गुज़रते हैं ईश्वर ने पहला मनुष्य इसी मुल्क में पैदा किया, और फ़ान केतू बाद नूह का जहाज़ इसी मुल्क में लगा, इसी मुल्क

से मनुष्य सारी दुनियां में फैले, और इसी मुल्क में पहले प्रतापी राजा हुये। धरती खोदने से अद्यावधि मूर्ति इत्यादि ऐसी ऐसी वस्तु अति प्राचीन निकलती हैं कि जिन से उस देश का किसी समय में महापराक्रमी राजाओं से शासित होना बखूबी साबित है। ईसा मसीह इसी देश में पैदा हुए थे, और इसी कारण यहां उस मतावलंबियों के बड़े बड़े तीर्थस्थान हैं। निदान यह एशियाईरूम ३० से ४२ अंश उत्तरअक्षांश और २६ से ४८ अंश पूर्व देशांतर तक चला गया है। सीमा उसकी पूर्व ईरान, दक्षिण अरब, पश्चिम मेडिटरेनियन, और उत्तर डार्डनल्स मार्मोरा बास-फोरस और ब्लाकसी नामक समुद्र की खाड़ियां। पू० से पश्चिम को हज़ार मील लंबा और उत्तर से दक्षिण को नौ सौ मील चौड़ा चार लाख नव्वे हज़ार मील मुरब्बा के विस्तार में है। आदमी उस में अनुमान एक करोड़ बीस लाख होवेंगे, और इस हिसाब से आबादी उसकी पच्चीस आदमियों को भी फी मील मुरब्बा नहीं पड़ती। शाम का मुल्क फुरात नदी और मेडिटरेनियन के बीच में पड़ा है, उसी के दक्षिण भाग में फ़िलिस्तीन है, जहां से ईसाई मत की बुनियाद बंधी; और जिसे ईसाई लोग पवित्रभूमि कहते हैं। फुरात के पर्व दियारबक्र है, उसका दक्षिण भाग अरबी इराक़ और पूर्व भाग गुर्दिस्तान अथवा कुर्दिस्तान कहलाता है, और उसके उत्तर तरफ़ रूम का इलाक़ा है; जिसे अंगरेज़ आर्मिनिया कहते हैं। एशियाईरूम में पहाड़ बहुत हैं और मैदान कम। शाम के अग्निकोन में बड़ा भारी

उजाड़ रेगिस्तान है। पहाड़ों में टारस और अरारात मश-हूर हैं, टारस की श्रेणी मेडिटरेनियन के तट से निकट ही निकट खुलदूनियां अन्तरीप से फुरात नदी तक चली गई है, और अरारात जिसे जूदी का पहाड़ भी कहते हैं इस में रूस और ईरान की सर्हद पर १७००० फुट समुद्र से ऊंचा है, ईसाइयों के मत बमूजिब तूफ़ान के बाद नूह का जहाज़ इसी अरारात पर आकर लगा था। नदियों में दजला और फुरात जो बसरे से कुछ दूर ऊपर मिलकर शातुलअरब के नाम से ईरान की खाड़ी में गिरती हैं नामी है। फुरात १५०० मील लंबी है, और दजला ८०० मील। बालबक से अनुमान ४० मील पश्चिम मेडिटरेनियन के तट से निकट जबैल के नीचे इबरिम नदी बहती है, उसका पुराना नाम अडो-निस है, और उसका पानी गेरू इत्यादि के मिलने से जो अवश्य उसके कनारे पर कहीं होगा साल में एक बार लाल हो जाता है, वहां के नादान आदमी खयाल करते हैं कि किसी ज़माने में अडोनिस नाम एक आदमी को शिकार खेलते हुए सूअर ने मार डाला था उसी का लहू हर साल उस नदी में आता है। झील डेडसी की जिसे बहरेलूत भी कहते हैं फ़िलिस्तीन के दक्षिण भाग में प्राय ५० मील लंबी होवेगी, पानी उस का निरा खारा, और आस पास के पहाड़ बिलकुल उजाड़ दरख़्त उन में देखने को भी नहीं, क्या ईश्वर की महिमा है कि इस झील के नज़दीक न तो कोई दरख़्त जमता है, और न उस में कोई जीव जन्तु जीता है। आबहवा अच्छी और मौतदल पर सब जगह एकसी नहीं

है, ऊंचे पहाड़ों पर यहां तक सर्दी पड़ती है कि वे सदा बर्फ़ से ढके रहते हैं, और रेगिस्तानों के दर्मियान समूम चला करती है। आदमी वहां के काहिल और ग़लीज़ हैं, इस कारण वबा अर्थात् मरी अकसर फैल जाती है। भूंचाल उस मुल्क में बहुत आता है। धरती अकसर जगह उपजाऊ है, पर यहां वाले खेती में मिहनत नहीं करते, तो गेहूं मक्की रुई तमाकू क़हवा अफ़यून मस्तकी जिसे लोग रूमी मस्तगी कहते हैं ज़ैतून अंगूर सालिब मिसरी इत्यादि बहुत प्रकार के अनाज मेवे और दवाइयां पैदा होती हैं, बकरियों से वहां एक क़िस्म का पश्मीना हासिल होता है, और रेशम भी वहां का पैदाइशों में गिना जाता है। गधे घोड़े खच्चर ऊंट लकड़बघे रीछ भेड़िये गीदड़ इत्यादि घरेलू और जंगली जानवर इफ़रात से हैं, पर टिड्डियों का दल वहां अ़रब के रेगिस्तान से ऐसा बादल सा उमड़ता है कि बहुधा खेती बारियां बिलकुल नाश हो जाती हैं, यदि अग्नि कोन की हवा जो वहां अधिक बहती है उन्हें समुद्र में लेजाकर न डुबाया करे तो वे शायद सारे पृथ्वी के तृण औषध को भक्षण कर जावें। खान तांबे की उस मुल्क में एक बहुत बड़ी है। रोड्स और सिपरस के टापू मेडिटरेनियनसी में इसी बादशाहत के ताबे हैं। यह वही रोड्स है जहां के बंदर पर किसी ज़माने में एक मूर्ति पीतल की सत्तर हाथ ऊंची खड़ी थी और उस की टांगों तले से जहाज़ पाल चढ़ाए निकल जाते थे, सिपरस को कुपरस भी कहते हैं। आदमी इस मुल्क के तुर्कमान यूनानी अर्मनी गुर्द और

अरब मुसल्मान और अकसर ईसाई भी हैं, यूनानी तुर्की यूनानि शामी फर्सनी अरबी ईरानी सब बोली जाती हैं। चीज़ों में वहां रेशमी कपड़े क़ालीन और चमड़े बहुत अच्छे तयार होते हैं, और दिसावरों को जाते हैं। बग़दाद हलब दमिश्क़ अर्ज़रूम समिर्ना बसरा मूसिल और बैतुलमुकद्दस इस मुल्क में नामी शहर हैं। बग़दाद ३३ अंश २० कला उत्तर अक्षांश और ४४ अंश २४ कला पूर्व देशांतर में दजला नदी के दोनों कनारों पर शहरपनाह के अंदर बड़ा मशहूर शहर है, सन् ७६२ में मुहम्मद के चचा अब्बास के पड़पोते खलीफ़ा मंसूर ने उसे अपनी दारुस्सलतनत ठहराया था; और फ़िर उस के जानशीनों के समय में जिन के नाम का ख़ुत्बा (१) गंगा से लेकर नील (२) नदी बरन अटलांटिक समुद्र पर्यन्त पढ़ा जाता था उस ने ऐसी रौनक़ पाई कि जिसका वर्णन अलफ़लैला की सैंहां अद्भुत कहानियों में किया है। अब उस में अस्सी हज़ार आदमियों से अधिक नहीं बस्ते। सन् १२५७ में जब चंगेज़खां के पोते हलाकू वहां के खलीफ़ा मुस्तासिमबिल्लाह को मार कर शहर लूटा आठ लाख आदमी उस के अन्दर मारे गये थे। सन् १४०१ में उसे अमीर तैमूर ने लूटा और जलाया, और सन् १६३७ में रूम के बादशाह चौथे मुराद ने, जिसे अङ्गरेज़ अमूरात कहते हैं, तीन लाख फ़ौज से चढ़ाव करके उसे अपने क़ब्ज़े में कर लिया। हलब बग़दाद से ४७५ मील

(१) ख़ुतबा मस्जिद में बादशाह के नाम से पढ़ा जाता है।

(२) अफ़रीक़ा में मिसर के नीचे बहती है।

पश्चिम वायुकोण को झुकता शहरपनाह के अन्दर आठ मील के घेरे में अढ़ाई लाख आदमियों की बस्ती बड़ी तिजारत की जगह है, उस की मसजिदों के सफ़ेद सफ़ेद मीनार और गुम्बज़ बड़े बड़े लंबे सर्व के दरख़्तों में बहुत भले और सुहावने मालूम होते हैं, बाज़ार ऊपर से बिलकुल पटे हुए हैं, इसलिये धूप और मेंह का बड़ा बचाव है, रौशनी के लिये दुतरफ़ा खिड़कियां खोल दी हैं. किसी समय में वह शाम की दारुस्सलतनत था। दमिश्क़ बग़दाद से ४७५ मील पश्चिम पहाड़ों से घिरा हुआ एक बड़े मैदान में सुन्दर बाग़ों के दर्मियान पारफ़ार नदी के दोनों कनारों पर दो लाख आदमियों की बस्ती है। वहां से ५० मील उत्तर वायुकोन को झुकता बालबक में बाल देवता अर्थात् सूर्य का एक मंदिर अति अद्भुत प्राचीन खंडहर पड़ा है, उस के संगमर्मर के खंभों की बलंदी देखकर अक्ल भी हैरान रह जाती है, एक पत्थर उसके खंभे का जो अब तक नीचे पड़ा है ७० फ़ुट लंबा १४ फ़ुट चौड़ा और चौदह फ़ुट मोटा नापा गया था, बिना कल मालूम नहीं किस बूते और बल से इन पत्थरों को उठाते थे। अर्ज़रूम बग़दाद से ५२५ मील वायुकोन उत्तर को झुकता रूम के इलाक़े में, और समिर्ना पश्चिम सीमा पर समुद्र के कनारे है, इन दोनों शहरों में भी लाख लाख आदमी से कम नहीं बस्ते। बसरा जहां गुलाब का इतर बहुत उमदा बनता है बग़दाद से २८० मील अग्निकोन सात मील के घेरे में शातुलअरब के दहने कनारे शहर पनाह के अंदर बसा है, और बड़े व्योपार

की जगह है, आदमी उस में अनुमान साठ हज़ार होंगी। मसिल् बग़दाद से २६० मील बायुकोन दजला के दहने कनारे पैंतीस हज़ार आदमियों की बस्ती है। उसी के साम्हने जहां अब नूनिया गांव बस्ता है नैनवा के पुराने शहर का निशान मिलता है, जिस का घेरा किसी समय साठ मील का बतलाते हैं। बैतुलमुक़द्दस, जिसे अंगरेज़ जरूज़लम् अथवा उर्श्लीम कहते हैं, फ़िलिस्तीन अर्थात् किनआं के इलाके में डेडसी झील और मेडिटरेनियन की खाड़ी के बीच में पहाड़ों से घिरा हुआ एक ऊंचे से मैदान में तीस हज़ार आदमियों की बस्ती है, वह सुलैमान के बाप दाऊद का पाय तख़्त था, और उसी जगह सुलैमान ने सर्वशक्तिमान जगदीश्वर का मंदिर रचा था, उसी जगह ईसा मसीह सलीब पर खींचे गये, और उसी जगह ईसामसीह की क़बर है। वहां से छ मील दक्षिण बैतुलहम् ईसामसीह का जन्मस्थान है। पालमीरा अथवा तदमीर, जो सुलैमान ने बग़दाद से ३५० मील पश्चिम बायुकोन को झुकता शाम के रेगिस्तान में जहां पानी भी कठिन से मिलता है और पेड़ों का तो क्या ज़िकर है दो हज़ार आठ सौ अठावन बरस गुज़रे बसाया था, अब वहां उस नामी शहर के बदल कोसों तक टूटे फूटे मकानों के पत्थर पड़े हैं, और सुंदर सचिक्कण संगमर्मर के खंभों के ताड़ के दरख़्तों की तरह मानों जंगल के जंगल खड़े हैं, इन खंडहरों में सुलैमान का बनाया सूर्य का एक मंदिर अब भी देखने योग्य है। हिल्ला में बग़दाद से ५० मील दक्षिण फ़ुरात के दोनों कनारे बाबिल के पुराने शहर

का निशान देते हैं, और मुसल्मान और फ़रंगी दोनों कहते हैं कि दुनियां में सब से पहले वही बसा था, और सब से पहले वही निमरूद बादशाह की राजधानी हुआ, जैसे हिन्दू अयोध्या को बतलाते हैं। जिन दिनों यह शहर अपनी औज पर था ६० मील के घेरे में बस्ता था, ८७ फुट मोटी और ३५० फुट ऊंची उस की शहरपनाह थी. गिर्द खंदक़, दरवाज़े पीतल के लगे हुए, महल बादशाही साढ़े सात मील के घेरे में तीन दीवारों के अंदर अच्छे ख़ासे बने हुए, बाग़ महल के गिरद पुश्ता पाटकर इतना ऊंचा बना हुआ कि उस में से सारे शहर की सैर होती रहे। इस शहर को ईरान के बादशाह कैखुसरों ने ग़ारत किया था। कर्बा बग़दाद से पचास मील नैर्ऋतकोण को फ़ुरात पार है, वहां मुसल्मानों के पैग़ंबर मुहम्मद के नवासे अर्थात् दौहित्र हसन और हुसैन मारे गए थे। डार्डनलस के तटस्थ ३०४७ बरस गुज़रे ट्राय का वह प्रसिद्ध क़िला था जिसे यूनानियों ने बारह बरस की लड़ाई में तोड़ा था, इस घोर युद्ध का वर्णन होमर नाम एक यूनानी कवि ने बड़ी कविताई के साथ किया है। यहां से १५० मील पूर्व बरसा में एक तप्तकुंड है नहाने को लिये उस में सुंदर हम्माम बने हैं।

अक्षांश और देशांतरांश जानने की रीति।

अक्षांस और देशांतरांश जानने से ठीक पता किसी जगह का मालूम हो जाता है। अक्षांश या देशांतरांश बहुत सी जगह का एक ही हो सकता है परन्तु अक्षांश और

देशांतरांश किसी दो जगह के एकसे नहीं हो सकते क़ायदा पचांश और देशांतरांश मालूम करने का और अचांश और देशांतरांश मालूम हो तो उस ख़ास जगह के मालूम करने का नीचे लिखा जाता है।

(१) पचांश का मालूम करना—जिस जगह का अचांश जानना हो उसे कृत्रि मगोले के पीतल के मध्यान्ह रेखा पर जो भूमध्य रेखा से ध्रुव तक गिने गये हैं ले जाओ जो दरजा उस जगह पर लिखा है वही उस का अचांश है।

(२) देशांतरांश का मालूम करना—जिस जगह का देशांतरांश जानना हो उसे कृत्रिम गोले के पीतल के मध्यान्ह रेखा पर ले जाओ जितने दरजे भूमध्यरेखा पर जगह जिस्से मध्यान्ह रेखा से कल्पित पीतल के मध्यान्ह रेखा तक हों वही उस जगह का देशांतर है अगर वह जगह कल्पित मध्यान्ह रेखा के दाहने तरफ़ हो तो पूर्वी देशांतर और अगर बायें ओर है तो पश्चिमी देशांतर है।

(३) किसी जगह का अचांश और देशांतरांश मालूम करना—उस जगह को पीतल के मध्यान्ह रेखा के उस जगह पर लाओ जो भूमध्य रेखा से ध्रुव की ओर गिनी गई है जितने दरजे उस जगह के ऊपर हों वह उस का अचांश है और जितने दरजे पीतल के मध्यान रेखा से कटे हुए भूमध्य रेखा पर हों वुह उस का देशांतरांश है (यह क़ायदा ऊपर के दो क़ायदे को एक करता है)

(४) अचांश व देशांतरांश मालूम हो तो जगह का दरयाफ़्त करना—पहले उस दिये हुये देशांतरांश को

नक्शे में जल्द पता लगने के वास्ते हिन्दुस्तान के बड़े अथवा नामी शहर और स्थानों का अक्षांश और देशान्तर।

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
अजन्तो	२०	३४	७५	५६
अजमेर	२६	३१	७४	२८
अजैगढ़	२४	५०	८०	३
अटक	३३	५६	७१	५७
अमरकण्टक	२२	५५	८२	७
अमरोहा	२९	०	७८	४२
अमृतसर	३१	३३	७४	४८
अम्बाला	३०	१९	७६	४४
अयोध्या (फैज़ाबाद)	२६	४८	८२	४
अरगांव	२१	७	७७	३
अलमोरा	२९	३५	७९	४४
अलवर	२७	४४	७६	३२
अलीगढ़ (कोयल)	२७	५६	७७	५९
असीरगढ़	२१	२८	७६	२३
असाई	२०	१६	७५	५२
अहमदनगर	१९	५	७४	५५
अहमदाबाद	२३	१	७२	४२
आगरा (अकबराबाद)	२७	११	७७	५३
आज़मगढ़	२४	६	८३	१०

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
आरा	२५	३५	८३	५७
आर्काडु (अर्काट)	१२	५२	७९	२२
औरंगाबाद	१९	५४	७५	३३
इटावा	२६	४७	७८	५२
इन्दौर	२२	४२	७५	५०
इलचपुर	२१	१४	७७	३६
इलाहाबाद (प्रयाग)	२५	२७	८१	५०
इलोरा (इलक)	१९	५८	७५	२३
इलौर	१६	४३	८१	१५
उज्जैन (आवन्ती)	२३	११	७५	३५
उदयपुर	२४	३५	७३	४४
उरछा	२५	२६	७८	३८
ऊच	२९	११	७०	५०
कटक	२०	२७	८६	५
कडप (कपा)	१४	३२	७८	५४
कड्डालूर	११	४४	७९	५०
कन्नौज	२७	४	७९	४७
कपूरथला	३१	२४	७५	२१
करदला	१८	३७	७५	४१
करनाल	१५	४४	७८	२

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
करांचीबंदर	२४	५१	६७	१६
करौली	२६	३२	७६	५५
कलकत्ता	२२	२३	८८	२८
कलीकोट	१९	२३	८५	११
कांगड़ा (नगरकोट)	३२	१५	७६	८
काठमांडू	२७	४२	८५	०
कान्हपुर	२६	३०	८०	१३
कारीकाल	१०	५५	७९	४४
कामाख्या	२६	३६	९२	५६
कालपी	२६	१०	७९	४१
कालाबाग़ (कारावाग)	३२	४	७१	१७
कालिंजर	२५	६	८०	२५
किशनगढ़	२४	२८	७९	४४
किशननगर	२३	२६	८८	३५
कांजवरम (कांचीपुरं)	१२	४९	७९	४१
कुमारीअंतरीप	८	४	७७	४५
केदारनाथ	३०	५३	७९	१८
कोची (कोचीन) (कच्छी)	९	५१	९६	१७
कोटा	२५	१२	७५	४५
कोमिल्ला	२३	२८	१०	४३

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशां[तर]	
	अंश	कला	अंश	कला
कोम्बुकोनम् (कुंभाकोणम्)	१०	५९	७९	२
कोयम्बुत्तूर	१०	५२	७७	
कोल्हापुर	१६	१९	७४	२
कोहाट	३३	४४	७१	१
खंभात	२२	२१	७२	४
खानगढ़	२९	४०	७०	५
खेड़ा	२२	४७	७२	४
गंगोत्री	३१	०	७९	
गंजाम	१९	२१	८५	१
गंतूर (मुर्तजानगर)	१६	१७	८०	३
गया	२४	४९	८५	
ग़ाज़ीपुर	२५	३५	८३	३
गुजरात (पंजाब में)	३२	३२	७३	५
गुड़गांवा	२७	५०	७६	५
गुरदासपुर	३१	५०	७५	४
गूजरांवाला	३१	५०	७४	
गोकाक	१६	११	७४	५
गोरखपुर	२६	४६	८३	१
गोलकुंडा	१७	१५	७८	३
गोवा	१५	३०	७४	
गोहाटि	२५	५५	९१	४

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
गौड़	२४	५८	८७	५९
ग्वालपाड़ा	२६	८	९०	३८
ग्वालियर	२६	१५	७८	१
घोघा	२१	४०	७२	२३
चटगांव (इस्लामाबाद)	२२	२२	९१	४२
चन्दरनगर	२२	४९	८८	२६
चंदेरी	२४	३२	७८	१०
चम्बा	३२	१७	७६	५
चम्पानेर (पवनगढ़)	२२	३१	७३	४१
चरनारगढ़ (चनार)	२५	९	८२	५४
चांदा	२०	४	७९	२२
चारखाड़ी	२५	२६	७९	४३
चिकाकूल	१८	१५	८४	०
चिकाबालापुर	१३	२६	७७	४७
चितलदुर्ग (चातलदुर्ग)	१४	४	७६	३०
चित्तूर	१३	१५	७९	१०
चितौड़गढ़	२४	५२	७४	४५
चित्रकोट	२५	१०	८०	४५
चूरा	२७	१६	८९	३४
चेरापूंजी	२५	४३	९१	४०
चिंगलपट्टू (सिंहलपेटा)	१२	४६	८०	०
छतरपुर	२४	५६	७९	३५
छपरा	२५	४६	८४	४६
छिकरौली	३०	१५	७७	२१
छोटानागपुर	२३	३०	८५	३०
जगन्नाथ (पुरी)	१९	४९	८५	५४
जब्बलपुर	२३	११	८०	१६
जमनोत्री	३०	५२	७८	४०
जम्बू	३२	५६	७४	३८
जयन्तापुर	२५	१७	७९	३२
जयपुर (आमेर)	२६	५५	७५	३७
जहाज़पुर	२०	५२	८६	२४
जालंधर	३१	१८	७५	४०
जालौन	२६	१०	७९	१३
जींद	३०	१०	७६	५
जूनागढ़	२१	२९	७०	३८
जैसलमेर	२६	४३	७०	५४
जोधपुर	२६	१८	७३	०
जौनपुर	२५	४५	८३	०
झज्झर	२८	४१	७६	४४
झंग	३१	६	७८	२५
झालरापाटन	२४	३२	७६	१६
झांसी	२५	३२	७८	३४

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश अंश	कला	पू० देशांतर अंश	कला
नरवर	२५	४०	७०	५१
नरसिंहपुर	२२	४०	७८	५२
नरायनगंज	२३	३७	९०	३५
नवाबगंज	२७	६	८१	२६
नसीराबाद	२६	२३	७९	३६
नागपुर	२१	९	७९	११
नागौर (बंगालेमें)	२३	५६	८७	२०
नागौर (दक्खनमें)	१०	४५	७९	५४
नान्देड़	१९	३	७७	३८
नाभा	३०	२६	७६	१२
नासिक	१९	५६	७३	५६
नाहन	३०	३३	७७	१६
नीमच	२४	२७	७५	०
नीमखेड़ा	२४	३८	७४	५०
नूरपुर	३१	५८	७५	२२
नेल्लूर	१२	४९	८०	१
पटना (अज़ीमाबाद)	२५	३७	८५	१५
पटियाला	३०	१६	७६	२२
पटुच्चेरी (पांडिचेरी)	११	५७	७९	५४
पण्ढरपुर	१७	४२	७५	२६

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश अंश	कला	पू० देशांतर अंश	कला
पन्ना	२४	४५	८०	१३
पबना	२४	०	८९	१२
परतापगढ़	२४	२	७४	५१
पलासी	२३	४५	८८	१५
पाकपट्टन	३०	२१	७३	१६
पानीपत	२९	२२	७६	५१
पामपुर	३४	२०	७४	५५
पार्कर	२४	१५	७०	४०
पिंजौर	३०	४७	७६	५४
पिंडदादनखां	३२	३९	७२	४७
पेशौर	३४	६	७१	१३
पीलीभीत	२८	४२	७९	४२
पुरनियां	२५	२८	८८	१४
पुरुलिया	२३	२०	८६	५५
पूना	१८	३०	७४	२
फ़तहगढ़ (फ़र्रुख़ाबाद)	२७	२४	७९	२७
फ़तहपुर	२५	५६	८०	४५
फ़तहपुरगूगेरा	३०	५५	७६	५
फ़तहपुरसीकरी	२६	६	७७	३४
फ़रीदकोट	३०	२	७४	४३
फ़रीदपुर	२३	३२	८९	४३
फ़िरोज़पुर	३०	५५	७४	३५

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
बक्सर	२५	३५	८३	५०
बक्कर	३१	३८	७०	४०
बंगुड़ा	२४	५५	८९	२२
बंगलूर	१२	५७	७७	३८
बटाला	३१	४८	७५	६
बटिंडा	३०	१२	७४	४८
बड़ौदा	२२	२१	७३	२३
बदरीनाथ	३०	४३	७९	३९
बदाऊं	२८	४	७८	५८
बनारस (काशी)	२५	३०	८३	१
बम्बई	१८	५६	७२	५७
बयाना	२६	५७	७७	८
बरेली	२८	२३	७९	१६
बर्दवान	२३	१५	८७	५७
बलंदशहर	२८	२५	७७	४३
बलहरी (बल्लार)	१५	५	७६	५९
बलुआ	२२	४०	९०	४०
बलेश्वर	२१	३२	८६	५६
बस्तर	१९	३१	८२	२८
बहराइच	२७	३३	८१	३०
बहावलपुर	२९	१९	७१	२९
बाकरगंज	२२	४२	८९	२०
बांकुड़ा	२३	५	८७	१३

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
बाग	२२	२६	७४	५[illegible]
बाड़ी (माध-न्लाबाड़ी)	१५	५६	७४	[illegible]
बाढ़	२५	२८	८५	४
बांदा	२५	३०	८०	२
बांसवाड़ा	२३	३१	७४	३[illegible]
बारहभट्टी	२०	२७	४६	[illegible]
बारासत	२२	२३	८८	५
बालासोर	२१	३२	८६	५
बिजनौर	२९	२५	७८	१
विजयनगर	१५	१४	७६	३
बिजावर	२४	३७	७९	३
बिठूर	२६	४०	८०	[illegible]
बिदर	१७	४९	७७	४
बिलासपुर	३१	१९	७६	४
बिसूर (रायछोर)	१२	५७	७९	१
बिहार	२५	१३	८५	३
बीकानेर	२७	५७	७३	[illegible]
बीजापुर (बिजयपुर)	१६	४६	७५	४
बुरहानपुर	२१	१९	७६	१
बूढ़िआ	३०	९	७७	२
बून्दी	२५	२८	७५	३
बृन्दावन	२३	१५	८७	५

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर		नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला		अंश	कला	अंश	कला
बेलगांव	१५	५२	७४	४२	मनेर (सोनिया)	२५	३९	८४	५२
बैतूल	२१	५५	७८	४	मंदराज (चीनापट्टन)	१३	५	८०	२१
बैरागढ़	२०	१८	८२	५५	मनसूरी	३०	३३	७७	५८
बैरीसाल	२२	४६	९०	१७	ममदोत	३०	४०	७४	२०
बौलिया	२४	२३	८८	४४	मरकारा	१२	२६	७५	५०
भक्कर	३१	३८	७०	४०	मलौन	३१	१२	७६	४८
भड़ौंच	२१	४६	७३	१४	महाबलिपुर	१२	३६	८०	१६
भरतपुर	२७	१७	७७	२३	महाबलेश्वर	१८	०	७३	३७
भागलपुर	२५	१३	८६	५८	महीदपुर	२३	२९	७५	४६
भातगांव	२७	४०	८५	८	मांझी	२५	४९	८४	३५
भिलसा	२३	३३	७७	५५	मांडू	२२	२३	७५	२०
भुज	२३	१५	६९	५२	मानिकयाला	३३	२८	७३	२५
भूपाल	२३	१७	७७	३०	मालदह	२४	५८	८७	५९
मऊ (छावनी)	२२	३३	७५	५०	मालेरकोटला	३२	३०	७५	५५
मंगलूर (कोडियालबंदर)	१२	५३	७४	५७	मिट्टनकोट	२८	५१	७०	१०
मछलीबंदर (मौसलीपट्टन)	१६	१०	८१	१४	मियानी	२४	४४	५८	८१
मण्डलेश्वर	२२	१०	४५	३०	मिरज़ापुर	२५	१०	८२	३५
मण्डवी	२२	५०	६९	३३	मुक्तिनाथ	२९	९	८३	८१
मंडी	३१	४०	७६	५२	मुंगेर	२५	२३	८६	२६
मथुरा	२७	३१	७७	३३	मुज़फ़रनगर	२९	२७	७७	४०
मदुरा (मीनाक्षी)	९	५५	१४	७८	मुजफ़रपुर	२६	२	८५	३८
मनीपुर	२४	२०	९४	३०	मुरली (जसर)	२३	७	८९	१५

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर		नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला		अंश	कला	अंश	कला
मुरादाबाद	२८	५१	७८	४२	राम सुमरीं (सुंभअन्तरोप)	२४	५१	६६	५६
मुर्शिदाबाद (मकसूदाबाद)	२४	११	८८	१५	रुड़की	२९	५६	७७	५८
मुलतान	३०	९	७१	७	रुहतास गढ़ (बिहार में)	२४	३८	८३	५०
मुल्लापुर	२७	४१	८१	११	रुहतास (पंजाबमें)	३३	०	७३	२०
मुहम्मदी	२७	५८	८०	५	रेवा	२४	३४	८१	१९
मेदनीपुर	२२	२५	८७	२५	रोडी	३१	३८	७०	१४
मेरट	२८	५८	७७	३८	रोहतक	२८	४०	७६	१०
मैनपुरी	२७	१४	७८	५४	लखनऊ	२६	५१	८०	५०
मैसूर(महेसुर)	१२	१९	७६	४२	लन्धौर	३०	२२	७७	५८
मोडवाडा	२३	४८	७१	१५	लसवारी	२७	३०	७६	४८
रङ्गपुर	२५	४३	८९	२२	लाहौर	३१	१६	७४	२
रणथम्भौर	२६	०	७६	१८	लुधियाना	३०	५५	७५	४८
रत्नगिरि	१७	२	७३	२५	लुहारडग्गा	२३	५	८५	०
राजगृह	२४	५८	८५	३५	लैया	३०	५८	७०	५०
राजमहल	२५	२	८७	४३	लोहगढ़	१८	४१	७३	३०
राजमहेन्द्री	१६	५९	८१	५३	लोहघाटकी छावनी	२९	२५	८०	२
रामपुर(बिसहर)	३१	२७	७७	३८	वज़ीराबाद	३२	२३	७३	५७
रामपुर (रुहेलों का)	२८	४९	७८	५२	वालाजाहनगर	११	४०	७८	५
रामेश्वर(सेतबंध)	९	१८	७९	२२	विजिगापट्टन (विशाखापट्टम)	१७	४२	८३	२४
रायकोट	३०	३४	७७	४	शाहजहांपुर	२७	५२	७९	४८
रायबरेली	२६	१४	८१	६					
रावलपिण्डी	३३	३६	७३	४५					

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
शाहपुर	१४	५९	७५	२६
शाहपुर (पंजाब में)	३२	६	७८	२५
शाहाबाद	२७	४०	७९	५०
शिकाम	२७	१६	८८	३
शिकारपुर	२७	३६	६९	१८
शिमला	३१	१३	७७	१८
शेलं	११	३७	७८	१३
शोलापुर	१७	४०	७६	३
श्रीनगर(काश्मीर)	३३	२३	७४	४७
श्रीरंगपट्टन	१२	२५	७६	४५
सक्कर	३१	३८	७०	४०
सबाठू	३०	५८	७६	५९
समथर	२५	५०	७८	५०
सम्भल	२८	३७	७८	२९
सम्भलपुर	२१	८	८३	३७
सरधना	२९	१२	७७	३१
सरहिन्द	३०	४०	७६	२२
सहसराम	२४	५८	८३	८५
सहारनपुर	२९	५७	७७	३२
सागर	२३	४८	७८	४७
सिउडी	२३	५४	८७	३२
सिकली	२२	३	९९	५५
सितारा	१७	४२	७४	१२
सिरगूजा	२३	५	८३	३०
सिरोंजो	२४	५२	३७	१५
सिरौंज (शेरगंज)	२४	५	७७	४१
सिलचार	२४	५८	९२	५०

नाम स्थानों का	उ० अक्षांश		पू० देशांतर	
	अंश	कला	अंश	कला
सिलहट	२४	५५	९१	४०
सिहोर	२३	१५	७७	१०
सीताकुंड (चटगांवमें)	२२	३७	९१	३६
सुकेत	३१	२७	७६	५८
सुगौली	२६	४६	८५	०
सुदामापुर (बंदर)	२१	३९	६९	४५
सुवर्णदुर्ग	१२	५३	७७	२०
सूरत	२१	११	७२	७
सोमनाथ(पट्टनसोमनाथ)	२०	५३	७०	३५
सोवारा (गमोराबाद)	२४	२६	९०	०
स्यालकोट	३२	३५	७४	२०
हजारा	३४	१	७३	३५
हजारीबाग	२३	४५	८५	३०
हमीरपुर	२६	०	८०	०
हरिद्वार	२९	५६	७८	१०
हस्तिनापुर	२९	९	७७	५५
हाजीपुर	२५	४१	८५	२१
हिसार	२८	५७	७५	२४
हुगली	२२	५४	८८	२८
हुशयारपुर	३१	३५	७५	५२
हैदराबाद (सिंधमें)	२५	२२	६८	४१
हैदराबाद (दक्खनमें)	१७	१५	७८	३५
होशंगाबाद	२२	४०	७७	५१

BEHAR CIRCLE .1886.

MIDDLE SCHOLARSHIP EXAMINATION.

GEOGRAPHY—(*Hindi*)—9TH MARCH, AFTERNOON.

१। एशिया के चारो तरफ़ की चौहद्दी बताओ।

२। नीचे लिखे हुए क्या हैं और कहां हैं :—

काशग़र, रासहलाहद, लाकादीप, लिसटन, कोचन, अपसला, हैनोवर, ओरेंज, आलगनियस, कैलिफोर्निया, निकेरेगुआ, टिटिकाका, वाटरलू, बगोटा, कोरिंथ, गंग।

३। बंगाल की खाड़ी में जो नदियां गिरती हैं उनके नाम लिखो और हर नदी के तीर के दो शहरों के भी नाम बताओ और हरएक में जो जो नदियां गिरती हों उन्हें भी बताओ।

४। दुनियां के सब से बड़ी नदी और झील सब से बड़ा टापू और पहाड़ और सब से घना बसा हुआ मुल्क और सब से बड़ा (आबादी में) शहर के नाम लिखो।

५। हिन्दुस्तान के हिन्दुस्तानी रियासतों (राज्यों) के नाम लिखो और बताओ कि दुनियें में अंगरेजों का राज कहां कहां है।

६। साल में कौन कौन मौसिम होते हैं और किन किन महीनों में कौन मौसिम रहता है इस को उत्तर और दक्खिन दोनों गोलाई में बताओ।

७। तिजारती हवा के उत्पत्ति के क्या कारण हैं, और किस कारण से दिन के बाद रात और रात के बाद दिन का होना अवश्य है।

८। समुन्दर के ज्वार भाठा के विषय में जो कुछ जानते हो उसको लिखो ?

BEHAR CIRCLE—PATNA NORMAL SCHOOL.

ANNUAL EXAMINATION, 1886—FIRST YEAR CLASS.

Geography—1st April, Thursday afternoon.

१। मेडीटरेनीयन (भूमध्य-सागर) में जो टापू हैं उन का नाम लिखो।

२। गंगा और ओहियो पर जो २ मशहूर शहर हैं लिखो?

३। नीचे लिखे हुए शहर कहां हैं और किस लिये मशहूर हैं—येडो, कानपूर, एथेन्स, हेलिफैक्स, कालाओ, ट्युनिस और केपटौन।

४। हिंदुस्तान में डच लोगों की मातहत कहां कहां है।

५। स्तर और अपृष्ट किसको कहते हैं। पृथ्वी के भीतर की गर्मी से अपृष्ट पर कौन २ आश्चर्य बातें होती हैं।

६। महादेशों का आकार प्रायः कैसा होता है और उपद्वीप प्रायः कैसे फैले हुए हैं इन दोनों का उदाहरण चार २ लिखो।

७। पृथ्वी के भीतर की आग से क्या २ काम हुए हैं और होते हैं?

BEHAR CIRCLE—PATNA NORMAL SCHOOL.

ANNUAL EXAMINATION, 1886—SECOND YEAR CLASS.

Geography—2nd April, Friday afternoon.

१। इंगलेण्ड के सब बन्दर-गाहों का नाम लिखो?

२। नीचे लिखे हुए पहाड़ कहां हैं—कार्पेथियन, टेबल-पहाड़, एलिघनी, रौकी पहाड़ और ऐण्डीज़ की सब से ऊंची चोटी कौन है?

३। नीचे लिखे हुए क्या है और कहां है—औरिन्य, न्यागरो
न्यूसाउथ्ख, मोरिया, औनिया और कालिफोर्निया ?

४। ये शहर कहां हैं और किस लिये मशहूर हैं—बिलाट,
विटेविया, पिक्स केम्ब्रिज ट्युरिन, कोपेन्हेगेन ?

५। कोई २ उपकूल क्रम से नीचे होते जाते हैं इनसे भूमित
पण्डित लोग क्या अनुमान करते हैं ?

६। निम्नप्रान्तर, मरुभूमि और मारवद्वीप किसको कहते हैं—
सहरा, मरुभूमि का हाल लिखो ?

७। मुंगियाद्वीपों की बनावट का क्या आश्चर्य ढंग है।
मुंगिया कीड़े कैसे देश के सागर में रहते हैं।

BEHAR CIRCLE—PATNA NORMAL SCHOOL.

ANNUAL EXAMINATION, 1886—THIRD YEAR CLASS.

Geography—3rd April, Saturday afternoon.

१। यदि बोम्बे से जहाज पर गुडहोप अन्तरीप होकर लंडन
तक जाना होय तो कौन २ समुद्र होकर जाना होगा।

२। ब्रिटिश अमेरिका और युनाइटेड्स्टेट्स के बीच में
कौन २ झील हैं उन में कौन सब से बड़ा है ?

३। नीचे लिखे हुएं शहर कहां हैं और किस लिये मशहूर
हैं—भीएना, केम्ब्रिया, चिकेगो, मोन्टे भीडियो, किंगस्टन
आसा मेनिका ?

४। योरोप में कौन खास २ जवान और मपालय हैं ?

५। ज्वार भाठा कब और कीस प्रकार होता है ?

६। उपसागर धारा कहां २ बहती है ?

७। भूतल के अपेक्षा पहाड़ के ऊपर गरमी कम होने का
क्या कारण है ?

BEHAR CIRCLE 1887.

MIDDLE SCHOLARSHIP EXAMINATION.

GEOGRAPHY—(HINDI)—1st March, afternoon.

१। प्रायद्वीप, टापू, डमरूमध्य, ज्वालामुखी और डेल्टा किसको कहते हैं? पृथ्वी के गोल होने का क्या क्या प्रमाण हैं?

२। नीचे के लिखे हुए क्या हैं और कहां हैं:—

एडिंबरा, कारिंथ, अपिनाइन, वाशिंगटन, एटना, मोजम्बीका, मिश्रा, बाबुलमंडब, पेकिन, लपलाटा और पशारी।

३। यूरुपकी सीमा और देशों का नाम लिखो?

४। भूमध्यसागर और बलेकसी में कौन कौन नदियां गिरती हैं?

५। बर्लिन, लंडन, शीराज, अलेक्जांड्रिया और प्रयाग किस किस लिये प्रसिद्ध हैं?

६। चीन और ईरान में कौन कौन खानें और सौदागरी के पदार्थ मिलते हैं?

७ हिन्दुस्तान के नकशे को खींचकर नीचे के दिये हुये स्थानों को उस में लिखो:—

भागलपूर, लाहौर, मंदराज, सुरत, तनजोर, इन्दौर, पूना और करांची।

८। पृथ्वी सूर्य्य के चारो ओर क्यों घूमती है और चन्द्र के कलाओं के क्षय और वृद्धि का कारण क्या है?

९। कोहासा, हिम, बनौरा और ओस किसतरह से उत्पन्न होते हैं?

१०। ज्वारभाटा का सम्पूर्ण व्याख्यान करो और चित्र लिखकर बताओ के वह कैसे होता है ?

BEHAR CIRCLE.

PATNA NORMAL SCHOOL-ANNUAL EXAMINATION 1887.

FIRST YEAR CLASS—GEOGRAPHY—7TH APRIL, THURSDAY AFTERNOON.

१। दक्षिण अमेरिका का नक़शा खींचो और उस में मुल्कों के नाम, उन की राजधानी, नदियां, पर्वत और अन्तरीप के सहित लिखो ?

२। आगे लिखे हुए डमरूमध्य से कौन कौन पृथ्वी के भाग मिलाये जाते हैं—क्कारीन्थ, पेरीकाप, पनामा और क्रा। आगे लिखे हुए खाड़ियों से कौन कौन जल भाग से मिलाये जाते हैं:—उरमस्ज, जीब्राल्टर, डोवर, मलक्का और वास्फोरस।

३। नीचे लिखी हुई जगह कहां है और इतिहास में क्यों प्रसिद्ध हैं—स्रिंगापटम. हेष्टिंग्स, वाटरलू. क्विबेक्, सेवास्तपोल, थानेश्वर, वास्कवर्थ, उगवार और विक्टोरिया।

४। नीचे लिखी हुई नदियों पर के एक २ शहर बताओ और उन के सम्बन्धी प्रसिद्ध बात लिखो:—सेन, इरावदी, मिसीसीपी, रांगान, टाइबर, क्लाइड, जमुना, गोला, टेगस और र्हाइन।

५। समुद्र का पानी नदी के पानी से क्यों खारा होता है और उन देशों का नाम लिखो जहां मेघ कभी नहीं या बहुत कम बरषता है ?

६। अन्धड़ और तूफान का क्या कारण है और किन देशों में बहुधा देखाई देते हैं ?

BEHAR CIRCLE.

PATNA NORMAL SCHOOL-ANNUAL EXAMINATION 1,887

SECOND YEAR CLASS—GEOGRAPHY—8TH APRIL, FRIDAY EVENING.

१। यदि कोई जहाज श्याम से करांची तक किनारे २ चले तो वह किन बन्दरों में होकर जावेगा और कौन २ नदियां उसके रास्ते में पड़ेंगी।

२। नीचे लिखे हुए हरैक देश की एक नदी और तीन शहरों का नाम लिखो और उन शहरों का कुछ हाल लिखो-इटाली, इस्पेन, बेलजीम, परशिया, आफगानिस्तान, इजीपट, आस्ट्रेलिआ, ब्रेजिल और कानाडा।

३। नीचे लिखे हुए शहर किन देशों में हैं:—लीमा, कार्डिफ, हानोलुलु, टोकू, हेग, मरी, स्मर्ना, चटानोगा, औरंगाबाद, सान्फ्रान्सिस्को, कोमरीव, अलजीअर्स और बाल्टीमोर।

४। दक्षिण हिन्दुस्तान का नकशा खींचो और उस में मालाबार और कारोमान्डल किनारों पर के शहर लिखो और प्रधान नदियां और उनके किनारों पर के शहर भी लिखो।

५। शकल खींच कर ज्वार भट्टे का कारण अच्छी तरह समझा दो।

६। ट्रेडविण्ड या वाणिज्य वायु और हिन्द के मनसून से क्या समझते हो वे कैसे उत्पन्न होते हैं।

BEHAR CIRCLE.

PATNA NORMAL SCHOOL-ANNUAL EXAMINATION

THIRD YEAR CLASS.

GEOGRAPHY—9th April, Saturday (Afternoon).

१। एक जहाज सिंगापोर से सेण्टपिटर्सबर्ग को चला तो बताओ कि वह किन किन समुद्र, खाड़ी इत्यादि होकर जायगा।

२। जर्मनी के चार प्रधान शहर का नाम लिखो और यह भी लिखो कि वे किस लिये प्रसिद्ध है नीचे लिखे हुये शहरे कहां पर हैं और किस लिये प्रसिद्ध है कायनश्, म्युगालिंगनशडण्डो, बोष्टन, पोर्टसमथ, वेनीश, सानफ्रां-सिस्को और बरमिंघाम।

३। नीचे लिखी हुई नदियां कहां से निकलतीं, किधर से जाती और कहां गिरती है और उन के किनारे पर के शहर क्रम क्रम से लिखो अमेजन, रहाइन, कांगो, मिसीसिपी और यांगटसी कियांग?

४। अफ्रिका के प्रधान झील और पहाड़ों का नाम लिखो और वे कहां पर स्थित है सो भी लिखो?

५। शकल खैंच कर ऋतुपरिवर्त्तन और रात दिन के घट बढ़ का कारण भली भांती समझा दो?

६। गल्फ ष्ट्रीम, या उपसागर धारा कहां से सुरु होती, और किधर से बहती है और उससे क्या काम होता है सो लिखो।

BEHAR CIRCLE.

PATNA NORMAL SCHOOL-ANNUAL EXAMINATION 188

FIRST YEAR CLASS.—GEOGRAPHY.

Thursday, 8th March, 6-10 A. M.

१। हिन्दुस्तान का नक्शा खैंचो और उस में सरकारी सूबों की सीमा बताओ। और उन सूबों की राजधानी देखलाओ।

२। नीचे लिखे हुए स्थान कहां है और किस लिये प्रसिद्ध हैं हीरट, मनीला, पीकीन, चीकागो, नीलाईज, केलास, ह्वेनाह, नायगरा, केरो. शीराज, आवा, कानपुर, ?

३। उत्तर अमेरिका के देशों का नाम राजधानी समेत लिखो ?

४। बाबूलमण्डप, नेटाल, सोफ़िया, लिफ्फो, पेरीनीज़, हेकला, ऐज़ोर, गोथलेण्ड, सोरिया, नेज़, नीशा, इस्लारडो, पेरिकोप, सीगो, क्यूबा और एन्डीज़ क्या हैं और कहां हैं ?

५। कैसे जानते हो कि पृथ्वी गोल है ?

६। रात दिन कहां कब और क्यों बराबर होता है ?

७। आकर्षण किस को कहते हैं ?

८। कुहासा, बादल, पाला, बनौरी, हिम, वर्षा, कैसे होता है ?

BEHAR CIRCLE.

PATNA NORMAL SCHOOL.-ANNUAL EXAMINATION

SECOND YEAR CLASS.

GEOGRAPHY.—Saturday, 10th March, 6-10 A. M.

१। इङ्गलेन्ड का नकशा खैंचो और उस में बड़े बड़े तिजारत का स्थान देखलाओ।

२। योरोप के देशों का नाम राजधानी सहित लिखो और यह भी बतलावो के कोपीन, मोसको, लिपजीक, बारमिंगम, एडन, अलेकजण्डरिया, इसपहान, सूरत, वोरडो, कोय-बेक कहां हैं और किस लिए प्रसिद्ध है ?

३। अफ्रीका, अमरिका, दक्षिण और उत्तर योरोप और एशिया के दो बड़ी २ नदी और उन के किनारे के दो बड़े २ नगर और दो बड़े २ पहाड़ का नाम लिखो ?

४। गंगा और जमुना, गंगा वो ब्रह्मपुत्र का संगम कहां पर है, नरवदा, सोन और ब्रह्मनदी का सोता कहां से निकला है ?

५। पृथ्वी की गति क्या है यह कैसे और किस काल वो किस पर घूमती है ?

६। दोनों ध्रुवों पर छः महीने का दिन वो छः महीने की रात क्यों होती है ?

७। पहाड़ पर बहुत दूर क्यों नहीं चढ़ सकते ?

८। गल्फ स्ट्रीम कैसे और कहां से उत्पन्न होती है ? इस-से क्या लाभ होता है ?

BEHAR CIRCLE.

PATNA NORMAL SCHOOL.-ANNUAL EXAMINATION

1888.

THIRD YEAR CLASS.

(GEOGRAPHY.) Thursday, 15th March, 6-10 A. M.

१। दक्षिण अमेरिका के देशों का नाम उनकी राजधानी सहित लिखो ? नीचे लिखे हुए शहर कहां हैं और किस लिये मशहूर हैं ;—फिलेडेलफीया, काटरक, लिवरपल

वाशिंगटन, मनिला, ओहो, ट्यूनिस, मिसनौवी, सोफिया सिरङ्गापटम ?

२। कौन कौन नदियां कहां कहां से निकल कर और किस किस देश में होकर भूमध्यसागर में गिरती हैं ? इन के किनारे के बड़े बड़े नगरों का नाम लिखो ?

३। अफ़रिका का नक्शा खैंचो और उसके अन्तरीप का नाम बताओ ?

४। हिन्दुस्तान में जितने स्वाधीन राज्य हैं उनका नाम राजधानी समेत लिखो और यह भी बताओ कि सर्कारी हिन्दुस्तान में कहां कहां गवर्नरी, लफटेंट-गवर्नरी और चीफ़ कमिश्नरी हैं ?

५। नकशा खैंचकर ज्वार भाटा का सबब वो हाल अच्छी तरह से समझा दो ?

६। झील के प्रकार के होते हैं—भूकम्प कैसे होता है—नदी कैसे बनती हैं ?

७। ट्राडविण्ड और मनसून कैसे उत्पन्न होते हैं मनसून से हिन्द को क्या लाभ होता है ?

८। वायु की सिमटने और फैलने की शक्ति सिद्ध करो। शीतोष्णता मापक यन्त्र क्या है ?

BEHAR CIRCLE.

Middle Scolarship Examination, 1890.

Geography (*Hindi*) 21st January—Afternoon.

१। युरप, एशिया और अफ़्रिका के बंदर का नाम जो जो मेडिटरेनियनके किनारेपर हैं।

२। हिन्दुस्तान के किस हिस्सा में यह पदार्थ उत्पत्ति होती हैं:—
कोयला, अफीम, रेशम, चाय, नील, हीरा।
३। हिन्दुस्तान के सब रेलवे का नाम लिखो।
४। नीचे लिखे हुए कहां हैं:—
हेलमण्ड, दानालुज, बाथ, वीक्टोरिया अन्सी, वीक्टोरिया शहर, आरकाट, नायरोनी, कायुफहार टिटी काका, टीके।
५। अगर कोई मोसाफिर कलकत्ता से लन्दन को कालि-फोरनिया होकर जाए तो बताओ वो किस राह से होकर जायगा।
६। नीचे लिखे हुए नदियां कहां से निकली हैं किस जगह से छोड़के आई हैं कहां गिरती हैं और कौन कौन शहर उनके किनारे पर हैं:—
डेन्यूब, सेन्ट लोरेन्स इरावद्दी, सेनफ्रानसिसको, नील, ब्रह्मपुत्र।
७। नीचे लिखे हुए कहां हैं किस वास्ते विदित हैं:—
टोलिडो, बाथ, कारडिफ, लखनऊ, हैंयापलाकी, लेडन, अपलिफिक्स, फिलाडेलफिया, ईसमायलिया, ट्रिनिडाड।
८। दक्षिण अमेरिका का नकशा खींचो और उसके देश और राजधानी का नाम ठीक जगह में बताओ।
९। ग्रिनिज से पुरब या पश्चिम १८० दरजे की मध्याह्न रेखा पर पासिफीक महासागर में एक जहाज है और ग्रिनिज में ३१ दिसम्बर सन १८७५ का भारात है तब बताओ की जहाज पर कौन तारीख और क्या वखत है?

१०। (क) साबित करो कि वायु तत्व नहीं है।

[ख] हवा की नीचेवाली तह और ऊपर का तह में क्या कुछ अन्तर है या नहीं मिसाल दे कर वर्णन करो।

(ग) बदली, कुहिरा, पाला कैसे बनते हैं।

११। (क) समुद्र के तह के बारे में क्या जानते हो?

[ख] प्रवालद्वीप और ज्वालाद्वीप कैसे बने हैं।

[ग] समुद्र के लहर और निकास के गुन वर्णन करो।

१२। रितु बदलने का कारण लिखो एक चित्र की सहायता से इसको स्पष्ट वर्णन करो।

BEHAR CIRCLE.

Upper Primary Scholarship Examination.

Geography—(*Hindi*)—9th March, Morning.

१। पृथ्वी के गोल होने का सबूत जितना हो सके लिखो।

२। टापू, नदी, महासागर, अन्तरीप और विषुवत रेखा किस को कहते हैं।

३। इरावदी, वलगा, टेगस, रोन, नाइल, हिन्दुकुश और मडागास्कर क्या हैं और कहां हैं।

४। नीचे लिखे हुये मुल्कों के राजधानी का नाम लिखो- डिनमार्क, ग्रीस, पोर्टुगल, बेलिवीनिया, नेटाल, पेरू और वेनेजुएला।

५। नीचे लिखे हुए शहर कहां हैं और किस लिये मशहूर हैं—कान्सटेनटिनोपल, बेलफेस्ट, जेनेवा, ओपोर्टो, क्वेबेक, सेन्ट-जोन्स और मौनटेवीडियो।

BEHAR CIRCLE 1887.

UPPER PRIMARY SCHOLARSHIP EXAMINATION.

Geography—(*Hindi*)—1st March, Morning.

१। पृथिवी पर कै महादेश हैं ? उन का नाम लिखो प्रायद्वीप डमरूमध्य उपसागर मुहाना यूरप किस को कहते हैं।

२। (अ) वेपा मर्वं सांभर टाईगरीस चीसुलीयस पनामा और माल्टा क्या हैं और कहां हैं।

(ब) लेपज़ीग करेदा मल्लेगजेल्डरिया सिंगापटाम मिरट वाटरलु सीवैसटोपोल सेसीलोंची और सैनोवा कहां हैं और किस लिये मशहूर हैं।

३। मेडिटरेनियन में जो जो नदी गिरती हैं उन का नाम लिखो।

४। इंगलैंड का मशहूर मशहूर तिजारत क्या क्या हैं और कौन २ शहर में वहां वो होता है।

५। नीचे लिखे हुए मुल्कों की राजधानी लिखो :—
पेरू डेनमार्क ब्राजील सर्विया चीन निउविया।

BEHAR CIRCLE.

MIDDLE SCHOLARSHIP EXAMINATION, 1888.

GEOGRAPHY (*Hindi*) 21st February—Afternoon,

१। लिखा है कि सूर्य कभी ब्रिटिश सम्राज्य में डूबता नहीं यानी जहां वह जाता है वहीं ब्रिटिश राज्य कायम हुआ नज़र आता है इसी युक्ति को तुम अपने भौगोलिक ज्ञान से प्रमाण करो ?

२। नीचे के लिखे हुए कहां है और क्या है ;—
उशान्त, एवरिष्ट, कोरिया, साइप्रेस, कुमारी, अलेघनी, फ्लोरिडा, बहामा, सोफिया, स्कागाराक, निनेवा, पेरिकोप माताफान, जिब्राल्टर, स्ट्रोम्बली वालकन ?

३। गंगा, नील, डान्यूब और मिसिसिपी कहां से निकलती है और कहां गिरती है और कौन मशहूर शहर उन के किनारे या पास हैं लिखो ?

४। (क) कौन तिजारत की चीजें हिन्दुस्तान से दूसरे मुल्कों में भेजी जाती हैं और कौन चीज़ें उन सब मुल्कों से यहां आती है ?
(ख) हिन्दुस्तान में कहां कहां दूसरे मुल्कवालों का राज्य है ?

५। नीचे लिखे हुए जगहें कहां हैं और किस लिए प्रसिद्ध हैं।
निजनीनावगोड, बग़दाद, सेन्ट हेलिना, स्मरना, पलासी, नावारिनो, वाटरलू, ग्लासगो, अमृतसर, चीकागो, टोलिडो नानकिन, उटाकमन्द, बलमारल।

६। अगर एक जहाज़ कौनस्टैंटिनोपल से रवाना होकर, बराबर किनारे किनारे सेन्ट पिटर्सबर्ग पहुंचे तब तर-तिब्वार लिखो के किन किन नदियों की मुहाने होकर वह गया है ?

७। इंगलैंड का नक़्शा खींचकर नीचे दिये हुए जगह उस में दिखाओ :—लंडन, ब्रिस्टोल, न्यूकैसल, बर्मिंगहैम, यार्क, मंचेस्टर, चीवियट पहाड़ी, डोवर मुहाना, लैंड सएन्ड डर्वेनट वाटर ?

८। ट्रेड विंडज, मानसून, गल्फ़स्ट्रीम, जेलस्टार्स क्या हैं इन की सम्पूर्ण व्याख्या करो ?

९। महानदी और गंगा में बाढ़ का पानी क्योंकर बढ़ता है। दो और बड़े नदियों के नाम लिखो जिन में बाढ़ उसी तरह आती है?

१०। रात और दिन के घट बढ़ होने का क्या कारण है और कौन समय यह दोनों परस्पर तुल्य होते हैं?

११। बादल किस तरह उत्पन्न होता है। प्रिथिवी का कौन अंश में और किस कारण से बादल ज्यादा बरस्ती हैं। और कौन कौन देशों में नहीं बरस्ती हैं?

BEHAR CIRCLE.

Upper Primary Scholarship Examination, 1889.

Geography *(Hindi)*—21st February—Morning.

१। गंगाजी के आठ प्रधान सहायक नदियों का नाम बताओ?

२। प्रायद्वीप, स्थलडमरूमध्य, जलडमरूमध्य और झील किस को कहते हैं?

३। हिन्दुस्तान के कौन कौन जिले हीरे, नील, अफ़ीम, चावल, और गेहूं के लिए प्रसिद्ध हैं।

४। यूरप के मुल्कों का नाम मैं राजधानी के लिखो।

५। हिन्दुस्तान का एक नकशा खींचो और उस में गंगाजी, ब्रह्मपुत्र और तिस्ता कहां है सो लिखो और इन शहरों को जहां होना चाहिए वहां पर रख कर देखलाओ, कलकत्ता, मुरशिदाबाद, पटना, भागलपुर, ढाका, गोआलपाड़ा, पलासी और दारजिलिंग।

१। द्वीप बन्दर अन्तरीप और मोहाना किसको कहते हैं?

२। एशिया के मुल्कों का नाम राजधानी समेत लिखो ?

३। इंडिया में जो २ राज सर्कार के अहन और मेल में हैं उनका नाम लिखो ? सर्कार से और उन मुल्क के राजाओं से किस तरह का इलाका है ?

४। कानपूर, सीरामपूर, जैसलमेर, अहमदाबाद, लेहो, भीराज, गज़नी, बम्बई कहां हैं और किस लिये मशहूर हैं ?

५। हिन्दुस्तान का नकशा खींचो और उस में मशहूर २ जगह का नाम बतलाओ ?

BEHAR CIRCLE.

Upper Primary Scholarship Examination, 1890.

Geography (*Hindi*) 21st January—Morning.

१। हिन्दुस्तान के मुख्य बन्दरगाह औ यूरप के मुख्य प्रायद्वीप के नाम लिखो।

२। जिबरल्टर, मनिला, बाल्टी, जिबाल्टा, सिनाई, विसूवियस, कोरिया, और पेरिस क्या है और कहां हैं।

३। डमरूमध्य, अन्तरीप, ज्वालामुखी, और महादेश किस को कहते हैं।

४। बंगाल [काला समुद्र] और पासीफिक महासागर में जो नदियां गिरती हैं उनके नाम लो, और उन नदियों पर जो प्रधान शहर हैं उनके भी नाम लो।

५। इंगलैंड का एक नकशा खींच कर उस देश का चौहद्दी दिखलाओ, और लिवरपूल, आइल आफ वाइट [वाइट टापू], लंडन, बर्मिंगहाम इन को जहां होना चाहिए वहां रक्खो।

श्री रामचरितमानस

अर्थात्

श्री तुलसी कृत रामायण

यह ग्रन्थ बड़े परिश्रम और यत्न से श्रीतुलसीदास जी की लिखी हुई खास प्रति से शोध कर ज्यों की त्यों छापा गया है। इस भय से कि कदाचित् कोई इसे असम्भव समझे, गोसाईं जी के हाथ की लिखी हुई प्रति के १० पृष्ठ का फोटोग्राफ़ भी पुस्तक में लगा दिया है, और उस की दृढ़ पुष्टि के लिये गोसांई जी के हाथ के लिखे हुए पंचनामा का फोटोग्राफ भी उसी के संग है, जिस में लोगों को यह भी न कहना पड़े कि गोसांई जी के हाथ के लिखे हुए का प्रमाण ही क्या है? और लोगों की भांति मैं नहीं चाहता कि इश्तिहार में ऊपर से नीचे तक प्रशंसा ही भरदूं, क्योंकि जो इस के गुणग्राहक हैं उन के लिये इतना ही बहुत है। इस ग्रन्थ में तुलसीदास जी का जीवनचरित भी दिया गया है और अक्षर बड़ा वो कागज़ अच्छा है। विद्यानुरागी परम गुणवान् श्रीमान् आनरेबुल राय दुर्गाप्रसाद साहिब बहादुर की गुणग्राहकता से यह ग्रन्थ १९ नवम्बर १८८९ को गोरखपुर की प्रदर्शिनी में भी रक्खा गया था और लोगों ने आश्चर्य्य दृष्टि से देखा। तीन सौ वर्ष पर यह अलभ्य पदार्थ हाथ लगा है, जिन को रामरस के अपूर्व स्वाद लेना हो वे न चूकैं और नीचे लिखे हुए पते से मंगा लेवैं। नहीं तो अवसर निकल जाने पर पछताना होगा।

मूल्य फोटो सहित रामायण का ६ रुपया

मूल्य बिना फोटो की रामायण का ४ रुपया

डाकमहसूल १॥)

"खड्गविलास" प्रेस
बांकीपुर } साहब प्रसाद सिंह।